हिन्दी ज्ञानमन्दिर प्रकाशन लोक-साहित्य—३

बुन्देलखण्डकी ग्राम-कहानियाँ

लेखक
पण्डित शिवसहाय चतुर्वेदी

प्रस्तावना-लेखक
पण्डित कृष्णानन्द गुप्त

आवरण चित्र—श्री प्रभास सेन

हिन्दी ज्ञानमन्दिर लिमिटेड

रुस्तम बिल्डिंग, २९, चर्चगेट स्ट्रीट, फ़ोर्ट बम्बई

प्रकाशकीय

राजनीतिक उतार-चढ़ावके साथ ही जनताके जीवनकी आवश्यकताओं और स्थापनाओंमें भी अन्तर पड़ता जाता है। अब वह समय आ गया है, जब लोक-बोलियों और भाषाओंमें भी साहित्यका सृजन हो, या राष्ट्रभाषामें उनका रूपान्तर प्रकाशित हो।

'हिन्दी-ज्ञानमंदिर' इस प्रयत्नमें सजग है। अपने सीमित साधनों और वर्तमानकी कठिनाइयोंके बावजूद भी वह इस ओर ध्यान दे रहा है। मालवी भाषामें 'जागीरदार' (नाटक) प्रकाशित करके ; 'वकील साहब' (नाटक) में आजकी बोली जाने वाली 'खिचड़ी-बोली हिन्दुस्तानी' को स्वीकार करके तथा 'कौमके नामपर'(उपन्यास)में मेरठके आसपासकी ठेठ लोक भाषाका भी प्रयोग हुआ है, जिसमें हरियाने (पंजाब)की भाषाकी भी झलक आगई है, उसने इस ओर कदम बढ़ाया है। लोक-साहित्यके सृजनमें उसका पहला प्रकाशन 'रूसी लोक कथाएँ'(दो भाग) है। यह दूसरा प्रयास 'बुन्देलखण्डकी ग्राम-कहानियाँ' में बुन्देलखण्डीय भाषा, भाव और संस्कृतिकी अभिव्यक्ति है।

लेखकका चित्र और आत्म-परिचय हमने साग्रह लेखकसे मँगवाया। आत्म-परिचय ज्योंका त्यों हम इसलिये दे रहे हैं कि उसमें लेखकके जीवन-कालमें, समाज और देशमें घटनेवाली विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियोंपर थोड़ा-सा प्रकाश पड़ता है।

श्री कृष्णानन्द गुप्तने इस पुस्तककी प्रस्तावना लिखकर हमारे उद्देश्य में मदद की है। हम भी उनके कृतज्ञ हैं।

हमारे इस तरहके प्रकाशनोंको वेग तभी मिल सकता है, जब पाठक और साहित्यिक सहयोग करें !

दिसम्बर १९४७ —भानुकुमार जैन

अनुक्रम

लेखक : पं० शिवसहाय चतुर्वेदी

लेखकका वक्तव्य

सन् १६३०-३१ में मुझे कांग्रेसके कामकेलिए देहातोंमें कई जगह जाने और कई कई रातों वहाँ रहनेका अवसर मिला। उस समय मुझे इन बुन्देलखण्डी कहानियोंके सुननेका विशेष सौभाग्य मिला। इन कहानियोंको सुनकर मेरे मनमें इनके संग्रह करनेकी इच्छा उत्पन्न हुई। मैंने सुनी हुई १५-१६ कहानियाँ उसी समय लिख डालीं। तत्पश्चात् मेरे आदरणीय मित्र श्री नाथूरामजी प्रेमी देवरी आए। मैंने वे कहानियाँ उन्हें दिखाईं, उन्हें वे पसंद आईं और वे उन्हें पुस्तकाकार छपानेके विचारसे बम्बई लेगए। वहाँ वे १०-११ साल तक पड़ी रहीं। उसके बाद सन् १६४० के लगभग श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी बम्बई गए और प्रेमीजीके यहाँही ठहरे। उस समय उन्हें मेरी कहानियोंकी पाण्डुलिपि मिली। वे उसे टीकमगढ़ ले गए और कहानियोंको उन्होंने अपने पत्र 'मधुकर' में प्रकाशित करना प्रारंभ कर दिया। उससे मेरा उत्साह बहुत बढ़ा और मैंने पुनः नये उद्योगके साथ कहानी सुनने और लिखनेका कार्य प्रारंभ करदिया। संक्षेपमें यही मेरे इस संग्रहका इतिहास है।

अब तक मेरी लगभग ५०-६० कहानियाँ विविध पत्रों, विशेष कर 'मधुकर' में छप चुकी हैं और लगभग १०० मेरे पास लिखी मौजूद हैं। ये कहानियाँ मैंने अधिकतर देहातकी अपठित समाजसे ली हैं, क्योंकि वे लोगही इन कहानियोंको कहने सुननेका अनुराग रखते हैं। यद्यपि प्रारंभमें मनोरंजनके उद्देश्यसे ही मैंने इनका संग्रह किया। फिरभी जिन लोगोंसे कहानियाँ सुनी हैं उनके अधिकांश नाम मेरे पास नोट हैं। मैंने कहानीके मूलभावको ज्योंका त्यों रखनेका सदा ध्यान रखा है। कहानीमें घटना-वैचित्र्य लाने या उसे सुन्दर बनानेके लिहाज़से मैंने मूल कहानी कहने-वालेके भावमें कभी परिवर्तन नहीं किया। इसके बाद जब लोकवार्त्ता-पत्रिका में इस विषयके कुछ लेख मैंने देखे, विशेषकर जब डा० वैरियर एलविन डी० एस० सी० का "भारतीय लोक कथाएँ और उनके अंग्रेजी

संग्रह'' शीर्षक लेख पढ़ा तो इस विषयमें मैं औरभी सतर्क होगया और इस लेखमें प्रसंगवश कहानियोंके संग्रहकी जो पद्धति निर्धारित की गई है उसका पूरा पूरा ध्यान रखने लगा।

जब ये कहानियाँ 'मधुकर' में प्रकाशित होरही थीं तब कुछ मित्रोंने इस बातकी आपत्ति उठाई कि ठीक इसी प्रकारकी कहानियाँ दिल्ली, मेरठ, आगरा और अवध की तरफ भी प्रचलित हैं, फिर इनको बुन्देलखण्डी नामसे क्यों प्रकाशित किया जारहा है। इस सम्बन्धमें मेरा इतना ही निवेदन है कि अपने प्रांतके अनेक गावोंमें मुझे इन कहानियोंके सुननेका अवसर मिला है। ये कहानियाँ इधर सर्वत्र प्रचलित हैं। जो कहानी एक आदमीके मुँह सुनते हैं, वही दूरके एक दूसरे गाँव या ज़िलेके निवासीके मुँहसे भी सुननेको मिलती है। यह ठीक है कि इस प्रकारकी कहानियाँ थोड़े हेरफेरके साथ अन्य प्रान्तोंमें भी प्रचलित हैं और यह कहना कठिन है कि कौन कहानी कहाँकी और किन लोगोंकी रचना है। हम केवल इतना जानते हैं कि हमारे प्रान्तमें ये कहानियाँ एक बहुत लम्बे समयसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी, श्रुति-अनुश्रुतिके आधारपर जीवित चली आरही हैं। हमारे प्रान्तकीसंस्कृतिकी झलक उनमें है। दूसरे शब्दोंमें कहा जाय तो वे बुन्देलखण्डके मौखिक साहित्यका प्रतिनिधित्व करती हैं, उसकी आत्माको दरसाती हैं। इसीलिए यहाँ पर ये बुन्देलखण्डी नामसे ही प्रकाशित होरही हैं।

अन्य सब स्थानोंकी भाँति बुन्देलखण्डमें भी ये कहानियाँ रात्रिके समयही कही और सुनी जाती हैं। देहातमें रात्रिको ब्यालूके बाद, विशेष करके जाड़ेके दिनोंमें, जबकि रातें बड़ी होती हैं, अड़ोस-पड़ोसके लोग किसी एक जगह जलती हुई आग (कौंड़े) के आस पास इकट्ठे होजाते हैं, और तब गाँवकी इधर उधरकी चर्चाके बाद इनका रंग जमता है। एक आदमी कहानी कहता और श्रोताओंमें से एक हूँका देता जाता है। इस प्रकार सब कहानी सुनते हैं। हूँका देना आवश्यक है। उससे कहानी कहनेवालेका मन लगता है। श्रोतागण दिनभरकी सांसारिक चिन्ताओंसे मुक्त होकर कहानी सुननेमें निमग्न होजाते हैं। हूँका देने वाला यदि ऊँघने लगता है अथवा धीमा पड़ जाता है तो उसे सावधान कर दिया जाता है। जिन घरोंमें बालक होते हैं वहाँ प्रायः नित्य रात्रिको इन

कहानियों की चहल पहल रहती है। माता या बूढ़ी दादी कहानी कहती और बच्चे सुन सुनकर प्रसन्न होते हैं। अनेक कहानियाँ सुनलेनेपरभी 'दादी, एक और सुनाओ' की माँग बनी ही रहती है।

बहुतसी कहानियोंमें बीच बीचमें दोहा, चौबोला या गीत भी कहे जाते हैं। कहानी कहने वाले उन्हें हाव - भाव के साथ गाकर कहते हैं। उससे कहानी की रोचकता और भी बढ़ जाती है। प्रत्येक कथकका कहानी कहनेका अपना ढंग होता है। अनेक पुराने लोग प्रायः एक लम्बी-चौड़ी भूमिकाके साथ अपनी कहानी प्रारंभ करते हैं, जोकि बड़ी मज़ेदार होती है। उसका कुछ अंश इस प्रकार है :—

"किस्सासी झूठी न बातेंसी मीठी। घड़ी घड़ी कौ विश्राम, को जाने सीताराम। न कैबे बारेको दोष, न सुनने बारेकों दोष। दोष तो उसीको जीने किस्सा बनाकर खड़ी करी। और दोष उसीको भी नहीं। कायसें ऊने रैन काटवेके लाने बनाके खड़ी करी। शक्कर को घोड़ा सकल-पारेकी लगाम। छोड़दो दरियाके बीच, चला जाय छमाछम छमाछम। इस पार घोड़ा, उस पार घास। न घास घोड़ा को खाय, न घोड़ा घासको खाय। हाथ भर ककड़ी नौ हाथ बीजा। होय न होय खेरो गुन होय! जरिया को काँटो, अठारा हाथ लाँबो! आधो छिरियाने चर लव। आधे पै बसे तीन गाँव! एक ऊजर, एक खूजर एकमें मानसई नैयाँ! जी में मानस नैयाँ ऊमें बसे तीन कुम्हार! एक ठूंठा, एक लूला, एकके हाथई नैयाँ! जीकें हाथ नैयाँ ऊने रचीं तीन हँड़ियाँ! एक ओंगू एक बोंगू एककें ओंठई नैयाँ! जीमें ओंठ नैयाँ ऊमें चुरेए तीन चाँवर। एक अच्चो, एक कच्चो, एकको चोटई ने आई। जीमें नेवते तीन बामन। एक अफरो, एक डफरो एककों भूखई नैयाँ!.........जों इन बातन को झूठी जाने तो राजाकों डाँड़ और जातकों रोटी देय।............ कहता तो ठीक पै सुनता सावधान चाहिए।......" इत्यादि।

अपनी इस परम रोचक और विलक्षण भूमिका के साथ कहानी कहने वाला मानो अपने श्रोताओंको कहानी जगतके उस अद्भुत और अलौकिक वातावरणमें खींच कर लेजाता है जहाँ भौतिक जगतकी कोई चिन्ता उन्हें नहीं व्यापती। कल्पनाके घोड़े पर बैठकर हम न जानें कहाँ कहाँ की सैर करने लगते हैं।

प्रसंगानुसार बीच बीचमें नायक नायिका के स्वरूप या किसी बरात, जलूस आदिका वर्णनभी लच्छेदार शब्दोंमें होता है। नायिकाके रूप वर्णनमें घरेलू उपमा-अलंकारों की छटा देखते बनती है। उसका एक उदाहरण लीजिए :—

"कैसी है वह ? बार बार मोती गुहें, सोलह सिंगार करें, बारह आभूषण पैनें, सेंदुर-सुरमा लगायँ, लोंग-लायचियन कौ बटुवा कमरमें खोंसें कैसा उसका स्वरूप है ? सोने कैसी मूरत, चंपे कैसो रंग, पूने कैसो चंदा, दिवारी कैसो दिया, कनेर कैसो डार कि लफलफ कर दूनर होजाय, पान खाय तो गरेमें पीक दिखाय, ककरी मारो तो रकत झलक आय, फूँक मारो तो आकाशमें उड़ जाय, बीचमें उमेठ दो तो गाँठ पर जाय, लकरियासे घुमा दो तो साँपसी लिपट जाय, पलँग पै हिरा जाय तो बारह वर्ष ढूँढ़े न मिले !!......बढ़वेमें दोज कैसो चंदा, सुकुमारतामें नैनू कैसो लौंदा, सोने कैसे केश, होली कैसी झाँक, कोयल कैसी बोली, बिजली कैसी चमक, केवरेके फूल जैसी महक, गंगाकी धार जैसी पवित्र, और अपने निश्चयमें ऐसी जैसी पत्थरकी चट्टान; ऐसी एक अलबेली नार एक हाथमें सोनेकी झारी और एक हाथमें थारी लयें, अपने रूप और गुननको प्रकाश फैलाउत छुम-छुम करत चली आरई......"

उक्त वर्णन मध्ययुगके किसी शृंगारी कविके नायिका वर्णनसे किसीभी विषयमें कम नहीं ठहराया जासकता है। 'फूँक मारो तो आकाशमें उड़ जाय, बीचमें उमेठ दो तो गाँठ पर जाय' लचीले और हल्केपन की हद होगई ! उर्दू कवियोंको अपनी नायिकाकी कमर नज़र नहीं आती, मगर यहाँ तो स्वयं नायिका इतनी सूक्ष्म और सुकुमार है कि 'पलंग पर हिरा जाय तो बारह वर्ष तक ढूँढते रहिए।' पताभी न चले !

अब नायकका भी रूप वर्णन देखिए :—

"कैसा है वह ? गुलाब कैसो फूल, शेर कैसो बच्चा, सूरज कैसी जोत, भौंरा कैसे बाल, सोने कैसो रंग, सिर पै जरीका मंडील बाँधे, ऊपरसे कीमखाबका अंगा और मिशरूका पैजामा पहिनें, कमरमें रेशमी फेंटा बाँधे, जीमें चाँदीकी मूठकौ नक्काशीदार पेशकब्ज खुसो भओ, कानमें मोतियनके बड़े बड़े बाला, गरेमें सूबेदारी कंठा, हाथकी अंगुरियनमें जड़ाऊ अँगूठी शोभा देरई, मुँहमें पानको बीड़ा दाबें, पावनमें लड़ीको

चरटिदार जोड़ा पहिने, छैल-छबीला गबरू ज्वान...देखेते भूख भगे......................"

इसी प्रकार जब कभी बारातका वर्णन किया जाता है तो उसका एक सजीव चित्र सामने खिंच जाता है। नाना प्रकारके रथों, सवारियों और घोड़ों तथा उनकी किस्मोंका सुन्दर विवरण देखनेको मिलता है। उदाहरणके लिए एक कहानीमेंसे यहाँ बरातका दृश्य उपस्थित किया जाता है—

"बरात चल पड़ी। सुन्दर सुहावने बाजे—सहनाई, बाँसुरी, टिमकी, ढोलक, नगारे, मृदंग, ढपला, रमतूला और तुरही आदि बजने लगे। बराती लोग अपनी अपनी सवारियों पर—रथ, सेजगाड़ी, सुखपाल तामझाम और बग्घियों पर बैठकर चले। दूल्हाके हमजोली छैल छबीले जवान अनोखी पोशाक किये अपने अपने घोड़ों पर सवार होकर उनको नचाते-कुँदाते और कदम, दुलकी, सरपट, रौहाल, कबूतरी, सागाम आदि नाना प्रकारकी चालें चलाते मज़ेके साथ कभी बरातके आगे कभी पीछे और कभी बीचमें चले जारहे थे। कहाँ तक गिनायें, तरह तरह तरहके रंगके घोड़े थे—कच्छी, मुश्की, हरियल, श्याम कर्ण, अबलख, पचकल्यानी, काले, कबत, कुम्मैत, हंसा; और सभी अपने कीमती साज़बाज लगाम, पलेंचा, तंग, जेरबंद, अगेठी, पिछैटी, रुपहली पायरों और कंठा कलगीसे सुसज्जित थे।

बरात चली जारही थी। निशान घूमते जाते थे। बंदूकें छूटती जाती थीं। डंकैत डंकोंपर चोब लगा रहे थे। कड़खेत कड़खे सुनाते जाते थे। चौरिए चौंर ढोरते जाते थे। नकीब, भाट, चारण पालकीके आगे आगे चलकर विरुदावली गाते जाते थे। भाँड, मसखरे, बहुरूपिए अपनी अपनी कलाओंसे लोगोंको हँसाते खिलाते और उनका मनोरंजन करते जाते थे। राजा और राज परिवारके लोग सुन्दर सजे हुए हाथियों पर बैठे हुए थे, जिन पर सोनेकी झूलें पड़ी हुई थीं। उनको घामसे बचानेके लिए नौकर सूरजमुखी हाथमें लिए हाथियोंके अगल बगल चल रहे थे। गाने बजाने वाले अपनी अपनी टोलियाँ बनाकर राई गाते और बेड़नियोंको नचाते जाते थे। रातके समय सैकड़ों मशालें और दुशाखा जल उठते। रंग बिरंगी तेज आतिशबाजी छूटती चलती, जिसके प्रकाशमें बरातियोंकी जरीकी पोशाकें जगर मगर हो उठतीं।"

इस प्रकारके वर्णन हमें जगह जगह कहानी कहने वालेके मुँहसे सुननेको मिलते हैं, जिनसे मनोरंजनके साथही हमारे ज्ञानकी भी बहुत कुछ वृद्धि होती है। सूरजकी धूपसे बचानेके लिए लगाये गये छत्रके लिए 'सूरजमुखी' शब्दका प्रयोग बड़ा सार्थक है। मशाल शब्द चलित भाषाका अरबीका है। परन्तु उसी अर्थमें ठेठ हिन्दीका 'दुशाखा' शब्द जोकि एक साथ जलने वाली दो बत्तियों या मशालोंका द्योतक है, हमें इन ग्राम-कहानियोंकी भाषामें ही सुननेको मिल सकता है।

इन कहानियोंका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन है। उपदेश देना नहीं। मानवीय भावोंके घात प्रतिघात और उनके उतार चढ़ावके चित्रणसे उन्हें कोई मतलब नहीं और न बुद्धि और तर्कके ऊहापोहके लिए वहाँ कोई स्थान है। उनकी तो अपनी एक अलग दुनिया है, जहाँ सभी कुछ असंभव संभव है, सभी कुछ वहाँ आसानीसे बिना किसी प्रयासके घटित होसकता है। तोता-मैना, हाथी-घोड़े, शेर-चीते यहाँ तककि जड़ पदार्थभी मनुष्योंकी तरह बात करते हैं। दीवारों या पटों पर खिंचे हुए चित्रभी आवश्यकता पड़ने पर सजीव होजाते हैं, साधु या फकीरोंकी दी हुई झोली, लाठी या मालासे मनोवांछित पदार्थ प्राप्त होजाते हैं। मुँहसे बात निकलते ही सोनेके सतखंडा महल बनकर तैयार होजाते हैं और चुटकी बजातेही हम काठके घोड़ा पर सवार होकर आकाशसे बातें करने लगते हैं। यह सब होते हुए भी सीखने और समझनेकी यथेष्ट सामग्री उनमें मौजूद है। ये कहानियाँ जिस युगकी हैं उस युगके मानवोंकी चिन्ताधात को प्रकट करती हैं, और उनके रहन-सहन, आचार-विचार आदिका भी बहुत कुछ आभास हमें उनसे मिलता है। पाश्चात्य देशोंमें लोक-कथाओंका अध्ययन एक अलग ही विषय माना जाता है। लोक-कथाओंके सैकड़ों संग्रह अंग्रेजीमें मौजूद है। अनेक लेखकोंने अपना जीवन इन्हीं कहानियोंके संग्रह और अनुशीलनमें बिताया है। कई अंग्रेज़ लेखकोंने भारतीय कहानियोंके अंग्रेज़ी संग्रह तैयार किये हैं और उनपर विद्वत्तापूर्ण निबंध भी लिखे है। * यह बात अब अच्छी तरह मालूम होगई है कि देहातके अक्षरज्ञान-विहीन बृहतसमाजमें कथा-कहानियों, गीतों आदिके रूपमें मौखिक साहित्यकी जो सामग्री बिखरी पड़ी है वह बड़ी मूल्यवान है। उसे

---

* देखिए इस संबंधमें डा० वैरियर एलविनका लेख (लोकवार्त्ता वर्ष २ अङ्क १) जोकि पढ़ने योग्य है। —लेखक।

यत्नपूर्वक सुरक्षित करके रखनेकी आवश्यकता है, ताकि अध्ययनके लिए वह विद्वानोंको सुलभ होसके और नष्ट होने से भी बची रहे।

इस संग्रहमें मेरी २५ कहानियाँ संग्रहीत हैं। इनमें से एकको छोड़ कर सभी 'मधुकर' वर्ष १ और २ की जिल्दोंमें प्रकाशित होचुकी हैं। हिन्दी-ज्ञान मंदिर लिमिटेड, फोर्ट, बंबईकी कृपासे वे प्रथमबार पुस्तकके रूपमें छपकर हिन्दी पाठकोंके लिए सुलभ होरही हैं, एतदर्थ मैं ज्ञानमंदिर के संचालकों, विशेषकर श्री भानुकुमारजी को धन्यवाद देता हूँ। साथही इस अवसर पर श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी तथा श्री यशपालजी जैन बी० ए० एल-एल० बी० के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता जिनकी कृपासे मेरी ये कहानियाँ पहले पहल 'मधुकर' पत्रके द्वारा हिन्दी-जगतमें प्रसिद्ध हुईं। अन्तमें लोकवार्त्ता सम्पादक श्री कृष्णानन्दजी गुप्तको धन्यवाद देना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ, जिन्होंने लोक वार्त्ता संग्रह करनेके कार्यमें मुझे समय समय पर अनेक उपयोगी सम्मतियाँ प्रदान करनेकी कृपाकी और इस प्रथम भागके लिए कहानियोंके अध्ययन पर एक गवेषणापूर्ण भूमिका लिख देनेका कष्ट भी उठाया। उससे लोक कथाओंके पढ़ने और देखनेकी एक नई दृष्टि पाठकोंको मिलेगी।

देवरी (सागर)
वर्ष प्रतिपदा, सम्वत् २००४ वि०

शिवसहाय चतुर्वेदी

प्रस्तावना

जो देश कहानियोंका घर रहा हो, जहाँ क्या दर्शन, क्या धर्म, और क्या विज्ञान, सभी जगह कहानियाँ भरी पड़ी हों, जहाँ आजसे लगभग सत्तरह सौ वर्ष पूर्व गुणाढ्य कवि द्वारा 'बृहत् कथा' नामके एक कथा काव्यके लिखे जानेका पक्का पता चलता हो, और जहाँ सोमदेव भट्ट रचित 'कथा सरित्सागर' जैसा कहानियोंका अनुपम ग्रन्थ-रत्न मौजूद हो, वहाँ यह कहना कि उस देशके निवासियोंको कहानी कहने-सुननेसे बड़ा प्रेम रहा है, कोई नई बात नहीं होगी। हमारे यहाँ कहानियाँ कही ही नहीं गईं, बल्कि लिखी भी गईं। मन बहलावके लिए प्राचीन कालसे उनका उपयोग होता रहा है। राज दरबारोंमें कहानी कहने वालोंका बड़ा सम्मान था, और नागरिक भी कहानी कह-सुनकर अपना मनोविनोदन किया करते थे। साहित्यमें इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। वाल्मीकि रामायणमें लिखा है कि भरत जब अपने मामाके यहाँ थे तो उन्होंने एक दिन रातमें कोई बुरा सपना देखा। उससे उनका मन बड़ा खिन्न हो गया। तब उनके संगी-साथियोंने नाना प्रकारकी कथा-कहानियोंसे उनका मन बहलाया। कालिदासके मेघदूतमें, जहाँ मेघके उज्जयिनी पहुँचनेकी बात आती है वहाँ यक्ष उससे कहता है कि जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो वहाँके जानकार लोग वत्स देशके राजा उदयनके द्वारा उज्जयिनीके महाराज प्रद्योतकी प्यारी कन्या वासवदत्ताके हरे जानेकी कथा सुना-सुना कर बाहरसे आए हुए अपने संबंधियोंका मन बहला रहे होंगे। कैसी सुन्दर बात है! इससे इतना पता और चलता है कि हमारे पूर्वजोंको काल्पनिक कथाओंके स्थानपर पुराकालके वीर पुरुषोंके चरित्रोंका बखान करना अधिक प्रिय था। इस प्रकार श्रुति-अनुश्रुतिके आधार पर वे अपने इतिहासकी रक्षा करते रहते थे।

पुराण-पुरुषको भी कहानी कहने सुननेसे प्रेम रहा होगा जैसाकि वर्त्तमान समयकी आदिम-जातियोंके जीवनके अध्ययनसे हम जान सकते

हैं। असभ्य से असभ्य और पिछड़ी हुई जातियाँ भी कहानी कहने-सुननेसे प्रेम रखती हैं। 'अलाव' + की जो प्रथा हमारे देहातोंमें प्रचलित है, उसकी परम्परा बड़ी प्राचीन है। वह उस पुराने बीते युगका स्मारक है जब मनुष्य जंगलोंमें रहता था, और रहनेका कोई ठौर उसके पास नहीं था। दिन भर तो वह शिकारकी टोहमें घूमता और रात्रिके समय शीतके प्रकोप तथा हिंस्र पशुओंके आक्रमणसे अपनी रक्षा करनेके लिए जलती हुई आगके चारों ओर सिमटकर बैठता था। उस समय वह नाना प्रकारके वार्त्तालापसे अपना मन बहलाता होगा, अपने कुलके पूर्व पुरुषों और वीरों की कथा-कहानियाँ कहता-सुनता होगा, और दृश्यमान् जगतके नाना रहस्योंको समझनेकी चेष्टा करके उनपर अपने ढंगकी टीका-टिप्पणियाँ भी करता रहा होगा। हम कह सकते हैं कि पुराण-पुरुषकी इस प्राथमिक अग्निके पाससे ही, जहाँ पर कि वह शीतसे ठिठुरा हुआ अपने को गरमाता था, हमारी सबसे पहली और पुरानी कहानियोंका सूत्र-पात हुआ, और यहीं हमारे अनेक काव्यों और नाटकोंके कथानकोंकी नींव भी पड़ी। थोड़ेमें हम कह सकते हैं कि हमारी सब संस्थाओंका विकास यहीं से हुआ।

लोक कथाएँ कई प्रकारकी होती हैं। अध्ययन की सुविधाके लिए हम उनको (१) गाथा (२) कहानी और (३) दृष्टान्त, इन तीन मुख्य भागोंमें बाँट सकते हैं। यहाँ पर जो कथाएँ संकलित हैं, वे प्रायः सभी कहानीका रूप हैं। लिखित गाथाओंकी हमारे यहाँ कमी नहीं है। परन्तु यहाँ हमें अलिखितसे ही मतलब है। गाथा अलौकिक पुरुषों और वीरों का चरित्र गान है। उसमें अतिरंजित रूपसे उनके जीवनकी घटनाओंका वर्णन होता है जिनके विषयमें यह विश्वास किया जाता है कि वे कभी जीवित रहे हैं। वर्णित पात्रोंके निश्चित नाम होते हैं और स्थानोंके नाम भी दिये रहते हैं। पंजाबके राजा रसालु और बुन्देलखंडके कारसदेव, दोनोंही लोक गाथाओंके उत्तम उदाहरण हैं। दोनोंही पद्यमें हैं— आवश्यक नहीं कि लोककथा गद्यमें ही हो। स्वनर्टनके प्रसिद्ध कथा

+ जाड़ेके दिनोंमें लोग आग जलाकर चारों ओर सिमटकर बैठ जाते हैं और तापते हैं। इस जलती हुई आगके स्थानको 'अलाव' कहते हैं। —लेखक।

संग्रह Romantic Tales from the Punjab (रोमान्टिक टेल्स फ्रॉम दी पंजाब) में राजा रसालूकी गाथा हमें पढ़नेको मिलती है। वहाँ पर ऐतिहासिक दृष्टिसे उसका विवेचनभी किया गया है। कहा गया है कि उसके जीवनसे संबद्ध अधिकांश घटनाएँ भलेही काल्पनिक हों, पर वह स्वयं एक ऐतिहासिक व्यक्ति था। और भी कई विद्वानोंका ध्यान तबसे इस कथाकी ओर आकृष्ट हुआ है। अभी तक वह मूल रूपमें पंजाबकी ही गाथा मानी जाती थी। परन्तु थोड़े दिन हुए तब हमारे देशके सुप्रसिद्ध मानव विज्ञान शास्त्री डा० वैरियर एलविनने बिलासपुर ज़िलेके एक अहीरके लड़केसे उसका एक 'मध्य-भारतीय' पाठ प्राप्त किया है, जोकि कई दृष्टियों से हमारे लिए बड़ा महत्वपूर्ण है। उसका मूल विवरण उन्होंने Man in India (Dec. 1944) में प्रकाशित किया है। कारुणदेवकी गाथा भी 'लोकवार्त्ता' (वर्ष १, अङ्क १-२) में छपचुकी हैं।

गाथाओंमें केन्द्र-विन्दुके रूपमें सत्यका कुछ न कुछ अंश अवश्य होता है, जिसके चारोंओर मनुष्यकी कल्पनाप्रियता और अतिरंजनाशील प्रवृत्तिके कारण कुछ ऐसी घटनाएँ जुड़जाती हैं जो सत्य भी हो सकती हैं और असत्य भी। गाथाओंको हम इतिहासका प्राथमिक रूप कह सकते हैं। संसारकी ऐसी कोई जाति नहीं जिसमें अपने पूर्वजों या वीर पुरुषोंकी एकाध गाथा प्रचलित न हो। उनका उद्देश्य इतिहासकी रक्षा करना रहा है और वास्तवमें उन्हें इतिहासके अन्तर्गत ही स्थान मिलना चाहिए। उनमें कल्पनाका जो घटाटोप होता है उसे यदि हम किसीप्रकार छिन्न कर सकें तो कुछ ऐसे सच्चे तथ्य हमारे हाथ लग सकते हैं कि जिनसे वास्तविक इतिहासके निर्माणमें बहुत मदद मिल सकती है।

लोक कहानियाँ, गाथासे भिन्न होती हैं। मैक कुलक (Mac Cullock) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Childhood of Fiction में दोनोंका सुन्दर विवेचन किया है। कहानी साधारणतः गाथासे छोटी होती है। उसमें सबकुछ अस्पष्ट और अनिश्चित होता है। उसे हम सच्चे अर्थमें 'हवाई' कह सकते हैं। उसमें पात्रों या स्थान के नाम नहीं होते। यह उसका एक मुख्य लक्षण है। वह देश और कालके बन्धनसे परे होती। 'किसी समय एक राजा था' कौन था, कब था, कहाँ हुआ ? यह जाननेका कोई उपाय हमारे पास नहीं। पर इससे स्वयं लोक कहानीका

मूल्य हमारे लिए कम नहीं होता। कहानी मानव-मनकी सृष्टि है। अतः बाह्य जगत् से उसका कुछ सम्बन्ध न भी हो तो भी मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे मानवी चेष्टाओंके अध्ययनकी बहुत कुछ सामग्री हमें मिल सकती है।

सम्भवतः कहानियाँ गाथाओंका विकृत रूप हैं। एक स्थानकी गाथा दूसरे स्थानमें जाकर कहानीका रूप धारण करलेती है। पात्रोंके नाम बदल जाते हैं या बिल्कुल ही उड़जाते हैं, नई नई घटनाओंका समावेश उसमें करदियाजाता है, और असली घटनाओंमें काँट-छाँट भी करदी जाती है। इसप्रकार किसी एक स्थानपर किसी एक वीर पुरुषका जो चरित्र गाथाके रूपमें प्रचलित है वह दूसरे स्थानमें जाकर कहानी-मात्र रहजाता है। दूसरी ओर यह भी बहुत सम्भव है कि एक कहानी ही वीरगाथाके रूपमें प्रचलित होजाये। ऐसी दशामें यह कहना बड़ा कठिन है कि गाथा और कहानी, इन दोमेंसे कौन अधिक प्राचीन है, और न कहनेका कोई कारण हमारे पास है कि लोक-कथाके इन दोनों रूपोंकी स्वतन्त्र भावसे अपनी अपनी सृष्टि हुई। परन्तु आदिम जातियोंमें प्रच-लित कहानियोंकी छानबीन करके अधिकांश विद्वान् इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि प्राचीनतम कहानियाँ गाथाओंके रूपमें ही विद्यमान रही होंगी, विशेषकर जब हम गाथाओं और पौराणिक आख्यानोंको परस्पर सम्बद्ध मान लेते हैं। मैक कुलक साहब लिखते हैं—'बहुतसी यूरोपियन कहानियोंकी घटनाएँ आदिम जातियोंमें स्वतन्त्र कहानियोंके रूपमें देखनेको मिलती हैं, परन्तु वहाँ वे उनके किसी न किसी पूर्वज या पौराणिक पुरुषके नामके साथ सम्बद्ध रहती हैं। ये गाथाएँ अथवा पौराणिक आख्यान हैं। इसके अतिरिक्त आदिम पुरुषोंमें प्रचलित किसी एक छोटी या बड़ी कहानीके बारेमें जब यह सिद्ध होजाता है कि वह बाहरसे उनके यहाँ पहुँची है तब हम देखते हैं कि उस कहानीके पात्र उनके कुलके प्रसिद्ध देवता या वीर पुरुष बन गये हैं। दूसरे शब्दोंमें जो एक लोककथा अन्यत्र कहानीके रूपमें प्रचलित है वह आदिम पुरुषोंके बीच पहुँचकर गाथाका रूप धारण करलेती है।

लोक कहानियोंसे अकसर कुछ न कुछ उपदेश मिलता है, परन्तु वह प्रच्छन्न होता है, पंचतन्त्रकी कथाओंकी भाँति स्पष्ट नहीं। गाथामें उपदेशका अभाव होता है। उसमें चरित्रगान ही मुख्य है।

जीव-जन्तुओं और जड़ पदार्थोंको लेकर कही गई उपदेशमूलक कहानियोंको हमने दृष्टान्तका नाम दिया है। अंग्रेज़ीमें इनको 'फेबल' (Fable) कहते हैं। ईसपकी 'फेबल' या कथाएँ जगत् प्रसिद्ध हैं। कहानियोंके साथ दृष्टान्तोंका घनिष्ठ सम्बन्ध है। कहानियोंमें भी दृष्टान्तोंके मूलतत्वोंका समावेश रहता है। पशु-पक्षी बोलते हैं, रूप बदलते हैं, पशुसे मनुष्य बनते हैं, और मनुष्य पशुका रूप धारण करलेते हैं, और मनुष्यों तथा पशुओंका विवाह भी होता है। इसप्रकारकी सब कहानियों, अथवा उनके मूलतत्वों की सृष्टि उस युगमें हुई जब कि मनुष्य प्रकृतिके सभी जड़ और चेतन पदार्थोंको अपने जैसा ही समझता था। जीव-जन्तुओं और अपनेमें वह कोई अन्तर नहीं देखता था। उसका यह अटल विश्वास था कि जीव-जन्तु भी उसकी तरह बोल सकते हैं, और उसकी तरह ही विवेक-बुद्धिसे काम भी लेसकते हैं। मनुष्यके पुनर्जन्म तथा एक दूसरी योनिमें जन्म लेनेके विश्वासने भी इन कहानियोंके विकासको प्रोत्साहन दिया होगा। साथ ही उसके नानाप्रकारके धार्मिक विश्वासों और विधि-निषेध संबन्धी धारणाओंको भी उनके जन्मका एक कारण मानना चाहिए। इसप्रकारकी कहानियाँ भारतवर्षमें ही विशेषरूपसे फल-फूल सकती थीं, जहाँके निवासियोंका एक पूर्वकालसे पुनर्जन्मके सिद्धान्तमें विश्वास रहा है। जीव-जन्तु सम्बन्धी कहानियाँ आदिम और असभ्य जातियोंमें सर्वत्र प्रचलित मिलती हैं। इनमें प्रायः उपदेशकी कमी होती है। उनका उद्देश्य अधिकतर जीव-जगत्की किसी विशेषताको प्रकट करना या केवल कल्पनाकी वेदनाको शान्त करना होता है। आसामके सेमा नागाओंमें प्रचलित एक कहानी है :—

"साँभर और मछलीमें दोस्ती थी। साँभरने मछलीसे कहा—देखो मित्र, शिकारी कुत्ते जब मेरा पीछा करें तो मैं नदीके किनारे-किनारे भागूँगा। तुम पानी उछालकर मेरे दौड़नेके निशान मिटादिया करो। यह कहकर वह चलागया। फिर मछलीने साँभरसे कहा-देखो मित्र, मनुष्य जंगलसे विषैली छाल तोड़कर लाते हैं और उससे मुझे मार डालते हैं। तुम उस लताको अपने सींगोंसे खोद डाला करो, और उसने ऐसा ही करनेको कहा। तबसे यही कारण है कि साँभर अपने सींगोंसे उस विषैली लताको बराबर खोदता रहता है' †

† J. H. HUTTON, The Sema Nagas, p. 305

यह एक सीधी-सादी कहानी है जिसमें मन समझानेके लिए एक जीव विशेष के स्वाभाविक कार्यके लिए कारण खोजनेकी चेष्टा कीगई है। इसप्रकारकी व्याख्यात्मक कहानियोंसे ही आगे चलकर हमारे अनेक रूपकों और आख्यानोंकी सृष्टि हुई और उनसे ही पशु-पक्षी सम्बन्धी उन दृष्टान्तमूलक कथाओंका सृजन हुआ जो कि जातक-कथाओं और पञ्चतंत्रमें हमें अपने एक अति उत्कृष्ट रूपमें देखनेको मिलती है। यह बात अब अच्छी तरह सिद्ध होगई है कि पशु-पक्षी सम्बन्धी कहानियोंका जन्म चाहे भारतवर्षमें न हुआ हो, परन्तु उनके सबसे पुराने साहित्यक रूपके दर्शन हमें यहीं होते हैं। भारतसे ही ये कहानियाँ प्राचीनकालमें चीन, तिब्बत और फ़ारस गईं। ग्रीस भी वे ईस्वी सन् के बहुत पहले पहुँच गई होंगी, क्योंकि ईसपके नामसे जो कहानियाँ प्रसिद्ध हैं उनमेंसे अनेक ऐसी हैं जिन पर भारतीय कहानियोंकी स्पष्ट छाप मौजूद है। इन कहानियोंका सबसे पुराना और प्रथम संग्रह ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दीका बताया जाता है। सन् ५७० ई० के लगभग पंचतन्त्रकी कथाओंका अनुवाद पहलवी भाषामें होगया था और उसके पश्चात् सोलहवीं शताब्दीके समाप्त होते होते यूरोपकी अनेक भाषाओंमें वे रूपान्तरित होगईं।

इन सभी प्रकारकी कहानियोंकी, जिनका कि हमने ऊपर उल्लेख किया, उत्पत्तिके मूल में मनुष्यकी धार्मिक प्रवृत्तियाँ ही अधिकतर कार्य करती रही हैं। पुराण-पुरुषके जीवनमें मनोरंजनके लिए बहुत कम स्थान था। उसके अधिकांश कार्य-कलाप एक विशेष प्रकारके धार्मिक आवेगसे प्रेरित रहते थे, जो कि परोक्षरूपसे उसके मनको उत्फुल्लित करते थे, परन्तु उनका प्रकृत उद्देश्य तो कुछ और ही होता था। हम यह नहीं कहते कि हमारे पुराने पूर्वजोंको, पुराण-पुरुषको, कहानियाँ सुननेसे प्रेम नहीं रहा होगा, और उन्हें सुनकर उसके मनको खूब आनन्द नहीं मिलता होगा। आमोद-प्रमोद द्वारा मनको प्रसन्न करनेकी प्रवृत्ति मनुष्यमें स्वाभाविक है। हम जिस प्रकार कभी तो साधारण क़िस्से-कहानियों और कभी उच्च-कोटिके साहित्यिक उपन्यासों द्वारा अपना मनोरञ्जन करते हैं उसी प्रकार पुराण-पुरुष भी कहानियाँ सुनकर प्रसन्न होता होगा। अंतर केवल इतना है कि हम जिनको मनगढ़न्त या काल्पनिक समझकर पढ़ते या सुनते हैं, वे सब कहानियाँ उसके लिए जीवनका एक गम्भीर सत्य थीं, हँसीमें

टाल देनेकी गप्पाष्टक नहीं। हमारी पुरानी कहानियोंके मूलमें मनुष्यकी क्या प्रेरणा काम कर रही होगी, इस बातको हम उस समय और भी अच्छी तरह समझ सकेंगे जबकि हम उन कहानियों पर दृष्टि डालते हैं जोकि व्रत और पूजाके अवसर पर हमारे यहाँ कही और सुनी जाती हैं। हमारे देशकी अनेक व्रत-कथाएँ लोक-कहानियोंके रूपमें प्रचलित हैं और खोज करने पर ऐसी लोक-कहानियाँ भी मिलेंगी जो किसी प्रकार व्रत-कथाओंके रूपमें अंगीकार करली गई हैं। यहाँ पर 'काम बिड़ारिन' नामसे जो कहानी प्रकाशित है उसे हमने एक विशेष व्रतके अवसरपर थोड़े से हेर फेर के साथ अपने घरकी स्त्रियोंको कहते सुना है और लोक-कथाके रूपमें तो वह यहाँ उपस्थित की ही गई है। इसीप्रकार 'अपना अपना भाग्य' वाली कहानी भी जो कि मैंने अन्यत्र पढ़ी है, एक व्रत-कथा है, और 'निपूते का पूत' भी उसी श्रेणीकी है। वह बंगालमें भी व्रतकथाके रूपमें प्रचलित है। हमारे देशमें शास्त्रीय अथवा पौराणिक व्रतोंके अतिरिक्त स्त्रियोंके और भी अनेक व्रत हैं, जिन्हें हम लौकिक कहते हैं। हिन्दू-धर्मशास्त्रोंसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं। इन व्रतोंके साथ कुछ न कुछ कथा जुड़ी रहती है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इन कथाओं का पौराणिक आख्यानोंसे कोई सम्बन्ध नहीं होता। उनमें कहीं भी राम, कृष्ण, ध्रुव, प्रह्लाद आदिका नाम नहीं आता। वे कल्पित कहानीमात्र होती हैं। उनके अध्ययनसे दो बातें स्पष्ट होजाती हैं। एक तो यह कि वे पौराणिक युगसे बहुत पहले की हैं। उनमें हम आर्य और अनार्य धर्मके सम्मिलनका इतिहास पढ़ सकते हैं। दूसरे यह है कि हमारे पूर्वजोंके पास जो कहानियाँ थीं उनमेंसे अधिकांशका उपयोग वह अपने धार्मिक अनुष्ठानोंके अवसर पर या उनकी पूर्त्तिके लिए ही किया करता होगा। हमारे पास ऐसी कई कहानियाँ नोट हैं जो स्त्रियोंके व्रतोंसे सम्बन्ध रखती हैं। उन्हें बाहरके लोग नहीं सुन सकते। कुछ तो विवाहित लड़कियोंके लिए वर्जित मानी जाती हैं और कुछ ऐसी कि जिन्हें कुलके बाहरके लोग नहीं सुन सकते। परन्तु ये सभी कहानियाँ धार्मिक निषेधकी इस सीमाको तोड़कर लोक-कहानियोंके रूपमें प्रचलित हैं। इससे भी हमारी प्राथमिक कहानियोंके अधिकतर धार्मिक होनेकी बात सिद्ध होती है।

यद्यपि मनोरंजन और समय बिताना कहानीका मुख्य उद्देश्य

नहीं रहा, परन्तु ये दोनों ही प्रवृत्तियाँ, जो कि प्रत्येक मनुष्यमें स्वाभाविक हैं, शीघ्र ही कहानीके विकास और संवर्द्धनका एक प्रबल साधन बनगईं। कहानी वास्तवमें तभी जीवित रह सकती है जबकि उसमें आनन्दकी कुछ मात्रा विद्यमान हो। यह आनन्द कई प्रकारका होसकता है। साधारण मनोविनोद या कुलकुलाहटसे लेकर उच्चकोटिकी बौद्धिक रसानुभूति उसमें सम्मिलित है। अतः विभिन्न प्रकारकी रुचि और श्रेणीके लोगोंको प्रसन्न करनेकेलिए विविध प्रकारकी कहानियाँ रचीजाने लगीं, और समय पाकर कहानी कहना ही नहीं, लिखना भी एक महत्वका विषय बनगया। प्रारंभिक कहानियोंमें कहानीका मुख्य पात्र दया, दाक्षिण्य, वीरता और दानशीलताका अवतार होता है। हर हालतमें नानाप्रकारकी विघ्न-बाधाओंको पार करके अपने इच्छित लक्ष्यको प्राप्त करनेमें उसे सफल होना ही चाहिए। इस प्रकारकी पार्थिव सफलताका महत्व जब कुछ कम हुआ तो मनुष्यके चारित्रिक विकासपर अधिक ज़ोर दिया जाने लगा, कठिनाइयाँ आती हैं, आवें; कष्ट होते हैं होते रहें; परन्तु मनुष्यको सत्यसे नहीं डिगना चाहिए। यहींसे हमारे साहित्यिक कथा काव्योंका सूत्रपात होता है, जिनका विवेचन हमारे विषयसे बाहर है।

सभी देशोंके लोगोंकी अपनी लोककथाएँ होती हैं, और वे जिन लोगोंकी होती हैं उनके सांस्कृतिक जीवनके विविध अङ्गों और विश्वासोंसे सम्बन्ध रखती हैं। इस दृष्टिसे लोक - कथाएँ हमारे लिए केवल मनोरंजनका ही नहीं, अपितु गम्भीर भावसे अध्ययन और अन्वेषणका विषय भी बन जाती हैं। सहानुभूतिपूर्वक उनके भीतर प्रवेश करके उनकी छानबीन करनेसे हमें बहुत कुछ शिक्षा मिल सकती है। किसी एक कहानीका जन्म कब, कहाँ, किस प्रकार हुआ होगा, वह किन रूपोंमें किस प्रकारके लोगोंमें, कहाँ कहाँ प्रचलित है, उसकी वर्णनशैली कैसी है, किसप्रकारके शब्दों और मुहावरोंका प्रयोग उसमें हुआ है, और मनुष्यकी किन चेष्टाओं या प्रवृत्तियोंका अधिक परिचय हमें उससे मिलता है ये सभी बातें स्वयं अध्ययनका एक रोचक विषय है। अभी इस दृष्टिसे लोकसाहित्यके संग्रह और निरीक्षणका अभ्यास हमें नहीं पड़ा। केवल साहित्यिक विचार - विन्दुसे ही हम उसकी विवेचना करके रहजाते हैं। परन्तु गत पचास वर्षके भीतर पाश्चात्य विद्वानोंने इस दिशामें जो कार्य किया है उससे लोककथाएँ अब

केवल मनोरञ्जनकी वस्तु नहीं रहीं, अपितु उनके पठन-पाठन और अध्ययनको एक 'शुद्ध एवं नियमबद्ध शास्त्र' का रूप मिलगया है। स्वयं भारतीय कहानियोंके सम्बन्धमें प्रचुर साहित्य तैयार हुआ है और बराबर होरहा है। देशके विभिन्न प्रान्तों और जातियोंकी लोककथाओंके सुन्दर अंग्रेज़ी संग्रह ही प्रकाशित नहीं हुए हैं, बल्कि उनके विषयमें कुछ सुन्दर विवेचनात्मक साहित्यकी सृष्टि भी हुई है। पेंज़रके 'कथा सरित्सागर' के संस्करणके लिए भारतीय कथाओंके विद्यार्थी चिरकाल तक ऋणी रहेंगे। फिर इस सम्बन्धमें, जैसा कि डा० वैरियर एलविन एक स्थल पर लिखते हैं, मॉरिस ब्लुमफील्ड, नार्मनब्राउन, रूथ नार्टन, एम. बी. एमेन्यू इन सब अमेरिकन विद्वानोंके नाम भी विशेषरूपसे उल्लेखनीय हैं। स्वयं वैरियर एलविन हमारे देशके एक विख्यात लोकवार्त्ताशास्त्री हैं। मध्य-भारतके लोक-साहित्यकी वे बड़ी सेवा कर रहे हैं। अभी थोड़े दिनोंके भीतर ही उनके तीन ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। उनमेंसे दो तो मेकल पर्वत श्रेणीके बीच निवास करनेवाली वन्य-जातियोंके लोकगीतोंसे सम्बन्ध रखते हैं और एक लोक-कथाओंसे। मैं इन कहानियोंके संबन्धमें उनके इस कथा-संग्रहकी ओर, जोकि 'फोक टेल्स ऑफ महाकोशल' के नामसे प्रकाशित हुआ है, विशेषरूपसे पाठकोंका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। भारतीय लोककथाओंका यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है और उसके पढ़नेसे कथाशास्त्रकी वर्तमान प्रगतिके विषयमें हमारे ज्ञानकी बहुत कुछ वृद्धि हो सकती है।

लोककथाओं के वैज्ञानिक अध्ययनकी नींव जर्मनीके सुप्रसिद्ध विद्वान् जैकब लुडविग ग्रिम (१७८५-१८६३) ने डाली, जिसके नामकी 'ग्रिम्स फ़ेरी टेल्स' (Grimms' Fairy Tales–ग्रिमकी कहानियाँ) आज संसारमें सर्वत्र विख्यात हैं। जैकब ग्रिम भाषाशास्त्रका पण्डित था, और अपने विषयके अध्ययनके लिए लोकसाहित्यके महत्वको भलीभाँति जानता था। उसने अपने भाई विलियम कार्ल ग्रिमके सहयोगसे अपने देशके ग्राम-वृद्ध लोगोंके पास जाजाकर पुरानी कहानियों और गाथाओं का संग्रह किया और भाषाकी छान-बीनके लिए उनका उपयोग करके विद्वन्मण्डलीके बीच लोकसाहित्यके आसनको सदाके लिए ऊँचा उठाया।

संग्रहीत सामग्रीको उनने सुसम्पादितरूपसे दो खण्डोंमें प्रकाशित किया; एकमें कहानियाँ और दूसरेमें गाथाएँ। ये कहानियाँ ही 'ग्रिम्स फेरी टेल्स' हैं। भाषाशास्त्रके क्षेत्रमें ग्रिम-बन्धुओंकी देन बड़ी मूल्यवान् मानी जाती है। प्रत्येक भाषा-विज्ञानी ट्यूटानिक भाषाओंके वर्ण-परिवर्त्तनके सम्बन्धमें स्थापित किये गये उनके 'ग्रिम-सिद्धान्त' से परिचित है। परन्तु फेरीटेल्स लिखकर वे अमर होगये हैं। ये कहानियाँ अपनी सरल लेखनशैली, रोचकता एवं शास्त्रीय गुणके कारण क्या बालक, क्या युवा और क्या विद्वान् सबके निकट समानरूपसे प्रिय बनी हुई हैं। ऐसा कदाचित् ही कोई अंग्रेज़ी पढ़ा लिखा व्यक्ति होगा जिसने 'ग्रिम्स फेरी टेल्स' की एकाध कहानी कभी न पढ़ी हो, या इस पुस्तकका नाम न सुना हो। इस कथा-ग्रन्थको एक बार विधिपूर्वक पढ़े बिना लोकवार्त्ताशास्त्रके विद्यार्थीका काम ही नहीं चल सकता। जैसा कि हम आगे चलकर बतायेंगे 'ग्रिम्स फेरी टेल्स' की अधिकांश कहानियाँ भारतीय कहानियोंसे प्रभावित हैं। यहाँ बुन्देलखण्डकी २५ सुन्दर कहानियाँ उपस्थित कीगई हैं। उनमेंसे कम से कम चार तो थोड़ेसे हेर-फेरके साथ ज्यों की त्यों ग्रिमके संग्रहमें मौजूद हैं, और शेषमेंसे अधिकांशके मुख्य लक्षणोंकी खोज उनमें की जासकती है। इस दृष्टिसे भारतीय कहानियोंके प्रेमियोंके लिए तो इस किताबका पढ़ना आवश्यक होजाता है। विद्वानोंके निकट इस संग्रहका जो इतना सम्मान है उसका मुख्य कारण यह भी है कि ग्रिम्स बन्धुओंने इनके संग्रहमें यथार्थता और सत्यकी रक्षाका पूरा ध्यान रक्खा है। अपनी ओरसे कहीं कुछ नहीं जोड़ा, और न किसी कहानीकी घटना या उसके बाह्यरूपको अलंकृत करनेकी ही चेष्टा की। कहानीको जैसा दूसरोंसे स्वयं सुना वैसा ही लिख दिया। निस्संदेह कहानी कहनेका ढंग उनका अपना रहा। परंतु यथासम्भव उन्होंने किसी महत्वपूर्ण विषयको लिखनेसे नहीं छोड़ा।* दरअसल कहानी-संग्रहकी जिस पद्धतिका उन्होंने अवलम्बन किया वह आज भी हमारे लिए आदर्श बनी हुई है।

---

* "(Our first aim in collecting these stories has been exactness and truth. We have added nothing of our own, have embellished no incident or feature of the story, but have given its substance just as we

ग्रिम के पश्चात्, बॉप, मैक्समूलर, बेनफे आदि जर्मन विद्वानोंके प्रयत्न से कहानियोंके शास्त्रीय अध्ययनकी महत्ता और भी अच्छी तरह सिद्ध होगई। वास्तवमें देखागया कि एक साधारण सी लोक-कहानी भी अन्वेषणका गम्भीर विषय बन सकती है, और उससे भी कुछ न कुछ रोचक और ज्ञानवर्द्धक तथ्य निकाले जासकते हैं। एकबार जब यह बात प्रकट होगई तब इस नवीन क्षेत्रमें काम करनेवाले सुयोग्य पंडितोंकी कमी नहीं रही। मानव-विज्ञानवेत्ताओंका ध्यान शीघ्र ही लोक-कहानियों की ओर आकृष्ट हुआ और मानव-संस्कृतिके रहस्योंको समझनेके लिए उनका उपयोग किया जाने लगा। केवल सभ्य जातियोंकी ही नहीं, असभ्य और पिछड़ी हुई जातियोंकी लोक-कथाओंका भी तेज़ीसे संग्रह होने लगा। उनका वर्गीकरण किया जानेलगा। उनके साम्य और वैषम्यकी परीक्षा होने लगी और उनपर गवेषणापूर्ण निबन्ध लिखे जाने लगे। इस प्रकार कहानियोंके अध्ययनकी इतनी प्रचुर सामग्री जर्मनी' फ्रान्स, इंग्लैंड और अमेरिकामें अबतक तैयार हुई है—और अब भी बराबर होरही है—कि उसको एक जगह इकट्ठा करके रखने से एक बड़ी लाइब्रेरी बन सकती है। एक अमेरिकन विद्वान्‌ने तो भारतीय कथाओंका एक विश्वकोष तैयार करनेका ही बीड़ा उठाया था। परन्तु उनकी अचानक मृत्युसे यह शुभ कार्य पूरा नहीं होसका।

एक ही प्रकारकी कहानियाँ संसारके विभिन्न देशोंमें फैली हुई मिलती हैं। उनकी वर्णनशैलीमें अन्तर होसकता है। वे छोटी बड़ी हो सकती हैं। परन्तु कथानकोंकी दृष्टिसे वे सब एक हैं। यह एक ऐसा तथ्य है जो कहानियोंके अध्ययनको साधारण पाठकके लिए भी बहुत रोचक बनादेता है। संसारके सब जड़ और चेतन पदार्थ जिस प्रकार नब्बे के लगभग मूलतत्वोंको लेकर बने हैं, उसी प्रकार हम कह सकते हैं कि थोड़े

---

ourselves received it. It will of course be understood that the mode of telling and carrying out of particular details is principally due to us, but we have striven to retain everything that we knew to be characteristic .... " Grimm's Fairy Tales, Introduction, OXFORD EDITION).

से मूल कथानक और लक्षण हैं जिनके मिश्रण और सम्मिश्रणसे हमारी लोक-कथाएँ बनी हैं, और नित्य बनती रहती हैं। एक दैत्य या दानवकी कन्या है, एक राजकुमार पहुँचता है, बहुतसी विघ्न-बाधाएँ सामने आती हैं, अन्तमें दैत्यको मारकर या अपने वीरताभरे कामोंसे उसे प्रसन्न करके वह उसकी कन्याके साथ विवाह करनेमें सफल होता है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि कन्या प्रारम्भसे ही अपने पिताके विरुद्ध राजकुमारका पक्ष लेती है, और आवश्यकता पड़ने पर उसकी मदद भी करती है। यह लोककहानियोंका एक प्रिय कथानक है। संसारके अनेक देशोंकी भाषाओंमें उसके आधार पर गढ़ी गई कहानियाँ प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार कुछ और भी विशेष लक्षण या 'अभिप्राय' हैं जोकि कहानियोंमें नित्य नये रूपमें हमारे सामने आते हैं। मनुष्य पशु-पक्षियोंकी बोली समझता है और उससे कहानीके आगे बढ़नेमें सहायता मिलती है; संकटमें पड़े हुए मनुष्यकी पशु-पक्षी मदद करते हैं; सौतेली माँ लड़केको देश-निकाला देती है पर अन्तमें लड़का फिर घर लौटकर आजाता है; एक मृत पुरुषकी आत्मा किसी पशु या मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करती है; कामप्रद वस्तुओंसे मनचाही इच्छाएँ पूर्ण होजाती हैं; नायकके प्राण किसी-एक वस्तु में रहते हैं, जिसके नष्ट होनेसे स्वयं नायक मरजाता है अथवा नायक पर कोई संकट आने पर उस वस्तुके रूप-रंगमें परिवर्त्तन होने लगता है, जिससे कि नायकके मित्रों या घरके लोगोंको उसका पता चल जाता है, किसी एक रहस्यको प्रकट करनेके कारण जिसे बतानेकी पहलेसे मनाही है, मनुष्य पत्थरका बनजाता है; ये सब अभिप्राय लोक-कहानियोंमें बारम्बार अवतरित होते हैं। कभी कभी तो थोड़े से हेरफेरके साथ पूरी कथाओंकी पुनरावृत्ति होती रहती है और कभी दो चार कहानियोंके मुख्य लक्षणोंका उपयोग करके एक नई कहानी गढ़ ली जाती है। हमारे देशमें तो ऐसा शुरूसे ही होता रहा है। प्राचीन वेदोंके आख्यान प्रायः अधिक विस्तारके साथ काव्यों और कथा-संग्रहोंमें पुनः अवतरित होते हैं, जैसा कि अमेरिकन कथाशास्त्री ब्लुमफील्डका कहना है। जातक, पंचतन्त्र, हितोपदेश, कथा-सरित्सागर, वेतालपंचविंशति (वेतालपचीसी), सिंहासन द्विंत्रिंशति (सिंहासनबत्तीसी), शुक सप्तति (शुकबहत्तरी) आदि प्राचीन कथा-ग्रंथोंके 'अभिप्राय' हमारे देशमें सर्वत्र फैले हैं और

हमें नित्य नये ढंगसे सुननेको मिलते हैं। 'कब,-कौनसा अभिप्राय, किस समय, किस स्थल पर और किस सिलसिलेमें प्रकट होउठे, इसका कुछ ठीक नहीं। साथ ही यह भी स्मरण रखने योग्य है कि प्राचीनकालसे ही लोगोंकी घुमक्कड़ टोलियां, समुद्री व्यापारियां, और एक देशसे दूसरे देश की चढ़ाई पर गये हुए सिपाहियों द्वारा कहानियाँ बराबर सच्चे परिव्राजक की भाँति पृथिवीकी परिक्रमा करती रही हैं। एक देशकी कहानियाँ दूसरे देशमें पहुँचती और वहाँके लोगोंकी रुचि और कल्पनाके अनुसार नई नई वेश-भूषामें प्रकट होती रही हैं। ऐसी दशामें किसी भी कहानीके विषयमें यह कहना कि वह कहाँ की हैं, बड़ा कठिन है। केवल उनके मूल लक्षण या कथानक ही उनके और देश-देशान्तरोंकी यात्राके रहस्योंको समझनेमें हमारे थोड़ा बहुत सहायक बनते हैं।

यहाँ पर जो कहानियाँ संग्रहीत हैं वे सब बुन्देलखण्डकी हैं, वे बुन्देलखण्डकी भूमिमें पली-पुसी हैं, और बुन्देलखंडकी ग्रामीण जनताके मुखसे सुनकर लिखी गई हैं। परन्तु वे हमारे लिए इस कारण और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं, कि दो चारको छोड़कर उन सबके कथानक बहुत पुराने और व्यापक हैं, ऐसे कि जो लोक कहानियोंमें सब जगह पाये जाते हैं। कुछ स्थलों पर तो पूरी की पूरी कहानी भारतके अन्य प्रान्तोंमें ही नहीं, बल्कि बाहर भी प्राप्त होती है। 'मित्रोंकी प्रीति' शीर्षक कहानी बंगालमें प्रचलित है। रेवरेन्ड लाल बिहारीदेने 'फकीरचाँद' के नामसे हमें उसे अपने प्रसिद्ध संग्रहमें स्थान दिया है। उसके बाद ग्रिम बन्धुओंके संग्रहमें 'फेथफुल जॉन' (स्वामिभक्त जॉन) के रूपमें उसके दर्शन होते हैं। इस जर्मन कहानीमें राजाका नौकर जॉन मंत्रीके पुत्र विनयका स्थान ग्रहण करता है। दोनोंका मूल अन्तर यह है कि ग्रिमकी कहानीमें जॉन जब पत्थरका होजाता है तब बताई गई विधिके अनुसार उसे पुनर्जीवित करने केलिए राजा अपने पुत्रकी बलि देता है, और जॉन जीवित हो उठता है। उसके साथ राजाका पुत्र भी। किन्तु मित्रोंकी प्रीतिमें बलिकी घटनाको बचा लिया है। यह अंश हमें कहानी कहनेवालोंकी तरफ़से बदल दिया गया मालूम होता है, क्योंकि बलिदानकी बात ही अधिक स्वाभाविक है। कहानीके उदय और विनय नाम भी बाहरके मालूम होते हैं।

'सन्त-बसन्त' कहानी बड़ी रोचक है। और इस बातका एक

उत्तम उदाहरण है कि किस प्रकार एक ही कहानी विभिन्न रूपोंमें प्रचलित होजाती है। यह कहानी The Two Brothers' (दो भाई) शीर्षक से 'इण्डियन एन्टीक्वेरी' के सन् १८८२-८८ के अङ्कोंमें दो विभिन्न रूपोंमें छप चुकी है। एक काश्मीरी और दूसरा मध्यप्रान्तीय पाठ 'सन्त-बसन्त' के पाठ से बहुत कुछ मिलता है। परन्तु बुन्देलखण्डी कहानीमें प्रारम्भकी जो भूमिका है उसका इण्डियन एन्टीक्वेरीके दोनों ही पाठोंमें अभाव है। साधारण दृष्टिसे देखने पर भी इन तीनों कहानियोंकी समानता प्रकट होजाती है। पर उल्लेखनीय बात यह है कि यह कहानी 'सीत-बसंत' के नामसे बंगालमें भी प्रचलित है। वहाँकी यह एक प्रसिद्ध कहानी है। काफी बड़ी है और चार विभिन्न रूपोंमें वहाँ छपी मिलती है। पहला रूप श्री दक्षिणारंजन मित्र मजूमदारका, दूसरा लालबिहारीदेका, तीसरा हरिनाथ मजूमदारका और चौथा एक मुसलमान लेखक ग़ुलाम क़ादिरका है। श्रीदीनेशचन्द्रसेनने अपनी पुस्तक The Folk-Literature of Bengal में इन चारों ही पाठोंका विवेचन करके बड़े सुन्दर ढंगसे बताया है कि किस प्रकार एक ही कहानी विभिन्न रुचि और विचार रखने वाले लोगोंके हाथ में जाकर विभिन्न रूप धारण करलेती है। वे लिखते हैं कि मुसलमानी पाठमें विदेशी प्रभाव बहुत स्पष्ट है। उसमें जो घटनाएँ जोड़दी गई हैं वे एक हिन्दू परिवारमें कभी सम्भव नहीं होसकतीं।

'सोनेकी चिड़िया' कहानी ग्रिम्स फेरी टेल्स में 'गोल्डन बर्ड' के रूपमें लगभग ज्यों की त्यों विद्यमान है। इसी प्रकार 'तीसमारखाँ' की शनाख़्त हम एक पंजाबी कहानीमें 'फतेखाँ' के रूपमें कर सकते हैं और ग्रिम बन्धुओंके संग्रहमें Brave Little Tailor (बहादुर दर्ज़ी) के भीतर तो उसके दर्शन होते ही हैं। मूलमें कहानियाँ एक हैं। अन्तर केवल इतना है कि बुन्देलखण्डी तथा पंजाबी कहानीका नायक कोरी या जुलाहा है, जब कि ग्रिमकी कहानीमें दर्ज़ी।

वैरियर एलविनके कथा-संग्रहमें The Brave Children (बहादुर लड़के) के नामसे जो कहानी दीगई है वह 'काम-बिड़ारिन' से बहुत कुछ मिलती जुलती है। इसी प्रकार उनके संग्रह की Two Clever Cheats (दो ठग) कहानीमें हम 'ठगोंकी मुठभेड़' कहानीका प्रतिबिम्ब पाते हैं।

कृतज्ञ जीव - जन्तुओंकी कहानियाँ संसारके साहित्यमें बहुत प्राचीन हैं। मनुष्य किसी एक जीवकी संकटसे रक्षा करता है, और वह जीव समय पर अपने उपकारका बदला चुकाता है। पंचतन्त्र और कथा सरित्सागरमें इस प्रकारकी कई कथाएँ हैं। 'बासुकी नाग' उसी तरहकी कहानी है। कुतूहलकी बात है कि सेसिल हेनरी बोम्बसके प्रसिद्ध कथा-संग्रह 'Folklore of the Santal Parganas' फोकलोर आफ दी संताल परगनाकी 'Ramai and the Animal' (रमई और जानवर) शीर्षक कहानीमें इसकी छाया देखनेको मिलती है। एक किसानके पाँच लड़के हैं, आपसमें लड़ते रहते हैं। तब किसान एकदिन उन सबको सौ-सौ रुपये देकर रोज़गारके लिए भेजता है। चार लड़कोंमेंसे किसीने ढोर, किसीने भैंसें और किसीने घोड़े खरीदे। छोटे लड़केने जाकर देखा कि एक आदमी एक बिल्लीको मार रहा है। उसे खरीद लिया। फिर इसी तरह उसने एक कुत्ता, एक ऊद बिलाव और एक साँप खरीदा। बाप बड़ा नाराज़ हुआ विशेषकर सर्प देखकर। तब साँपने कहा 'मुझे मेरे माता-पिताके पास लेचलो तो वे तुम्हें बहुतसा पुरस्कार देंगे। तुम मेरे पितासे अँगूठी माँगना'। किसानके लड़केने ऐसा ही किया। साँपको लेकर वह उसके घर जाता है। वहाँ नागराजसे उसे अँगूठी मिलती है, जिसमें मुँह माँगा वरदान देनेका गुण है। पाठक देखेंगे कि दोनों कहानियोंके अभिप्राय एक हैं।

इसीप्रकार और भी कई कहानियोंके साम्य स्थापित किये जा सकते हैं। पर हम केवल एक को और लेते हैं और वह है 'सब रंग दग़ाबाज़' इस कहानीका मूल कथानक बहुत प्राचीन है। हेरोडोटस (ई. पू. ४५०) ने इसी तरहकी कहानी लिखी है। दो भाई हैं, जो कि राजाके खज़ानेमें जाकर चोरी किया करते हैं। एक भाई उनमेंसे पकड़ा जाता है। तब दूसरा उसका सिर काटकर लेजाता है कि जिसमें चोरको कोई पहचान न सके। राजा तब उस मृत चोरकी लाशको खुले मैदानमें रखवा देते हैं और पहरा बिठलवा देते हैं कि अगर कोई लाशके पास आकर रोये गाये तो उसको पकड़ लिया जाये। दूसरा चोर अपनी माके बारबार कहनेसे भाईकी लाश लेने जाता है। होशियारीसे पहरेदारोंको शराब पिलाकर बेहोश कर देता है और उनकी एक तरफकी दाढ़ी मूँछ साफ़ करके लाश लेकर चम्पत होजाता है। तब राजाकी लड़की ढिंढोरा

पिटवाती है कि जो आदमी सबसे बड़ा चालाक हो उससे मैं अपनी शादी करूँगी। तब वह चोर आता है। अपना परिचय देता है, परन्तु जब राजकुमारी उसे पकड़नेकी चेष्टा करती है तो अपने हाथकी जगह अपने मृत भाईका हाथ उसे थमाकर उसे चला जाता है। अन्तमें राजा उस चोरके साथ अपनी लड़कीका विवाह कर देनेका वादा करता है, और चोर प्रकट होकर लड़कीको ग्रहण करता है।

विद्वानोंमें इस कहानीके मूल उद्गमके विषयमें बड़ी चर्चा हुई है। लोगोंने बड़े बड़े अटकल लगाये हैं। कुछ उसे ग्रीसका बताते हैं, कुछ प्राचीन मिश्रका और कुछ भारतमें उसकी उत्पत्ति देखते हैं। जो कुछ भी हो, कथा सरित्सागरमें घट-कर्पर नामके दो चोरोंकी जो कहानी है, वह इसी प्रकारकी है। पर इस विषयमें सबसे अधिक कुतूहल तो हमें तब हुआ जब हमने एन्टन वौन शीफनर (F. Anton Von Schiefner) के 'तिबेटन टेल्स' (Tibetan Tales) नामक ग्रंथकी एक कहानीमें 'सबरंग दगाबाज़' के जोड़ीदारके दर्शन किये। इस ग्रन्थ की कहानियाँ प्राचीन बौद्ध साहित्यसे सम्बन्ध रखती हैं। वे तिब्बती भाषासे जर्मनमें और जर्मनसे इंगलिशमें अनूदित होकर पाठकोंके लिए सुलभ हैं। इनमें चौथे नम्बरकी The Clever Thief (दी क्लेवर थीफ़—चालाक चोर) नामकी जो कहानी है वह हमारी प्रस्तुत कहानीसे मूलरूपमें बिल्कुल मिलती है। तिब्बती कहानीमें दो भाइयोंकी जगह चोरोंका स्थान चचा-भतीजे ग्रहण करते हैं। चचा चोरी करते पकड़ा जाता है और भतीजा उसका सिर काटकर भाग जाता है। राजा चचा-चोरकी लाश पर पहरा बिठा देता है। पर भतीजा चालाकीसे उसका दाह-संस्कार करता है, यहाँतक कि राजाकी लड़कीको क़ाबूमें करके अन्तमें उससे विवाह भी करलेता है। बुन्देलखंडी कहानीमें राजाकी लड़की घटना-मंच पर नहीं आती। इसके अतिरिक्त सबरंग स्वयं अपने भाईका सिर वहाँ अपने हाथसे नहीं काटता, बल्कि राजाकी तलवारके गिरनेसे नौरंगका सिर अलग होता है और सबरंग उसे लेकर भागजाता है। फिर भी दोनों कहानियाँ मूलमें एक हैं, इससे इनकार नहीं किया जासकता। यहाँ हमें कथा सरित्सागरके घट-कर्परको नहीं भूलजाना चाहिए और न हेरोडोटसकी कहानीके चोरोंको ही। इन चारों

कहानियोंका घटना-विन्यास भिन्न होसकता है, पर सबके कथानकोंका केन्द्र-बिन्दु एक ही है, जिसके चारों ओर अपने अपने ढंगसे घटनाएँ इकट्ठी करदी गई हैं। दो चोर हैं। उनमेंसे एक पकड़ा जाता है। तब इस भयसे कि वह पहचान न लिया जाये, दूसरा उसका कटा हुआ सिर लेकर भाग जाता है और अन्तमें अपनी चालाकीसे पूरी लाशको प्राप्त करनेमें सफल होता है। यही कहानीका असली कथानक है। उसका जन्म कहाँ, किस प्रकारसे हुआ होगा, किस प्रकारकी प्रवृत्तिके लोगोंमें उसका पोषण हुआ और किस प्रकार देश और कालकी सीमाको अतिवाहित करके वह एक ओर तिब्बत और दूसरी ओर ग्रीस पहुँचा ये सब प्रश्न क्या हमारे लिए रोचक नहीं हैं? और क्या उनसे हमें कुछ शिक्षा नहीं मिलती? क्या वे हमें यह संदेश नहीं देते कि ऊपरी भेदभावके रहते हुए भी मनुष्य सदैव एक रहा है और सांस्कृतिक मिलनकी चेष्टा उसमें सदैव दृष्टिगोचर होती रही है।

दो विभिन्न स्थानोंमें एक ही प्रकारका विचार, विशेषकर जब कि वह कुछ विचित्र हो, स्वतन्त्ररूपसे उत्पन्न नहीं हो सकता। संभव है किसी एक नैतिक सत्यका प्रतिपादन करने अथवा मनुष्यके किसी एक स्वभावकी किसी एक कोरको प्रकट करनेके लिए दो देशोंके दो व्यक्ति अलग अलग एक ही प्रकारकी कहानीकी कल्पना करलें, परन्तु यह तो बिल्कुल ही असम्भव है कि किसी एक आदमीकी चालाकीकी पराकाष्ठा दिखानेके लिए विभिन्न देशोंके लोग विभिन्न समयमें किसी एक ही प्रकारके कथानककी सृष्टि करें। वह तो किसी एक ही मस्तिष्ककी उपज होसकता है। और विभिन्न देशों और जातियोंके लोगोंके निकट सम्पर्कमें आनेसे ही इस प्रकार देश और कालकी दूरीमें व्याप्त हुआ होगा। अधिकांश कहानियोंके विषयमें यही बात कही जा सकती है उनमेंसे हर एकका कुछ न कुछ रोचक इतिहास है जिसके साथ मानवी संस्कृतिकी कहानीका कुछ न कुछ रहस्य छिपा हुआ है। मानव-विज्ञानशास्त्री आज उसीकी खोजमें हैं। वह मनुष्यका एक सर्वाङ्गपूर्ण इतिहास तैयार करना चाहता है, एक ऐसा ही इतिहास जिसमें कोई बात छूटने न पावे, और जिसमें अतीत और वर्त्तमान, छोटे और बड़े, सभ्य और असभ्यका एकसा लेखा हो। इसलिए सब देश और कालकी और सब समाजकी लोककहानियाँ उसके

निकट समान रूपसे आदर और सम्मानकी पात्र हैं। वह उन सबको एक-सी प्रेम-दृष्टिसे देखता है, और मानवके इतिहासका एक पूरा और सही ब्यौरा तैयार करनेकेलिए उन सबसे कुछ-न-कुछ शिक्षा ग्रहण करना चाहता है। अतः ऐसा कोई भी कार्य कि जिससे उसे अपने इस महान् उद्देश्यकी पूर्त्तिमें सहायता मिले, कितना शुभ, कितना पवित्र और कल्याण-कारी है पाठकोंको यह बतानेकी आवश्यकता नहीं।

मैं इन अत्यन्त रोचक और सारगर्भित कहानियोंसे, जोकि यहाँ प्रकाशित हैं, गत पाँच वर्षसे परिचित हूँ। उनसे मेरी एक प्रकारकी घनिष्ठता स्थापित होगयी है। मैं उन्हें बराबर पढ़ता ही नहीं रहा हूँ, उनके विषयमें निरन्तर सोचता-विचारता भी रहा हूँ। पर उनके संग्रहकर्त्ता श्रीशिवसहायजी चतुर्वेदीसे मेरा और भी पुराना परिचय है। मुझे उनके दर्शनोंका सौभाग्य प्राप्त नहीं है, पर मैं उनको उनकी पुस्तक 'यूरोपमें बुद्धि-स्वातन्त्र्य' के द्वारा एक दीर्घकालसे जानता हूँ, उस समयसे जबकि मैं विद्यार्थी था। मैं समझता हूँ, पच्चीस वर्षसे अधिक होगये होंगे। फिर भी उनकी यह कृति मेरे पास सुरक्षित है, और लेकीकी मूल पुस्तकके अभावमें मेरे बड़े काम आती है। मैंने उसे कई बार चावसे पढ़ा है, और कभी भी व्यर्थ नहीं। अतः उनके एक पुराने पाठक और प्रशंसकके नाते उनके कहानी-संग्रहकी भूमिका लिखते हुए मुझे परम हर्ष हुआ है। मेरी बड़ी इच्छा थी कि उन्होंने अबतक १५० के लगभग जो कहानियाँ एकत्र की हैं वे सब टीका-टिप्पणियों सहित एक जिल्दमें प्रकाशित होतीं। मैंने एक प्रकारसे उसका भार भी अपने ऊपर लेलिया था। पर काग़ज़ और प्रेसकी असुविधासे वैसा सम्भव नहीं होसका।

मैं इस कहानी-संग्रहके प्रकाशनको हिन्दी-साहित्यकी एक महत्व-पूर्ण घटना मानता हूँ। हमारे यहाँ लोकगीतोंके अच्छे संग्रह हुए हैं। पर जहाँतक मैं जानता हूँ यह पहला अवसर है जब कि किसी एक जनपदकी कहानियाँ विधिवत् संग्रहीत कीजाकर हिन्दी-पाठकोंकी सेवामें पहुँचरही हैं। केवल साहित्यिक रसानुभूतिकी दृष्टिसे ये कहानियाँ बराबर पढ़ी जायेंगी। और वह दिन भी हिन्दीमें दूर नहीं जबकि विद्वानोंके निकट सतत चर्चाका विषय बनकर वे अपने लेखककेलिए साहित्य-क्षेत्रमें एक स्थायी कीर्त्ति

अर्जित करनेमें समर्थ होंगी। इस प्रकारकी कहानियोंसे किसीभी देशके बाल-साहित्यकी शोभा बढ़ सकती है यह कहनेकी आवश्यकता ही नहीं।

अतः मुझे आशा है सभी दृष्टियोंसे हिन्दीमें इस कहानी-ग्रंथका उचित समादर होगा।

लोकवार्त्ता परिषद्
टीकमगढ़ (मध्यभारत)
७-४-१९४७

कृष्णानन्द गुप्त

बुन्देलखंडकी ग्राम्य कहानियाँ

१

पसीनेकी कमाई

किसी नगरमें एक ग़रीब ब्राह्मण रहता था । उदर - पोषणकेलिए वह बस्तीसे हर रोज़ भिक्षा माँग लाता और ईश्वर - भजनमें लगा रहता । ज़रूरतसे ज्यादा वह कभी नहीं माँगता । वहाँका राजा बड़ा धनवान् और गो-ब्राह्मणोंका बहुत भक्त था । ब्राह्मणोंको वह कभी अपने द्वारसे विमुख नहीं जाने देता था । दूर - दूरके ब्राह्मण, साधु - सन्त उसके पास आते, और मुँहमाँगा दान पाकर उसे आशीष देतेहुए चलेजाते । एक दिन इस ब्राह्मणकी स्त्रीने अपने पतिसे कहा, "दूर - दूरके ब्राह्मण तो राजाके पाससे मनमाना धन माँगकर लेजाते हैं और तुम यहाँ - के - यहीं एक दिन भी राजाके पास नहीं जाते । जन्मभर कंगाली कहाँतक भोगूँ ! आज तुम जाओ और राजासे कुछ माँग लाओ ।"

ब्राह्मणने अपनी स्त्रीको समझाकर कहा, "तू तो बावरी है । अपन ब्राह्मणको धनकी क्या ज़रूरत । भोजनके लायक़ रोज़ माँग ही लाता हूँ। राजाका धन अच्छा नहीं होता । वह हम लोगोंको नहीं लेना चाहिए ।"

परन्तु स्त्री अड़गयी । कहनेलगी, "मैं तुम्हारी ये शास्तरकी बातें नहीं सुनना चाहती । तुम तो माला लेकर जपने बैठजाते हो और मेरे सिर पर यह कच्ची गिरस्ती लदी हुई है । इन लड़के - बच्चोंको क्या पहनाऊँ और क्या खिलाऊँ ? आखिर वे भी तो चार जनोंके बीचमें रहते हैं, अपने संगके लड़के-बच्चोंको पहनते - ओढ़ते और तरह - तरहकी चीज़ें खाते - पीते देखते हैं तो उनका मन भी ललचाता है । आज तुम राजाके पास जाओ । राजा भलामानुस है । जाओगे तो वह ज़रूर तुमको मुँहमाँगा दान देगा ।"

लाचार होकर ब्राह्मण राजाके पास गया । राजा उस समय शिकार खेलने गया था । ब्राह्मण आशीर्वादकी बेलपत्री और फूल रखकर लौट आया । ब्राह्मणीने उसे दूसरे दिन फिर भेजा, परन्तु संयोगवश राजा फिर भी न मिला । ब्राह्मणी तो पीछे पड़गयी थी । उसने निश्चय करलिया था

के इस बार राजाके यहाँसे धन अवश्य मँगाना चाहिए। उसने तीसरे दिन फिर ब्राह्मणको भेजा।

राजा ब्राह्मणोंका भक्त तो था ही, ब्राह्मणको आते देखकर उसने उठकर आदरके साथ प्रणाम किया और आसनपर बिठाया। फिर नम्रताके साथ कहा, "महाराज, आपने मेरी कुटियामें पधारकर मेरे ऊपर बड़ी कृपा की है। मैं दो दिन आपको नहीं मिल सका इसका मुझे दुःख है। उसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। अब आप बतलाइये कि आपका शुभागमन किसलिए हुआ है। मैं आपकी क्या सेवा करूँ।"

ब्राह्मणने कहा, "राजन्, जो आप मेरी इच्छानुसार दान देना स्वीकार करें तो मैं कहूँ।" राजाने कहा, "हाँ हाँ कहिए, मेरे बड़े भाग्य जो मैं आपकी कुछ सेवा कर सकूँ।"

ब्राह्मणने निवेदन किया, "मैं और कुछ नहीं चाहता। आप अपनी पसीनेकी कमाईमेंसे मुझे चार पैसे दान दीजिए।"

ब्राह्मणकी बात सुनकर राजा सन्नाटेमें आगया। विचार करके देखने लगा कि खज़ानेमें जो अटूट धन भरापड़ा है उसमें मेरी मिहनतकी कमाई एक कौड़ी भी नहीं है। मैं ब्राह्मणको चार पैसे कहाँसे दूँ? फिर राजाने कुछ सोचकर ब्राह्मणसे कहा, "महाराज, आप मुझे एक दिनकी मुहलत दीजिए। मैं कल आपको आपका मुँहमाँगा दान देसकूँगा।" सुनकर ब्राह्मण कल आनेकेलिए कहकर लौटआया।

ब्राह्मणको खाली हाथ लौटा देखकर ब्राह्मणीने आश्चर्यसे पूछा "क्या राजाने कुछ भी नहीं दिया?"

ब्राह्मणने कहा, "नहीं, कल देनेको कहा है।"

ब्राह्मणी समझी मेरे पतिने बहुत-सा धन माँगा होगा जिसे राजा आज नहीं देसका। कल इंतज़ाम करके देगा। यह सोचकर वह मन-ही मन बहुत खुश हुई।

इधर ब्राह्मणके जातेही राजाने अपने राजसी कपड़े उतारकर फटे-पुराने कपड़े पहने और मज़दूर जैसा वेष बनालिया। रानीके पूछने पर राजाने सब हाल बताया तो रानीने कहा, "थोड़ा ठहरिए, मैं भी आपके साथ चलती हूँ। मैं अपनी यह साड़ी बदल आऊँ।" ऐसा कहकर रानी गयी और एक पुरानी साड़ी पहनकर आगयी।

इस प्रकार वेष बदलकर राजा-रानी दोनों मज़दूरीकी तलाशमें शहरमें निकले। लुहारोंके मुहल्लेमें जाकर राजाने आवाज़ लगायी, "किसीको मज़दूर चाहिए मज़दूर!" आखिर एक लुहारने, जो गाड़ीके पहियोंपर हाल चढ़ानेकी तैयारी कररहा था, राजाको बुलाकर कहा, "देखो, पहले तुम्हें खलीत धौंकना पड़ेगी और जब ताव आजायगा तब घन पीटना होगा।" फिर रानीकी ओर देखकर कहा, "तुम्हें कुएँसे पानी लाकर यह हौदी भरना पड़ेगा और कोयलेवाले घरसे कोयला भरभरकर भट्टीमें डालना होगा। तुम दोनों आदमियोंको दिनभरमें दो-दो आने मिलेंगे। काम पसन्द हो तो करो, नहीं तो रास्ता नापो।"

राजा-रानी दोनों लुहारका बतलाया हुआ काम करनेलगे। राजा खलात धौंकने लगा, परन्तु उससे काम ठीक तौरसे बनता नहीं था। बीच बीचमें हाथ रुकजाता। तब लुहार नाराज़ होकर ठीक काम करनेकी ताकीद करता। बारम्बार बतलानेपर राजा जैसे-तैसे अपना काम करने-लगा। रानी कुएँसे पानी भरभरकर लानेलगी। दो-चार घड़ा पानी खींचते ही हाथमें फफोले पड़गए। किसी तरह बड़ी कठिनाईसे उसने पानीका हौज़ भरा। बीच-बीचमें लुहारके कहनेपर रानी टोकनीमें कोयला भरलाती और भट्टीमें डालदेती थी। कोयला भरनेसे रानीके कपड़े और गोरे हाथ काले होगए। ताव आजानेपर लुहारने पाँत भट्टीमेंसे निकालकर पहिएपर जमाई और एक घन अपने हाथमें लेकर और एक राजाके हाथमें देकर कहा, "देखो, बारी-बारीसे घन इसपर पटकना। हाथ ज़रा इधर-उधर न होने पावे।" राजा ज़ोर-ज़ोरसे घन पटकने लगा, लेकिन उनका निशाना ठीक नहीं बैठता था। कभी घन हालपर गिरता तो कभी पहियेपर। मज़दूरोंका यह हाल देखकर लुहारिन भीतरसे बड़बड़ाती हुई आई और लुहारसे कहने लगी, "तुमने आज यह कहाँके बेसऊर मज़दूर लगाए हैं। इनसे काम नहीं होगा। इन्हें अलग करके दूसरे मज़दूर लगाओ। ये सस्ते मज़दूर तुम्हारा सब काम बिगाड़ देंगे।"

राजा-रानी दोनों लुहार और लुहारिनकी डाँट-फटकार सहते हुए अपना-अपना काम मन लगाकर कररहे थे। घन पटकते-पटकते राजाका शरीर पसीनेसे तर होगया, ज़ोर-ज़ोरसे साँस चलने लगी। रानी भी पानी भरते-भरते और कोयला झोंकते-झोंकते थकगयी थी। उसके कोमल

अङ्गसे पसीनेकी धारें बहरही थीं। बड़ी मुश्किलसे एक पहियेपर हाल चढ़पायी। लुहारने तब उनसे कहा, "देखो भाई, यह काम बहुत मिहनतका है, तुम लोगोंसे ठीक-ठीक नहीं बनेगा। अभी तुमने दो घंटे काम किया है उसकी मज़दूरी लो और अपने घर जाओ।"

राजाने कहा, "जैसी मरज़ी, जितनी मज़दूरी आप देना चाहें, देदें। हम लोग दूसरी जगह काम खोज लेंगे।"

लुहारने राजा-रानी दोनोंको दो-दो पैसे दिये जिन्हें वे बड़ी खुशीसे लेकर घर आये। आज उनको पता चला कि पसीनेकी कमाई कैसी होती है, उसकेलिए कितनी मिहनत करनी पड़ती है। घर आकर राजाने चारों पैसे अलग सन्दूकमें रखदिए और अगले दिन सबेरे ब्राह्मणको बुलाकर उसे देदिए।

ब्राह्मण राजाको आशीर्वाद देकर घर लौटा और ब्राह्मणीसे कहा, "लो, मैं राजाके यहाँसे दच्छिणा लेआया हूँ।"

ब्राह्मणी प्रसन्न होकर दौड़ी। पास आतेही उसने अपना आँचल फैलादिया। ब्राह्मणने अपने पिछौरेकी गाँठसे पैसे निकालकर उसमें डालदिये। ब्राह्मणी बड़ी आशा लेकर आई थी। परन्तु जब उसने देखे सिर्फ चार पैसे तो वह ठिठककर रहगयी और उन्हें दूर फेंकदिया। जलभुनकर ब्राह्मणसे बोली, "तुम जैसे दरिद्रीसे राजाके यहाँ जाकर भी न माँगा गया। समुन्दरके पास जाकर भी प्यासे लौट आए। राजा ऐसा धर्मात्मा है कि वह ब्राह्मणोंको मुँहमाँगा दान देता है। आज और कोई होता तो इतना धन माँगकर लाता कि उसकी सात पीढ़ी बैठी खातीं, लेकिन तुम ऐसे हो कि चार पैसे लेकर आए। शरम भी नहीं आती।"

इस प्रकार ब्राह्मणी बहुत देरतक बकझक करतीरही। ब्राह्मणने पैसे उठाकर आँगनमें तुलसीघरापर रखदिये। सोचा, ब्राह्मणी शान्त होजायगी या उसे जब ज़रूरत पड़ेगी तब वह उन्हें उठालेगी। परन्तु पैसे वहीं रक्खे रहे और ऊपर फूल-बेलपत्र आदिके गिरनेसे नीचे मिट्टीमें दबगए। ब्राह्मण-ब्राह्मणी दोनों ही उनकी खबर भूलगए।

कुछ दिनों बाद तुलसीघरामें चार पेड़ उगे। चारों लहलहाते थे और देखनेमें भले मालूम पड़ते थे। ब्राह्मणी उन्हें फूलोंके झाड़ समझकर कभी-कभी पानी देदिया करती थी। चार महीने बाद वे चारों पेड़ बड़े होगए

और फूलने लगे। एक-एक पेड़में टोकनियों फूल फूलते थे। सूखनेपर उनमेंसे मोती झरते। मोतियोंकी चमक और खूबसूरती देखते बनती थी। ब्राह्मण-ब्राह्मणीने कभी मोती नहीं देखे थे। वे समझते थे कि ये बीज हैं।

हर रोज फूल इतने झरते कि तुलसीघराके चारों ओर पुरजाते थे। ब्राह्मणी नित्य उन्हें समेटकर एक टोकनीमें भरलेती और घरके एक कोनेमें डालदिया करती थी।

इस प्रकार कई महीने होगये। घर मोतियोंसे भरगया। एक दिन एक तरकारीवाली आई। ब्राह्मणीको तरकारीकी ज़रूरत थी, परन्तु उस दिन उसके पास देनेको कुछ भी नहीं था। तुलसीघराके आसपासके बटोरेहुए मोती सूपामें रक्खे थे। ब्राह्मणीने उनकी ओर इशारा करतेहुए कहा, "इन बीजोंके बदलेमें कुछ तरकारी देना चाहो तो देजाओ।" तरकारीवालीने दूरसे उन बीजोंकी चमक-दमक देखकर कहा, "ये है क्या बहन! कामकी चीज़ हुई तो लेलूँगी।" ब्राह्मणीने सूपा आगे सरकातेहुए कहा, "तुम्हीं देखलो, ये इस तुलसीघरामें लगेहुए फूलोंके बीज हैं।" तरकारीवालीने जब पाससे देखा तो उसे मालूम हुआ कि ये तो मोती हैं। उसने खुशीसे उन मोतियोंके बदले मनमानी तरकारी देदी। उस दिनसे वह प्रायः रोज़ आती और मोतियोंके बदलेमें तरकारी देजाती। तरकारीवाली और ब्राह्मणी दोनों ही इस लेनदेनसे खुश थीं। तरकारीवाली यह सोचकर खुश होती थी कि मुझे एक पैसेकी तरकारीमें हज़ारोंका माल मिलता है और ब्राह्मणी यह सोचकर कि इन बीजोंके बदले हमारी तरकारीकी गुज़र चलती है। इस प्रकार कई महीने बीतगए।

राजमहलमें कई जोड़े राजहंसोंके थे। वे मोती चुगते थे। राजाका यह नियम था कि जब राजहंस मोती चुगलेते तब भोजन करता। एक दिन मोती चुकगए। इस कारण राजहंसोंको दाना नहीं मिला और राजपरिवार भी भूखा रहा। सारे नगरमें यह बात फैलगयी। यह समाचार ब्राह्मण-ब्राह्मणीने भी सुना। उन दोनोंने विचार किया कि राजा बड़ा दानी है। शायद आज सबकुछ उसने दान करदिया है, यहाँतक कि उसके पास खाने तकको कुछ नहीं बचा दीखता। ऐसी हालतमें हम लोगोंको उसकी सहायता करनी चाहिए।

इसके बाद ब्राह्मणने स्त्रीसे कहा, "तू कहे तो इनमेंसे कुछ बीज

राजाको देआऊँ। तू कहती थी न कि इनके बदलेमें भाजी-तरकारी और थोड़ी-बहुत खानेकी चीज़ें मिलजाती हैं।"

ब्राह्मणीने कहा, "हाँ मैं तो रोज इनके बदलेमें सौदा लिया करती हूँ। तुम्हारी इच्छा हो तो देआओ। किसी दिन राजाके यहाँसे उससे हज़ारगुना मिल जायगा।"

ऐसा कहकर ब्राह्मणी अन्दरसे एक टोकनी बीजे भरलायी। उनमें कूड़ा-करकट मिलाहुआ था, उसे सूपासे साफ़ करके उन्हें एक पोटलीमें बाँधदिया। ब्राह्मण पोटलीको सिरपर रखकर राजाके पास पहुँचा। राजाने उसका आदर-सत्कार करके पूछा, "कहिये महाराज, सेवकको क्या आज्ञा है?"

ब्राह्मणने कहा, "मैंने सुना है आज आपके घर रसोई नहीं बनी। मैं जानता हूँ आप इतने दानी हैं कि अपना सबकुछ देडाल सकते हैं। यही सोचकर आजकी गुज़रके लायक़ यह तुच्छ भेंट लाया हूँ। अनाज तो मेरे घर नहीं है, परन्तु ये एक प्रकारके फूलोंके बीज हैं। इनके बदलेमें भाजी-तरकारी और खाने-पीनेकी चीज़ें मिलजाती हैं। आप मेरी इस तुच्छ भेंटको स्वीकार कीजिए।"

ब्राह्मणकी बातें सुनकर राजाको बड़ा कौतूहल हुआ। उसने कहा, "देखूँ, कैसे बीज हैं?" ब्राह्मणने पोटली खोलकर रखदी। राजा देखकर चकित होगया। अरे, ये तो मोती हैं। इस ग़रीब ब्राह्मणके पास इतने मोती कहाँसे आये? क्या ये सचमुच मोती ही हैं? मेरी आँखोंका भ्रम तो नहीं है? ऐसा सोचकर उन्होंने एक मुट्ठीभर दाने उठाकर राजहंसोंके सामने फेंकदिए। राजहंस तुरन्त चुगनेलगे। राजाको पूरा भरोसा होगया कि ये सचमुच मोती ही हैं। एक-एक मोती सैकड़ों रुपयोंकी क़ीमतका है।

अब राजाने ब्राह्मणसे पूछा "महाराज, तुम्हारे पास इतने मोती कहाँसे आये? सचसच बताओ।"

ब्राह्मणने कहा "ऐसे बीज तो हमारे घर हैं। हमारे तुलसीघरामें फूलोंके चार पेड़ हैं, उन्हींमेंसे रोज़ झरते हैं। भरोसा न हो तो मेरे घर चलकर देखलीजिए।"

ब्राह्मणकी बातें सुनकर राजाको बड़ा अचम्भा हुआ। मन्त्री तथा अन्य बहुतसे लोगोंके साथ वह ब्राह्मणके घर गया। सब लोगोंने देखा

कि तुलसीघरामें चार पेड़ लगेहुए हैं, जिनके सूखेहुए फूलोंसे मोती झरते हैं। पूछताछ करनेसे मालूम हुआ कि राजाने ब्राह्मणको जो पसीनेकी कमाईके चार पैसे दिए थे, उन्हींसे इन चार मोतीके पेड़ोंकी उत्पत्ति हुई। पेड़ोंकी जड़ टटोलनेपर उनमें एक-एक पैसा चिपका मिला!

आज ब्राह्मण-ब्राह्मणीको मालूम हुआ कि उनके पास लाखों-करोड़ों की जायदाद है। जिसे वे एक साधारण फूलका बीज समझते थे, उसका एक-एक दाना सैकड़ोंकी क़ीमतका है। ब्राह्मणने सोचा कि यह सब धन मेरे किस कामका? मुझे तो नित्य एक सेर आटा चाहिए। ऐसा सोचकर ब्राह्मणने वे सब मोती किसी धर्मकार्यमें ख़र्च करनेकेलिए राजाको देदिए। राजाकी आँखें खुलगईं। परिश्रमसे पैदा किएहुए धनकी क़ीमत उन्हें आज मालूम हुई। उस दिनसे राजाने प्रण करलिया कि मैं ख़ज़ानेका एक पैसा अपने ख़र्चमें न लाऊँगा। निजी ख़र्च मिहनत करके चलाऊँगा। ख़ज़ाने और ब्राह्मणके दिएहुए द्रव्यसे राजाने जनताके फ़ायदेके कई काम शुरू करादिए। जैसा ब्राह्मण और राजाने धर्मका पालन किया, भगवान् करे वैसा सब करें!

२

भाग्य बलवान

किसी नगरमें एक सेठ रहता था। उसके चार बेटे थे। जब वे सयाने हुए तो सेठने सबसे छोटेको छोड़कर शेष तीनका विवाह करदिया और वे रोज़गारमें पड़कर धन कमाने लगे। लेकिन छोटा भाई कुछ भी नहीं करता-धरता था। बैठे-बैठे मज़ेसे खाता और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनता। चारों भाइयोंमें प्रीति बहुत थी। छोटा भाई कुछ काम-धन्धा नहीं करता और पैसा मनमाना खर्च करता है, इसका किसी भी भाईको मलाल न था। वे सोचते थे, हम तीन कमाते तो हैं, एक नहीं कमाता तो क्या? पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं।

भाइयोंका तो यह हाल था, लेकिन उनकी बहुएँ औरही तरहकी थीं। हमेशा अपने पतियोंसे कहा करती थीं, "छोटे लाला कुछ काम-धाम क्यों नहीं करते? कामके नाम तो नानी मरती है, लेकिन खाने-पहननेमें सबसे आगे रहते हैं। हमसे यह नहीं देखाजाता। हाथ नहीं रुकता तो कमाएँ। दूसरेका पैसा उलीचनेमें उन्हें शरम भी नहीं आती।" बिचारे तीनों भाई चुप रहजाते। कुछ कहते तो कलह मचती। लेकिन छोटे भाईके आगे कोई कुछ न कहता था।

धीरे-धीरे कुछ दिन और निकलगये। लेकिन भौजाइयोंका स्वभाव दिन-ब-दिन तीखा ही होता गया। अब वे खाने-पीनेमें छोटे भाईके साथ तंग-दस्ती करने लगीं। पैसेपर भी रोक लगी। लेकिन छोटा भाई निश्चिन्त था। भाग्य बलवान् है: करने-धरनेकी उसे ज़रूरत ही क्या? पेटभर खाना और कपड़े तो उसे कहीं भी मिल सकते हैं। लेकिन भावजों का मन तो भीतर-ही-भीतर जला जारहा था। एक दिन उन्होंने अपने पतियोंसे कहा, "कपासकी तरह तुम तो रात-दिन उटते रहते हो और छोटे लाला गुलछर्रे उड़ाते हैं। यह सब हमसे नहीं देखाजाता। या तो इस

घरमें वही रहेंगे या हम। उन्हें यहाँसे निकालदो तब हम अन्नका दाना छुएँगी।"

तीनों भाई बड़े परेशान हुए। आखिर छोटे भाईको बुलाकर उन्होंने सारा हाल कह सुनाया। कहा, "तुम्हारी इन भौजाइयोंसे हमारी पार नहीं बसियाती। रात-दिन घरमें कलह रहती है। बहुतेरा इन्हें समझाते हैं कि हम लोग कमाते तो हैं, एक भाई नहीं कमाता तो न सही। लेकिन इनकी समझमें नहीं आती। कहती हैं कि इन्हें अलग करदो। बोलो, क्या हो?"

छोटे भाईने कुछ नहीं कहा। चुपचाप उठकर परदेसकेलिए चलदिया। चलते-चलते कुछ दिनोंमें वह एक नगरमें पहुँचा। उसने सोचा: परदेस है तो क्या, कहीं-न-कहीं खाने को तो मिल ही जायगा। यह सोचकर उसने शहरमें एक चक्कर लगाया और फिर वह चौराहेके किनारेपर बैठे घसियारोंके पास जा बैठा। बैठे-बैठे शाम होगयी। घसियारोंने सोचा कि यह आदमी कौन है जो इतनी देरसे उनके पास बैठा है? देखनेमें तो भले घरका जान पड़ता है। सो एक घसियारेने पूछा, "तुम कौन हो भाई?"

"परदेसी हूँ। घूमता-घामता तुम्हारे नगरमें आ निकला हूँ।"

"क्या करते हो?"

"कुछ नहीं। कोई काम मिले तो करूँ।"

तब सब घसियारोंने सलाह की और अपने-अपने गट्ठरोंमेंसे एक-एक पूला घास निकालकर उसे देदी। कहा, "जबतक तुम्हें कोई काम नहीं मिलता, यहीं आजाया करो। हम तुम्हें घास देदिया करेंगे। उसे बेचकर अपना काम चला लिया करो।"

उस दिनसे रोज़ छोटा भाई वहाँ आजाता। घसियारे घास देदेते और वह उसे बेचकर अपनी गुज़र करता। अब सब लोग इसे भी घसियारा कहकर पुकारने लगे। इसी नगरमें एक धनी सेठ रहता था। उसके एक लड़का था, परन्तु वह काना था। इस कारण कोई उसका ब्याह करनेकेलिए तैयार न होता था। उमर भी उसकी काफ़ी होचुकी थी। सेठ परेशान था। जगह-जगहसे नाई-ब्राह्मण सगाई लेकर आते, लेकिन लड़केकी शकल देखते ही लौटजाते। सेठजीको कोई उपाय ही न सूझता।

एक दिन वह नगरमें घूमरहे थे। घूमते-घूमते उनकी निगाह

घसियारेके रूपमें बैठे इस लड़केपर पड़ी। देखकर उन्होंने सोचा कि लड़का तो बड़ा अच्छा जान पड़ता है। तभी उन्हें एक तरकीब सूझी। जब कोई नाई-ब्राह्मण उनके लड़केको देखने आवे, तब क्यों न वह इस लड़के को दिखादें? रक़म भी उन्हें ख़ूब मिल जायगी। यह सोच सेठने आगे बढ़कर उस लड़केसे पूछा, "तू कौन है भाई?"

लड़केने सेठकी ओर देखतेहुए कहा, "हूँ कौन, घसियारा हूँ और परदेसी।"

"कहाँ रहते हो?"

"सरायमें।"

सेठ चलागया।

कुछ दिनों बाद एक बहुत बड़े साहूकारके यहाँसे कुछ लोग वर देखने आये। सेठने तुरन्त एक आदमी सरायको भेजकर लड़केको बुलाया। सेठका बुलावा सुनकर लड़केने मुँह बनाकर कहा, "सेठका मुझे कुछ देना तो है नहीं जो दौड़ा-दौड़ा उनके पास जाऊँ। जाओ सेठसे कहदेना कि मैं नहीं आता।"

आदमी लौट आया। सेठने सोचा 'जब अवसर आवे बाँका, तब गधेसे कहे काका।' इस समय मुझे अपना काम निकालना है। ऐसे समय खुद जाकर उसे बुला लाना चाहिए। ऐसा सोच सेठ बिचारे लाचार होकर स्वयं गये और बहुत समझा-बुझाकर २५) रुपयेपर उसे राज़ी करके साथ लेआये। घर आकर उसके बाल बनवाये, उबटन लगवाकर स्नान कराया और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाये। लड़का ख़ुश था।

लोगोंने वरको देखा। देखकर बहुत प्रसन्न हुए। मन-ही-मन कहनेलगे कि ऐसा वर भाग्यसे ही मिलता है। लड़कीके भाग्य खुलगए।

सम्बन्ध पक्का होगया और विवाहकी तिथि निश्चित होगयी।

धीरे-धीरे बारात चलनेका दिन निकट आगया। सेठने सोचा कि उस लड़केको साथ ले चलना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि मेरे कुँवरको देखकर मामला ही बिगड़जाय। इसलिए रस्म-दस्तूर उस लड़केके साथ ही कराने चाहिए। घर आजानेपर बहू अपने लड़केकी होगी। भाँवरें पड़जानेपर फिर कौन पूछता है। यह सोचकर सेठने घसियारेको साथ लिया।

ठीक समयपर बरात पहुँची। सेठके कुँवर बिचारे एक तरफ़

बरातियोंके साथ बैठे थे और विवाहकी सब रस्में उस लड़केके साथ होरही थीं। जो भी देखता लड़केकी प्रशंसा करता।

विवाह होनेपर सेठजी बहूको विदा कराकर घर लौटे और उस लड़केको सौ रुपये देकर चलता किया। उसने सोचा 'लूटको मूसर भलो', जो मिला वही बहुत है। लड़का रुपये लेकर सरायमें आगया और मज़ेमें रहनेलगा। उधर रातको जब बधूने देखा कि जिस लड़केके साथ उसकी शादी हुई है वह तो है नहीं, उसकी जगह एक काना-कुरूप लड़का बैठा है तो उसे बहुत ग़ुस्सा आया और उसने ऐसी फटकार बताई कि सेठके कुँवरको भागते ही बना।

अगले दिन सेठने लड़कीको समझाया, धनका लालच दिया; लेकिन बहूने साफ़ जवाब देदिया।

क्रोधसे लाल होकर बहू बोली, "आपने मेरे साथ यह छल क्यों किया? मेरी तो जिसके साथ भाँवरें पड़ी हैं, उसीके साथमें रहूँगी। चाहे वह ग़रीब हो या अमीर, इसकी मुझे चिन्ता नहीं। इतै के भान उतै ऊँगन लगें पै ऐसी अनहोनी नहीं हो सकती जैसी आप चाहते हैं। मैं अपने पतिको अच्छी तरह पहचानती हूँ। आप दया करके मुझे उन्हींके पास पहुँचा दीजिये। वह राजा हैं तो मैं राज्य भोगूँगी, भिखारी हैं तो उनके साथ भीख माँगूँगी। आपकी धन-दौलतमेंसे मुझे एक पाई भी नहीं चाहिए।

धीरे-धीरे यह बात राजाके कानतक पहुँची। राजाने सेठको बुलाकर पूछा, "यह क्या माजरा है सेठजी!"

हाथ जोड़कर सेठजीने निवेदन किया, "बहू अभी नादान है सरकार! कुछ समझती-बूझती नहीं है। बहक गयी है। नयी आयी है सो हम सब उसके लिए बिराने हैं। दस-पाँच दिनमें सब ठीक होजायगा।"

राजा सब कच्चा चिट्ठा सुने बैठे थे। उन्होंने कहा, "ठीक है सेठजी, पर मैं तुम्हारी बहूकी भी बात सुनना चाहता हूँ।"

बहूको बुलाया गया। राजाने पूछा, "बेटी, सच सच बताओ क्या बात है? तुम सेठके लड़केको क्यों नहीं चाहतीं?"

बहूकी आँखोंमें आँसू भरआये। बोली, "मेरे साथ छल किया गया है महाराज! मैं बड़े संकटमें हूँ। मेरे धर्मकी रक्षा कीजिए। मेरा

विवाह इन सेठजीके कुँवरके साथ नहीं हुआ। जिसके साथ मेरी भाँवरें पड़ी हैं, उसे मैं ख़ूब पहचानती हूँ। आप मेरे पिता तुल्य हैं। मैं आपकी शरण हूँ।"

राजाने कहा, "सेठजी, सुना? यदि आप अपनी भलाई चाहते हैं तो तुरन्त बताइए कि वह लड़का कौन है जिसे आप शादीकेलिए लेगए थे?" सेठ दुःख और लज्जासे धरतीमें गड़े जारहे थे। उनका सारा मान धूलमें मिलचुका था। अन्तमें उन्होंने लड़केका पता बतादिया। राजाने फ़ौरन लड़केको बुलानेकेलिए सिपाही भेजे। लड़का बहुत बिगड़ा। बोला, "राजा होंगे अपने घरके, मुझे उनसे क्या लेना, मेरे पास तो सौ रुपये हैं, सो चैनकी छानता हूँ। जाओ, मैं नहीं आता।"

सिपाहियोंने लौटकर राजाको सारा हाल कह सुनाया। तब राजाने उसे लेनेकेलिए हाथी भेजा। कुँवरसाहबने सोचा कि हाथी आया है अब चलना चाहिए। ज़्यादा हठ करना भी ठीक नहीं। सो उठकर उसने कपड़े पहने और हाथी पर आबैठा। आगे-आगे हाथी चलरहा था, पीछे-पीछे सिपाही।

कुँवर साहब राजाके पास आये और प्रणाम करके एक ओर बैठगए। बहूने फ़ौरन उन्हें पहचान लिया। राजासे कहा, "यही हैं जिनके साथ मेरी शादी हुई है।" और उनके पास आखड़ी हुई।

सब लोग भौचक्के-से उनकी ओर देखने लगे। राजाने लड़केसे पूछा, "क्यों भाई, तुम्हारी शादी इस लड़कीके साथ हुई थी?"

लड़केने कहा, "जी हाँ, हुई थी। लेकिन मुझे तो यह सेठ सौ रुपये ठहराकर लेगये थे और रुपये भी मुझे मिलगये। अब मैं क्या कहूँ?"

राजा देरतक सोचते रहे। फिर उन्होंने कहा, "सेठजी, तुमने बुरा किया। अब तुम्हारी भलाई इसीमें है कि अपने स्वार्थकेलिए तुमने जिसे अपना लड़का बनाया था, उसे अपनी आधी जायदाद दो और बहू तमाम गहनों और दहेज़के सामानके साथ उसीके पास जायगी।"

सेठजीने स्वीकार किया। लड़का बहूके साथ आनन्दसे फूलबाग़-वाले महलमें रहनेलगा। जब दिन फिरते हैं तब मिट्टी छूनेसे सोना हो-जाती है। उसके पास अब लाखोंकी सम्पत्ति थी। अपने रहनेकेलिए उसने एक शानदार महल बनवाना शुरू किया। बहुतसे मज़दूर काम करनेलगे।

इधर छोटे भाईसाहब तो मालामाल होगए। उधर उनके बड़े भाइयोंके व्यापारमें ऐसा घाटा आया कि वे बेचारे पेटभर खानेकेलिए भी मुहताज होगए। सब दिन जात न एक समान! अन्तमें उन्होंने परदेसमें जाकर नौकरी करनेका विचार किया। थोड़ा-बहुत सामान जो बचा था, साथ लेकर वे लोग चलदिए। बहुएँ भी साथ थीं। चलते-चलते उसी नगरमें आए जहाँ छोटा भाई राज्य-सुख भोग रहा था।

नये महलोंपर काम चालू था। तीनों भाइयोंने सोचा कि शायद उन्हें भी कुछ काम मिलजाय। यह सोचकर वे लोग मैनेजरसे मिले और काम करनेकी उन्हें इजाज़त मिलगयी।

शामको छोटा भाई जब महल देखने आया तो उसने अचानक अपने भाइयोंको पहचान लिया। मज़दूरोंके वेषमें उन्हें देखकर उसे बड़ा दुःख हुआ। पर अपने मनके भाव उसने प्रकट नहीं किये। मैनेजरको बुलाकर कहा, "देखो, वे जो तीन मज़दूर काम कररहे हैं, परदेसी जान पड़ते हैं। उनके रहनेका यहीं प्रबन्ध करदो और खाना महलसे आजाया करेगा।"

मैनेजरने व्यवस्था करदी। तीनों भाई और उनकी बहुएँ सब बहुत खुश थे। आपसमें वे कहनेलगे कि सेठ बड़ा धर्मात्मा है। हमारी ग़रीबीपर उसे तरस आगया है। तभी इतना किया है। कैसा बढ़िया भोजन मिलता है।

इन लोगोंको स्वप्नमें भी ख़याल न था कि यह सब करनेवाला और कोई नहीं उनका वही छोटा भाई है, जो एक दिन भाग्यको बलवान कहकर हाथपर हाथ रक्खे बैठा रहा करता था। जब वह घरसे निकलकर गया था तब जब कभी उसकी याद आती थी, सोचलिया करते थे कि उससे कुछ होने-हानेवाला तो है नहीं, किसी अनाथ आश्रममें अपने दिन काटता होगा।

धीरे-धीरे दो-तीन दिन बीतगए। एक रोज़ शामको छोटे भाईने उन्हें अपने महलमें बुलाया। अपनी बहूको उसने सारा हाल पहले ही सुनादिया था। सब लोग महलमें आए। महलके द्वारपर अपने छोटे भाईको खड़ा देख कर उनके हर्ष और आश्चर्यका ठिकाना न रहा। छोटे भाईने आगे बढ़कर अपने भाई-भावजोंके पैर छूए और आदरके साथ उन्हें महलमें लेगया।

उस दिनसे वे सब प्रीतिपूर्वक साथ-साथ रहने लगे।

२

पतिव्रता

किसी गाँवमें एक ब्राह्मण रहता था। उसके एक लड़का था। माँ-बाप उसे बहुत प्यार करते थे। बचपनमें ही उन्होंने उसका ब्याह करडाला। लेकिन दुर्भाग्यकी बात कि जब लड़केने होश सँभाला, माँ-बाप दोनों परलोक सिधार गए। लड़का अपने भाग्यको रोता और दैवको कोसता अकेला रहगया। कुछ दिन दुखमें योंही बीतगए। तब पड़ोसके लोगोंने आकर कहा, "बेटा, ससुराल जाकर अपनी बहूको क्यों नहीं लेआता? उससे तुझे सहारा मिलेगा।"

एक रोज़की बात हो तो कुछ नहीं, रोज़-रोज़ जब उसे पड़ोसके लोगोंसे यही सीख मिलने लगी तो ब्राह्मणका बेटा अपने कुनबेके नाईके पास गया। बोला, "दादा, सब कहते हैं कि मेरा ब्याह होगया है। लेकिन मुझे तो याद नहीं। क्या यह सच है?"

नाईने कहा, "हाँ, सच है। तुम तब बहुत छोटे थे। मुझे तो ऐसी याद है जैसे कल ही ब्याह हुआ हो। तैयारी करलो एक-दो दिनमें ही बहूको लेने चलेंगे।"

तीसरे दिन ब्राह्मणका लड़का नाईको साथ ले ससुरालकेलिए रवाना हुआ। चलते-चलते दोपहरको दोनों एक नदीके किनारे पहुँचे और खाना खाने और थोड़ी देर आराम करनेकेलिए रुकगए। पास ही एक पण्डित ठहरा था। वह हाथ देखनेमें बड़ा चतुर था। बहुतसे लोगोंने उसे अपने-अपने हाथ दिखाए। खा-पीकर ब्राह्मणका बेटा भी पण्डितके सामने जा बैठा। पंडितजीने उसका हाथ देखा। चश्मेको नाकके किनारेपर रखकर उसकी ओर देखतेहुए पंडितजी बोले, "पिछले जनममें तुम्हें एक सतीने शाप दिया है कि जब तुम पहली बार अपनी स्त्रीको देखोगे या वह तुम्हें देखेगी तो तुम्हारा यह शरीर गधेके रूपमें बदल जायगा। समझे?"

पण्डितकी यह बात सुनकर ब्राह्मणका लड़का बहुत परेशान हुआ। पर बेचारा करता क्या? बात उसके बसके बाहरकी थी। पण्डितसे उसने कहा, "महाराज, इस विपदासे बचनेका कुछ उपाय भी है?"

पण्डितने सिर हिलाकर कहा, "नहीं, सतीके शापको दुनियाँमें कोई नहीं मेट सकता। जाओ, अपनी करनीका फल भोगो।"

ब्राह्मणका लड़का दुखी मनसे आगे बढ़ा और संध्या होते-होते ससुराल पहुँचगया।

ससुराल पहुँचनेपर दो दिन तो वह पेटके दर्दका बहाना करके चारपाईपर पड़ारहा। तीसरे दिन उसकी सासने कहा, "उठो, कुछ खाओ-पीओ। दर्द अपने आप बन्द होजायगा।"

ब्राह्मणके लड़केने सोचा कि यों पड़े रहनेसे लाभ क्या होगा। जो होना है सो तो होकर ही रहेगा। सो वह उठा और नहा-धोकर भोजन करनेकेलिए रसोईघरमें जाबैठा। लेकिन ज्योंही उसने खाना शुरू किया कि उसकी स्त्रीने खिड़कीमेंसे झाँककर देखा। उसी समय ब्राह्मणके बेटेने भी उधर देखा। उसका देखना था कि वह गधा बनगया। और रसोईघरसे बाहर आकर अहातेमें हरी-हरी घास चरने लगा। सास-ससुरको बड़ा आश्चर्य और दुख हुआ और स्त्रीका तो रंजके मारे बुरा हाल होगया। कई दिनतक तो उसने खाना-पीना सब छोड़दिया। तब उसके माँ-बापने उसे समझाया। धीरे-धीरे उसका दुख कम होनेलगा। वह उस गधेकी खूब सेवा करती। आखिर था तो वह उसके पतिका ही दूसरा रूप। सबसे पहले उसे स्नान कराती, फिर हरी-हरी दूब उसके सामने लाकर डालदेती, तब स्वयं भोजन करती।

कुछ दिनों बाद लड़कीने अपने बापसे कहा, "पिताजी, आपने तो जोकुछ किया था, अच्छा ही किया। लेकिन करमकी बात कौन जानता है? मैं चाहती हूँ कि इन्हें लेकर मैं कहीं चलीजाऊँ। आप मुझे आज्ञा दीजिये।"

पिताने पहले तो मना किया। लेकिन जब उन्होंने देखा कि लड़की बिना जाये मानेगी नहीं तो उन्होंने बहुत-सा धन देकर उसे जानेकी अनुमति देदी। लड़की अपने दुर्भाग्यको साथ लेकर घरसे चलदी। वह जिस जगह चरनेकेलिए हरी दूब और पीनेकेलिए साफ़ पानी देखती

वहीं रुकजाती। कभी किसी-किसी जगह कई दिन रुकजाती। कहीं भी उसका ठिकाना नहीं था। पहले तो उसके जीमें आया कि अपनी ससुराल चली चले। लेकिन उसके जीने गवाही न दी। फूटा भाग्य लेकर जायगी तो कौन उसकी बात पूछेगा। लोग उसका तिरस्कार ही करेंगे। यह सोच ससुरालको जानेकी बात उसने मनसे निकालदी और इधर-उधर भटकने लगी।

धीरे धीरे कई बरस बीतगये। पतिकी सेवामें उसने कभीभी चूक न होनेदी। पहले उन्हें स्नान-भोजन कराना, तब पानीकी बूँद मुँहमें जानेदेना; इस नियममें उसने ज़रा भी भूल न होनेदी।

घूमते-घामते एक दिन ब्राह्मणकी बेटी एक नगरमें पहुँची। वहाँ एक तालाबकी खुदाई होरही थी। बहुतसे मज़दूर वहाँ रहते थे। जगह अच्छी देखकर वह भी ठहरगई।

तालाबकी खुदाई बहुत दिनोंसे होरही थी, लेकिन उसमें पानी ही न निकलता था। राजा परेशान था। एक रात सपनेमें उसे देवीने दर्शन दिये और कहा, "हे राजन्, तुम इतने हैरान क्यों होते हो? लाख जुगत करोगे तो भी इस तालाबमें पानी नहीं निकलनेका।"

अत्यन्त दुखित हो राजाने विनय की, "हे देवी, तुम्हीं कुछ उपाय बातओ।"

देवीने उत्तर दिया, "यदि कोई पतिव्रता स्त्री इसमें तीन चुल्लू जल डालदे तो तालाब पानीसे भर जायगा।" इतना कहकर देवी अन्तर्धान होगई।

अगले दिन राजाने दरबार किया और सपनेकी घटना दरबारियों को कह सुनायी। अन्तमें उन्होंने कहा, "जो कोई पतिव्रता स्त्री इस कामको पूरा करेगी, उसे एक बहुत बड़ी रक़म इनाममें दूँगा।"

राजाकी इस घोषणासे सारे नगरमें हलचल मचगयी। राजपुरोहित ने आकर राजासे प्रार्थना की, "महाराज, पतिव्रता स्त्रीकी खोजमें दूर जानेकी ज़रूरत नहीं। मेरी स्त्री जो है वही इस कामको पूरा करदेगी। बड़ी पतिव्रता है वह। खूब जी लगाकर मेरी सेवा करती है।"

राजाने कहा, "इससे बढ़कर और कौन बात होसकती है। आप फ़ौरन ही उन्हें लेआइये।"

राजाज्ञा पाकर पुरोहित तुरन्त घर पहुँचे और स्त्रीको सारा हाल सुनाया। पंडिताइनने पहले तो कुछ आनाकानी की लेकिन इनामकी रक़म को सुनकर उनके मुँहमें पानी भरआया और वह तालाबके किनारे पहुँच गयीं। हज़ारों आदमियोंकी भीड़ लगी थी। पंडिताइन आगे बढ़ीं। सब लोगोंकी आँखें उन्हींपर गड़ी थीं। तीन चुल्लू जल लेकर उन्होंने तालाबमें डालदिया, लेकिन उससे कुछ भी नहीं हुआ। पंडिताइन शरमके मारे धरतीमें गड़गयीं। पुरोहितने कहा, "महाराज, सपनेकी बात कहीं सच होती है?"

राजा भी बड़े असमंजसमें पड़े। इसके बाद कई स्त्रियोंने आ-आकर तीन-तीन चुल्लू जल उस तालाबमें डाला। लेकिन तालाबका भरना तो दूर, एक बूँद पानी भी उसमें न आया।

राजाको बड़ी निराशा हुई। वह जानते थे कि देवीकी बात झूठ नहीं होसकती। पर पतिव्रता नारी मिले तो मिले कहाँसे? नगरकी अधिकांश स्त्रियाँ परीक्षा देचुकी थीं और पतिव्रताको ढूँढ निकालनेका राजाके पास कोई उपाय ही न था। रात-दिन इसी चिन्तामें वह रहनेलगे। रातको पलंगपर लेट जाते, लेकिन बहुत देरतक नींद न आती। दूर-दूर तक उनका नाम था। तालाबमें पानी न निकला तो कितनी बदनामी होगी। और क्या उनके इतने बड़े राज्यमें एक भी पतिव्रता नहीं बसती?

इस तरह कई दिन बीतगए। तब एक रोज़ देवीने फिर उन्हें सपना दिया। कहा, "राजन्, तुम व्यर्थकी चिन्ता करते हो। एक पतिव्रता नारी तुम्हारे नगरमें ही इस समय है। तालाबके पास ही गधेकोलिए जो ब्राह्मणी रहती है, उससे प्रार्थना करो। तुम्हारा काम होजायगा।"

अगले दिन तड़के अपने मन्त्रियोंको लेकर राजा उस ब्राह्मणकी बेटीके सामने उपस्थित हुए और हाथ जोड़कर बोले, "रात देवीने हमें सपना दिया है, कहा है कि आप पतिव्रता हैं और यदि तीन चुल्लू जल तालाबमें जाकर डालदेंगी तो उसमें पानी भरज़ायगा। पानीकी कमीसे सारी प्रजाको कष्ट होता है। लोग आपको असीस देंगे।"

ब्राह्मणकी बेटीने कहा, "महाराज, मैं तो दुर्भाग्यकी मारी एक ब्राह्मणकी लड़की हूँ। दुखिया हूँ। देवीने और किसीकेलिए कहा होगा।"

राजाने विनय की, "और किसीकेलिए नहीं, आपके ही लिए कहा है।"

ब्राह्मणकी बेटी बोली, "आप ज़रूर भूल करते हैं। फिर भी मैं चली।चलती हूँ।"

राजाने तुरन्त पालकी मँगाई और ब्राह्मणकी बेटीको उसमें बिठाकर तालाबपर लेगए। सारा नगर उमड़ आया था। नर-नारी तालाबके किनारे खड़े थे। ब्राह्मणकी बेटी तालाबके बीच जाकर खड़ी होगयी। राजाने मन्त्रीसे कहा, "एक नाव और एक मल्लाहका प्रबन्ध करदो।"

यह सब होजानेपर ब्राह्मणीने गंगाजलकी झारी उठायी। लोगोंके हृदयमें उत्सुकताकी एक लहर दौड़गयी। उन्होंने प्रार्थना की कि हे भगवान्, तालाब जलसे भरजाये।

ब्राह्मणकी बेटीने मन-ही-मन कहा, "देवी, मेरी लाज रखना।"

और उसने तीन चुल्लू जल ज्योंही तालाबमें डाला कि पानीसे वह तालाब भरगया। चारों ओरसे झरने फूट निकले और नाव पानीपर तैरनेलगी। मल्लाह नाव खेकर ब्राह्मणकी बेटीको किनारेपर लेआया।

जनताने जयघोष किया, "पतिव्रताकी जय!"

थोड़ी देरमें जब कोलाहल शान्त हुआ तो ब्राह्मणकी बेटीने राजा और वहाँ इकट्ठे लोगोंको देखकर कहा, "जगदम्बा माईकी दयासे आपका काम पूरा हुआ। अब आपसे मेरी एक विनय है। आप सब लोग मेरी मदद कीजिए। पूरबकी ओर मुँह करके जगत्के देवता सूर्यनारायणसे प्रार्थना कीजिए कि हे सूर्यदेव, जिस प्रकार आपने तालाबमें जल भरकर एक ग़रीब ब्राह्मणकी बेटीको यश दिया है, उसी प्रकार उसके दुर्भाग्यसे छुटकारा दिलानेकी कृपा कीजिए।"

राजा और प्रजाने मिलकर सूर्य भगवान्की पूजा की और उस पतिव्रताको दुर्भाग्यसे मुक्त करनेकेलिए प्रार्थना की।

प्रार्थना समाप्त होते ही ब्राह्मणके लड़केने पुनः मनुष्यका रूप धारण करलिया। ब्राह्मणकी बेटीने उसके चरणोंकी रज मस्तकपर लगायी। इस अघट घटनाको देखकर सब लोग आश्चर्य-चकित रहगए और उस पतिव्रता नारीकी सराहना करतेहुए अपने-अपने घर चलेगए।

उस दिनसे ब्राह्मणका बेटा अपनी साध्वी स्त्रीके साथ सुखपूर्वक रहनेलगा।

४

ढाई मानुस

किसी नगरमें एक राजा और रानी रहते थे । एक दिन जब वे अपने महलके सतखण्डेपर सोरहे थे तो आधी रातके समय बस्ती-बाहर दो जानवरोंके लड़नेका शब्द हुआ । सुनकर राजा की आँख खुलगयी । रानीको जगाकर उसने कहा, "मेरी तलवार लाओ, मैं शेरकी शिकार करने जाता हूँ ।"

रानीने कहा, "इतनीं रात गये कहाँ जाओगे?"

राजा बोला, "सुनती नहीं । बस्ती-बाहर शेरोंके लड़नेकी आवाज़ आरही है । मैं उन्हें बिना मारे न छोड़ूँगा ।"

रानीने आवाज़ सुनी । हँसकर बोली, "महाराज, ये शेर नहीं, गधे हैं ।"

राजाने कहा, "नहीं शेर हैं ।"

दोनोंमें बहस होनेलगी और अन्तमें यह शर्त ठहरी कि अगर शेर लड़रहे हों तो रानीको एक धोती पहनकर महलसे निकल जाना होगा, गधे हुए तो राजा निकल जायगा । रानीको इस शर्तसे बड़ा दुख हुआ । वह जानती थी कि आवाज़से साफ़ मालूम होता है कि गधे लड़रहे हैं । राजाको बे-बात भ्रम होगया है । अतः एक पहरेदारको बुलाकर राजाने आज्ञा दी कि बस्तीके बाहर जाकर देखे और तुरन्त आकर बताये कि कौन दो जानवर आपसमें लड़रहे हैं । रानी बहाना निकालकर नीचे गयी और पहरेदारको रोककर कहा, "देखो, राजा जिन्हें शेर समझे हुए हैं, वे गधे हैं । और राजाने शर्त ठहरायी है कि अगर ये शेर हुए तो मैं यहाँसे निकल जाऊँगी और गधे हुए तो राजा । तुम एक काम करना, हर हालतमें यही आकर कहना कि शेर हैं । मेरे यहाँसे चलेजानेसे तो कोई बात नहीं राजाके चलेजानेसे सब-कुछ गड़बड़ होजायगा ।

पहरेदार चलागया और थोड़ी देरमें लौटकर राजाको सूचना दी कि शेर लड़रहे थे।

राजाने कहा, "कहो रानी, मेरी बात सच निकली।"

शर्तको निभानेकेलिए रानी उठी और एक धोती पहनकर महलसे बाहर होगयी। राजा अवाक् रहगया।

सारी रात रानी अकेली चलती रही और सबेरा होते-होते ही राजधानीसे काफ़ी दूर जानिकली। थोड़ी देर रुककर वह फिर आगे बढ़ी। सन्ध्यातक चलते-चलते पैर थककर रुके तो उसने देखा कि पास ही एक कुँआ और मन्दिर है। रानीने सोचा कि स्थान अच्छा है। आजकी रात यहीं विश्राम करना चाहिए। और नहीं तो जंगली जानवरोंसे तो बच ही जाऊँगी। यह सोच वह मन्दिरके भीतर जानेकेलिए किवाड़ें खोलने लगी। देखा कि एक शिला किवाड़ोंमें अड़ी है। उसे हटाकर रानी भीतर गयी और अन्दरसे किवाड़ें बन्द करके निश्चिन्त हो सोरही दिनभरकी थकी और भूखी-प्यासी तो थी ही, लेटते ही नींद आगयी।

थोड़ी रात बीतनेपर मन्दिरमें निवास करनेवाला साधु लौटा और उसने दरवाज़ा खोलना चाहा तो उसे मालूम हुआ कि भीतरसे बन्द है। तब ज़ोरसे पुकारकर उसने कहा, "मेरी मढ़ीमें कौन है? देव या दानव?"

बार-बार पुकारनेपर भी जब कोई उत्तर न मिला तो साधुने कहा, "जो भी हो, किवाड़ खोलदो। डरो मत। पुरुष हो तो मेरा धर्मका बेटा और स्त्री हो तो धर्मकी बेटी होगी। मैं तो साधु हूँ।"

रानीने किवाड़ खोलदिए। साधु भीतर गया। रानीको देखकर बोला, "बेटी तुम्हारा जी आवे तबतक यहाँ रहो। यह बुड्ढा साधु तुम्हें कोई कष्ट न होनेदेगा।"

इसके बाद साधु जो आटा माँगकर लाया था, उसे लेकर रानीने रोटी बनाई और दोनों खाकर सोरहे।

सवेरा होते ही जब रानी चलनेको तैयार हुई तो साधुने कहा, "तुम कौन हो बेटी, और कहाँ जाना चाहती हो?"

रानी बोली, "दुखिया हूँ। पतिने देशनिकालेकी आज्ञा दी है। उसीका पालन करनेकेलिए चलीआयी हूँ।"

साधुने कहा, "बेटी, अब तुम कहीं मत जाओ। यहीं रहकर भगवान का भजन करो। वही तुम्हारे दुखको दूर करदेंगे।"

रानीने साधुकी बात मानली और वहीं रहनेलगी। रहते-रहते कई महीने बीतगए। एक दिन जब रानी साधुको भोजन करारही थी तो हवासे उसकी धोतीका अंचल एक ओरको होगया और साधुकी निगाह उसके पेटपर पड़ी। साधुके पैरोंसे धरती निकलगयी। रानी गर्भवती थी। साधुने सोचा, लोग क्या कहेंगे? मुझे झूठा लांछन लगेगा। मेरी बातपर कौन विश्वास करेगा?

उस दिनसे साधुका खाना-पीना बहुत कम होगया और चिन्तामें वह दिनोंदिन दुबला होनेलगा। एक दिन रानीने पूछा, "क्या बात है? आप न तो ठीकसे खाना खाते हैं और दुबले होते जारहे हैं।"

साधुने कहा, "मुझे तुम्हारा शरीर भारी मालूम पड़ता है।"

रानी बोली, "आप इसकी चिन्ता न करें। यह तो मेरे पतिका पेट है। मेरे पति इस बातको जानते भी हैं। सो आप बदनाम न होंगे।"

साधु चुप होगए। कुछ दिनों बाद रानीके एक बहुत ही सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम ढाई मानस रक्खागया। धीरे-धीरे बालक पाँच-छह बरसका होगया।

एक दिन एक लाखा बंजारा अपने बैलोंका काफ़िला लिए उधरसे निकला। ढाई मानस रास्तेमें ही खेलरहा था। एक बैलको पास आते देख उसने डंडा मारदिया। बंजारेको गुस्सा आगया और उसने उसके दो-तमाचे लगादिए। लड़का रोनेलगा। जब यह हाल बंजारिनने देखा तो उसे बालकपर दया आगयी। बंजारेको बुरा-भला कहते हुए उसने बच्चे को गोदमें उठालिया।

बंजारिन बोली, "कुछ भी हो, आज मैं यहीं पड़ाव डालूँगी। आगे न बढ़ूँगी।" लाचार, डेरा डाल दियागया। बंजारेके कोई सन्तान न थी और बंजारिनका मन उस बालकपर रीझगया था। ढाईमानस दिनभर बंजारे-बंजारिनके पास खेलतारहा और रातको अपनी माँके पास चलागया। महीनेभर बाद बंजारा लौटा और फिर उसी स्थानपर उसने पड़ाव डाला। इस बार वह बच्चेकेलिए बढ़िया-बढ़िया कपड़े और मेवा-मिठाई लाया था।

कुछ दिनों बाद बंजारा फिर आया। और कई दिन ठहरा। एक रोज़ दोपहरके समय उसके कुछ बैल कुँएके पास पहुँचगए। बंजारेने ढाई-मानससे उन्हें लौटा लानेकेलिए कहा। बालक बंजारेकी लकड़ी लेकर चलदिया। जब वह कुँएके पास पहुँचा तो देखता क्या है कि चार औरतें चौपड़ खेलरही हैं। लड़केको देखते ही वे गोटें और पाँसे लेकर कुँएमें कूद पड़ीं। चौपड़ वहींपर बिछी रहगयी। लड़केने उसे उठालिया और बैलोंको हाँकता वह बंजारेके पास आया।

चौपड़ देखतेही बंजारा दंग रहगया। इतनी बढ़िया और क़ीमती चौपड़ उसने कभी न देखी थी। मखमलपर मोती और जवाहरात जड़े थे। बंजारेने सोचा: जिस राजाके राज्यमें मैं व्यापार करता हूँ, उसीको इसे भेंट दूँगा।

बंजारेने ऐसा ही किया। राजा चौपड़को देखर बहुत खुश हुआ। बोला, "चीज़ तो तुमने बढ़िया दी, लेकिन है अधूरी। इसके साथ इसके जोड़की गोटें और पाँसे और चाहिए। अगर तुम इसके जोड़की गोटें और पाँसे ला दोगे तो मनमाना इनाम पाओगे। न लासके तो समझलो कि सूलीपर लटकादिए जाओगे।"

बंजारा बिचारा बड़े सोचमें पड़ा। वह तो इनामकी आशा लेकर आया था लेकिन एक नई विपदा उसके सिर आपड़ी। गोटें और पाँसे उसे कहाँसे मिलेंगे? सोचता-विचारता बंजारा अपने डेरेपर आया। राजाके सिपाहियोंने उसका सारा माल ज़ब्त करलिया था। आकर उसने बंजारिनको सारा हाल कह सुनाया। बंजारिनने कहा, "घबराओ नहीं, जिस लड़केने चौपड़ लाकर दी है, वह शायद गोटें और पाँसे भी लाकर देदे। उसीके पास चलना चाहिए।"

काफ़िला चला, और कई दिनकी मंज़िलके बाद वहाँ आकर रुका। बंजारेने लड़केसे आकर कहा, "बेटा चौपड़ तो तुमने लाकर दी लेकिन उसकी गोटें और पाँसे भी तो लाकर दो। चौपड़ तुम्हें कहाँ मिली थी?"

लड़का बोला, "बैल लौटाने तुमने भेजा था न? तब चार औरतें कुँएपर चौपड़ खेलरही थीं। मुझे देखते ही वे कुँएमें कूदपड़ीं और गोटें-पाँसे साथ लेगयीं। तुम एक खटोला लाओ और उसमें रस्से बाँधलो। उसपर बैठकर मैं कुँएके भीतर जाऊँगा।"

बंजारेने ऐसा ही किया। लड़का जब खटोलेपर बैठकर भीतर जाने लगा तो उसने देखा कि वही चारों औरतें कुँएकी तलीमें बैठी चौपड़ खेल रही हैं। लड़केको आते देख वे चौपड़ उठाकर भागगयीं। गोटें और पाँसे वहीं पड़े रहगये।

लड़का खटोलेसे उतरा और उसने गोटें उठालीं। फिर उसने सोचा कि इधर-उधर घूमकर देखना तो चाहिए कि ये औरतें हैं कौन, और कहाँ रहती हैं।

ढाईमानसने कुएँकी तली टटोलकर देखी तो उसे एक दरवाज़ा मिला। उसे खोलकर वह आगे बढ़ा तो एक सुन्दर बगीचेमें पहुँचा। बगीचेके बीचमें एक बढ़िया महल बना हुआ था। ढाईमानस महलमें पहुँचा। उसमें छह कमरे थे, जिनमें पाँच बन्द थे, एक खुला था। ढाई-मानस खुले कमरेके सामने जाखड़ा हुआ। उसने देखा एक अत्यन्त सुन्दर कन्या बैठी है। ढाईमानसको देखतेही वह चौंकपड़ी। बोली, "तुम कौन हो? यहाँ कैसे आए? मेरा बाप दाना है। आते ही तुम्हें खा-जायगा। जितनी जल्दी हो सके, यहाँसे चले जाओ।"

ढाईमानसने कहा, " अब तो मैं तुम्हारी शरण हूँ। चाहे मारो, चाहे बचाओ।"

दानेकी कन्याको दया आगयी। उसने ढाईमानसको मक्खी बना-कर दीवारपर चिपकादिया।

थोड़ी देरमें दाना और उसके साथकी चार डायनें लौटीं। आदमी की गन्ध पाकर दानेने पूछा, "बेटी, यहाँ कोई आदमी आया है?"

कन्या बोली, "आदमीका नाम क्यों लेते हो? खाना हो तो मुझी को खालो।"

दाना और डायनें अपने कमरेमें चली गयीं।

धीरे-धीरे कई दिन बीतगए। दानेकी कन्या दानेके चलेजानेपर ढाईमानसको आदमी बनालेती और दानेके आनेका समय होता तो उसे फिर मक्खी बनाकर दीवारपर चिपका देती। एक दिन दानेने कन्यासे कहा, बेटी, अगर कोई आदमी इधर आवे तो उसे रोकलेना। मैं तेरा ब्याह उसके साथ करदूँगा।"

बेटीने कहा, "तुम्हारे डरसे इधर कौन आयगा? फिर भी कोई

आया तो रोक लूँगी। लेकिन तुम यह वचन दो कि उसे खा तो न जाओगे

दानेने सुलेमानकी क़सम खाई और घूमने चलागया। शामको जब लौटा तो बेटीने ढाईमानसको उसके सामने खड़ा करदिया। दानेने उसके सिरपर हाथ फेरकर कहा, "बेटा, अब तुम यहीं आनन्दसे रहो।"

अगले दिन बहुतसे दानोंको बुलाकर उसने अपनी बेटीका विवाह ढाईमानसके साथ करदिया। दोनों आनन्दपूर्वक रहनेलगे।

इधर कुँएके बाहर बंजारा और बंजारिन बैठे-बैठे ढाईमानसके लौटनेकी राह देखरहे थे। ऊपर खींचनेकेलिए नीचेसे उन्हें इशारा ही न मिलता था। उधर कई दिनसे लड़केके ग़ायब होनेकी वजहसे रानी और साधु दोनों चिंतित थे। रानीकी तो रोते-रोते आँखें फूल आई थीं। साधु दिनभर उसकी खोजमें जंगलमें भटकते रहते थे।

इस तरह जब बहुत दिन बीतगए तो एक दिन ढाईमानसको याद आया कि बंजारे-बंजारिनको बाहर छोड़कर वह तो गोटें लेने आया था। उसने दानेकी बेटीसे कहा, "अब हमें ऊपर चलना चाहिए।"

बेटी बोली, "पिताके मारे बारह-बारह कोसतकका आदमी नहीं बचता। उनसे पूछकर ही जाना ठीक होगा।"

रातको दाना लौटा तो ढाईमानसने उससे बाहर आनेकी आज्ञा माँगी। दानेने कहा, "बेटा, यह तुम्हारा घर है। जबतक चाहो, आनंदसे रहो, और कहीं जाना चाहो तो चले जाओ।"

अगले दिन दानेकी बेटी और ढाईमानसने बाहर आनेकी तैयारी की। जब तैयारी होचुकी तो दानेकी बेटीने कहा, "कोई बात कहो जिससे रैन कटे।"

ढाईमानसने कहा, "आपबीती सुनाऊँ या परबीती?"

दानेकी बेटीने जवाब दिया, "आपबीती ही सुनाओ।"

इसपर ढाईमानसने गधे-शेरकी शर्तपर रानीके देश-निकालेकी बातसे लेकर उसके जंगलमें आने, अपने जन्म, बंजारे-बंजारिनकी विपदा आदि सब बातें विस्तारसे सुनादीं।

इतनेमें सबेरा होगया। दोनों खटोलेपर आबैठे और खींचनेकेलिए इशारा दिया। बंजारेने खटोला खींचना शुरु किया। लेकिन बीचमें

आते-आते उसे याद आया कि वह गोटें तो भूल ही आया। यह सोच उसने दानेकी बेटीसे कहा कि, "मैं गोटें लेने जाता हूँ। तुम ऊपर जाकर मुझे लेने केलिए फिर खटोला भिजवा देना।" इतना कहकर वह खटोलेसे कूदपड़ा।

खटोला ऊपर पहुँचा और बंजारेने जब दानेकी बेटीका रूप देखा तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई उसने सोचा कि गोटों और पाँसोंके बदले इस सुन्दरीको ही राजाको भेंट दूँगा।

बेटीने ऊपर आकर खटोलेको फिर कुँएमें डालनेकेलिए कहा, पर बंजारेने उसकी बातपर कोई ध्यान न दिया, और उसे ज़बर्दस्ती साथ लेकर राजाके पास पहुँचा। कहा, "सरकार, गोटें और पाँसे तो नहीं मिले। उनके बदले इसे स्वीकार कीजिए।"

राजाके कोई पुत्र न था। इसलिए उसने दानेकी बेटीको अपनी पुत्री मानकर रखलिया। और उसकेलिए योग्य वरकी खोज करनेलगा।

दानेकी बेटीने कहा, "विवाह करनेकेलिए मैं तैयार तो हूँ, पर करूँगी उसके साथ जो मुझे ढाईमानसकी कहानी कह सुनावेगा।"

राजाने नगरमें ढिंढोरा पिटवादिया कि जो कोई उसे ढाईमानसकी कहानी सुनावेगा, उसके साथ वह बेटीकी शादी करदेगा।

इस समाचारको सुनकर बहुतसे लोग झूठी-झूठी कहानियाँ बना-बनाकर बेटीको सुनानेगए, परन्तु राजकुमारीने सबको भगादिया।

इधर ढाईमानसको कुँएमें रहते बहुत दिन बीतगए। बिचारा रात-दिन भगवानके ध्यानमें लगा रहता। अन्तमें भगवानने उसकी प्रार्थना सुनी और एक साधुका भेस बनाकर वह कुँएपर आए और ढाईमानसको बाहर निकाललिया।

ढाईमानस सीधा अपनी माँके पास पहुँचा। माँ-बेटा मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। ढाईमानसने अपना पूरा हाल कह सुनाया। साधुको भी बहुत ख़ुशी हुई। कुछ समय ठहरकर ढाईमानसने माँ और साधुसे आज्ञा ली और दानेकी बेटीकी खोजमें निकला। चलते-चलते वह उसी राजाके राज्यमें पहुँचा जिसके यहाँ दानेकी बेटी थी। वहाँ उसने राजकुमारी के प्रणकी बात सुनी। उसे संदेह हुआ कि हो न हो यह राजकुमारी दानेकी बेटी ही है। उसने तुरन्त ही राजदरबारमें जाकर कहा, "मैं ढाई-मानसकी कहानी सुना सकता हूँ।"

अगले दिन दरबार लगा। मन्त्री, नगरके प्रतिष्ठित लोग सब इकट्ठे हुए। ढाईमानसने आदिसे अन्ततक सारी कहानी कह सुनायी।

दानेकी बेटीने ढाईमानसको पहचान लिया और वह दौड़कर उसके चरणोंपर आगिरी। राजाको भी पुरानी बातका ध्यान आया कि अपनी रानीको ज़रा-सी बातपर घरसे निकालकर उसने कितना भयंकर अपराध किया था। अब पुत्र और पुत्रवधूको पाकर उसके हर्षका ठिकाना न रहा। तुरन्त जाकर जंगलसे वह अपनी रानीको भी लेआया और सब लोग सुख-पूर्वक रहनेलगे।

५

सोनेकी चिड़िया

एक राजा था जिसे बगीचेका बड़ा शौक था। वह दूर-दूरके देशोंसे अच्छे-अच्छे फल-फूलोंके पौधे मँगाकर अपने बगीचेमें लगवाता था। उसके बाग़में एक सोनेके सीताफलका पेड़ था। इस पेड़के पौधेको उसने लाखों रुपया खर्च करके सिंहलद्वीपकी रानी पद्मिनीके बाग़से मँगवाया था। राजा इस पेड़पर बहुत ममता रखता था। उसमें सोनेके सीताफल फला करते थे। जब उसके फलनेका मौसम आता तब राजा बगीचेमें सख्त पहरा बैठा देता और बाग़का माली भी खूब सावधानी रखता। परन्तु जब फल पकने लगते तब फलोंकी चोरी शुरू होजाती और एक-एक फल रोज़ रातको कोई आकर लेजाता।

राजा बड़ा हैरान था। उसने बाग़के मालीको बुलाकर और कड़ा पहरा रखनेकेलिए कहा। इतनेपर भी जब फलोंकी चोरी नहीं रुकी तब उसने शहरमें मनादी पिटवादी कि जो कोई चोरको पकड़ेगा उसे बहुतसा इनाम दिया जायगा। पहले दिन बड़े राजकुमारने बाग़की रखवाली करनेके लिए राजासे आज्ञा माँगी। राजाने आज्ञा देदी। राजकुमार बड़ी शानके साथ बगीचेमें पहुँचा और हाथमें नङ्गी तलवार लेकर टहलने लगा। जब रात कुछ अधिक हुई तब वह थोड़ा आराम करनेकेलिए पलंगपर लेटगया। लेटा कि उसे नींद आगयी और सबेरा होगया। तब उसने उठकर देखा तो मालूम हुआ कि एक फल चोरी चला गया है।

राजकुमार अपनासा मुँह लेकर घर लौट आया। अगले दिन दूसरे राजकुमार बाग़की रखवालीकेलिए गए। वह भी अपने बड़े भाईसे कुछ कम न थे। बाग़में जाकर गाँजेकी दम लगायी और रात-भर नशेमें मस्त पड़ेरहे। हर रातकी तरह आजभी एक फल चोरी चलागया। तीसरे

दिन तीसरे भाईको भी बाग़की रखवालीकी इच्छा हुई, परन्तु उसकी भी वही गति हुई।

चौथे दिन छोटे राजकुमारने पिताके पास जाकर बाग़की रखवाली की आज्ञा माँगी। राजाने कहा, "बड़ों-बड़ोंकी करतूत तो देखली। तुम बिचारे क्या कर सकोगे?"

"पिताजी, मुझे भी तो एक दिनका अवसर दीजिए। मैं भी प्रयत्न करदेखूँ।" राजाने आज्ञा देदी। राजकुमार खुश हुआ। वह दिनभर सोतारहा और रात होते ही तीर-कमान हाथमें लेकर बाग़में जापहुँचा और सावधानीके साथ रखवाली करनेलगा। आधी रातके बाद उसे कुछ आहट सुनायी दी। उसने सीताफलके झाड़की ओर ज्योंही अपनी नज़र डाली, तो क्या देखता है कि एक बहुत सुन्दर सोनेका पक्षी सीताफलकी डालपर बैठा अपनी सोनेकी चोंचसे फल तोड़नेकी कोशिश कररहा है। राजकुमारने झट ताककर एक तीर मारा। उस तीरसे पक्षीको तो चोट नहीं लगी, पर उसका एक पंख टूटकर नीचे आगिरा। पक्षी उड़गया। राजकुमारने सबेरे वह पंख राजाके सामने रखकर रातका सब हाल कह सुनाया। उस पंखको देखकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। मन्त्रियोंने पंख की जाँच करके बताया, "महाराज, यह एक पंख ही लाखोंकी क़ीमतका है। यदि पूरा पक्षी मिलजाय तो वह राज्यकी सबसे क़ीमती चीज़ होगी।"

तब राजाने ऐलान किया, "जो कोई उस सोनेके पक्षीको लाकर देगा, उसे मैं अपना आधा राज्य देदूँगा।"

जब बड़े राजकुमारने सुना कि उसके छोटे भाईने रातको चोरका पता लगालिया है, तो उसे बड़ा दुख हुआ। वह सोचने लगा कि जो काम मुझसे न होसका, वह छोटे कुमारने कर दिखाया! अब यदि मैं राजाकी इच्छानुसार सोनेकी चिड़िया पकड़कर न ला सकूँगा तो मेरेलिए बड़ी लज्जाकी बात होगी। यह सोचकर राजाकी आज्ञा ले बड़ा राजकुमार सोनेके पक्षीकी खोजमें बाहर निकला। चलते-चलते वह संध्या समय एक ऐसे नगरमें जापहुँचा जहाँ आमने-सामने दो सरायें बनी हुई थीं। एक मैली-कुचैली और दूसरी साफ़-सुथरी। राजकुमार अच्छी सरायमें जाकर ठहर गया। लेकिन वहाँ जाकर उसे इतना आराम और सुख मिला कि जिस कामकेलिए वह आया था उसे बिलकुल भूलगया। सरायमें

रहते-रहते राजकुमारको कई महीने बीतगये। इधर जब बहुत दिनों तक बड़े राजकुमारकी कुछ खबर न मिली तब दूसरा राजकुमार सोनेके पक्षीको खोजनेकेलिए राजासे आज्ञा लेकर चलदिया और अपने बड़े भाईके समान वह भी उसी सरायमें जाकर ठहरा और वहाँके सुख-भोगोंमें पड़कर सोनेके पक्षीकी बात भूलगया। कुछ दिनोंके बाद तीसरा राजकुमार भी निकला और उसकी भी यही दशा हुई।

सबसे पीछे छोटा राजकुमार राजाकी आज्ञा लेकर चला। चलते-चलते वह एक नगरमें जापहुँचा। वहाँ देखता क्या है कि एक सुन्दर जवान आदमीको चार सिपाही हथकड़ी डालेहुए लिये जारहे हैं। पूछनेपर मालूम हुआ कि वह एक प्रसिद्ध डाकू है और उसने कई वर्षोंसे डाके डाल-डालकर लोगोंको हैरान कररक्खा है। इस बार बड़ी मुश्किलसे पकड़ागया है और राजाने उसे शूलीका हुक्म दिया है। इसीसे वे सिपाही उसे शूलीपर चढ़ानेकेलिए लेजारहे हैं। यह सुनकर छोटे राजकुमारको डाकूपर बड़ी दया आयी। उसने सोचा कि आदमी बहादुर दीखता है; बचगया तो सम्भव है आगे जाकर सुधरजाय। ऐसा सोच राजकुमारने सिपाहियोंसे कहा, "भाई, तुम लोग थोड़ा ठहर जाओ तो मैं राजाके पास जाकर इस बिचारे आदमीको बचानेका उपाय कर देखूँ।" सिपाही भले आदमी थे। उन्होंने बात मानली। राजकुमार सीधा राजाके पास पहुँचा और उससे डाकूको छोड़नेकी प्रार्थना की। राजाने तुरन्त सिपाहियोंको भेजकर डाकूको बुलाया। उसके आनेपर राजाने कहा, "बलराज, मैं तुम्हें इस राजकुमारके कहनेसे छोड़देता हूँ। पर देखो, आइन्दा कभी कोई बुरा काम न करना।"

बलराजने कृतज्ञतासे सिर झुकाया और चलागया। वह सोचने लगा: यह राजकुमार कहाँसे आया और इसने मेरी जान बचानेकेलिए क्यों इतनी कोशिश की? जो हो, जिसने मेरी जान बचाई है उसकी कुछ-न-कुछ भलाई तो मुझे भी करनी ही चाहिए। ऐसा सोचकर वह राजकुमारके आनेकी राह देखने लगा।

जब राजकुमार आया तो वह उसके पैरोंपर गिरपड़ा। राजकुमारने उसे उठाकर छातीसे लगाते हुए कहा, "देखो बलराज, महाराजने तुम्हें छोड़दिया है। अब कभी कोई खोटा काम मत करना! अब तुम अपने घर जाओ और मैं भी अपने कामकेलिए जाता हूँ।"

बलराजने कहा, "राजकुमार, मैं तुम्हारे उपकारका बदला इस जनममें नहीं चुका सकूँगा। मेरी इच्छा है कुछ दिन साथ रहकर तुम्हारी सेवा करूँ।"

राजकुमारने पूछा, "तुम मेरी क्या सेवा करोगे, बलराज?"

बलराजने कहा, "पहले यह बताओ कि तुम इस समय कहाँ और किस कामकेलिए जारहे हो?" तब राजकुमारने सारा हाल सुनादिया। कहा, "मैं सोनेकी चिड़ियाकी खोजमें निकला हूँ।"

बलराज बोला, "कुमार, तुम बहुत बुरे काममें फँसगये हो। सोनेकी चिड़िया मिलना कोई आसान बात नहीं है। मुझे उस चिड़ियाका पता मालूम है। चलो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ। यदि तुम मेरी बतायी रीतिसे काम लोगे तो तुम्हें सोनेकी चिड़िया अवश्यही मिल जायगी। परन्तु इस काममें बड़ी सावधानी चाहिए। ज़रा भी चूके कि मुसीबतमें पड़जाओगे।" ऐसा कहकर दोनों आगे बढ़े।

चलते-चलते कुछ दिनोंमें दोनों उसी शहरमें पहुँचे जहाँ सोनेका पक्षी था। शहरमें पैर रखते ही बलराजने कहा, "देखो कुमार, तुम इस रास्तेसे आगे चले जाओ। कुछ दूरपर तुम्हें एक राजमहल दिखाई देगा। वहाँ पहरेवाले सिपाही तुम्हें सोते मिलेंगे। निर्भय होकर तुम महलमें घुसजाना। भीतर जानेपर एक कमरेमें तुम्हें वहीं सोनेका पक्षी बाँसके पिंजरेमें बैठाहुआ दिखाई देगा। उस पिंजरेको उतार कर तुम फौरन ही मेरे पास भाग आना। उस पक्षीके पास तुमको एक सोनेका खाली पिंजरा भी टँगा हुआ दिखाई देगा। परन्तु खबरदार, उस पिंजरेके लोभमें न पड़ना। जो तुम उस पिंजरेको छुओगे तो आफ़तमें फँस जाओगे।"

बलराजकी बातें सुनकर राजकुमार महलके भीतर चला गया। देखा तो सचमुच सोनेका पक्षी बाँसके पिंजरेमें टँगा हुआ था। पासहीमें एक खाली सोनेका पिंजरा भी टँगा था। राजकुमार सोचने लगा कि सोनेके पक्षीकेलिए तो सोनेका ही पिंजरा चाहिए। वह पक्षीको निकालकर सोनेके पिंजरेमें रखने लगा। लेकिन ज्योंही उसके शरीरसे राजकुमारका हाथ छुआ कि पक्षी 'चीं-चीं' करने लगा। उसी समय पहरेवाले जाग उठे और उन्होंने राजकुमारको पकड़लिया।

दूसरे दिन सबेरे सिपाहियोंने राजकुमारको राजाके सामने खड़ा करके कहा, "सरकार, यह आदमी रातको सोनेका पक्षी चुराते हुए पकड़ा गया है। इसकेलिए क्या आज्ञा है?"

राजाने कहा, "चोरको मिलनी तो शूली ही चाहिए, परन्तु यदि यह मुझे सोनेका घोड़ा लादेगा तो मैं इसके अपराधको क्षमा करदूँगा और सोनेका पक्षी इनाममें दूँगा।"

राजकुमारने सोनेका घोड़ा लेआनेका वायदा किया। राजाने उसे छोड़दिया। कुमार वहाँसे आया और शहरके बाहर बलराजसे मिला। राजकुमारके मुँहसे सब हाल सुनकर बलराजने कहा, "देखो कुमार, मैंने तुमसे पहलेही कहदिया था कि सोनेके पिंजरेके लोभमें न पड़ना। परन्तु तुम माने नहीं। अब आगे ऐसी भूल न करना। मुझे सोनेके घोड़ेका भी पता है। मेरे साथ चले आओ।" यह कहकर बलराज आगे-आगे चलनेलगा। राजकुमार भी उसके पीछे होलिया।

कुछ दिन चलते-चलते दोनों वहाँ जापहुँचे जहाँ सोनेका घोड़ा था। बलराजने कहा, "देखो, इस नगरके राजाके अस्तबलमें सोनेका घोड़ा बँधा है। सोनेके घोड़ेके पासही दो ज़ीनें टँगी हैं। एक सोनेकी, दूसरी चमड़ेकी। तुम चमड़ेकी ज़ीन कसकर घोड़ा लेआना और भूलकर भी सोनेकी ज़ीनके लोभमें न पड़ना, नहीं तो पहलेकी तरह मुसीबतमें पड़ोगे।"

राजकुमारने अस्तबलमें जाकर देखा एक बहुत सुन्दर सोनेका घोड़ा बँधा हुआ है और उसके पास सोने और चमड़ेकी दो ज़ीनें टँगी हैं। राजकुमार सोचने लगा कि सोनेके घोड़ेपर चमड़ेकी ज़ीन क्या कसूँ? जैसा घोड़ा वैसीही ज़ीन! यह सोचकर उसने सोनेकी ज़ीन उठाकर घोड़ेकी पीठपर रक्खी। ज़ीन रखतेही घोड़ा ज़ोरसे हिनहिना उठा। सब पहरेवाले जाग उठे और उन्होंने चोर-चोर कहकर राजकुमारको पकड़ लिया।

दूसरे दिन सबेरे राजकुमार राजा के सामने पेश हुआ। राजा ने कहा, "चोरको फाँसीपर लटकाया जाना चाहिए, परन्तु वह सोनेके केश-वाली कन्या लादे तो मैं उसकी सज़ा भी माफ़ करदूँगा और उसे अपना सोनेका घोड़ा भी इनाममें देदूँगा।"

राजकुमार सोनेके केशवाली कन्याकी खोजमें निकला। रास्तेमें बलराज बैठा-बैठा राह देख ही रहा था। राजकुमारके मुँहसे सब समाचार

सुनकर उसने राजकुमारको फिर समझाकर कहा, "देखो कुमार, तुम जब-तक मेरा कहना न मानोगे तबतक नये-नये झगड़ोंमें फँसते ही जाओगे। अब आगे ऐसी भूल न करना।" यह कह दोनों चल पड़े। चलते-चलते दोनों सोनेके केशवाली कन्याके नगरमें जा पहुँचे। उस समय रात अधिक बीतगयी थी। बलराजने कहा, "कुमार, इसी नगरके राजाके यहाँ सोनेके केशवाली कन्या है। इस समय सब पहरेवाले गहरी नींदमें सोये हुए हैं। तुम निर्भय होकर भीतर महलमें चले जाओ। राजकन्या आधी रातके समय स्नान करती है। वह इस समय तुमको स्नानघरमें मिलेगी। तुम चुपचाप जाकर मुँहसे एक शब्द कहे बिना उसके केश पकड़ लेना। ज्योंही तुम उसके केश पकड़लोगे वह तुम्हारे वशमें होजायगी और तुम्हारे पीछे-पीछे चली आवेगी। तुम उसको लेकर तुरन्त मेरे पास चले आना। देखो, उसकी बातोंमें आकर उसे माता-पितासे विदा लेनेकेलिए न जाने देना नहीं तो मुसीबतमें पड़े बिना न रहोगे।"

राजकुमारने महलमें जाकर स्नान करते समय राजकन्याके केश पकड़लिये। राजकन्या उसी समय कपड़े बदलकर राजकुमारके साथ चलनेको तैयार होगयी। लेकिन चलते समय उसने कहा, "कुमार, अब तो मैं तुम्हारी हो ही चुकी, परन्तु चलते समय मुझे अपने माता-पितासे विदा लेआने दो। आजकी बिछुड़ी न जाने फिर कब मिलूँगी!" राजकन्याके कहनेका राजकुमारपर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने उसे अपने माता-पितासे मिल आनेकी आज्ञा देदी। ज्योंही राजकन्या राजाके पास पहुँची राजाने सिपाहियोंको भेजकर राजकुमारको गिरफ़्तार करालिया।

सबेरे राजकुमार राजाके सामने लायागया। राजाने कहा, "देखो तुम-जैसे चोरोंको मिलना तो प्राणदण्ड ही चाहिए, परन्तु मेरे महलके सामने यह पहाड़ पड़ता है जो मेरी आँखोंमें हमेशा खटका करता है। तुम इस पहाड़को खोदकर फेंकदोगे तो मैं तुम्हारा अपराध क्षमा करदूँगा और सोनेके केशवाली राजकन्या भी तुम्हें देदूँगा।"

राजकुमारने सोचा: यह तो बड़ा कठिन काम है। इतने बड़े पहाड़को अकेला कैसे खोद सकूँगा? परन्तु उसने बलराजके भरोसे स्वीकार कर-लिया। राजकुमार जाकर पहाड़ खोदनेलगा। बलराज भी उसका पता लगाता वहाँ पहुँचा और बड़ी सफ़ाईसे पहाड़ खोदकर फेंकदिया।

पहाड़को धरतीसे मिलाहुआ देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने राजकुमारके साथ अपनी कन्या विदा करदी। राजकुमार सोनेके केशवाली कन्याको लेकर चला। रास्तेमें बलराजसे भेंट हुई। उसने कहा, "कुमार, जो तुम मेरी बताई रीतिसे काम करोगे तो तुमको सोनेके केश-वाली कन्या, सोनेका घोड़ा और सोनेकी चिड़िया, तीनों चीज़ें मिल जायेंगी।"

राजकुमारने कहा, "अच्छा बताओ बलराज! तुम जो कुछ कहोगे, करूँगा।"

बलराज बोला, "पहले राजकन्याको सोनेके घोड़ेके मालिकको देआओ। ऐसा करनेसे वह तुम्हें सोनेका घोड़ा देदेगा। घोड़ा पाते ही तुम उसपर सवार होकर एक-एकसे विदा माँगना। सबसे पीछे राजकन्यासे विदा माँगना। उसी अवसरपर राजकन्या अपने हाथ आगे बढ़ादेगी और तुम झट उसे अपने घोड़ेपर बिठाकर घोड़ा छोड़देना। इस सोनेके घोड़ेके बराबर दौड़नेवाला पृथ्वीपर दूसरा कोई घोड़ा नहीं है। बादमें तुम सोनेके पत्नीके मालिकके पास जाना। राजकन्याको लेकर मैं गाँवके बाहर बैठूँगा। तुम राजाके पास जाकर घोड़ा देनेकी बात कहना, पर घोड़ेसे नीचे न उतरना। राजा सोनेका घोड़ा देखकर तुमको सोनेकी चिड़िया देदेगा। तुम सोनेकी चिड़ियाको लेतेही घोड़ा छोड़देना और मेरे पास आजाना। इस उपायसे तुम्हें तीनों चीज़ें मिल जायेंगी।

बलराजके कहे अनुसार राजकुमारने काम किया और वह तीनों चीज़ें लेकर अपने देशको लौटा। राजकुमार अपने साथी बलराज और राजकन्याके साथ चला आरहा था। रास्तेमें रातको वे लोग एक बावड़ीके किनारे ठहरगये। राजकुमार और राजकन्या तो सोरहे, परन्तु बलराजको नींद न आयी। उसे चिन्ता थी कि सोनेका घोड़ा मैदानमें बँधा है और सोनेके पत्नीका पिंजरा पेड़की डालमें टँगा है, कहीं कोई चोर आकर न लेजाय। यह सोचकर वह रातभर जागता ही रहा। आधी रातके समय वह क्या देखता है कि बावड़ीमेंसे एक भयंकर काला नाग निकला। वह एक मणि लियेहुए था। उसका उजाला चारों ओर दूर-दूर तक फैलगया। नाग उस मणिको बावड़ीके पास रखकर दूर चलागया। बलराजने सोचा, मणि तो बहुत सुन्दर है। साँपको मारकर इसे राजकुमारको भेंट करना

चाहिए। वह तीर-कमान लेकर बैठगया। थोड़ी देर बाद जब साँप लौटा और मणिके पास आया तो बलराजने एक तीर ताककर उसके फनमें मारा। बेचारा साँप वहीं ढेर होगया। बलराजने मणि उठाकर अपने पास रखली।

सबेरे बलराजने राजकुमारसे कहा, "कुमार, तुम कुछ समय यहीं ठहरो। मैं इस बावड़ीके भीतर घुसता हूँ। जबतक मैं वहाँसे न लौटूँ तबतक तुम कहीं जाना मत और इन तीनों चीज़ोंकी रक्षा करना।"

इतना कहकर बलराज बावड़ीमें घुसा। मणि उसके पास थी। ज्यों-ज्यों वह नीचे उतरता जाता था त्यों-त्यों मणिके प्रभावसे पानी नीचेको उतरता जाता था। अन्तमें उसे एक दरवाज़ा दिखायी दिया। वह उस रास्तेसे भीतर घुसगया। कुछ दूरतक सुरंगके रास्तेसे चलनेके बाद वह देखता क्या है कि एक सुन्दर बगीचा है। उसके बीचमें एक आलीशान महल बनाहुआ है। वह निर्भय होकर उसी महलमें चलागया। वहाँ जाकर उसने देखा कि एक सोलह बरसकी अत्यन्त रूपवती सुन्दरी सोनेके सिंहासनपर बैठी है और दासियाँ उसकी सेवा कररही हैं। यह तमाशा देखकर बलराज चकित रहगया। इतनेमें उस लड़कीकी निगाह इसपर पड़ी। वह बोली, "मुसाफ़िर, तुम कौन हो और यहाँ कैसे आये? यदि तुम्हें अपनी जान बचानी है तो इसी समय यहाँसे भागजाओ। मेरा बाप आजायगा तो तुम्हें जीता न छोड़ेगा।"

बलराजने मुसकराकर कहा, "सुन्दरी, मुझे किसीका भय नहीं है। तुम मेरेलिए तनिक भी चिन्ता मत करो। पर यह तो बताओ कि तुम्हारा बाप है कौन? मैं उसका नाम जानना चाहता हूँ।"

सुन्दरी बोली, "मैं नागराजकी कन्या हूँ। मेरे पिता बहुत क्रोधी हैं। उनके जीते-जी कोई आजतक इस गुफ़ामें नहीं आसका है। मुझे आश्चर्य है कि आज तुम यहाँ आ कैसे गये?

बलराजने कहा, "सुन्दरी, तुम्हारा कहना सच है। नागराजके होते इस गुफामें कोई नहीं आसकता था। परन्तु मैं उन्हें मारकर ही यहाँ आसका हूँ। यह देखो मणि।" ऐसा कहकर बलराजने अपनी जेबसे निकालकर मणि दिखलादी।

मणि देखते ही सुन्दरीको अपने पिताके मारे जानेका निश्चय

होगया। वह विलाप करके रोने लगी। बलराजने उसे समझाते हुए कहा "सुन्दरी, अब रोनेसे क्या लाभ? जो होना था सो होचुका। लेकिन सुनो, मैं तुम्हें एक शुभ समाचार सुनाता हूँ। बाहर बावड़ीपर एक सुन्दर राजकुमार ठहरा हुआ है। यदि तुम कहो तो मैं उसे बुला लाऊँ। उसे देखते ही तुम खुश होजाओगी। मैं चाहता हूँ कि तुम दोनोंका विवाह होजाय।"

नागकन्याने राजकुमारको ले आनेकी अनुमति देदी। बलराज, राजकुमार और सोनेके केशवाली कन्या को लेकर अन्दर आया। राजकुमारकी सुंदरता देखकर नागकन्या मोहित होगयी और उसने उसके साथ विवाह करनेका निश्चय करलिया। अब सब लोग आनन्दके साथ वहाँ रहने लगे। सोनेके केशवाली कन्या और नागकन्या दोनोंमें परस्पर बड़ा प्रेम होगया। दोनों दिनरात साथ-साथ रहती थीं और एक दूसरेका संग छोड़ना उन्हें पसन्द नहीं था।

एक दिन बलराजने कहा, "कुमार, मुझे घर छोड़े बहुत दिन होगये। अब मुझे चार दिनकी छुट्टी देदो। मैं अपने बाल-बच्चोंको एक बार देख आऊँ। परन्तु जबतक मैं वहाँसे लौट न आऊँ, तुम इस बावड़ीसे बाहर न निकलना। बाहर निकले तो मुसीबतमें पड़ जाओगे।" इतना कहकर बलराज चलागया। जाते समय वह राजकुमारको मणि देतागया।

बावड़ीमें रहते-रहते जब राजकुमारकी तबीयत ऊबगयी तो एक दिन उसने अपना सोनेका घोड़ा कसा और उसपर सवार होकर बाहर घूमनेके लिए निकला। आते समय नागकन्यासे कहता आया कि देखो, मैं अपना जी बहलानेकेलिए बाहर घूमने जाता हूँ। तुम चिन्ता न करना, थोड़ी देरमें लौट आऊँगा। इतना कहकर राजकुमार चला गया। जंगलमें घूमते-घूमते वह एक वृक्षकी शीतल छायामें बैठगया। बैठतेही उसे नींद आगयी। राजकुमारकी जेबमें मणि रखी हुई थी। सोते समय वह खसककर ज़मीनपर आगिरी। इतनेमें एक लकड़हारा वहाँसे निकला और राजकुमारको सोता हुआ देख मणि लेकर चलता बना। इधर जब राजकुमारकी नींद खुली तो मणिको पासमें न देखकर वह घबड़ाकर यहाँ-वहाँ देखने लगा। मणि खो जानेसे वह हक्का-बक्का होगया। थोड़ी देर बाद अपने घोड़ेपर बैठकर वह उस आदमीके पैरके निशान देखता हुआ उसी

ओरको चलागया।

जब शाम होनेको आयी और राजकुमार वापिस नहीं लौटा तो दोनों कुमारियाँ बावड़ीके बाहर आकर उसे खोजने लगीं। इतनेमें एक मुसाफ़िर जो देखनेमें कोई बड़ा आदमी मालूम पड़ता था, घोड़ा दौड़ाता हुआ उधरसे निकला। उसे देखते ही दोनों कुमारियाँ भागकर बावड़ीमें जाछिपीं। भागते समय नागकुमारीकी एक जूती बाहर पड़ी रहगयी। उस जूतीको देखकर मुसाफ़िर घोड़ेपरसे उतरा और उसकी सुन्दरताको देखकर मन-ही-मन कहनेलगा, "वाह, जिसके पैरकी जूती इतनी सुन्दर है वह स्वयं न जाने कितनी सुन्दर होगी! कुछ भी हो अब मैं इसके साथ शादी किये बिना न रहूँगा।"

यह मुसाफ़िर इस देशके राजाका लड़का था। उसकी राजधानी इस बावड़ीसे कुछही कोसकी दूरीपर थी। उस दिनसे वह बावड़ीवाली दोनों सुन्दरियोंके पानेकी तलाशमें रहनेलगा। एक दिन वह एक स्त्रीका भेस बनाकर उस बावड़ीपर गया और वहाँ बैठकर ज़ोर-ज़ोरसे रोनेलगा। रोनेकी आवाज़ भीतर बावड़ीमें पहुँची। उसे सुनकर सोनेकी केशवाली कन्या बोली, "देखो तो बहिन, बाहर कोई स्त्री डाहें मार-मारकर रोरही है। मालूम होता है उस बेचारीपर कोई बड़ा दुःख आपड़ा है। यदि हम उसका दुःख दूर करसकें तो इससे बढ़कर आनन्दकी बात अपनेलिए क्या हो सकती है। चलो हम दोनों बाहर चलकर उसके दुखका कारण पूछें।" नागकन्याने जवाब दिया, "बहिन, तुम सच कहती हो, दुखियोंका दुख दूर करनेमें बड़ा आनन्द मिलता है। परन्तु बाहर जानेका नतीजा तो तुम देख ही चुकी हो। राजकुमार अभीतक वापिस नहीं आये। इससे न जाने क्यों बाहर जानेमें मेरा जी घबड़ाता है।" परन्तु सोनेकी केशवाली कन्या नहीं मानी। दोनों कुमारियाँ बावड़ीके ऊपर गयीं और उस स्त्रीसे उसके दुःखका कारण पूछने लगीं। नागकन्या कुछ दूरीपर थी, पर सोनेके केशवाली कन्या उस स्त्रीके बिल्कुल पास बैठकर उसे धीरज देरही थी। अवसर जानकर राजकुमारने अपना असली रूप प्रकट करके उसका हाथ पकड़लिया। नागकन्या तुरन्त भागकर बावड़ीमें घुसगयी और सोनेके केशवाली कन्याको राजकुमार अपने घोड़ेपर बिठाकर अपनी राजधानीको लेगया।

इधर चार दिन पूरे होते ही बलराज आ गया। राजकुमार और राजकन्याके खो जानेका समाचार सुनकर उसे दुःख हुआ। उसने नाग-कन्याको धीरज बँधाते हुए कहा, "मैं अभी उनका पता लगाये लाता हूँ। तुम चिन्ता न करो।" इतना कहकर बलराज बावड़ीके बाहर निकल गया। पता लगाते-लगाते वह उसी शहरमें जा पहुँचा जहाँ राजकुमार सोनेके केशवाली कन्याको चुरा लेगया था। वहाँ उसे राजकुमार भी मिलगया। दोनों मित्र बड़े प्रेमसे मिले। राजकुमारने कहा, "बलराज, मेरी मणि चोरी चलीगयी थी। आज तीन-चार दिन खोज करनेके बाद एक लकड़-हारेके पास मिली है। वह इसे बेचनेकेलिए बाज़ार लिये जाता था। मैंने पाँच रुपये देकर उससे खरीदली।" बलराजने कहा, "खोई चीज़ मिल गयी, इसकी मुझे खुशी है। परन्तु तुम्हारे पीछे एक बड़ा अनर्थ होगया। कोई बदमाश सोनेके केशवाली कन्याको चुरा लेगया है। मुझे पता लग-गया है कि वह इसी शहरके राजमहलमें है। तुम मणि लेकर बावड़ीमें चलो। वहाँ और कोई उपद्रव खड़ा न होजाय। मैं आज ही रातको राजकन्याको लेकर तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा।"

ऐसा कहकर बलराज साधुका भेष बनाकर राजमहलके बाहर जा खड़ा हुआ और हाथकी रेखाएँ देखकर लोगोंके दुख-सुखकी बातें बताने लगा। दिन-भर शहरके लोगोंकी भीड़ लगी रही। रातको राजमहलकी स्त्रियाँ भी आयीं, साथमें वह सोनेके केशवाली कन्या भी थी। वह बलराज को देखते ही पहचान गयीं। उसके मनमें धीरज बँधा। हाथ दिखा-दिखाकर सब स्त्रियाँ चलीगयीं। आधी रातके समय जब सब लोग सोगये तो राज-कन्या उठी और बलराजके पास आकर कहनेलगी, "चलो, इसी समय भागचलो। अभी सब पहरेवाले सोरहे हैं।" बलराज उसे अपने कन्धेपर बिठाकर भाग आया और रातो-रात बावड़ीमें आ पहुँचा।

बावड़ीमें आकर बलराजने कहा, "कुमार, यहाँ रहना ठीक नहीं है। चलो, इसी समय अपने देश चलनेकी तैयारी करो।" राजकुमार दोनों कुमारियों और बलराजको लेकर चलदिया और सबेरा होते-होते उस नगरमें आपहुँचा जहाँ उसने बलराजको शूलीसे बचाया था। बलराज बोला, "राजकुमार, अब मुझे विदा दो। मैं अपने घर जाता हूँ। किन्तु जाते समय दो बातें कहे जाता हूँ। एक तो अब तुम किसी फाँसीवाले

अपराधीको न छुड़ाना और दूसरे रास्तेमें किसी कुएँके किनारेपर मत सोना। अगर मेरी इन दोनों बातोंको मानोगे तो तुम कुशलपूर्वक घर पहुँच जाओगे। नहीं तो तुम फिर मुसीबतमें पड़ोगे।" ऐसा कहकर बलराज अपने घर चलागया।

राजकुमार दोनों कुमारियोंको साथ लिये आगे बढ़ा। आगे चलकर देखता क्या है कि उसके तीनों भाइयोंको सिपाही हथकड़ी डाले लिये जारहे हैं। पूछनेपर मालूम हुआ कि ये चोर हैं। फाँसीपर चढ़ानेकेलिए भेजे जारहे हैं। अपने भाइयोंको मुसीबतमें देख छोटे कुमारको बहुत दुख हुआ। उसे बलराजकी बात याद थी, परन्तु वह सोचने लगा कि मैं अपने भाइयोंको न बचाऊँ, यह कैसे होसकता है? फिर जो विपत्ति आना हो, वह भले ही आवे। ऐसा सोचकर उसने दोनों कुमारियोंसे कहा, "तुम थोड़ी देर इस पेड़के नीचे बैठो। मैं अभी आता हूँ। घोड़े और पक्षीपर निगाह रखना। मुझे इस नगरके राजासे मिलना है।" ऐसा कहकर राजकुमार राजाके पास पहुँचा। राजा उसे पहचान गया। आदरके साथ बिठाकर पूछा, "कहो राजकुमार, कहाँसे आरहे हो? मेरे योग्य कोई कार्य हो तो बताओ।" राजकुमारने अपनी जेबसे मणि निकालकर राजाके सामने रखतेहुए कहा, "महाराज, यह आपकी भेंट है। मैं देश-विदेश घूमता हुआ इधर आरहा हूँ। सोचा, महाराजके दर्शन करता चलूँ। हाँ, एक काम भी है। आपकी आज्ञासे जो तीन क़ैदी फाँसीपर चढ़ाये जानेवाले हैं, वे मेरे भाई हैं। यदि महाराजकी दया होजाय और उनका अपराध क्षमा करदिया जाय तो मैं उन्हें अपने साथ देश लेता जाऊँ।

राजा मणिको पाकर बहुत प्रसन्न था। उसने सोचा: राजकुमारने मुझे इतनी कीमती वस्तु भेंट दी है कि लाखों रुपया और सैकड़ों आदमी उसपर निछावर होसकते हैं। इसलिए राजकुमारके भाइयोंको छोड़देना चाहिए। राजाने तीनों क़ैदियोंको छुड़वादिया और राजकुमार अपने तीनों भाइयोंको साथ लेकर अपने शहरको चलपड़ा। जब तीनों भाइयोंने देखा कि छोटा कुमार सोनेका पक्षी ही नहीं, वरन सोनेका घोड़ा और सोनेके केशवाली दो कन्याएँ लेआया है तब तो उनको बड़ी जलन हुई। वे आपसमें कुछ कानाफूँसी करतेहुए चलने लगे। रातको वे लोग एक कुएँके किनारे सोरहे। आधी रातके समय तीनों भाइयोंने सलाह करके

छोटे कुमारको उठाकर कुएँमें पटकदिया और सोनेका घोड़ा, सोनेका पक्षी तथा दोनों कुमारियोंको लेकर चल खड़े हुए।

दूसरे दिन वे लोग घर आपहुँचे और राजाके सामने उन सब चीज़ोंको पेश करतेहुए कहने लगे, "पिताजी, इन चीज़ोंको खोजनेमें हम तीनोंको बड़ी-बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ी हैं।"

सोनेका पक्षी और सोनेका घोड़ा पाकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। नगरके सब लोग राजकुमारोंकी प्रशंसा करने लगे। परन्तु सोनेका पक्षी उदास रहता था। वह कभी आनन्दसे चहकता नहीं था। घोड़ा घास-दाना नहीं खाता था और दोनों राजकुमारियोंकी तबीयत भी गिरी रहती थी। वे किसीसे कुछ बात ही नहीं करती थीं।

इधर बलराजने मनमें सोचा कि राजकुमार राज़ी-खुशी घर पहुँच गया या नहीं, एकबार अपनी आँखोंसे देख आना चाहिए। वह चला और रास्तेमें उसी कुएँके पाससे निकला तो उसे किसी आदमीके कराहनेकी आवाज़ सुनायी दी। उसने कुएँमें झाँककर देखा तो पता चला कि राज-कुमार पड़ा हुआ है। वह समझगया कि कुमारने उसका कहना नहीं माना। इसीसे उसकी यह दशा हुई।

बलराजने तुरन्तही उसे बाहर निकाला और पूछा, "कहो कुमार, तुम्हारा यह हाल कैसे हुआ?"

कुमारने सारा हाल सुनादिया।

बलराज राजकुमारको लेकर उसके घर पहुँचा। छोटे पुत्रको आया देख उसके माँ-बापको बड़ी खुशी हुई। पर तीनों भाइयोंको काटो तो खून नहीं। वे सोचने लगे कुमारके लौट आनेसे तो बड़ा बुरा हुआ। अब सारा भेद खुलजायगा और हम लोगोंकी बड़ी बुरी दशा होगी।

छोटे कुमारके आते ही सोनेका पक्षी चहकने लगा। घोड़ा दाना खाने लगा और दोनों राजकन्याएँ भी हँसने लगीं। बलराजने राजाको सब हाल कह सुनाया। सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने तीनों पुत्रोंको देशनिकाला दिया और छोटे कुमारको राजतिलक करके एक दिन अच्छे मुहूर्तमें दोनों कुमारियोंके साथ राजकुमारका विवाह करदिया।

———

६

स्वर्णकेशी

किसी नगरमें एक राजा रहता था। उसके एक ही पुत्र था। जब वह बड़ा हुआ तो जंगलमें शिकार खेलने जाने लगा। धीरे-धीरे उसे तीन साथी और मिलगये। आपसमें गाढ़ी मित्रता होगयी। राजकुमार छुटपनसे ही बहुत ऊधमी था। बड़े तड़के जब वह मित्रोंके साथ टहलने जाता तो गुलेलसे निशाना मारकर पनिहारिनोंके सिरके घड़े फोड़देता। ऐसा करनेमें उसे मज़ा आता था। बेचारी औरतें पानीसे भीगी हुई खाली हाथ लौटतीं और घरवालोंको राजकुमारकी धृष्टताका हाल कह सुनातीं। गाँवके लोग राजाके डरसे मन मसोसकर रहजाते। लेकिन जब राजकुमार का उपद्रव दिन-पर-दिन बढ़नेलगा तो जनताने तंग आकर एक दिन राज-दरबारमें फ़रियाद की। राजाने तुरन्त ही राजकुमारको बुलाकर पूछा। राजकुमारने अपराध स्वीकार करलिया। राजाने कहा, "यह तुम्हारा पहला क़ुसूर है राजकुमार! इसलिए माफ़ कियेदेता हूँ। आइन्दा ऐसी शिकायत मेरे पास न आनी चाहिए।"

कुछ दिनोंतक तो राजकुमार ठीक रहा; लेकिन बादमें फिर उसने पनिहारिनोंके घड़ोंमें पत्थर मारना शुरू करदिया। गाँववालोंने मिट्टीकी जगह ताँबे और पीतलके घड़े बनवालिये; लेकिन राजकुमार इससे हार माननेवाला नहीं था। उसने लोहेकी गोलियाँ बनवायीं और ताँबे-पीतलके घड़ोंको फोड़ने लगा। आखिर विवश होकर गाँववाले फिर राजाकी सेवामें पहुँचे। इस बार राजाको बहुत दुख हुआ। उसने राजकुमारको बुलाकर कहा, "तुम अपनी आदतसे लाचार दीखते हो। लेकिन क्या कभी तुम यह

भी सोचते हो कि तुम्हारी इस करतूतसे प्रजाको कितना दुख होता है? मैं राजा हूँ। प्रजाकी रक्षा करना मेरा धर्म है। तुम समझते हो कि मैं राजपुत्र हूँ सो मनमानी कर सकता हूँ, यह तुम्हारी भूल है। न्यायके आगे राजकुमार, राजा या एक मामूली आदमी सब समान हैं। बोलो तुम्हारा क्या जवाब है?"

राजकुमारने कहा, "पिताजी, मैं जानता हूँ मेरी हरकतसे प्रजाको दुख पहुँचता है, और मैं अपनेको रोकनेकी कोशिश भी करता हूँ; लेकिन करूँ क्या? निशानेबाज़ीकी ऐसी आदत पड़गयी है कि छूटती ही नहीं।"

यह सुनकर राजाने राजकुमारको सात सालकेलिए देशनिकाले की सज़ा देदी और कहा कि "तुम इसी समय यहाँसे चलेजाओ। यदि तुम अपनी आदतको सुधार सके तो सात साल बाद वापस आजाना।"

राजाने अपना धर्म निबाहनेकेलिए कुमारको देशनिकालेकी सजा दे तो दी; लेकिन उसके मनमें जो दुःख हुआ, उसे वही जानता था। बचकाकी चोट बानियाँ जानता है! जब यह समाचार रानीको मिला तो वह पछाड़ खाकर गिरपड़ी।

राजकुमारको एक घोड़ा, हथियार और कुछ अशर्फ़ियाँ मिल-गयीं और वह परदेशकेलिए रवाना होगया। महलसे चलकर वह अपने मित्र लुहारके लड़केके पास आया और अपने देशनिकालेकी बात उसे कह सुनायी। लुहारके लड़केने कहा, "मित्र, मैं तुम्हारा साथी हूँ। मुझे भी साथ लेचलो।"

राजकुमार बोला, "अपने माँ-बापसे पूछकर तुम चल सकते हो।"

लुहारके लड़केने माता-पिताकी आज्ञा ली और राजकुमारके साथ होलिया। इसके बाद वे दोनों बढ़ई मित्रके पास पहुँचे और सारा हाल कह सुनाया। वह भी माँ-बापकी आज्ञा लेकर उनके साथ चल दिया। अब रहा बहेलियेका लड़का। सो उसके पास वे तीनों पहुँचे तो वह भी उनके साथ चलनेकेलिए तैयार होगया।

इस प्रकार चारों मित्र नगर छोड़कर चलदिये और एक दूसरे नगरमें पहुँचकर उन्होंने एक धर्मशालामें डेरा डाला।

अगले दिन चारों मित्र बाज़ार घूमने निकले। यहाँ-वहाँ बहुतसी

चीज़ें देखनेके बाद राजकुमारकी निगाह एक दुकानपर पड़ी जिसमें बहुतसे हथियार रक्खे हुए थे। राजकुमारने उन्हें देखकर दूकानदारसे पूछा, "क्यों भाई, इन हथियारोंमें क्या खास बात है? और इनकी क़ीमत कितनी है?"

एक तेग़ा उठाकर दिखाते हुए दूकानदारने उत्तर दिया, "यह तेग़ा जिसके पास रहता है, वह उसकी रक्षा तो करता ही है, साथही उसके-लिए आगेकी बात बतानेका काम भी करता है। जबतक इसपर पानी रहता है, इसका मालिक जीवित रहता है। पानी उतरा कि मालिकके प्राण उड़जाते हैं। दाम इसका एक हज़ार है।"

इसपर राजकुमारने पूछा, "यह बताओ भाई कि क्या तुम इसका बनाना हमारे आदमीको भी सिखा सकते हो? कितने दिन लोगे और कितना खर्च आयगा?"

दूकानदारने कहा, "सिखा सकता हूँ। एक साल लगेगा और एक हज़ार रुपया देना पड़ेगा।"

राजकुमारने एक तेग़ा खरीद लिया और एक हज़ार रुपया और देकर अपने लुहार मित्रको काम सीखनेकेलिए वहाँ छोड़दिया।

तीनों मित्र आगे बढ़े और उन्होंने एक दूसरे नगरमें जाकर धर्म-शालामें बिस्तर लगाया। अगले दिन जब वे बाज़ारमें चक्कर लगारहे थे तो राजकुमारका ध्यान एक उड़नखटोलेकी तरफ़ गया। तेग़ेवालेकी तरह राजकुमारने उसे भी दो हज़ार रुपये देकर एक हज़ारमें तो एक उड़नखटोला ख़रीदा और एक हज़ारमें उड़नखटोला बनानेका काम सीखनेकेलिए अपने बढ़ई मित्रको वहाँ छोड़कर बहेलिया मित्रके साथ वह आगे बढ़ा।

चलते-चलते वे दोनों एक और शहरमें पहुँचे। वहाँ उन्होंने लोहेकी शलाखोंका एक पिंजड़ा देखा। पिंजड़ेमें गुण यह था कि उसमें लगे काँटोंसे खोई चीज़का पता लगजाता था। राजकुमारने दो हज़ार रुपये यहाँ भी खर्च किये। पिंजड़ा साथ लिया और बहेलियेके लड़केको वहाँ छोड़ वह अकेला आगे चला।

चलते-चलते वह एक नदीके किनारे पहुँचा। नदीके दूसरे किनारे पर एक आलीशान महल बना हुआ था। उसके चारों तरफ़ कोसोंतक सूना मैदान और घना जंगल था। उस पार जानेकेलिए नदीपर पुल भी था। राज-

कुमार पुलको पारकर महलके सामने पहुँचा तो देखता क्या है कि सामने बाग़में एक अत्यन्त रूपवती युवती खड़ी है। वह कैसी है—बार-बार मोती गुहे, सोलह श्रृङ्गार करे, बारह आभूषण पहने, सिंदूर-सुरमा लगाये, बिछिया-अनूठा पहने, मोतियोंसे माँग भरे, केसर-कस्तूरीका लेप करे, पान खाये, अतर लगाये, लौंग-इलायचीका बटुआ कमरमें खोंसे ! और उसका शरीर था कि पान खाय तो गलेसे पीक दिखाय, मक्खन जैसा लोंदा, पूनौ जैसा चन्दा, दिवाली जैसा दिया, कनेर जैसी डार—लफ-लफ दूबर हो जाय !!

देखकर राजकुमार उसपर मोहित होगया। उसे अपने तन-बदन की सुध न रही। उसी समय उस सुन्दरीकी निगाह राजकुमारपर पड़ी। उसने देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर पुरुष खड़ा है। गुलाब जैसा फूल, चम्पे जैसा रंग, सूरज जैसी ज्योति, तोते जैसी नाक, भौंरे जैसे बाल, सिरपर जरीका मंडील बाँधे, कीमखाबका अंगा और मिसरूका पैजामा पहने, कमरमें रेशमी फेंटा बाँधे जिसमें नक्काशीके कामकी चाँदीकी मूठका पेशकब्ज़ खुसा हुआ है। कानमें बड़े-बड़े मोतियोंका बाला, गलेमें सूबेदारी कण्ठा, बग़लमें मखमलकी म्यानमें तेग़ा, मुँहमें पानका बीड़ा और एकटक उसकी ओर देखरहा है। युवती भी उसपर मोहित होगयी। उसने राजकुमारको अपने पास आनेका इशारा किया और वह बड़े आदर भावसे उसे भीतर लेगयी। पूछा, "आप कहाँसे आरहे हैं? मेरा मन आपकी ओर खिंच गया है। लेकिन मुझे एक बड़ी चिन्ता है। मैं एक दानवकी लड़की हूँ। मेरा पिता आदमखोर (आदमीको खानेवाला) है। वह सबेरेही शिकार केलिए जङ्गलमें चला जाता है। अब लौटने ही वाला है। उससे बचने का तुम्हारे पास क्या उपाय है?"

राजकुमारने कहा, "इसकी तुम चिन्ता न करो। बाहरसे मैं भले ही सुकुमार दीखूँ। भीतरसे मैं बहुत मज़बूत हूँ। मुझे तुम्हारे पिताका ज़रा भी डर नहीं है। लेकिन यह तो बताओ कि अगर हममें आपसमें लड़ाई हुई तो एकके प्राण तो जरूर चले ही जायँगे।"

युवती बोली, "नहीं-नहीं, अगर तुम्हारी जीत होजाय तो तुम उसे मारना मत। आखिर वह मेरा पिता है।"

दानेकी बेटीकी बात सुनकर राजकुमार राज़ी होगया। थोड़ी देरमें उसे दानव आता हुआ दिखायी दिया। पास आकर दानव हँसा। बोला,

"क्या बढ़िया भोजन आज घर बैठे मिला है ! इसका खून पीनेमें कैसा मज़ा आयगा। हा—हा—हा !!"

राजकुमारने आगे बढ़कर दानवको ललकारा। देरतक दोनोंमें मल्लयुद्ध होतारहा। अन्तमें राजकुमारकी तलवार दानेके माथेपर इतने जोरसे लगी कि उसका सिर चकरा गया और वह धरतीपर गिर पड़ा।

दानवकी बेटी और राजकुमार दोनोंने मिलकर उसका इलाज किया और जब वह अच्छा होगया तो उसने प्रसन्न होकर कहा, "तुम दोनों आनन्दसे इस भवनमें रहो। अब तुम मेरे दामाद हो। मैं यहाँसे चला जाऊँगा। और किसी दूसरी जगह अड्डा जमाऊँगा।"

इतना कहकर दानवने उन दोनोंका विवाह किया और वहाँसे चल दिया।

दानवके चले जानेके बाद वे दोनों आनन्दसे रहने लगे। दानव की बेटीके बाल सोनेके थे। एक दिन वह नदीमें नहा रही थी तो कंघी करते समय कुछ बाल टूट गये। उन्हें उसने एक दोनेमें रखकर बहा दिया। दोना बहते-बहते एक दूसरे राज्यमें आया। वहाँका राजकुमार नावमें बैठा नदीकी सैर कर रहा था। उसने देखा कि दोनेमें कोई चमकीली चीज़ बही चली आरही है तो उसने नाव उधर ले जाकर दोना निकाल लिया। देखा कि उसमें सोनेके बाल हैं। उसने सोचा कि जब ये बाल इतने सुन्दर हैं तो जिसके ये बाल होंगे वह न जाने कितनी सुंदरी होगी ! ऐसा सोच वह घर आया और अपने मित्रों द्वारा अपने पितासे कहलवाया कि या तो इस सोनेके केशवाली सुंदरीसे मेरा विवाह हो, नहीं तो मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा।

पिताने उसे समझाया कि "धीरज धरो। मैं उसका पता लाकर तुम्हारे साथ उसका ब्याह करा दूँगा।"

राजकुमारको कुछ सन्तोष हुआ।

इधर राजाने दरबारमें दूतियाँ बुलवायीं। सबसे चतुर दूतीसे राजा ने कहा कि तुम जाओ और जिस युवतीके ये केश हैं उसका पता लगाकर लाओ। दूती एक नाव और कुछ मल्लाह लेकर चलदी।

चलते-चलते कुछ दिनों बाद वह उसी घाटपर आपहुँची, जहाँ दानवका महल बना हुआ था। दूती वहाँ उतर पड़ी और मल्लाहोंसे

कहा कि जबतक मैं लौटकर न आऊँ, तुम लोग थोड़ा आगे जाकर मेरी राह देखना।"

इतना कहकर दूती महलके दरवाजेपर जा पहुँची और ज़ोर-ज़ोर से आवाज देने लगी, "बेटी, दरवाज़ा खोलो।"

ज्योंही स्वर्णकेशीने आकर दरवाज़ा खोला कि दूती उससे लिपट-कर रोनेलगी। रोती जाती थी और अपना परिचय देती जाती थी। उसने कहा, "बेटी, तू मेरी बहनौतिया (बहनकी लड़की) है। तू बहुत छोटी थी तबसे अब भेंट हुई है।"

दूतीकी बातोंपर भोली-भाली स्वर्णकेशीने विश्वास करलिया। बड़े आदरसे वह उसे महलमें लेगयी और सन्ध्याके समय जब राजकुमार लौटे तो उनसे परिचय कराया।

दूतीकी वेश-भूषाको देखकर राजकुमारको शक हुआ कि यह कोई चालाक औरत है। रातको शयनागारमें उन्होंने राजकुमारीसे कहा कि "देखो, इस औरतसे पूरी सावधान रहना। वह मुझे भली नहीं जान पड़ती।"

कुछ दिनों बाद दूतीने उससे कहा, "बेटी, ज़रा राजकुमारसे पूछना कि उनके प्राण कहाँ रहते हैं?"

शामको जब राजकुमारीने राजकुमारसे यह सवाल पूछा तो उनका सन्देह और मज़बूत होगया। उन्होंने कहा, "तुम इस औरतके चक्करमें न पड़ो। नहीं तो यह मेरी जान लेलेगी।"

परन्तु स्वर्णकेशी अपनी बातपर अड़ी रही। बोली कि "तुम्हें मेरे सवालका जवाब देना ही होगा।"

राजकुमारने खिन्न होकर कहा, "अच्छी बात है। तुम नहीं मानतीं तो बताये देता हूँ। लेकिन एक बातका ध्यान रखना। मैं मर जाऊँ तो मेरी लाशको जलाने मत देना। उसे तेलमें डालकर इसी महलमें बन्द करके ताला लगादेना।"

इसके बाद राजकुमारने दरवाज़ेकी चौखटपर कुछ लिखा और फिर राजकुमारीके पास आकर कहा कि "देखो, मेरे प्राण इस तेग़में हैं।

दूती दीवालके सहारे कान लगाये खड़ी थी। सो उसने राजकुमारकी बात सुनली।

अगले दिन राजकुमार तो शिकारकेलिए जंगलमें चला गया। इधर दूतीने उस तेगेको लेकर अँगीठीमें रक्खा और ऊपरसे आग जलादी। थोड़ीही देरमें आग धू-धू करके जलनेलगी। अँगीठीकी आगसे ज्यों-ज्यों तेग़ेका पानी उतरने लगा, राजकुमारकी बेचैनी बढ़ने लगी। उसने शिकार खेलना बन्द करदिया और वह घोड़ेपर चढ़कर तेज़ीसे घरकी ओर दौड़ा। जैसे-जैसे समय बीतता जाता था, उसकी तबीयत गिरती जाती थी। ज्योंही वह महलके पास आकर घोड़ेसे उतरा कि उसके प्राण पखेरू उड़गये।

स्वर्णकेशी इस घटनासे बहुत दुखी हुई और रोने लगी। दूती भी दिखानेकेलिए रोनेलगी। कुछ समयके बाद स्वर्णकेशीको अपने पति की बात याद आई। उसने उनकी लाश उठवाकर तेलमें डुबोकर एक कमरेमें रखवादी और ताला बन्द करादिया।

कुछ दिन बीतनेपर दूतीने कहा, "बेटी, हमारे कुलकी रीति है कि जो स्त्री विधवा होजाती है, वह दसवें दिन नावमें बैठकर नदीकी सैरको जाती है। सो आज दसवाँ दिन है, तुम भी उस दस्तूरको पूरा करो।"

स्वर्णकेशी दूतीके साथ नदीपर पहुँची। नाव वहाँ पहलेसे ही तैयार खड़ी थी। दोनों उसपर सवार हुईं और दूतीका इशारा पाकर नाव चलदी।

थोड़ा आगे चलनेपर स्वर्णकेशीने कहा, "अब तो बहुत दूर निकल आये मौसी! चलो, लौट चलें।"

दूतीने कहा, "बेटी, घबड़ाती क्यों है? तुझे मैं एक ऐसी जगह लिये चलती हूँ जहाँ तू ज़िन्दगी-भर सुखसे रहेगी।"

स्वर्णकेशी बहुतेरी रोयी-चिल्लायी; पर वहाँ उसकी सुननेवाला कौन बैठा था?

शाम होते-होते नाव ठिकानेपर आलगी। दूतीने तुरन्तही स्वर्णकेशी के आनेका समाचार महल भिजवाया। ज़रा-सी देरमें राजमहलसे नववधू को लेनेकेलिए पालकी आ पहुँची। उसमें बिठालकर स्वर्णकेशीको राजमहल पहुँचा दियागया।

स्वर्णकेशी दूतीकी चाल समझ गई। उसने अपना धर्म बचानेका एक उपाय निकाला। उसने एक दासीकेद्वारा राजासे कहलवाया कि मैं

आपसे कुछ बातें करना चाहती हूँ। पर्दा बीचमें डालकर स्वर्णकेशी और राजाकी बातचीत होने लगी। स्वर्णकेशीने कहा, "पिताजी, अब तो मैं बहू बनकर आपके घर आ ही चुकी हूँ, लेकिन एक भिक्षा आपसे माँगती हूँ। मैं इष्टदेवका अनुष्ठान कररही हूँ, उसके पूर्ण होनेमें छह महीने बाक़ी हैं। आप मुझे आज्ञा देदें कि छह महीने मैं नगरसे बाहर रहकर अपने अनुष्ठानको पूरा करलूँ। उसके बाद आप मेरा विवाह करदें।"

राजाने स्वर्णकेशीकी प्रार्थना स्वीकार करली और नगरके बाहर एक महलमें उसके रहनेका प्रबन्ध करदिया गया।

* * *

राजकुमारके मित्रोंमें सबसे पहले बहेलियाके लड़केने अपना काम सीख लिया और अपने बनाये हुए पिंजड़ेको लेकर उसके काँटोंकी मददसे रास्तेका पता लगाता हुआ बढ़ई मित्रके पास पहुँचा। बढ़ईका पुत्र भी अपना काम सीख चुका था। उसने उस्तादसे आज्ञा ली और एक उड़नखटोला लेकर दोनों मित्र लुहारके लड़केके पास जापहुँचे। लुहारका पुत्र भी तेगा बनानेका कार्य सीख चुका था और अपना बनाया तेगा लिये मित्रोंकी प्रतीक्षा कररहा था।

तीनों मित्र उड़नखटोलामें बैठकर राजकुमारकी खोजमें निकले और पिंजड़ेके काँटोंकी मददसे उस स्थानपर पहुँच गये जहाँ राजकुमारका मुर्दा शरीर बन्द पड़ा था। वहाँ पहुँचकर उन्होंने दरवाज़ेपर राजकुमारकी लिखावट पढ़ी और सारा रहस्य समझ गये। उन्होंने दरवाज़ा खोलकर तेग़की तलाश की और लुहारके लड़केने उसपर फ़ौरन पानी चढ़ाना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे पानी चढ़ता जाता था, राजकुमारके शवमें प्राण आते जाते थे। जब पानी पूरी तौरपर चढ़ गया तो राजकुमार जीवित होकर बैठ गया और 'स्वर्णकेशी-स्वर्णकेशी' कहकर चिल्लाने लगा।

मित्रोंने उसे समझाया कि उसके फेरमें अब मत पड़ो। उसका मोह छोड़दो।

राजकुमारने कहा, "यह नहीं होनेका। वह मेरी विवाहिता पत्नी है। उसका तो पता लगाना ही होगा।"

राजकुमारका हठ देखकर बहेलियेके लड़केने अपने पिंजड़ेके काँटोंकी मददसे पता लगाया कि स्वर्णकेशी कहाँ है, और चारों मित्र

उड़नखटोलेमें बैठकर वहाँ पहुँचे। शहरके बाहर उन्होंने डेरा डाला।

सबेरा होते ही राजकुमारको छोड़कर तीनों मित्रोंने साधूका भेस बनाया और राजकुमारीके पास पहुँचे। अवसर पाकर उन्होंने अपना परिचय दिया। कहा कि "अब तुम्हारे विवाहका दिन पास आगया है। तुम राजासे कहना कि हमारे कुलका रिवाज है कि विवाह होनेसे पहले दूल्हा-दुलहिन उड़नखटोलामें बैठकर नगरकी सात परिक्रमा करते हैं। इतना काम तुम कर लेना। बाक़ी हम देख लेंगे।"

इतना कहकर तीनों मित्र अपने डेरेपर वापस आये। बढ़ईके पुत्रने उड़नखटोला लेकर नगरमें तमाशा दिखाना शुरू करदिया, जिससे राजाको मालूम होजाय कि उड़नखटोलावाला उनके नगरमें आगया है।

उधर स्वर्णकेशीने उड़नखटोलेमें उड़नेवाली बात राजासे कहलवाई। उड़नखटोलेवाला बुलाया गया। बढ़ईके पुत्रने राजाकी आज्ञा पाकर दूल्हा-दुलहिनको उड़नखटोलेमें बिठाया। इसी समय शौकमें आकर दूतीने कहा कि मैं भी बैठूँगी। आखिर वह भी बैठा लीगई।

उड़नखटोला आसमानमें मँडराने लगा और एक-दो चक्कर लगानेके बाद लोगोंकी निगाहसे ओझल होगया।

राजकुमारीकी आज्ञासे बढ़ईके बेटेने दूल्हा और दूती दोनोंको नदीमें फेंक दिया। इसके बाद वे लोग उस स्थानपर आये जहाँ राजकुमार और दोनों मित्र बैठे उनकी प्रतीक्षा कररहे थे।

राजकुमार स्वर्णकेशी और अपने तीनों मित्रोंके साथ उड़नखटोलेपर बैठकर अपने पिताकी राजधानीको लौटा। राजकुमारको घर छोड़े सात साल होचुके थे। राजा-रानी उन सबको पाकर बहुत प्रसन्न हुए। स्वर्णकेशी-सी पुत्रवधू पाकर उनके आनन्दकी सीमा न रही। उस दिनसे वे सब मिलकर सुखपूर्वक रहने लगे।

७

मित्रोंकी प्रीति

उदय राजाका लड़का था, विनय मन्त्री का। दोनों एक उमरके थे और बचपनसे साथ-साथ खेले कूदे और एक ही पाठशालामें पढ़े थे। दोनोंका स्वभाव बहुत मिलता-जुलता था। सो ज्यों-ज्यों वे बढ़ते गये, उनकी प्रीति भी बढ़ती गयी। उदय जहाँ कहीं जाता विनयको साथ लेजाता, और विनय एक क़दम भी उदयके बिना न चलता।

एक दिन दोनों मित्र शिकार खेलने जंगलमें गये। दिनभर भटके, सारा जंगल छानमारा; लेकिन कोई जानवर हाथ लगना तो दूर, दिखायी तक नहीं दिया। दिन ढल आया। तब दोनों निराश हो घर लौटनेका विचार करने लगे। उसी समय थोड़ी दूरपर उन्हें एक जंगली सूअर दिखायी दिया। भूख और प्यासके मारे दोनोंका बुरा हाल हो रहा था; फिर भी सामने आये उस शिकारके लोभको वे न रोक सके। दोनों धीरे धीरे उस ओर बढ़े; लेकिन सूअरको ज्योंही आहट मिली, त्योंही वह तेज़ी से भागा। दोनों मित्रोंने उसका पीछा किया। सूअर आगे-आगे जारहा था और ये दोनों उसके पीछे। थकानके मारे दोनों चकनाचूर हो रहे थे फिर भी दौड़े ही चले जारहे थे। शायद शिकार हाथ लगजाय और उनकी दिन-भरकी मिहनत वसूल हो जाय! लेकिन आगे जाकर जब रातका अँधेरा फैल गया तो अचानक ही एक घनी झाड़ीके पास जाकर सूअर इनकी आँखोंसे ओझल होगया।

दोनों मित्र बहुत दूर निकल आये थे और नगरका रास्ता काफ़ी पीछे छूट गया था। बेचारे थके-माँदे धीरे-धीरे रास्ता ढूँढ़कर आगे बढ़ने लगे। उदयने कहा, "विनय, मेरे पैर नहीं उठते। यहीं कहीं किसी पेड़के

नीचे पड़ रहो। सबेरे चलेंगे।" विनयको यह बात पसंद आई, और दोनों मित्र एक पेड़के नीचे लेट रहे। उदयको तो लेटते ही नींद आगई; लेकिन विनय यह सोचकर कि कहीं कोई जंगली जानवर इधर न आजाय, जागता पड़ा रहा।

जिस पेड़के नीचे ये दोनों लेटे थे; उसके ऊपर एक तोता और एक मैना बैठे थे। जब एक पहर रात बीती तो मैनाने कहा, "तोता, कोई बात सुनाओ जिससे रैन कटे।"

तोता बोला, "आपबीती सुनाऊँ या परबीती?"

मैनाने कहा, "आपबीती तो फिर कभी सुन लेंगे। ये नीचे जो दो जने पड़े हैं, इनपर बीती सुनाओ।"

विनय कान लगाकर उन पक्षियोंकी बात सुनने लगा।

तोताने कहना शुरू किया, "देखो मैना, इन दोनों मुसाफिरोंमें एक तो राजाका कुँवर है, दूसरा मंत्री का। दोनोंमें बड़ी प्रीति है। लेकिन......।"

इतना कहकर तोता चुप होगया। मैनाने कहा, "आगे कहो, चुप क्यों हो गये?"

तोता बोला, "यह जो राजाका कुँवर है, इसपर बड़ी-बड़ी मुसीबतें आनेवाली हैं। कुछ दिनोंमें इसका ब्याह होनेवाला है। सो सबसे पहली मुसीबत तो यह आयेगी कि जब शादीकेलिए बारात जायगी तो वह रास्तेमें एक सूखी नदी पार करेगी। बराती तो सब निकल जायँगे; लेकिन जब दूल्हेकी पालकी जायगी तो नदीमें पानी आजायगा और पालकी बह जायगी। सो अगर कोई सुनता हो तो एक काम करे। बरातके नदी पार करनेसे पहले पालकीको पार करादे।

"इससे राजकुमार बच गया तो दूसरी आफ़त आयगी। जब बरात नगरमें पहुँचेगी और पालकी मँडपके पास उतारी जायगी, तो पालकी पर बना हुआ बाघ जीवित हो उठेगा और राजकुमारको खाजायगा; सो अगर कोई सुनता हो तो पहलेसे ही तैयार रहे। ज्योंही बाघ जीवित हो, तलवारसे उसकी गर्दन काटदे।

"इससे भी बच गया तो फिर जब बरात लौटकर आयगी तो रास्तेमें एक बरगदके पेड़के नीचे ठहरेगी। राजकुमार भी एक ओरको

लेट रहेगा। लेकिन ज्योंही वह लेटेगा, ऊपरकी डाल टूटकर नीचे आ गिरेगी और राजकुमार मर जायगा। सो अगर कोई सुनता हो तो एक काम करे। राजकुमारको उस पेड़के नीचे न ठहरने दे। बरातको छोड़कर राजकुमारको आगे लेजाय और दूसरे पेड़के नीचे ठहरे।

"कानीके ब्याहमें सौ जोखम वाला किस्सा है! अगर राजकुमार इससे बचगया तो दो मुसीबतें और आयँगी। नगरमें लौटकर जब राजकुमार पहली रात राजकुमारीके पास सोवेगा तो आधी रातके समय एक काला नाग आयगा और उसे डसलेगा। कोई सुनता हो तो रातभर वहाँ पहरा दे और ज्योंही नाग निकले मारदे। इससे भी बचगया तो अगले दिन रातको राजकुमारीकी नाकमें से एक नागिन निकलेगी और राजकुमारको काट लेगी। सो अगर कोई सुनता हो तो दूसरी रातको भी पहरा दे और नागिनको मारदे।

"इन सबसे राजकुमार बचगया तो फिर वह बहुत दिनों तक राज्य करेगा। लेकिन एक बात है मैना, अगर कोई सुनता हो तो यह भेद किसीको भी न बतावे। बताया तो वह पत्थरका हो जायगा।"

मैनाने पूछा, "पत्थरसे फिर वह आदमी नहीं हो सकता?"

तोताने कहा, "हां क्यों नहीं सकता। राजकुमारके जब पहला लड़का हो तो वह उसका खून उस पत्थरपर डाले। वह आदमी जीवित हो जायगा।"

इतना कहकर तोता चुप होगया। रात बीतचुकी थी। विनय बड़े सोचमें पड़ा। पर मन ही मन वह बहुत खुश था कि अपने मित्रको बचा सकेगा।

दिन निकलनेपर दोनों मित्र नगरमें लौट आये।

कुछ दिनों बाद उदयके विवाहकी तैयारी होने लगी। ठीक समय पर बरात रवाना हुई। विनय भी साथ चला। चलते-चलते रास्तेमें सूखी नदी पड़ी। विनयने आगे बढ़कर बरातको रोकते हुए कहा, "पहले पालकी को निकल जाने दो।"

ज्योंही पालकी उस पार पहुँची कि नदीमें बाढ़ आगई। ज़रासी देर हो जाती तो पालकी बह जाती। विनय ने सोचा, चलो, कुशल हुई। बराती भी खुश हुए।

वहाँसे चलकर बरात ठीक समयपर नगरमें पहुँची और जनवासे में ठहर गई। रातको जब भाँवरोंके समय पालकीमें राजकुमारको बिठलाकर ले जाया गया तो विनय नंगी तलवार लेकर साथ चला। ज्योंही पालकी मंडपमें रक्खी गई कि पालकीपर बना बाघ जीवित हो उठा और राजकुमारकी ओर झपटा। विनय तो पहलेसे ही तैयार था। उसने एकही हाथमें उसका काम तमाम करदिया। उदय बहुत खुश हुआ और विनय को छातीसे लगा लिया। विनय वहाँ तलवार लिये न खड़ा होता तो जबतक लोग बचाने आते, बाघ राजकुमारको खत्म करदेता।

बड़ी अच्छी तरहसे विवाह समाप्त हुआ। खूब धन-दहेज मिला और ठीक समयपर बरात बिदा हुई। चलते-चलते रास्तेमें एक घना बरगद का पेड़ मिला। उसीके नीचे बरात ठहर गई। लेकिन विनयने उदयसे कहा—"चलो, हम लोग आगे चलें। चार ही कदमपर इससे भी बढ़िया जगह है।"

उदय बहुत थक गया था उसने कहा, "अब यहीं आराम करो।" लेकिन विनयने एक भी न मानी और हाथ पकड़कर खींच ले चला। मुश्किलसे वे लोग थोड़ा आगे निकले होंगे कि अर्र-से पेड़की शाखा टूटकर ठीक वहीं गिरी जहाँ राजकुमार बैठा था। राजकुमार बच गया।

बरात लौटकर घर आई। विनयने सोचा इतनी मुसीबतोंसे तो राजकुमार बच गया। अब दो और रही हैं। उनसे भी उसे बचाना चाहिए। लेकिन अब उसके सामने एक बड़ी मुश्किल थी। राजकुमारके सोनेके कमरेमें वह कैसे जासकेगा, खासकर ऐसे समय जब कि वह अपनी बहूके पास सो रहा हो? वह सोचने लगा, यदि मैं छिपकर जाऊँ और उदय मुझे देखले तो वह मेरे बारेमें क्या सोचेगा। कहेगा, मैंने उसे धोखा दिया और मेरी बदनामी होगी। सम्भव है अपने प्राणोंसे भी मुझे हाथ धोना पड़े। लेकिन उसने विचार किया कि कुछ भी हो, मित्रकी जान तो बचानी ही होगी। चाहे अपने प्राण भले ही देने पड़ें। ऐसा सोचकर विनय दिन छिपे सबकी आँख बचाकर राजकुमारके सोनेके कमरे में जा छिपा। रात हुई और जब राजकुमार और उसकी बहू दोनों गहरी नींदमें सो रहे थे, छतमेंसे एक भयंकर काला नाग निकला और राजकुमार के पलंगकी ओर बढ़ा। विनय तो उसकी ताकमें बैठा ही था। झट

तलवारसे उसके टुकड़े--टुकड़े करडाले और ढालके नीचे रखकर चुपचाप दरवाज़ा खोलकर बाहर आया और घर आकर सोरहा।

दूसरे दिन विनय सोचने लगा कि बस एक अनिष्ट और रहा है जिससे उदयको बचाना है। लेकिन ज़रा-सी असावधानी होनेपर उसके ऊपर भारी संकट भी आ सकता है। फिर भी इस बारेमें विनयने अधिक चिंता न की और वह पहले दिनकी तरह दिन डूबे चुपचाप उदयके सोनेके कमरेमें जा छिपा। रात होनेपर जब उदय और उसकी स्त्री दोनों गहरी नींदमें सोगये तो विनय दबे पाँव उनके पलंगके पास आ खड़ा हुआ। आधी रात बीते बहूकी नाकमें से नागिन निकली और राजकुमारकी ओर बढ़ी। विनयने उसी समय होशियारीके साथ तलवारका वार किया और नागिनका सिर काट लिया। लेकिन सिर काटते समय खूनकी एक बूँद बहूके गालपर जाकर गिरी। विनयने सोचा कि अगर यह खून बहूके मुँहमें चला गया तो उसकी मृत्यु हो जायगी और यदि वह उसे कपड़े या किसी और चीज़से पोंछता है तो रानी जग जायगी। वह सोचकर उसने अपना मुँह बढ़ाकर होठोंसे वह खून चाट लेना चाहा। उसी समय उदयकी आँख खुल गई। विनयको इस दशामें देखकर उसका खून खौल उठा। तलवार म्यानसे खींचकर उसने कहा, "कपटी! पापी!! धोखेबाज !!! बता, तू इस समय यहाँ क्यों आया और राजकुमारीके ऊपर क्यों झुका?"

विनय चुप खड़ा था। उदयने क्रोधसे काँपते हुए कहा, "जल्दी बोल, नहीं तो मेरी तलवार अभी तेरे दो टुकड़े कर देगी।"

विनय बड़े असमंजस में पड़ा। वह सोचने लगा कि अगर इसे सारी बात सच-सच बता देता हूँ तो मैं पत्थरका हो जाऊँगा और अगर नहीं बताता तो उदयकी तलवार अभी मेरा काम तमाम कर देगी। बदनामी होगी, वह अलग।

विनय चुप खड़ा था और राजकुमारका संदेह घड़ी-घड़ी बढ़ता ही जा रहा था। दाँत पीसकर वह बोला, "प्रीतिका यह बदला? विनय, मुझे तुझसे ऐसी आशा न थी!"

विनय ने तब मुँह खोला। वह बोला, "उदय, मैं तुम्हें कभी धोखा नहीं दे सकता। वैसी बात भी मेरे मनमें नहीं आ सकती। मैंने

तुम्हारा नमक खाया है, तुम्हारी प्रीति पाई है, बचपनसे तुम्हारे साथ रहा हूँ। लेकिन ऐसे असमयमें मेरे यहाँ आनेका कारण तुम मत पूछो। बस इतना समझलो कि मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया।

सन्देहका भूत बड़ा प्रबल होता है। एकबार सिरपर सवार हुआ कि फिर उतरता नहीं। उदयने तेजीके स्वरमें कहा, "नहीं तुम्हें बताना होगा। अभी, इसी समय। नहीं तो मेरी यह तलवार होगी और तुम्हारा सिर।"

विनयने कहा, "उदय, भलाई तो न सुननेमें ही थी, लेकिन तुम नहीं मानते तो लो सुनो। मेरी बात न माननेपर तुम्हें दुख न हो और पछताना न पड़े तो कहना।"

इसके बाद उसने सारी कहानी सुनादी। ढालके नीचे साँपके टुकड़े पड़े थे, वे लाकर दिखाये। रानीकी नाकसे निकली नागिन नीचे पड़ी थी, वह भी दिखाई।

अन्तमें उसने कहा, "अब तुम्हें विश्वास हुआ? लेकिन देखो मैं पत्थर हुआ जारहा हूँ। सारा शरीर पत्थरका हो चुका है, सिर बचा है। वह भी पत्थर हुआ जाता है।"

उदय चीख पड़ा, "यह क्या? यह क्या विनय?"

विनयने कहा, "तोतेने कहा था अगर कोई इस भेदको किसी दूसरेसे कह देगा तो वह पत्थरका हो जायगा। मैं जानता हूँ उदय, मेरे पत्थर होजानेसे तुम्हें कितना दुःख होगा। लेकिन तोतेने बताया था कि मैं फिर जीवित हो सकता हूँ अगर तुम अपने सबसे पहले लड़केका खून पत्थर पर चढ़ाओ।"

इतना कहते-कहते विनयका सिर भी पत्थर होगया।

उदय उठा। उसने पत्थरको बाहोंमें भर लिया और देर तक वह उसपर सिर टेके बैठा रहा।

इस बातको तीन वर्ष बीत गये। उदय राजा होगया। लेकिन विनयकी याद उसे हर घड़ी सताती रहती थी। न उसका खाने-पीनेमें मन लगता था, न राजकाजमें।

कुछ दिनों बाद उदयके लड़का हुआ। सारे राजमें खुशी मनाई गयी। लेकिन उदय विनयकी अन्तिम बात नहीं भूला था: "मैं फिर

जीवित हो सकता हूँ अगर तुम अपने सबसे पहले लड़केका खून पत्थरपर चढ़ाओ।"

उदयके सामने परीक्षाकी घड़ी थी। एक ओर गुलाब-सा सुकुमार पुत्र, दूसरी ओर मित्रकी प्रीति !

उसने अपनी स्त्रीसे कहा, "तुम्हें याद है उस रात विनयने क्या कहा था ?"

उसे वह बात याद आगयी। क्षणभरमें उसके चेहरेकी खुशी ग़ायब होगई और किसी भयकी आशंकासे वह काँप उठी।

राजकुमारने कहा, "विनयको जीवित करना होगा।"

स्त्रीने चुपचाप अपने नवजात शिशुको राजकुमारके हाथोंमें थमा दिया। राजकुमारने उसे पत्थरपर लिटाया और तलवार निकाली। लेकिन उसका हाथ नहीं चला। तलवार थामें ही रह गया। सच है अपनी खता अपने हाथन नईं फूटत ! शिशु मुस्करा रहा था और राजकुमारकी दशा बड़ी विचित्र हो रही थी : एक ओर शिशु और दूसरी ओर विनय।

इसी हालतमें काफ़ी देर हो गयी। राजकुमारका शरीर काँप रहा था अचानक उसके हाथसे तलवार छूट पड़ी। दैवयोगकी बात कि तलवार बच्चेकी एक उँगलीपर गिरी। उँगली कटगयी और उसमेंसे निकला खून ज्योंही पत्थरपर गिरा कि विनय उठ खड़ा हुआ।

दोनों मित्र आपसमें मिले और उस दिनसे सुखपूर्वक रहने लगे।

८

रानी चकचुइया और राजा शालिवाहन

किसी जंगलमें एक स्यार अपनी स्त्री सहित रहता था। स्यारकी स्त्री गर्भवती थी। जब बच्चा पैदा होनेका समय नज़दीक आया, तब उसने एक दिन स्यारसे कहा, "सोरके लिए तुमने अभीतक कोई जगह नहीं खोजी। दिन हो चुके हैं, न जाने कब अवसर आजाय, इससे पहिले ही से जगह खोजलो।"

स्यारने लापरवाहीसे कहा, "समय आने दो, बहुत जगह मिल जायगी। तुम चिंता क्यों करती?" स्यारका उत्तर सुनकर स्त्री चुप होगयी। दो-चार दिन बाद उससे फिर कहा, "देखो, अब अधिक विलम्ब नहीं है। साँझ-सबेरे जगहकी जरूरत पड़ेगी। जाकर कोई अच्छी-सी जगह तलाश आओ।" स्यारने कहा, "तुम्हें क्या करना है? तुम तो चुपचाप बैठी रहो, समयपर मैं सब ठीक करलूँगा।"

इस प्रकार बच्चा देनेका समय आगया। स्यारकी स्त्रीका पेट दर्द करने लगा। उसने कहा, "देखो, मैं इतने दिनसे कहरही थी कि जगह ढूँढ़लो, परन्तु तुमने एक भी न सुनी। आज मेरा पेट दर्द करने लगा, अब क्या करूँ?"

स्यार घबड़ाया हुआ गया। आसपासकी सभी जगहें देखीं, पर कोई जगह पसन्द नहीं आयी। पासही में एक बाघकी चुल थी। स्यारने दूरसे झाँककर देखा तो पाया कि चुल खाली है। बाघ तब जंगलमें घूमने गया था। स्यारने सोचा यही चुल ठीक है। सुभीतेकी जगह है, अभी स्त्रीको यहाँ ले आना चाहिए, पीछे जैसा होगा देखा जायगा। स्यारने स्त्रीको बाघ की चुलमें बिठा दिया और आप दरवाज़ेपर रखवालीके लिए बैठ गया।

बच्चा पैदा हो चुकनेपर जब स्यारकी स्त्रीने अपने चारोंओर देखा तब उसे मालूम हुआ कि वह बाघकी चुलमें बैठी है। वह डरकर स्यारसे बोली, "तुमने यहाँ मौतके मुँहमें लाकर बिठा दिया है ? अभी समय है, कोई दूसरी जगह खोज लो। बाघ आ जायगा तो हम सबको खा डालेगा।" स्यारने कहा, "तू क्यों डरती है ? जब बाघ आयगा मैं उसे देखलूँगा, तू चुपचाप बैठी रह।"

इतनेमें दूरसे बाघ आता हुआ दिखाई दिया। स्यारने अपनी स्त्रीसे कहा, "देखो, जब नज़दीक आ जायगा तब मैं तुमसे कहूँगा 'रानी चकचुइया !' तब तुम कहना : 'क्या है राजा शालिवाहन ?' बस फिर मैं आगे सब काम बनालूँगा।" स्त्रीने कहा, "बहुत अच्छा।"

जब बाघ चुलके पास आगया तब स्यारने जोरसे कहा।

'रानी चकचुइया !'

'क्या है राजा शालिवाहन' स्त्रीने कहा।

'उठा तो मेरा तीर-कमठा मारूँ साले बाघको।'

बाघ यह जानकर कि मेरी चुलमें रानी चकचुइया और राजा शालिवाहन बैठे हैं, डरकर भाग गया।

बाघ घबराया हुआ भागता जाता था, इतनेमें एक दूसरा स्यार मिला। उसने बाघसे हाथ जोड़कर पूछा,

'मालिक, आज आप इस तरह कहाँ भागे जा रहे हैं।'

बाघने खड़े होकर दम भरते हुए कहा, "क्या बतलाऊँ, आज मेरी चुलमें रानी चकचुइया और राजा शालिवाहन आ बैठे हैं। उनके डरसे भाग आया हूँ।"

स्यारने कहा, "मालिक, जान पड़ता है कि आप धोखा खा गए हैं। वह तो साला स्यार है। चलो मेरे साथ, मैं उसकी पहचान करादूँ।"

बाघ लौट पड़ा। आगे-आगे स्यार और पीछे-पीछे बाघ चलने लगा। जब दोनों चुलके समीप पहुँचे तब स्यारने दोनोंको देखकर कहा,

"रानी चकचुइया !"

स्त्री, 'क्या है राजा शालिवाहन ?"

"उठा तो मेरा तीर-कमठा, मारूँ साले स्यारको। इससे कहा था कि बारह बाघ खोजकर लाना। साला एक लेकर आया है।"

बाघ समझा : यह स्यार मुझे फँसानेके लिए धोखा देकर ले आया है। सचमुचमें मेरी चुलमें रानी चकचुइया और राजा शालिवाहन बैठे हैं। बाघ तुरन्त जी लेकर भागा।

बाघ भागा जा रहा था। इतनेमें उसे एक रीछ मिला। उसने पूछा, "अरे बड़े भैया, कहाँ भागे जारहे हो?"

बाघने खड़े होकर पीछेकी ओर देखते हुए कहा, "क्या बतलाऊँ यार, आज मेरी चुलमें रानी चकचुइया और राजा शालिवाहन आ बैठे हैं। मुझे पकड़वानेके लिए उन्होंने बहुतसे जासूस भेजे हैं। अभी एक स्यार मुझे धोखा देकर उनके पास ले गया था। बड़ी मुश्किलसे भागकर अपने प्राण बचा सका हूँ।"

रीछ बोला, "वाह बड़े भैया! तुम अच्छे बेवकूफ़ बने हो। वह तो साला स्यार है। चलो मेरे साथ, मैं उसकी पहचान करादूँ।"

बाघ, "नहीं भैया! मैं तो अब नहीं जाऊँगा। लोग मुझे धोखा देकर फँसाना चाहते हैं।"

रीछ, "अजी डरते क्यों हो? चलो मेरे साथ, कभी धोखा न होगा। तुम्हें बहुत डर लगता हो तो मैं अपनी पूँछसे बाँधे लेता हूँ। हमारे पीछे-पीछे चले चलना।"

बाघ राज़ी होगया। रीछने उसे अपनी पूँछसे अच्छी तरह कस-कर बाँध लिया। आगे-आगे रीछ और पीछे-पीछे बाघ दोनों चलने लगे ज्योंही वे दोनों चुलके पास पहुँचे त्योंही स्यारने कहा,

"रानी चकचुइया"

"क्या हैं राजा शालिवाहन?" स्त्रीने जवाब दिया।

"उठा तो मेरा तीर-कमठा मारूँ साले रीछको। कहा था बारह बाघ लेकर आना, साला एक लेकर आया है!"

बाघने समझा रीछने भी मुझे धोखा दिया है। वह घबराकर भाग खड़ा हुआ। बाघ भागता जाता था और रीछ पूँछसे बँधा रहनेसे उसके पीछे-पीछे घसिटता जाता था। कुछ दूर घसिटते-घसिटते रीछकी पूँछ टूट गई। वह बाँड़ा होगया। बाघने एक कोसकी दूरीपर जाकर साँस ली।

पीछे रीछने आकर कहा, "आप बड़े डरपोक निकले, ऐसे भागे मानो वह खाये जाता हो। तुमने तो मेरी पूँछही तोड़ डाली। मैं सच

कहता हूँ कि वह सचमुचमें स्यार ही है। तुम्हें विश्वास न हो तो चलो इस बार दूर ही से उसे देखना।

इसी समय पहला स्यार भी आ पहुँचा। उसने कहा, "अजी मालिक क्यों डरते हो? मैं अभी उसे देख आया हूँ। वह सचमुच ठीक मेरा जैसा ही स्यार है। आप हिम्मत करके चलिए तो सही, वह दुम दबाकर आपही भाग जायगा। पर उसे अच्छी तरह देखे बिना घबराकर भागिए मत।"

इस बार बाघको शरम मालुम हुई। उसने साहस करके कहा, "अच्छा चलो, यदि वह राजा शालिवाहन भी होगा तो इस बार उसे भी पछाड़े बिना न छोड़ूँगा।" तीनों चल खड़े हुए।

यहाँ स्यारकी स्त्री ने कहा, "सुनते हो, अब जो अपनी कुशल चाहो तो शीघ्र ही यहाँसे भाग चलो। यदि वह पहचान गया तो फिर हम सबकी यहाँ पटवा-कैसी दूकान फैली दिखाई देगी।"

स्त्रीकी बात मानकर स्यार बाघकी चुलसे बाहर निकल आया। उसे दूरसे बाघ, रीछ और एक घरका भेदी स्यार तीनों आते हुए दिखाई दिये। वह शीघ्र अपनी स्त्री और बच्चेको लेकर एक पेड़पर चढ़ गया।

थोड़ी देरमें तीनों जानवर उस पेड़के नीचे आ खड़े हुए। स्यारको पेड़पर चढ़ा देखकर रीछ पेड़ पकड़कर नीचे खड़ा हो गया। रीछके कन्धोंपर पैर रखकर स्यार खड़ा हुआ और स्यारके कन्धोंपर पैर रखकर बाघ चढ़ा। जब पेड़परसे स्यारने देखा कि बाघ मुझे पकड़ना चाहता है तब उसने अपनी स्त्रीसे कहा,

"रानी चकचुइया!"

"क्या है राजा शालिवाहन?"

"उठा तो मेरा तीर-कमठा मारूँ साले नीचेके बण्डाको। रीछने सोचा: अब मुझपर आफ़त आई। मैं अकेला मुफ़्तमें क्यों पिटूँ? यह सोच वह घबराकर भाग खड़ा हुआ। रीछके भागतेही स्यार और बाघ भी ऊपरसे लद्फद् होते हुए नीचे गिरपड़े और अपना-अपना जी लेकर भागे। मैदान खाली देखकर स्यार अपनी स्त्री और बच्चेको लेकर घर लौट आया। स्यारने अपनी चालाकीसे बाघको हरा दिया।

१

रानी सगुनौती

किसी गाँवमें एक ग़रीब किसान रहता था। खेत उसके पास कई थे; लेकिन जब बोनेके दिन आते तो बीजके लिए उसे साहूकारके आगे हाथ पसारना पड़ता। एक सालकी बात है कि गाँवके और--और किसानों ने तो बोनी करली; लेकिन यह किसान चुपचाप बैठा रहा। कातिक निकला, अगहन बीता; लेकिन उसने कोई ध्यान ही न दिया। जब पूस का महीना लगा तो वह एक दिन गाड़ी लेकर साहूकारके घर गया और बीज माँगा। साहूकारने कहा, "बोनीका समय तो निकल गया। अब बीज लेकर क्या करोगे? जानते नहीं, कहावत है: "पूस न बैये पीस खैंये?"

किसानने कहा, "सो मैं सब जानता हूँ। पर करता क्या? सगुन ही नहीं मिलता था। सगुन मिला तो दौड़ा आया।"

साहूकारने बीज दे दिया। लेकिन वहीं खड़ा था साहूकारका बेटा। उसने किसानसे कहा, "तुमने अभी सगुनकी बात कही थी न, सो बताओ सगुन क्या चीज़ है?"

किसान उसे साथ लेकर गाँवके बाहर आया और उसने एक खेतके नीचेकी थोड़ी-सी गीली मिट्टी उठाकर एक गोली बनाई। फिर उसने वह गोली साहूकारके लड़केके हाथमें देते हुए कहा, "लो यह सगुन है। इस गोलीको अपने पास रक्खोगे तो इसका मज़ा मालूम हो जायगा।" इतना कहकर किसान घर चला आया।

इधर साहूकारका लड़का गोली जेबमें डाले और घोड़ेपर सवार हो परदेश घूमने निकला। चलते-चलते दोपहरको वह एक बियाबान

जंगलमें पहुँचा। अपना घोड़ा उसने रोका नहीं। इतनेमें पीछेसे किसीने पुकारा। साहूकारके कुँवरने पीछे मुड़कर देखा। सोलह वर्षकी एक अपूर्व सुन्दरी, बाल बालमें मोती गुहे, सोलह शृङ्गार किये दौड़ी चली आरही थी। पास आकर बोली, "ओ साहूकारके कुँवर, तुम जा कहाँ रहे हो? मुझे साथ लेचलो।"

कुँवरने पूछा, "तुम हो कौन, जो ऐसी भागती चली आरही हो?"

स्त्री बोली, "किसानने तुम्हें मिट्टीकी गोली दी थी न? मैं वही रानी सगुनौती हूँ। अब तुम मुझे साथ ले चलो, मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगी।"

कुँवरने जेबमें हाथ डाला तो गोली ग़ायब, वह बहुत चकराया। रानी सगुनौतीने कहा, "तुम घबराओ नहीं, मैं तुम्हें कोई कष्ट न होने दूँगी।" साहूकारके लड़केने रानीको घोड़ेपर बिठा लिया और आगे बढ़ा। चलते-चलते वे दोनों एक शहरमें पहुँचे और वहाँ किरायेपर एक मकान लेकर रहने लगे।

एक दिन रानी सगुनौतीने कहा, "बैठे-बैठे क्या करते हो? राजाके पास चले जाओ और मिल जाय तो कोई नौकरी ही करलो।"

साहूकारके लड़केने कहा, "अच्छा।" और राजाके पास गया। दरबार भरा था। वह चुपचाप पीछे जाकर बैठ गया। शामको जब दरबार उठा तो वह घर चला आया। तीन दिन तक उसने ऐसा ही किया। दरबार लगते ही वहाँ जा बैठता और दरबार उठनेपर घर चला आता। चौथे दिन जब दरबार उठने लगा तो राजाने उसे रोका और पूछा, "तुम कौन हो, जो तीन दिनसे रोज़ दरबारमें आते हो और कहते कुछ नहीं? बोलो, क्या चाहते हो?"

कुँवरने कहा, "मैं एक परदेशी हूँ। आपके राज्यमें कुछ दिनोंसे आ बसा हूँ और कुछ काम चाहता हूँ।"

राजाने पूछा, "काम क्या करोगे? और क्या लोगे?"

कुँवरने कहा, "जो काम किसीसे न हो उसे मैं करूँगा और लाख टका रोज़ लूँगा।"

राजाने उसे नौकर रखलिया और उस दिनसे उसका नाम लखटकिया पड़ गया। रहनेकेलिए उसे एक महल मिलगया। रानी सगुनौती

और वह दोनों मज़ेमें रहने लगे।

राजाके महलमें जो नाई काम करता था, वही लखटकियाके घर भी काम करने लगा। नाईका नियम था कि वह राजाके पैर दबाता और वहाँसे फ़ुरसत पाकर लखटकियेके घर जा उसके पैर दबाया करता। एक दिन राजमहलमें नाईको कुछ देर होगई। इधर रानी सगुनौतीने देखा कि नाई नहीं आया तो वह उसके पैर दबाने बैठ गई। महलसे निबटकर जब नाई आया तो देखता क्या है कि एक अत्यन्त रूपवती स्त्री लखटकियाके पैर दबारही है। कुछ देरतक वह खड़ा-खड़ा रानीकी सुन्दरता को निहारता रहा। फिर वहाँसे चला और सीधा राजाके पास आया। बोला, "सरकार जानकी माफ़ी बख्शी जाय तो एक अरज़ करूँ!"

राजाने कहा, "कहो।"

नाई बोला, "सरकार लखटकियाकी जो रानी है, वह बहुत ही सुन्दर है। वह आपके लायक़ है, और आपकी रानी मेरे लायक़ हैं और मेरी खवासिन सबकी टहल करने लायक़ है।"

राजाने कहा, "वह बहुतही सुन्दर है, यह तो तुम ठीक कहते हो। मेरे लायक़ है, यह भी सच है। पर मिले कैसे?"

नाईने कहा, "मिलनेमें क्या रक्खा है सरकार! लखटकियाको आपने इसी शर्तपर रक्खा है न कि जो काम किसीसे न होगा उसे वह करेगा? सो उससे कहिए सरकार, कि राजकुमारीका विवाह होना है। बरात ठहरानेकेलिए शहरके बाहर कोई अच्छा बगीचा नहीं है। इसलिए रात-भरमें चारों तरफ़ चार बगीचे तैयार करादो। बीचमें उनके एक-एक महल हो। रात-भरमें यह काम न हुआ तो तुम्हारी रानीको हम छीन लेंगे।"

राजाको उपाय पसन्द आया। उसने सबेरे ही लखटकियाको बुलाकर कहा, "देखो लखटकिया राजकुमारीका विवाह होना है। उसके लिए शहरके चारों तरफ़ रातभरमें चार बगीचे तैयार करादो। हरेक बगीचेके बीचमें एक एक महल भी हो। अगर रातभरमें तैयार न करा सके तो तुम्हारी रानीको हम छीन लेंगे।

लखटकिया वायदा करके घर चला तो आया, लेकिन उसका खाना-पीना सब छुटगया। इतना बड़ा काम और एक रातमें? असम्भव!

इसी चिन्तामें न जाने क्या क्या सोचता वह घर आया और चुपचाप पलंगपर पड़रहा। रानीने पूछा, "तबियत कैसी है? क्या जी दुखता है?"

लखटकियाने सारा हाल कह सुनाया। रानीने कहा, "फ़िकर छोड़ो और उठकर भोजन करो। सब ठीक हो जायगा।"

लखटकिया उठा। भोजन किया, पर उसकी बेचैनी दूर न हुई। रानीने कहा, "अब तुम एक काम करो। राजाके पास जाओ और उनसे पूछो कि कहाँ-कहाँ कितने बड़े बगीचे तैयार होंगे। किस-किसके पेड़ उनमें लगने चाहिए और महलोंका नमूना कैसा रहेगा? पूरा नकशा तैयार करा लाओ। एक लाख रुपया भी ले आना।"

लखटकिया गया और नकशा तथा रुपया ले आया।

आधी रात बीते जब सारा शहर सो रहा था, रानीने अपने सिरके पाँच बाल उखाड़कर दिये। कहा कि "जहाँ-जहाँ बगीचे और महल बनने हैं, वहाँ इन्हें गाड़ आओ। लेकिन एक बातका ध्यान रखना, इन्हें गाड़कर सीधे घर चले आना, पीछे मुड़कर न देखना। एक बाल नाईके घरके आगे भी गाड़ आना।"

लखटकियाने ऐसा ही किया और घर आकर सोरहा।

नाईको बड़ी उतावली थी कि देखें महल-बगीचे बने या नहीं। सो बड़े तड़के वह उठा और आँखें मलता बगीचे देखने चला। लेकिन दरवाज़ा खोल ज्योंही आगे बढ़ा कि उसका सिर ज़ोरसे एक पेड़से टकराया। लोहूकी धार बह निकली। उसने सोचा कि राततक तो यहाँ कोई पेड़ था नहीं। थोड़ी देरमें इतना बड़ा पेड़ यहाँ कैसे आ खड़ा हुआ? यह सोचते-सोचते वह राजाके पास पहुँचा। बोला, "सरकार, चलकर देखना चाहिए बगीचे और महल तैयार हुए या नहीं, रानी आज ज़रूर आपके महलमें आजायगी।"

इतनेमें लखटकियाने आकर राजासे विनय की कि महल-बगीचे तैयार हैं। चलकर देखलिया जाय।

राजा, मन्त्री, नाई सब गये। देखा नकशेके अनुसार सब चीजें तैयार हैं। कहीं बाल-भर भी अन्तर नहीं है। लखटकियेकी प्रशंसा कर राजा लौट आये।

अगले दिन उन्होंने नाईसे कहा, "तुम्हारी यह युक्ति तो बेकार गई।"

नाईने कहा, "सरकार, मारो चाहे पालो, सच बात तो यह है कि सगुनौती रानी आपके लायक़, आपकी रानी मेरे लायक़ और मेरी खवासिन सबकी टहलके लायक है।"

राजा बोला, "सो तो ठीक है, पर वह मिले कैसे?"

नाईने कहा, "एक बात मुझे और सूझी है। सामने यह जो पहाड़ी खड़ी है न, सो लखटकियेसे कहिए कि रात-रातमें इसे खुदवाकर इसकी जगह एक बड़ा भारी तालाब तैयार करादे। उसके चारों ओर और बीचमें मन्दिर भी हों।"

नाईकी इस युक्तिको सुनकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने सोचा लखटकियाके बूते यह बात कभी नहीं हो सकती है और सगुनौती रानी अब मुझे अवश्य मिल जायगी। यह सोच राजाने लखटकियाको बुलाया और पहाड़ीको हटाकर तालाब और मन्दिर बनानेकी बात बताकर कहा कि रात-रातमें यह सब न हुआ तो सगुनौती रानी तुमसे छिनजायगी।

लखटकियेपर वज्र गिरा। पहाड़ीको हटाना ही मुश्किल था। उसपर लम्बा-चौड़ा तालाब और मन्दिर! यह सब कैसे होगा? बिचारा लखटकिया परेशान घर लौटा। आकर रानीको सारा हाल कह सुनाया। रानीने कहा, "घबराओ मत। जैसे बगीचे बने, तालाब और मन्दिर भी बन जायेंगे। पहले तुम अच्छी तरह खाना खाओ। फिर राजासे जाकर पूछना कि कितना बड़ा तालाब बनेगा और मन्दिर किस ऊँचाईके होंगे। खर्चके लिए पाँच लाख रुपये भी ले आना।"

भोजनके बाद लखटकिया राजाके पास गया और तालाब और मन्दिरोंके नक्शे तथा पाँच लाख रुपया लेकर लौट आया। जब आधी रात हुई तो रानीने उसे जगाकर कहा, कि "उठो गेंती-फावड़ा लो और तालाब खोदने चलो।"

लखटकिया घबगया। रानीने कहा, "परेशान मत होओ। तलवार तुम लेलो और मैं लोटा-पानी लिये लेती हूँ।"

दोनों पहाड़ीपर पहुँचे। वहाँ जाकर रानीने कहा, "तलवारसे तुम मेरे हाथ पैर काट चारों तरफ फेंकदो और भागकर तालाबके बाहर चले जाओ। वहाँ जाकर कहना, "रानी सगुनौती, मुझे पानी दो।" आँखें बन्द रहें। देखो, इस सबमें जरा भी भूल न करना, नहीं तो सारा

बना-बनाया खेल बिगड़ जायगा ।"

लखटकियेने ऐसा ही किया। आँखें खोली तो देखता क्या है कि मीलों लम्बा तालाब खुद गया है। बीचमें और चारों ओर मन्दिर बने हैं। पर तालाबमें पानी नहीं है। तभी उसने देखा कि रानी सगुनौती हाथमें पानी भरा लोटा लिये सीढ़ियोंसे ऊपर चली आरही है। पास आते ही उसने लखटकियासे कहा, "लो, इस पानीसे हाथ मुँह धोलो।"

तालाबकी सीढ़ियोंपर ज्योंही लखटकियेने बैठकर हाथ-मुँह धोया और कुल्ला किया कि तालाब पानीसे लबालब भरगया। दोनों खुशी-खुशी घर आकर सोरहे।

अगले दिन सुबह बड़े तड़के लखटकिया राजाके पास पहुँचा और प्रार्थना की, " महाराज, तालाब तैयार है।"

राजा, मंत्री तथा अफ़सर लोग गये और मीलों लम्बा तालाब देखकर आश्चर्यके मारे दंग रहगये। बीचमें सुन्दर रंग-बिरंगे कमल खिलरहे थे और पक्षी किलोल कररहे थे।

तीसरे दिन अवसर पाकर नाई फिर राजाके पास पहुँचा। कहा, "सरकार कुछभी हो रानी सगुनौती आपके लायक़, आपकी रानी मेरे लायक़ और मेरी खवासिन सबकी टहलके लायक़ है।"

राजा बोला, "तू कहता तो ठीक है; पर वह रानी मिले कैसे ! दो उपाय तो तेरे बेकार हुए।"

नाईने कहा, "सरकार, अबकी मैं एक ऐसा उपाय बताता हूँ कि लखटकिया लाख जनममें भी उसे पूरा न करसके। आप उससे कहिए कि राजकुमारीकी शादी है। उसकेलिए मेरे पुरखोंको स्वर्गमें जाकर न्यौता देआओ।"

अगले दिन राजाने लखटकियेको बुलाकर आज्ञा दी कि "जाओ, स्वर्गमें पुरखोंको राजकुमारीके ब्याहका न्यौता देआओ। न दे आसके तो सगुनौती रानी तुमसे छिन जायगी।"

लखटकिया सन्नाटेमें रहगया। घर आकर रानीको उसने राजा की आज्ञा कह सुनाई। रानीने कहा, "कोई बात नहीं। यह सब भी हो जायगा। तुम खा-पीकर राजाके पास जाओ और उनसे छह महीनेकी मुहलत और दस लाख रुपये ले आओ। उनसे यह भी कहना कि जिन-जिन

को न्यौता भेजना है, उन्हें चिट्ठी लिखदें और स्मशानमें सौ गाड़ी सूखी लकड़ी डलवादें। आजसे सातवें दिन मैं स्वर्गकी यात्रा करूँगा।"

राजाने यह सब मंजूर करदिया। इधर लखटकियेने एक होशियार राजको बुलवाया जिसने सात दिनके अन्दर स्मशानसे महलतक एक सुरंग तैयार करदी। सातवें दिन लखटकियेने राजासे जाकर कहा, "महाराज, चिट्ठियाँ दीजिये। मैं जानेकेलिए तैयार हूँ।"

मंत्रीने चिट्ठियाँ लाकर दीं। नाईने भी अपने पिताकेलिए एक चिट्ठी दी। सौ गाड़ी लकड़ियाँ पहले ही लखटकियेके बताये स्थानपर डलवादी गई थीं। लकड़ियोंके ढेरपर चढ़कर लखटकियेने सबको 'राम-राम' की और उसके बाद धीरे-धीरे लकड़ियोंके बीचमें उतरते हुए उसने ढेरमें आग लगा देनेकेलिए कहा।

राजाकी आज्ञासे आग लगादी गई और थोड़ी देरमें आग 'धू-धू' करके जलने लगी। सुरंगमें होकर लखटकिया अपने घर चला आया।

नाई बोला, "हुजूर, क़सूर माफ़ हो। इस बार मेरी तरकीब काम करगई। लखटकिया तो आगमें जलगया। रानी सगुनौती अब आपकी हुई।"

राजाने कहा, "छह महीनेकी उसने मुहलत ली है। देखें क्या होता है।"

लखटकिया आनन्दसे अपने घर रहने लगा। दूसरे शहरसे उसने एक सुनारको बुलाकर एक सोनेकी पेटी, उस्तरा, कैंची, नहन्नी आदि बनवाये और जो चिट्ठियाँ राजाने दी थीं, उनके उत्तर एक विचित्र स्याही से लिखकर तैयार करलिये। छह महीनेतक वह घरमें छिपा रहा। इस बीच उसने बाल न बनवाये। नाखून और बाल बढ़ जानेसे उसकी सूरत बड़ी भयंकर मालूम होती थी।

छह महीने पूरे होनेपर एक दिन वह राजसभामें गया और राजासे बोला, "महाराज, मैं राजकुमारीके विवाहकी चिट्ठियाँ आपके पुरखोंको दे आया। आपके पूज्य पिताजी स्वर्गमें राज्य करते हैं और उनसे सभी देवता और प्रजा बहुत खुश हैं। सब लोग राजाकी प्रशंसा करते हैं। राजकुमारीके विवाहके निमन्त्रणको पाकर वे बहुत प्रसन्न हुए। परन्तु इसी समय वे वहाँ एक महान यज्ञ कररहे हैं। इस कारण राज-

कुमारीके विवाहमें शामिल न हो सकेंगे। इस बातका उन्हें बहुत दुख है। मेरे वहाँ पहुँचनेसे उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई। वहाँ उनको सब प्रकारका सुख है। दुख है तो बस एक कि उनके पास कोई नाई नहीं है, जो उनकी टहल करे और बाल बनावे। नाईके न होनेसे देखिए, मेरे बाल कितने बढ़गये हैं। उन्होंने अपने नाईको फौरन भेज देनेकेलिए कहा है।"

इसके बाद नाईकी ओर देखकर उसने कहा, "लो, यह तुम्हारे पिताकी चिट्ठी आई है। स्वर्गमें नाइयोंकी कमी है। सो महाराजने और तुम्हारे पिताने तुम्हें फौरन बुलाया है। तुम्हारे पिताने कुछ भेंट भी भेजी है। वह यह है। साथ ही एक हज़ार मुहरें दी हैं। इनकी पत्तलें खरीद कर साथ लेते जाना। वहाँ पत्तलें बहुत मँहगी हैं और कम मिलती हैं।"

नाई सोनेकी पेटी, उस्तरा आदि पाकर बहुत प्रसन्न हुआ।

राजाने कहा, "खवास, तू अभी स्वर्ग चला जा। महाराजने बुलाया है। देर न कर।"

फिर क्या था। नाई रानी सगुनौतीकी आशा छोड़ स्वर्ग जाने की तैयारी करने लगा। सौ गाड़ी लकड़ी श्मशानमें इकट्ठी कीगईं और एक हजार मुहरोंकी पत्तलें खरीदकर स्वर्ग भेजनेके लिए ऊपर रखदीं गईं। नाई पत्तलोंपर बैठ गया। लकड़ियोंमें आग लगादी गई और नाई सच-मुच ही स्वर्ग चला गया।

छह महीने बीत जानेपर भी जब नाई न लौटा तो एक दिन खवासिन लखटकियेके पास आकर बोली, "लाला, तुम तो छह महीनेमें लौट आये थे। तुम्हारे खवास तो अभीतक नहीं आये। क्या बात है?"

लखटकियेने कहा, मालूम होता है कि वे लोभमें पड़ गये। भौजी स्वर्गमें शादियोंकी बहुत भरमार है।"

छह महीने और बीत गये। तब एक दिन खवासिनने फिर आकर पूछा। लखटकियेने कहा, "अब वह न आवेगा। वह तो लकड़ियोंके ढेरमें जलकर मरगया।"

इधर राजाको भी नाईके मरनेका विश्वास होगया। लखटकिया की बुद्धिमानी और चतुराईको देखकर उसने राजकुमारीका विवाह उसके साथ करदिया और दहेजमें बहुतसा धन दिया।

कुछ दिनों बाद लखटकिया दोनों रानियोंको साथ लेकर अपने

घरकी ओर रवाना हुआ। जब वह उसी जंगलमें आया, जहाँ रानी सगुनौती उसे मिली थी तब कहारोंसे मालूम हुआ कि पालकीका बोझ बहुत कम होगया है। पर्दा उठाकर देखागया तो पता चला कि रानी सगुनौती उसमें नहीं है। उसकी जगह एक मिट्टीकी गोली रक्खी है।

लखटकियाको बहुत दुख हुआ। नई रानीको साथ लेकर वह घर आया। साहूकार अपने कुँवरको घर आया देख बहुत खुश हुआ। उस दिनसे वे सब आनन्दपूर्वक रहने लगे। मिट्टीकी गोलीको उसने किसानको लौटा दिया। लेकिन रानी सगुनौतीकी याद वह जन्म-भर न भूला। जब-जब उसकी याद आजाती थी, उसका जी उदास हो जाता था।

१०

लालकी चोरी

किसी नगरमें एक महाजन रहता था। उसके चार लड़के थे। महाजन जब बुड्ढा हुआ और उसके हाथ-पैर थक गये तो उसने अपनी जायदाद उन बेटोंमें बाँटदी। एकको साहूकारी; दूसरेको बजाजीकी दुकान, तीसरेको बीज-गल्ला और सबसे छोटेको खेती-बारीका काम मिला। चारों भाई चतुर थे। अपने-अपने काममें उन्होंने खूब उन्नति कर दिखाई।

एक दिन महाजनने उन सबको बुलाकर कहा, "पुत्रो, अब मेरा अन्त समय आगया है। तुम चारों भाई हिल-मिलकर रहना और अपना-अपना काम मन लगाकर करना। मेरे पलंगके चारों पायोंके नीचे चार लाल गड़े हैं। जीमें आवे तब खोद लेना और एक-एक बाँट लेना।"

कुछ दिनों बाद महाजनकी मृत्यु हो गई। पिताके मरनेके बाद एक दिन चारों भाई इकट्ठे हुए और उन्होंने सलाह की कि लाल खोद कर एक-एक बाँट लेना चाहिए। पायोंके नीचेकी जगह खोदी गई। लेकिन सिर्फ तीन लाल निकले! एक लाल कहाँ गया? चारों बैठकर सोचने लगे, पिताजी झूठ नहीं बोल सकते। हो न हो, हममेंसे ही किसीने एक लाल चुराया है। और कोई तो लालकी बात जानता ही न था। इसलिए वे चारों ऐसी युक्ति सोचने लगे कि लाल तो निकल आवे, लेकिन चोरका पता न चले। नहीं तो आपसमें भेद-भाव होगा और पिताकी आत्मा परलोकमें दुख पावेगी। बहुत-कुछ सोच-विचारके बाद चारों भाई किसी न्यायी राजासे न्याय करानेकेलिए चल पड़े।

चलते-चलते वे एक राजाके राजमें पहुँचे। सुना कि वह राजा बड़ा चतुर है: दूधका दूध और पानीका पानी करदेता है। दूर-दूरके लोग वहाँ न्यायकेलिए आते हैं। सो चारों भाई राज-दरबारमें पहुँचे। राजा को प्रणाम कर लालकी चोरीका सारा हाल कह सुनाया और कहा, "महाराज, यह हम भाइयोंका मामला है। इसे इस तरह निपटाइये कि----

माल पाइए आपनो, चोर न जान्यो जाय।
प्रीत-रीत दिन-दिन बढ़ै, कीजे सोई उपाय॥"

राजाने सारा हाल सुनकर कहा, "आप लोग सरायमें ठहरिए। कल आपका मामला निपटा दूँगा।"

चारों भाई सरायमें जाकर ठहर गये। राजाकी ओरसे उनके खाने-पीने और सुख-सुविधाका बन्दोबस्त कर दिया गया। चारों भाइयोंने रसोई बनाई और जब एक साथ खानेको बैठे तो एक भाईने कहा, "राजाने सामान तो भेज दिया, लेकिन आटा खराब दिया। उसमें खूनकी बास आती है।"

दूसरेने कहा, "आटा तो आटा, घी भी जूठा है।"

तीसरा बोला, "और दूधमें भी औरतका दूध मिला है।"

चौथा बोला, "आटा, घी, दूध जैसे हैं सो तो हैं ही; लेकिन इन पत्तलोंपर भी बीट पड़ी हुई थी।"

राजाका नौकर बैठा-बैठा इनकी बातें सुनरहा था। उसने आकर राजासे सब हाल कहा। राजाको बड़ा क्रोध आया। उसने चारों भाइयों और भण्डारीको बुलाया। भाइयोंसे पूछा, "आप लोगोंने जो-जो बात कही है, क्या वह सच है?"

भाइयोंने कहा, "आप उसकी जाँच कर लीजिये।"

सबसे पहले आटेवाला बुलाया गया। उसने कहा, "सरकार, मुझे तो कुछ मालूम नहीं। मैंने तो गेहूँ चुन्नी किसानसे खरीदे थे।"

चुन्नी फौरन दरबारमें हाजिर किया गया। उसने हाथ जोड़कर कहा, "सरकार, जिस समय गेहूँकी गाहनी होरही थी, एक जंगली सुअर उधर आगया था। हम लोगोंने मिलकर उसे गेहूँकी दाँयपर मारा। उसके खूनसे कुछ गेहूँ भीग गये थे।"

बात सच निकली। अब घीवाला बुलाया गया। उसने अरदास

की, "सरकार माई-बाप हैं। जो चाहें सो करें। लेकिन सच बात तो यह है कि मैंने घी महतरसे खरीदा था और महतरने जूठी पत्तलोंसे इकट्ठा किया था।"

राजा बड़ा शर्मिन्दा हुआ। अब दूधवालेकी बारी आई। उसने विनती की, "सरकार आज दूध दुहकर मैंने ग्वालिनके पास रख दिया था; लेकिन जब बच्चा माँका दूध पीकर उठा तो दूधकी फुहार बर्तनमें जा गिरी। आइन्दा अब कभी मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

राजा चुप थे। अब पत्तलोंकी जाँचकेलिए नाईको बुलाया गया। उसने आकर प्रार्थना की "सरकार, आज अच्छी पत्तलें नहीं थीं। इस-लिए बीट पड़े पत्तोंको साफ़ करके मैं उनकी पत्तल बना लाया।"

चारो भाइयोंकी बातें सच निकलीं। राजा और उसके दरबारके सब आदमी दंग रह गये। राजाने उन चारों भाइयोंसे कहा, "तुम सब इतने चतुर और बारीक-से-बारीक बात समझ लेनेवाले होकर भी चोर नहीं पकड़ सके तो तुम्हारा निपटारा मुझसे न हो सकेगा। तुम लोग धरमपुरके राजाके पास जाओ। वह तुम्हारा न्याय कर देंगे।"

चारों भाई धरमपुरके राजाके सामने हाज़िर हुए और बोले कि "महाराज यह हम भाइयोंका मामला है। इसे ऐसे निबटाइये कि—

माल पाइये आपनो, चोर न जान्यौ जाय।
प्रीति-रीत दिन-दिन बढ़ै, कीजै सोई उपाय॥"

राजा इनकी चतुराईकी बात सुन चुका था। उसने सोचा पहले इनकी जाँच करनी चाहिए। अगर मेरी जीत हुई तो इनका मामला हाथमें लूँगा, नहीं तो नहीं। यह सोचकर उसने एक घड़ा मँगाया। उसका मुँह बन्द था। उसने चारों भाइयोंसे पूछा, "आप लोग पहले यह बताइए कि इस घड़ेमें क्या है?"

बड़े भाईने घड़ेको हिलाया और वह बोला, "कोई गोल-गोल चीज़ है।"

दूसरेने कहा, "गोल है और लाल है।"

तीसरा, "गोल और लाल तो है ही, दानेदार भी है।"

चौथा, "अनार है।" और उसने घड़ेको उठाकर धरतीसे दे मारा। सचमुच उसमें अनार ही था। राजा चकित होकर रह गया।

उसने चारों भाइयोंकी तारीफ़ की और कहा कि तुम्हारा मामला मुझसे हल न होगा। तुम स्वर्णगढ़ जाओ। वहाँका राजा चोरको पकड़ देगा।"

चारों भाई स्वर्णगढ़की ओर चले। चलते-चलते बड़े भाईने कहा, "इस रास्तेसे कोई लँगड़ा ऊँट निकला है।"

दूसरा बोला, "वह काना भी था।"

तीसरेने कहा, "उसका एक दाँत भी टूटा था।"

चौथा बोला, "उसपर एक गर्भवती स्त्री बैठी थी।"

इनके साथका सिपाही इनकी बातें सुनकर भौचक्का-सा रह गया। उसने स्वर्णगढ़के राजाके पास जाकर सारा हाल कह सुनाया। राजाने चारों भाइयोंको बुलाकर पूछा, "तुम लोगोंने यह कैसे जाना कि रास्तेसे लँगड़ा, काना, एक टूटे दाँतवाला, ऊँट निकला और उसपर गर्भवती स्त्री बैठी थी?"

बड़े भाईने कहा, "महाराज, रास्तेमें मैंने ऊँटके पैरके निशान देखे। तीन पैर तो धूलपर साफ़ थे। चौथा उतना साफ़ न था। इससे मैंने जाना कि वह लँगड़ा था।"

दूसरा भाई बोला, "ऊँट काना भी था, यह मैंने इस तरह जाना कि उसने रास्तेके एक तरफ़की ही घास चरी थी।"

तीसरा, "महाराज, जहाँ-जहाँ घासमें उसने मुँह मारा वहाँ-वहाँ बीचमें थोड़ी घास रहगई थी। इससे मैंने जाना कि उसका एक दाँत टूटा था।"

चौथा, "उसपर गर्भवती स्त्री बैठी थी, इसका पता मुझे यों चला कि जहाँ-जहाँ ऊँटको बिठाला गया था, वहाँ सवारके हाथके निशान बने थे। इससे मालूम होता था कि सवार बैठा है और हाथ टेककर खड़ा हुआ है।

इनकी चतुराईको देखकर राजा बोला, "तुम्हारा भेद निकालना मेरे बसकी बात नहीं है। मेरी एक बेटी धारानगरीमें रहती है। वहाँ जाओ। वह तुम्हारा न्याय करदेगी।"

चारों भाई न्याय करानेपर तुले ही थे। हारकर धारानगरी पहुँचे। वहाँपर राजकुमारी चिकके भीतर बैठकर न्याय किया करती थी। नीचे एक नगाड़ा रक्खा था। उसपर चोट पड़ते ही राजकुमारी कचहरीमें

आ बैठती थी। इन चारों भाइयोंने भी नगाड़ा बजाया और जब कुमारी चिकके पीछे आ बैठी तो उन्होंने कहा, "हम चारों भाई हैं। भेद-भाव नहीं चाहते। सो ऐसा कीजिये कि—

माल पाइये आपनो, चोर न जान्यौ जाय।
प्रीत रीत दिन-दिन बढ़ै, कीजे सोई उपाय ॥"

राजकुमारीने कहा, "ठीक, मैं आप लोगोंका न्याय करदूँगी। लेकिन पन्द्रह रोज़ आपको यहाँ ठहरना पड़ेगा।"

चारों भाई राजी होगये। राजकुमारीने उन्हें अलग-अलग चार जगहोंपर ठहरा दिया, और कोई किसीसे मिलने न पावे, इसकेलिए पहरा लगा दिया।

पहले दिन राजकुमारीने बड़े भाईको बुलाया। कहा, "मैं तुम्हें एक किस्सा सुनाती हूँ। उसे ध्यानसे सुनना।" और राजकुमारीने कहना शुरू किया :—

किसी नगरमें एक राजा रहता था। उसके और वज़ीरके लड़केमें बड़ी दोस्ती थी। दोनों साथ-साथ पढ़ते और खेलते थे। एक दिन उन्होंने प्रतिज्ञा की कि हम दोनोंमेंसे जिसका विवाह पहले होगा, वह अपनी स्त्रीको पहली रात दूसरे मित्रके पास भेजेगा।

कुछ वर्षोंके बाद राजाके पुत्रका विवाह हुआ। गौना होकर बहू घर आई तो राजकुमारको अपनी प्रतिज्ञा याद आई। उसने स्त्रीसे सारा हाल कह सुनाया। कहा कि तुम्हें मेरी प्रतिज्ञाको निबाहना होगा।

दुलहिन पतिव्रता थी। पतिकी आज्ञा मानना उसका धर्म था। उसने सोलह प्रकारके शृंगार किये और सोनेकी झारी तथा मिठाई-भरा थाल हाथमें लिये वह वज़ीरके लड़केके पास चलदी। चारही क़दम निकली थी कि उसे कुछ चोर मिले। जब वे उसका धन छीननेको हुए तो उसने कहा—"आप सब मेरे 'धरम' के पिता हैं। पहले मेरी बात सुन लें, फिर जो जीमें आवे करें। मैं राजकुमारकी दुलहिन हूँ और वज़ीरके लड़केके पास जारही हूँ। वहाँसे अभी थोड़ी देरमें लौटूँगी तो अपना सारा धन आपको दे जाऊँगी। आप विश्वास रखिए, धोखा न दूँगी।"

चोर आपसमें सलाह करने लगे। किसीने कहा कि बड़े घरकी बहू है, झूठ न बोलेगी। कोई कहने लगा हाथ लगा माल छोड़नेसे बढ़कर

और बेवकूफी क्या होगी ? लेकिन आखिरमें चोरोंके सरदारने दुलहिनसे कहा : अच्छी बात है, तुम जाओ लेकिन अपनी बात याद रखना।

दुलहिन चलदी। आधी रातका समय था। वज़ीरका लड़का राह देखरहा था। पाज़ेबकी आवाज़ सुनकर वह बाहर आया। बोला : आओ बहन ! दुलहिन आकर कालीनपर बैठ गई। वज़ीरके लड़केने कीमती गहने और बढ़िया कपड़े निकालकर उसे दिये। कहा, बहन भाईकी भेंट है, इसे स्वीकार करो। इसके बाद उसने उसे भोजन कराया और पैर छूकर बिदाई दी।

राजबधू वज़ीरके लड़केसे बिदा होकर सीधी चोरोंके अड्डेपर आई और सरदारसे बोली—"मैं हाज़िर हूँ। लीजिए ये गहने।"

सरदारकी आँखोंमें आँसू भर आये। और चोर भी दंग रहगये। उन्हें सपनेमें भी आशा न थी कि लाखोंका माल खुशीसे देनेकेलिए वह लक्ष्मी बेधड़क यहाँ आजायगी ! सरदारने आगे बढ़कर कहा, "बेटी, जब तू हमें अपना धर्मका पिता कहचुकी है तो तुझसे कुछभी लेना हमारे लिए पापकी बात है।"

इतना कहकर उसने एक हीरेका हार उसके गलेमें डाल दिया।

राजबधू तब राजकुमारके पास पहुँची और उसने उसे सारा हाल कह सुनाया।

इतना कहकर राजकुमारीने महाजनके बेटेसे पूछा, "तुमने सारी कहानी ध्यानसे सुनी। अब बताओ कि राजकुमार, वजीरका लड़का, राजबधू और चोर, इनमेंसे तुम किसे कैसा समझते हो ?"

बड़े भाईने कहा, "मुझे तो वे चारों बहुत ईमानदार मालूम होते हैं। अपनी प्रतिज्ञा रखनेकेलिए राजकुमारने जो कुछ किया उससे उसकी सचाई और ईमानदारीका पता चलता है। लाखोंमें बिरले ही ऐसे मिलेंगे। राजबधूकी भी जितनी प्रशंसा कीजाय, थोड़ी है। अपने पतिके वचनको रखनेकेलिए ही वह पराये आदमीके पास चलीगई; और वज़ीरका लड़का ? वह तो धन्य है। आधी रात गये एक जवान लड़कीको अकेलेमें अपने पास पाकर उसका मन नहीं डिगा और उसने अपनी बहनके रूपमें ही उसे देखा ! ऐसे नर-रत्न संसारमें दुर्लभ हैं। रही चोरोंकी बात सो उन्होंने ऐसा किया जैसा दुनियामें कोई धर्मात्मा भी नहीं करेगा।

लाखोंकी सम्पत्ति छोड़कर उन्होंने अपने पापी मनपर विजय पायी। कमाल की बात थी! मैं तो उन चारोंकी प्रशंसा ही कर सकता हूँ।

राजकुमारीने यह उत्तर सुनकर बड़े भाईको विदा दी और दूसरेको बुलाया। उसे भी यही कहानी सुनाई और वही उत्तर मिला जो बड़े भाईसे मिला था। तीसरेके साथ भी यही हुआ। अन्तमें राजकुमारीने सबसे छोटे भाईको जब यह कहानी सुनाकर उसकी राय माँगी तो उसने कहा, "आप सचमुच पूछती हैं तो राजकुमार बड़ा मूर्ख था। आधी रात गये पराये घर अपनी स्त्रीको भेजदेना मूर्खता नहीं तो क्या है? भाड़में जाय ऐसी प्रतिज्ञा! राजबधू भी कुलटा थी। नहीं तो वह खुशी खुशी दूसरेके घर न चलीजाती। और मन्त्रीका पुत्र? वह तो एकदम मूर्ख था। रातके समय एकान्तमें रूपवती स्त्रीको पाकर उसे बहनके रूपमें देखना कहाँकी बुद्धिमानी है? रहे चोर, सो वे भी बेवकूफ ही थे। नहीं तो हाथ आयी धन-सम्पत्तिको क्यों छोड़ते?"

छोटे पुत्रकी राय सुनकर राजकुमारीने कहा, "अच्छी बात है; कुँवरसाहब! अब आप वह लाल निकालकर रखदीजिये जो आपने चुराया है। नहीं तो मारे हण्टरोंके तुम्हारी चमड़ी उधेड़दूँगी। जल्दी करो।"

छोटे पुत्रने लाल चुराया था। इगासे लड़काकी लिड़ोंही आँखें! राजकुमारीकी फटकार सुनकर वह सहम गया। कुछ उत्तर देते नहीं बना। चोरकी हिम्मत ही कितनी होती है। जब उसने देखा कि अब उसकी खैरियत नहीं तो उसने अपनी जेबसे निकालकर लाल उसे दे दिया।

राजकुमारीने तीन लाल पहलेही लेलिये थे। चौथा लाल भी उनमें मिलाकर चारों भाइयोंको एक साथ बुलाया और कहा, "लो देखो खोया लाल मिल गया! अब तुम अपना-अपना लाल लेकर जाओ।"

चारों भाई लाल लेकर राजकुमारीकी चतुराईकी प्रशंसा करते हुए घर आये। चोरका पता नहीं चला और चारों भाइयोंकी प्रीति जन्म-भर एक-सी बनी रही।

———

११

ठगकी बेटी

किसी नगरमें एक सेठ रहता था। बड़ा धनी था। ऊँचे-ऊँचे महल थे। हाथी-घोड़े, नौकर-चाकर, सबकुछ भरा-पुरा था। लेकिन कुछ दिनों बाद समयने ऐसा पल्टा खाया कि सेठजीकी हालत बिगड़गई। धन-सम्पत्ति नष्ट हुई और पेट भरनेके लाले पड़ने लगे। जब तंगी बहुत बढ़ी तो एक दिन उनकी सेठानीने कहा, "यों कैसे काम चलेगा? न हो तो कहीं कोई धन्धा ही देखो।"

सेठने कहा, "अच्छा।" और अगले दिन वे अकेले परदेसकेलिए रवाना होगये। चलते-चलते वे कुछ दिनों बाद एक शहरमें पहुँचे और उन्होंने राजदरबारमें नौकरीकेलिए अर्ज़ी दी। जवाब मिला कि इस समय कोई ऊँची जगह तो खाली है नहीं, पहरेकी एक नौकरी है; करना चाहें तो करलें। सेठने सोचा 'बैठेसे बेगार भली।' सो उन्होंने वह जगह मंजूर करली और काम करनेलगे।

सेठको कामका अनुभव तो था ही और चतुर भी थे, इसलिए उनके कामसे राजा बहुत खुश हुआ और कुछ ही दिनोंमें उन्हें पहरेदारों का जमादार बना दिया। धीरे-धीरे दो बरस बीतगये।

एक रातकी बात कि रानी अपने महलमें सोरहीं थीं। अचानक उनका शमादान जलते-जलते बुझगया। रानीकी आँख खुलगई। उन्होंने दासीसे कहा, "देख तो, क्या इसमें तेल नहीं है?"

दासीने देखकर कहा, "तेल-बत्ती सब ठीक है। हवा भी कहींसे नहीं आरही है। पता नहीं, कैसे बुझ गया।"

रानी चुपचाप सो गई। अगले दिन उठते ही उसने राजासे कहा, "महाराज, आपके यहाँ जितने परदेसी नौकर हैं, उनका हिसाब साफ़ कर दीजिए। उन्हें कुछ दिनोंकेलिए घर चला जाना चाहिए।"

राजाने विस्मयसे भरकर पूछा, "क्यों?"

रानीने कहा, "बात कुछ नहीं। रातको मेरे महलका शमादान अचानक बुझ गया। तेल-बत्ती सब मौजूद थी, हवा भी बिलकुल शांत थी। मालूम होता है किसी नौकरकी स्त्रीने आह भरी होगी! बेचारी सोचती होगी कि उसका घरवाला कितने दिनोंसे उससे दूर है। न जाने कैसे होगा! सो महाराज, सब परदेसी नौकरोंको तीन-तीन महीनेकी तनख्वाह देकर छुट्टी दे दीजिए।

राजा राज़ी होगये। सेठ साहबका भी हिसाब हुआ और पाँचसौ रुपये लेकर वह घरको रवाना हुए। रास्तेमें एक फ़क़ीरका साथ होगया। सेठने कहा, "बाबा कोई बात कहो, जिससे रास्ता कटे।"

फ़कीर बोला, "मैं मुफ़्तमें बात नहीं करता। मेरी एक-एक बातका दाम सवासौ रुपया है। सुनना हो तो खर्च करो।"

सेठने सोचा, 'सवासौ दाम हैं तो बात कोई बढ़िया ही होगी। सुनना चाहिए। सो उसने सवासौ रुपये फ़कीरके हाथपर गिन दिये और कहा, "अच्छा, बाबा, एक बात सुनादे।"

फ़कीरने रुपये रक्खे। कहा, "घरके फाटकपर बेरी न लगावे।"

सेठने सोचा, यह तो कुछ बात हुई नहीं। लाओ सवासौ और भी खर्च करूँ। शायद कुछ हाथ लगे। यह सोच उसने कहा, "बाबा, सवासौ और लो। एक बात और सुनाओ।"

फ़कीरने कहा, "अच्छा, शहर-कोतवालसे दोस्ती न करे।"

ढाईसौ गये। लेकिन मतलबकी बात कुछभी न मिली। सेठने सोचा, सवासौकी बाज़ी औरभी लगाना चाहिए। इतना गया तो कुछ तो हाथ आवे। इसलिए उसने फ़कीरसे एक बात और सुनानेकेलिए कहा। फ़कीरने रुपये लेकर कहा, "राहमें जो मिले सो न छोड़े।"

सेठको बड़ा मलाल हुआ। पौने चारसौ योंही गये। तब उसने बचे-खुचे सवासौ निकालकर फ़कीरके सामने पटक दिये। कहा, "बाबा इन्हें ही ले जाकर मैं क्या करूँगा? एक बात और सही!"

फ़क़ीरने रुपये उठाये। कहा, "खाट झाड़कर सोवे।"

सेठकी अंटी खाली होगयी। उसने कहा, "बाबा, खाली हाथ अब घर जाकर क्या करूँगा? एक काम करो। मेरे कपड़े तुम लो, अपने मुझे दे दो।"

फ़क़ीर राज़ी होगया। सेठ बेचारा फ़क़ीरका बाना पहनकर घरका रास्ता छोड़ लौट पड़ा। चलते-चलते वह एक नगरमें पहुँचा और वहाँके एक साहूकारके यहाँ ठहर गया।

अगले दिन साहूकारके यहाँ सबेरे ही राजाका सिपाही आया। राजा साहब शिकार खेलने जारहे थे। अचानक उन्हें कोई बात याद आई और उन्होंने साहूकारको बुलाया। साहूकारने झटपट सिरपर पगड़ी रक्खी, गलेमें दुपट्टा डाला और हाथमें छड़ी लेकर चल दिये। फाटकपर बेरीका एक झाड़ था। ज्योंही तेजीमें वह वहाँसे निकले कि उनकी पगड़ी झाड़ में उलझ गयी। साहूकार लगे उसे सफ़ाईसे निकालने। लेकिन पगड़ी ऐसी उलझी कि निकालते-निकालते काफी देर होगयी और राजा बिगड़कर शिकारपर चले गये।

सेठ सब बातें देखरहे थे। उन्होंने कहा, "चलो, फ़क़ीरकी एक बात तो सच हुई।"

दो-तीन दिन बाद एक दिन सेठ सबेरे ही घूमने निकले। देखते क्या हैं कि चौराहेपर बड़ी भीड़ लगी है। लोगोंसे पूछा तो मालूम हुआ कि शहरके एक सेठके लड़केकी कोतवालसे बड़ी दोस्ती थी। आज वही कोतवाल एक क़तलके मुकद्दमेमें शकपर अपने दोस्तको पकड़े लिये जारहा है।

सेठने मन-ही-मन कहा, "ढाईसौ वसूल हुए।"

शहरमें रहते-रहते कई दिन होगये। सेठने सोचा कि अब और किसी दूसरे नगरमें चलना चाहिए। बड़े तड़के उठकर चल दिया। शहरसे निकलकर थोड़ी दूरपर एक नदी मिली। वहाँ सेठने हाथ-मुँह धोया। उसी समय उसे एक केंकड़ा दिखायी दिया। सेठको फकीरकी बात याद आई कि राहमें जो मिले सो न छोड़े। उसने केंकड़ेको उठाकर लोटेमें रख लिया। वह आगे बढ़ा। दोपहर होते-होते वह एक बियाबान जंगलमें पहुँचा। पैर उसके थक गये थे। एक पेड़ तले रुककर उसने

खाना बनाया और खा-पीकर लेटगया। लोटा उसने एक पेड़की डालपर टाँग दिया। थकावटसे सेठ चूर होरहा था। लेटते ही नींद आगयी।

उस पेड़की जड़में एक साँप रहता था। उसकी दोस्ती एक कौवेसे थी। ज्योंही कोई मुसाफिर उस पेड़के नीचे आकर लेटता, कौवा 'काँव-काँव' चिल्लाकर साँपको खबर दे देता और साँप आकर उसे काट लेता। सेठको सोया देखकर कौएने आवाज़ लगाई और साँपने बाहर आकर उसे डस लिया।

ऊपर लोटेमें से झाँककर केंकड़ा देखरहा था। उसे बड़ा दुख हुआ। नीचे होता तो वह कुछ उपाय भी करता। लेकिन लोटेके भीतर तो वह बेबस था।

इधर कौएकी निगाह केंकड़ेपर पड़ी। उसने सोचा कि लाओ पहले लोटेकी इस चीज़को निबटालूँ, तब मुर्देका खाना शुरू करूँगा। यह सोचकर वह लोटेके पास आ बैठा और इधर-उधर गर्दन घुमा-फिरा कर देखते हुए उसने लोटेके भीतर मुँह डाल दिया। केंकड़ा तो मौक़ा देख ही रहा था। उसने झट अपने काँतरोंसे उसकी गर्दन पकड़ली। कौएने बहुतेरा ज़ोर लगाया; लेकिन केंकड़ेने छोड़ा नहीं। तब उसने 'टें-टें' करके साँपकी सहायता चाही। साँप बाहर निकलकर आया। बोला, "इतना भोजन सामने पड़ा है। फिर यह चिल्लाना क्यों?"

कौएने कहा, "अरे, मेरी हालत तो देखो।"

साँपने देखकर केंकड़े से कहा, "तुम इसे छोड़ दो।"

केंकड़ा बोला, "मैं तैयार हूँ; लेकिन मेरे मित्रको तुमने डसलिया है, सो उन्हें पहले ठीक करो। तब इसे छोड़ूँगा।"

कौएकी जान निकली जारही थी। उसने साँपसे कहा, "भैया, मुझे बचा।"

साँप सेठके पास पहुँचा और जहाँ उसने काटा था, वहाँ मुँह लगा कर सारा विष खींच लिया। सेठ जी उठे।

थोड़ी देर बाद उठकर चल दिये। रास्तेमें उसे एक नदी मिली। केंकड़ेने कहा, "मुझे थोड़ी देरकेलिए छोड़दो तो मैं अपने घरवालोंसे मिल आऊँ।"

सेठने कहा, "लौटकर तुम न आये तो?"

केंकड़ा बोला, "विश्वास रक्खो, मैं आऊँगा।"

सेठने केंकड़ेको छोड़ दिया और पासके पेड़के नीचे बैठकर आराम करने लगा। केंकड़ा जलमें डुबकी लगाकर अपने घरवालोंके पास पहुँचा। सबको बड़ा आनन्द हुआ। कुछ देर बाद केंकड़ा दो लाल साथमें लेकर बाहर आया। बोला, "यह तुम्हारेलिए भेंट है।"

सेठने कहा, "मैं इन्हें लेकर क्या करूँगा ? रास्तेमें कोई छीन लेगा।"

केंकड़ा बोला, "इसकी चिन्ता मत करो। अपनी काँतरसे मैं तुम्हारी जाँघ चीरकर उसमें इन्हें रख दूँगा। जब ज़रूरत हो निकाल लेना।" इतना कहकर केंकड़ेने सेठकी जाँघ चीरकर दोनों लाल अन्दर रखदिये और दवा लगादी जिससे घाव भर गया। इसके बाद केंकड़ेने कहा, "अब मुझे छुट्टी दो। मैं अपने घरवालोंके साथ रहना चाहता हूँ।"

सेठने केंकड़ेको छुट्टी देदी और आगे बढ़ा। चलते-चलते उसे एक मकान मिला। उसके सामने एक बुढ़िया बैठी चर्खा चलारही थी। बुढ़ियाने पूछा, "कहो भैया, कहाँसे आना हुआ ? आओ बैठो, तमाखू पीओ।"

लेकिन सेठ नहीं रुका। बुढ़ियाको बड़ी चिन्ता हुई। सोनेकी चिड़िया हाथ आई निकली जारही थी। बुढ़िया एक हुनर जानती थी। किसीभी आदमीको देखते ही उसे मालूम हो जाता था कि उसके पास कितना धन है। बुढ़िया चिल्लाई। आवाज़ सुनकर उसके सातों बेटे—ठग—वहाँ आ पहुँचे। बुढ़ियाने झल्लाकर कहा, "तुम लोग कहाँ मर गये थे ? सोने की चिड़िया आई और निकल गई। उसके पास लाखोंके दो लाल हैं। जल्दी जाओ। मीलभर मुश्किलसे निकला होगा।"

सातों भाई अपनी छोटी बहनपर हल्दी चढ़ाकर दौड़े। आगे एक नदीपर बहुतसे लोग स्नान कररहे थे। वहीं जाकर सेठजी भी रुक गये थे। ठगोंने दूर ही से चिल्लाकर कहा, "पकड़ना इस आदमीको। बहनको अधब्याही छोड़े जारहा है।"

लोगोंने सेठको पकड़ लिया और ठगोंके हवाले कर दिया। सेठने बहुतेरा कहा कि वह सब जाल है। ब्याहकी बात तो क्या, लड़कीको उन्होंने कभी देखा भी नहीं। लेकिन किसीने कुछ न सुना। सबने मिलकर

एक स्वरमें कहा, "ले जाओ इसे और न माने तो जबर्दस्ती शादीका काम पूरा करदो।"

सेठ बेचारे क्या करते! चुपचाप ठगोंके साथ चले आये। रातको ठगोंकी बड़ी बहन खाना लेकर आई। लेकिन सेठने खानेसे इन्कार कर-दिया। लड़कीने कहा, "अच्छी बात है, भोजन नहीं करते तो उठो! वह पलंग बिछा है, सो रहो।"

सेठ उठा और ज्योंही पलंगपर लेटनेको हुआ कि उसे फ़कीर की आख़िरी बात याद आयी—'खाट झाड़कर सोवे।' सो ज्योंही उसने पलंगको झाड़ा कि उसे मालूम हुआ वह तो कच्चे धागेका बुना है। नीचे एक बहुत गहरा गड्ढा था जो इधर-उधर पलंग परसे लटकती चादरकी वजहसे दीखता नहीं था। सेठने कहा, "चलो, ख़ैर हुई। गड्ढेमें गिरता तो हड्डी-पसली कुछ न बचती।"

सेठने लड़कीसे कहा, "मेरी जान तुम लेना चाहती हो तो लेलो। यों धोखा देकर मारनेसे क्या फ़ायदा?"

लड़कीने कटार निकालकर कहा, "देखो, तुम्हारे पास दो लाल हैं। अपनी ख़ैर चाहते हो तो उन्हें निकालकर देदो।"

सेठने कहा, "लाल-वाल मेरे पास कुछ नहीं हैं। तुम मेरे प्राण ले सकती हो; लेकिन मुझे मारकर तुम ऐसेही पछताओगी जैसे बंजारा कुत्ता मारकर पछताया था।"

लड़कीने कहा, "बंजारा कुत्ता मारकर कैसे पछताया था? उसका क़िस्सा सुनाओ।"

सेठ बोला, "छुरी रखकर तुम मेरे पास बैठो, तब सुनाऊँगा।" लड़की आ बैठी।

सेठ कहने लगा—

एक बंजारा था। एक बार जब उसे कुछ रुपयोंकी ज़रूरत हुई तो एक साहूकारके पास गया और अपना कुत्ता गिरवी रखकर पाँचसौ रुपये उधार ले आया। साहूकारसे उसने कहा कि "तीन महीनेके भीतर तुम्हारा रुपया चुका दूँगा और अपना कुत्ता ले जाऊँगा।" जाते समय कुत्तेकी गर्दनमें हाथ डालकर उसने कहा—"कालू, तुम अब इन साहूकार को अपना मालिक मानना। तीन महीने बाद मैं तुम्हें ले जाऊँगा।"

इतना कहकर बंजारा चला गया।

कुछ दिनों बाद साहूकारके यहाँ चोरी होगई। बहुतेरी कोशिश की गई; लेकिन चोरोंका पता ही न चला। सेठ बहुत खिन्न थे और परेशान थे। बंजारेके कुत्तेकी नमकहरामीपर उन्हें रह-रहकर गुस्सा आता था। चोर उन्हें लूट लेगये और वह भोंकातक नहीं। ज़राभी उसने मुँह खोला होता तो उनकी नींद खुल जाती।

साहूकार ऐसा सोच ही रहे थे कि कुत्तेने उनका अंगरखा पकड़कर खींचा और भागकर कुछ दूर खड़ा होगया। लोगोंने कहा, "कुत्ता कुछ इशारा कररहा है। उसे देखना चाहिए।"

कुछ आदमी कुत्तेके पीछे-पीछे चले। गाँव बाहर एक तालपर जाकर कुत्ता रुकगया और पानीमें कूदकर डुबकी लगाने लगा। लोगोने कहा, "इस तालाबको ढूँढ़ो। शायद माल मिल जाय।"

लोग तालाबमें घुसे और चोरीका सारा माल मिल गया। चोर जबसे चोरी करने आये थे, कुत्ता बराबर उनके पीछे लगारहा था और सारी बात देखरहा था।

साहूकारको गया धन मिल जानेपर बड़ी खुशी हुई। उन्होंने कहा, "कुत्तेने मेरी इतनी संपत्ति बचाई है: अपना पाँचसौ रुपया मैंने पालिया! इतना कहकर उन्होंने बंजारेको एक चिट्ठी लिखी। कुत्तेकी होशियारीकी प्रशंसा करते हुए अन्तमें लिखा, "मैंने अपना रुपया चुकता पाया। रसीदके साथ कुत्तेको वापस भेजता हूँ।" और कुत्तेके गलेमें चिट्ठी बाँधकर उसे मुक्त कर दिया गया। इधर बंजारेके पास रुपया आगया तो वह पाँचसौकी रक़म लेकर साहूकारको देनेकेलिए रवाना हुआ। रास्तेमें देखता क्या है कि उसका कुत्ता दौड़ा चला आरहा है। बंजारेको बड़ा गुस्सा आया। उसने सोचा, हो न हो, यह कुत्ता वहाँसे भाग आया है। उसे बड़ा दुख हुआ। बेईमान कुत्तेने उसकी साख धूलमें मिलादी, यह सोच कुत्तेके पास आनेपर उसने तलवारसे उसके दो टूक करदिये। लेकिन जब उसकी निगाह चिट्ठीपर गयी तो उसने वह फ़ौरन खोलकर पढ़ी। पढ़कर छाती पीटकर रहगया। सो मुझे मारोगी तो तुम्हें भी उसी तरह पछताना पड़ेगा।

पहर-भर रात बीत चुकी थी। बड़ी बहनका पहरा खतम हुआ

और मँझली आयी। उसने भी आते ही सेठसे दोनों लाल माँगे। सेठने कहा, "लाल-वाल मेरे पास कुछभी नहीं हैं।" इसपर उस लड़कीने छुरी निकाली। सेठ बोले, "तुम मुझे मार सकती हो। मेरा बस ही क्या है; लेकिन याद रक्खो, मुझे मारकर तुम्हें वैसेही पछताना पड़ेगा जैसे कि राजा बाज़ मारकर पछताया था।"

लड़कीने कहा, "कौन राजा पछताया था ? मुझे उसकी कहानी सुनाओ।"

सेठ बोले, "छुरीको रक्खो और मेरे पास आकर बैठो तो सुनाऊँ।" लड़की आ बैठी तो सेठने सुनाया—

एक राजा अपने बाज़को लेकर जंगलमें शिकार खेलने गया। शिकार खेलते-खेलते बहुत देर होगयी। धूप तेज़ होआई और प्यासके मारे राजाका गला सूखने लगा। तब राजा पानीकी खोजमें निकला। थोड़ी दूरपर उसे एक स्थानसे बूँद-बूँद पानी टपकता हुआ दिखाई दिया। राजाने पत्तोंका एक दौना बनाया और उसके नीचे रखदिया। जब वह पानीसे भर गया तो राजाने पीनेकेलिए उठाया। दौना होठोंसे छू भी न पाया था कि बाज़ने झपट्टे के साथ ऐसा पंजा मारा कि वह धरतीपर आ गिरा। राजाने फिर दौना रखदिया और भर जानेपर जब पीनेको हुआ तो बाज़ने फिर गिरा दिया। राजाने तीसरी बार फिर दौना रक्खा और भरनेपर बाज़ने फिर गिरा दिया। इस बार राजाको बहुत क्रोध हुआ। उसने तलवार निकालकर बाज़के दो टुकड़े करदिये। बाज़ मरगया। राजाने दौना फिर उठाकर पानी भरनेकेलिए रखदिया। उसने सोचा पानी भरता है तब तक लाओ, मैं ऊपर ही घूम आऊँ। देखूँ कि पानी कहाँसे आता है। यह सोच राजा ऊपर गया। चार कदम मुश्किलसे गया होगा कि देखता क्या है कि एक बड़ा अजगर पानीमें मरा पड़ा है और पानी जो नीचे आरहा है, उसमें अजगरका विष मिला है! राजा 'हाय-हाय' करके रह गया। सो मुझे मारकर तुम भी राजाकी तरह 'हाय-हाय' करोगी।

रातका दूसरा पहर बीता और ठगोंकी छोटी बहन पहरेपर आयी। ओई बाँसके डला-टोकना ओईके चलनी सूप! उसने भी अपनी दोनों बहनोंकी तरह लाल माँगे और सेठके इन्कार करनेपर उसने कटार निकाली।

सेठने कहा, "मारनेको तुम मुझे मारदो। लेकिन बादमें तुम वैसेही पछ-ताओगी जैसे राजा अपने तोतेको मारकर पछताया था।"

लड़कीने पूछा, "तोतेको मारकर राजा कैसे पछताया था सो मुझे सुनाओ।"

सेठ बोले, "एक राजा था। उसे जानवर पालनेका बहुत शौक था। तरह-तरहके जानवर और पक्षी उसने इकट्ठे किये थे। एक दिन राजा अपने एक तोतेको बाँहपर बिठाए दतौन कररहा था कि ऊपर आसमानमें तोतोंका एक झुण्ड उड़ता हुआ निकला। उसे देख तोता बोला, "आप कहें तो मैं अपने इन भाइयोंके साथ अपने देश चला जाऊँ। थोड़े दिनों बाद लौट आऊँगा।"

राजाने कहा, "जाओ।"

तोता अपने देश गया और कुछ दिनों बाद लौटा तो अपने साथ नन्दनवनसे एक अमृतफल लाया। राजाको भेंट करते हुए उसने कहा, "महाराज, इस फलको जो कोई खायगा, उसकी जवानी लौट आयगी और वह अमर हो जायगा।"

राजा अमृतफल पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा अगर मैं इसे खाता हूँ तो मैं अमर होजाऊंगा और रानी वैसे ही रह जायगी। रानी को देता हूँ तो वह अमर होजायगी और मैं योंही रह जाऊँगा। इससे अच्छा यह होगा कि इस फल को बागमें लगा दिया जाय। इसपर जब फल आवेंगे तो रानी या मैं ही क्यों, सारी प्रजा खायगी और अमर हो जायगी। ऐसा सोचकर राजाने वह फल मालीको देदिया।

कुछ दिनों बाद फल उगा। मालीने उसकी खूब चौकसी की। एक दिन वह आया कि पेड़ फलने लगा।

संयोगकी बात कि एक दिन एक साँप उस पेड़पर चढ़ गया और एक फल उसने दाँतसे काटकर नीचे गिरा दिया। सवेरे जब मालीने देखा कि एक फल पककर नीचे आ गिरा है तो उसे उठाकर वह राजाके पास पहुँचा। राजाको बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा, यह पहला फल है। इसे पुरोहितको भेंट करना चाहिए। इसलिए उस फलको उसने पुरोहितके यहाँ भिजवा दिया।

पुरोहितके घरमें वह और उसकी स्त्री, दो ही प्राणी थे। अवस्था

उनकी उतारपर थी। सो उन्होंने सोचा कि वे दोनों ही उसे खालें। यह सोच उन्होंने फलके दो टुकड़े किये। इतनेमें उनका कुत्ता आगया। पुरोहितने एक छोटा-सा टुकड़ा काटकर कुत्तेके आगे फेंक दिया। लेकिन यह क्या, कुत्तेके मुँहके भीतर वह फल पहुँचा होगा कि कुत्ता गिरा और छटपटाकर मर गया? पुरोहित दौड़कर राजाके पास गये और सारा हाल कह सुनाया। कहा, "महाराज आप इसे अमृतफल कहते हैं, पर यह तो विषफल है।"

राजाको विश्वास न हुआ। उन्होंने एक दूसरे कुत्तेको बुलाकर एक टुकड़ा उसके सामने डाला। कुत्तेने खाया, गिरा और छटपटाकर शान्त होगया।

राजाको तोतेपर बड़ा क्रोध आया। बोला, "दुष्ट, क्या तू मेरी जान लेना चाहता था?" यह कहकर उन्होंने तोतेको पिंजड़ेमेंसे निकाला और उसकी गर्दन मरोड़दी। सारे नगरमें यह बात फैलगई। राजाने उस पेड़के चारों ओर कँटीले तार लगवाकर हिदायत करदी कि कोई भी उस वृक्षका फल न खाये।

उसी नगरमें एक कुम्हार और उसकी कुम्हारिन रहते थे। एक रातको दोनोंमें झगड़ा होगया। कुम्हारिन यह सोचकर कि वह पेड़का फल खाकर हमेशाकेलिये लड़ाईकी जड़ ही मिटा देगी, बागमें गयी और चुपचाप तारोंके भीतर घुसकर पेड़तक पहुँच गयी। उसने एक फल तोड़ कर खालिया। उसी समय पहरेदारोंको कुछ आहट मिली। वे दौड़कर आये और एक सोलह बरसकी लड़कीको वहाँ खड़ा पाया। वे उसे गिरफ्तारकर राजाके पास लेगये। राजाने कहा, "तुम कौन हो?"

वह बोली, "सरकार, मैं आपकी बुधिया कुम्हारिन हूँ। रात कुछ कुम्हारसे कहा-सुनी होगयी थी सो मैं पेड़का फल खाकर मरने आयी थी।"

राजाने कहा, "तू झूठ बोलती है। बुधिया तो साठ बरसकी बुढ़िया है।"

कुम्हारिनने कहा, "महाराज, मैं बुधिया ही हूँ। न मानें तो चूल्हेके पीछे खुदवाकर देखलें। डबुलियामें पचीस रुपये गढ़े हैं।"

चूल्हेके पीछे खुदवाया गया तो पचीस रुपये निकले। राजाने एक फल और मँगवाया और उसे कुम्हारको खिलाया। खाते ही वह अठारह

बरसका जवान बनगया ।

अमृतफल खा-खाकर राजा और उसकी प्रजा सब अमर होगये, लेकिन तोतेको मारनेका दुख उसके मनपर हमेशा बनारहा । सो हे ठग की बेटी, मुझे मारकर तू भी हमेशा पछतावेगी ।

लड़की बोली, "मैं तुम्हें मारना नहीं चाहती । मुझे लालदेदो ।"

सेठने कहा, "तुम मुझे मारना चाहती हो तो मार डालो । लेकिन यह तो बताओ मेरी हत्याका जो पाप लगेगा, उसमें तुम्हारे घरवाले भी हाथ बटायेंगे ?"

लड़की बोली, "मैं क्या जानूं । पूछकर बतासकती हूँ ।" कहकर वह दौड़कर गई । लेकिन थोड़ी देरमें वह लौटी तो उसका चेहरा बदला हुआ था । भाई-बन्धु कोई भी हत्याके पापमें भागीदार होनेके लिए तैयार न थे ।

लड़की बोली, "तुमने मेरी आँखें खोलदीं । आजसे तुम मेरे पति हुए । चलो, अब यहाँसे भाग चलें ।"

'अन्धाका चाहत, दो आँखें ।' बचनेका यह अच्छा अवसर देख सेठ उस ठगकी बेटीके साथ वहाँसे चलदिये और सबेरा होते-होते बहुत दूर निकल गये ।

चलते-चलते वे लोग एक दूसरे शहरमें पहुँचे । शहर-बाहर एक बग़ीचेमें उन्होंने घोड़े खोल दिये । सोचा अब कुछ खा-पीकर आगे बढ़ना चाहिये । सेठने ठगकी बेटीसे कहा, "मेरे पास तो कुछ है नहीं । तुम्हारे पास हो तो दो ।"

वह बोली, "धन तो मेरे पास बहुत है । लेकिन वह ऐसा बँधा हुआ है कि खोलनेमें दिक्कत होगी । रास्तेमें खोलना ठीक भी नहीं है । तुम मेरी यह चोली लेजाओ और इसे बेचकर काम चलाओ ।"

सेठ चोली लेकर शहरमें पहुँचे । जाकर एक साहूकारको वह चोली दिखाई । साहूकारने चोली देखकर सोचा कि जब यह इतनी सुन्दर है तो इसकी पहननेवाली न जाने कितनी सुन्दर होगी । कैसे न-कैसे उसे हथियाना चाहिए । यह सोच उन्होंने पूछा, "तुम्हारे साथ और भी कोई है क्या ?"

सेठने कहा, "हाँ, मेरी स्त्री है । शहरसे बाहर बग़ीचेमें हम ठहरे हैं ।"

साहूकारने सेठको तो कुछ देर अपने यहाँ रोक रक्खा और उधर नौकर भेजकर चालाकीसे ठगकी बेटीको अपने घर बुला लिया। फिर सेठसे कह दिया कि चोली हमें नहीं लेनी। सेठ चुपचाप चला आया।

अकेली पाकर साहूकार ठगकी बेटीके पास पहुँचे। ठगकी बेटी सब कुछ समझ गई। बोली, "मुझे दारू पीनेकी आदत है। थोड़ी मँगाइये।"

साहूकारने झट दो बोतलें मँगाईं। ठगकी बेटीने साहूकारको खूब शराब पिलाई। जब वह नशेमें बेसुध होगया तो उसकी पोशाक पहनकर हवेलीसे बाहर निकल आई। रातका समय था। कोतवालने टोका तो उसने कहा, "इधर आओ।" जब वह बिल्कुल पास आगया तो उसने उसके गालपर कसकर एक तमाचा मारा। इसी समय घोड़ेको एड़ देकर हवा हो गई। कोतवाल दीवाना होगया। लगा चिल्लाने, "हाय, वह कहाँ गई?

उधर सेठ चोलीलेकर बागमें लौटा तो देखता क्या है कि ठगकी बेटी वहाँ नहीं है। वियोगमें वह भी पागल होगया। लगा गला फाड़-फाड़कर चीखने— "चोली देकर हाय, कहाँ गई?"

सबेरे जब साहूकारका नशा उतरा तो उनका दिमाग ही फिर गया था। जो कोई पास आता उससे पूछते, "प्याला भर-भर जो देती थी, कहाँ गई वह?"

ठगकी बेटी आगे बढ़ी। थोड़ा चलनेपर शहरके नुक्कड़पर उसे एक तमोली मिला। बोला, "पान खाओ।" लड़कीके रूपसे तमोली इतना ठग गया था कि उसने पान अपने हाथसे ही खिलाया। ठगकी बेटीने उसकी उँगुली काट ली और आगे बढ़ी। अब क्या था, लगे तमोली महाशय ज़ोर-ज़ोरसे चिल्लाने, "पान खाइकैं हाय, कहाँ गई?"

चलते-चलते ठगकी बेटी एक दूसरे शहरमें पहुँची। वहाँका राजा मर गया था। उसके कोई सन्तान न थी। उसने मरते समय कहा कि मेरे मरनेके बाद अगले सुबह जो भी मुसाफ़िर सबसे पहले इस शहरमें आवे, उसीको गद्दीपर बिठला दिया जाय। भाग्यकी बात कि ठगकी बेटी ही साहूकारकी पोशाकमें सबसे पहले वहाँ आई। उसे गद्दीपर बिठा दिया गया।

अगले दिन तमोली महाशय दीवानोंकी तरह 'पान खाइकें हाय, कहाँ गई ?' चिल्लाते हुए उस शहरमें आये। ठगकी बेटीने पहरेदारोंसे कहा कि इसके पाँच बेंत लगाओ। बेंतका लगना था कि तमोली होशमें आगया और करमको ठोकता घर चला गया।

तमोली शहर बाहर हुआ ही होगा कि इतनेमें कोतवाल साहब 'हाय, वह कहाँ गई ?' चीखते शहरमें दाखिल हुए। ठगकी बेटीने उनके एक दर्जन कोड़े लगवाये। कोतवालका भी दिमाग़ ठिकाने आगया और वह भाग्यको कोसते घर चले गये।

इतनेमें आ पहुँचे भाग्यके मारे साहूकार। बुरा हाल था, 'प्याला भर-भर जो देती थी, कहाँ गई वह ?' चिल्लाते-चिल्लाते बेचारेका गला बैठ गया था। ठगकी बेटीने उनमें एक दर्जन कोड़े लगवाये और काला मुँह करवाकर नगर भरमें गधेकी पीठपर बिठाकर घुमवाया साहूकार को होश आया। अपनी आबरू देकर वह भी चलते बने।

घण्टेभर बाद ही हमारे दीवानेसेठ वहाँ आपहुँचे। चिल्लाते थे—'चोली देकर हाय, कहाँ गई ?'

ठगकी बेटीने उसे महलमें बुलवा लिया। अच्छी तरह उन्हें स्नान-भोजन कराकर उसने सारा हाल कह सुनाया। सेठसे बोली, "अब तुम यहाँ मजेमें रहो। लेकिन किसीसे मत कहना कि मैं स्त्री हूँ।"

एक दिन बैठे बैठे ठगकी बेटीको ध्यान हुआ कि देखो, इतना सब कुछ हुआ, लेकिन फिर भी सेठने अपने दोनों लाल मुझे नहीं दिये। मालूम होता है अपनी सेठानीको देनेकेलिए रक्खे हैं। सो वह सेठसे बोली कि जाओ तुम्हें बहुत दिन होगये। तुम अपने बाल-बच्चोंसे मिल आओ। वे तुम्हारी राह देखते होंगे।

सेठजी अगले दिन रवाना हुए। वर्षों बाद घर आया देख सेठानी और उनके बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। सेठने दोनों लाल जाँघमेंसे निकालकर सेठानीको देदिये। सेठानीने उन्हें मामूली पत्थर समझकर पानदानमें डाल दिया। 'हीराकी परख तो जौहरी ही जानता है।'

शामको पड़ोसकी बुढ़िया जोगिन आई। उसने पूछा, "सेठ बहुत दिनोंमें लौटे हैं बड़ी कमाई करके लाये होंगे।"

सेठानीने गुस्सेमें भरकर कहा, "कमाई ! ये देखो दो पथरा लाये

हैं।" यह कहकर उसने दोनों लाल जोगिनके सामने पटक दिये। 'आप-राज खाये न पान दाँत निपोरे कढ़ गये प्रान' वाला किस्सा सेठानीका था। उसने कभी लाल देखे न थे, वह क्या समझे उनकी कीमत को।

जोगिनने देखा कि ये तो असली लाल हैं। लाखोंकी कीमतके हैं। इसलिये आँख बचाकर वह उनकी जगह दो नकली लाल रखकर असली लाल ले गई।

एक दिन सेठानीने सेठसे कहा, "आधी उमर तो तुम परदेशमें बिता आये। लेकिन लाये कुछ भी नहीं।"

सेठ बोले, "वे लाल कहाँ हैं?" सेठानीने लाल लाकर देदिये। देखकर सेठ बोले, "ये तो नकली हैं। असली कहाँ गये?" सेठका दिमाग फिर गया, लगे चिल्लाने, "असली लाल कहाँ हैं?"

इधर ठगकी बेटीने देखा कि बहुत दिन बीत गये और सेठ नहीं लौटे तो वह कुछ दिनोंके लिए राज-पाट, मन्त्रीको सौंपकर उनकी खोजमें निकली। पूछते-पूछते वह सेठके शहरमें आ पहुँची। सबसे पहला आदमी जो उसे मिला, वह सेठ ही थे। पगलोंकी तरह चिल्ला रहे थे, "असली लाल कहाँ हैं?"

ठगकी बेटीने सोचा, हो न हो, इनके लाल कोई ले गया। उनका पता लगाना चाहिए। यह सोचकर उसने एक जोगिनका रूप बनाया और कुछ मूँगे हाथमें लेकर इधर-उधर बेचने लगी। जब उस बुढ़िया जोगिनने इसे देखा तो सोचा कि कैसे ही इसकी शादी मेरे लड़केके साथ होजाय तो बड़ा अच्छा हो। जोगिनने कहा, "शादी करनेके लिए मैं तैयार हूँ। पर मेरा खर्च दो लाल रोजका है!"

बुढ़िया जोगिनने सोचा कि पहले दिन इसे दो लाल देदूँगी। भाँवरें पड़ जानेपर तो फिर कोई बात न होगी। ऐसा सोचकर वह बोली "अच्छी बात है, मैं राजी हूँ।"

ठगकी बेटीने कहा, तो लाओ, दो लाल मुझे दो।"

बुढ़ियाने देदिये। ठगकी बेटी रातको पिछवाड़ेकी खिड़कीसे होकर बाहर निकल गई। सेठके पास आकर उसने ज्यों ही लाल दिखाये कि उनका पागलपन दूर होगया। ठगकी बेटीको पहचानकर उन्होंने कहा, "तुम यहाँ कहाँ!"

वह बोली, "तुम बड़े झूठे हो कह आये थे कि जल्दी ही लौटूँगा और अबतक न लौटे! और देखो, लाल मुझे न दिये और यहाँ आकर खो बैठे। मैं न आती तो क्या ये लाल तुम्हें मिल जाते!"

कुछ दिनों बाद सेठ अपने घरवालोंके साथ उस नगरमें आये जहाँ पुरुषके भेषमें ठगकी बेटी राज करती थी। राज्यमें आकर ठगकी बेटीने मन्त्रियोंसे कहा—"मैं तो स्त्री हूँ। ये मेरे पति हैं। आजसे ये ही राज्य करेंगे।"

सेठके भाग्य जागे और उसी दिनसे वे सब आनन्दसे रहनेलगे।

१२

बासुकी नागकी मुदरी

एक साहूकारके चार लड़के थे। जब वे सयाने हुए तब साहूकारने उनकी परीक्षा लेनेकेलिए उन्हें बराबर-बराबर रकम देकर परदेश भेजा। जाते समय कहा कि इन रुपयोंसे तुम अपना-अपना रोज़गार करना और छह महीने बाद घर लौटकर अपनी-अपनी कमाई मुझे बताना।

पिताकी आज्ञा मानकर चारों भाई चारों दिशाओंकी ओर चलेगये। तीन भाइयोंने तो मन लगाकर रोज़गार किया और खूब धन कमाया। परन्तु छोटे भाईने पिताकी दी हुई रकमसे एक चूहा, एक बिल्ली, एक साँप और एक सुआ खरीदा। इन चारों प्राणियोंको लेकर वह मौजसे रहने लगा। पिताकी दी हुई रकममें जोकुछ बचा था उससे वह पड़े-पड़े आप खाता था और इन चारों प्राणियोंको खिलाता था। कुछ दिनोंमें इन चारों प्राणियोंसे उसकी गहरी दोस्ती होगई। वे उसे अपना मालिक समझकर जीसे चाहने लगे। मालिक कहींभी जाता सुआ उसके ऊपर उड़ता और बिल्ली दाहिनी ओर, चूहा बाँई ओर और साँप उसके पीछे-पीछे चलता था। इस प्रकार रहते-रहते जब छह महीने बीतगये और हाथ कुछ न रहा तो साहूकारका कुमार अपने इन चारों प्राणियोंको साथ लेकर घर लौट आया। घर आतेही उसने साँपको एक घड़ेमें बन्द करके अपने सोनेके कमरेमें रखदिया, सुआका पिंजरा एक ओर खंभेमें टाँग दिया तथा चूहे और बिल्लीको घरमें खुला छोड़ दिया।

उसके तीनों भाई परदेशसे लौटे। घर आतेही उन्होंने अपनी-अपनी कमाई पिताको बताई। किसीने पिताकी दी हुई पूँजीसे दूनी

किसीने तिगुनी और किसीने चौगुनी रकम कमाई थी। साहूकार पुत्रोंकी कमाई देखकर बहुत खुश हुआ। उसे भरोसा होगया कि वे तीनों अब खाने-कमाने लायक होगए हैं। इसलिए उसने इन तीनोंका विवाह करदिया। परन्तु छोटे लड़केने अभीतक अपनी कमाई नहीं बताई। पता लगानेसे साहूकारको मालूम हुआ कि छोटे लड़केने घड़ेमें कोई चीज़ छिपाकर रख छोड़ी है। उसने सोचा, हो न हो, उसमें कोई क़ीमती चीज़ ही होगी। एक दिन सूना घर देख साहूकार छोटे लड़केके घरमें गया और उसने बड़े चावसे घड़ेके ढक्कनको हटाया। ढक्कन उठातेही एक भयंकर काला नाग फुसकारकर दौड़ा। साहूकारके प्राण सूखगए। एक चीख उसके मुँहसे निकली। घरके सब आदमी जुड़ आए। साहूकार भी काँपता हुआ दूर जा खड़ा हुआ। लोगोंने कहा, "बड़ी कुशल हुई, साहूकार बाल-बाल बचगए। बड़ा ज़हरी साँप है! इसका काटा बच नहीं सकता। भगवानने रक्षा की।" उस दिन सेठजीने तुलसी-घरपर घीके दिए जलाए, नागदेवकी बाँबीपर दूध चढ़ाया और ब्राह्मणोंके घर सीधा भिजवाया। छोटे लड़केको उन्होंने बुलाकर कहा, "रे दुष्ट! तूने आज मेरी जान ही लेली होती। अरे, घरमें यह काल क्यों पाल रखा है? जितनी पूँजी तुझे दी थी, तूने वह सब खोदी। एक कौड़ी भी तो पैदा नहीं की, और ऊपरसे यह तमाशा! तू इसी समय मेरे घरसे काला मुँह कर जा, मैं जीऊँ तबतक तू अपनी सूरत न दिखाना।"

पिताकी आज्ञा सुनकर छोटा लड़का अपने कमरेमें आया और उसने पिंजड़ेकी सींक खोलदी। साँपको घड़ेसे निकाला और चूहा तथा बिल्लीको बुलाकर कहा, "तुम सब मेरे साथ चलो, पिताजीने मुझे घरसे निकाल दिया है।" चारों प्राणी यह सुनकर बहुत दुखी हुए। उन्होंने मन-ही-मन सोचा कि कुछ भी हो पर हम मालिकका साथ नहीं छोड़ेंगे: छायाकी तरह सदा उसके साथ रहेंगे।

साहूकारका कुमार अपने चारों पालतू जानवरोंको साथ लेकर घरसे चलदिया। घरसे निकाल दिये जानेका उसे कोई रंज नहीं था। वह हमेशाकी तरह आनन्दमें झूमता चला जारहा था। ऊपर सुआ उड़ता था, दाहिनी ओर बिल्ली और बाईं ओर चूहा। साँप भी पीछे-पीछे चला आता था। बीच-बीचमें मंज़िल दर-मंज़िल ठहरता हुआ वह आगे बढ़रहा

था। जहाँ वह ठहरता, बिल्ली अपने पंजोंसे ज़मीन साफ़ करदेती, चूहा ऊँची-नीची ज़मीनको एकसार करदेता, सुआ उसके खानेकेलिए वृक्षोंके फल तोड़कर लाता और नागराजा उसके सो जानेपर अपने फनकी छाया करके उसकी रखवाली करता था। इस प्रकार चलते-चलते वे एक दूर देशमें जा पहुँचे। यह नागराजाकी जनमभूमि थी। साँप उसे पहचान गया। उसने अपने मालिकसे कहा—"यह मेरा घर है। अगर आप कुछ समय यहाँ ठहर जाँय तो मैं अपने घरवालोंसे मिल आऊँ। फिर न जाने कब मौक़ा मिलेगा।" कुमारने उसे जानेकी इजाज़त देदी।

पासहीमें एक बड़ी बाँबी थी। साँप उसमें घुस गया। वहाँ जाकर वह अपने बूढ़े माँ बाप और भाई-बहनोंसे मिला। सबको बड़ी खुशी हुई। माँ-बापने उसे छातीसे लगाकर कहा, "बेटा, तू कहाँ गया था? हम तो तेरी आस ही छोड़ बैठे थे।" साँपने अपना कुल हाल सुना कर कहा, "मैं आप सबको देखने आया हूँ। अब फिर वापिस जाना है। मेरे मालिक बाहर बैठे हुए मेरी बाट देख रहे होंगे।" यह सुन उसकी माँने कहा, "कुछ भी हो बेटा, अब तो मैं तुझे किसी तरह न जाने दूँगी।" साँपने उत्तर दिया, "तुम यह क्या कहती हो माँ? मैंने साहूकारके लड़केका नमक खाया है। यही नहीं मेरे ही कारण उसके पिताने उसे घरसे निकाल दिया है। भला तुम्हीं कहो, ऐसी दशामें मैं उसका साथ कैसे छोड़ सकता हूँ। मैं नमकहराम न कहलाऊँगा?" लड़केको जानेकेलिए तैयार देखकर बूढ़े बासुकी नागने कहा, "अच्छा, एक काम करो। तुम अपने मालिकको यहाँ बुला लाओ मैं उनको तुम्हारे बदलेमें कोई क़ीमती चीज़ देकर तुम्हें छोड़नेको राज़ी कर लूँगा। यदि वह खुशीसे तुम्हें छोड़दें तो तुम घर रह जाना, नहीं तो उनके साथ चले जाना।" यह बात साँपको पसन्द आई। वह झट बाँबीके बाहर आया और अपने मालिकके पास जाकर बोला—"आपको मेरे बूढ़े पिता बासुकी नागने बुलाया है। आप मेरे साथ चलिए।" साँपकी बात सुनकर साहूकारका लड़का सोचने लगा कि बाँबीमें तो बहुतसे साँप होंगे। किसीने काट-कूट खाया तो मुफ्तमें जान जायगी। साँप अपने मालिकके मनकी बात ताड़ गया। वह बोला, "आप निर्भय होकर मेरे साथ चलिए। वहाँ आपको कुछ डर नहीं है। सभी साँप मेरे कारण आपकी सेवा करेंगे।"

चूहा, बिल्ली और सुआको वहीं छोड़कर साहूकारका पुत्र साँपके साथ चलनेको राज़ी होगया। साँपने बाँबीके पास पहुँचकर कहा, "आँखें बन्दकरके मेरी पूँछ पकड़लो और मेरे पीछे पीछे चले आओ।" साहूकारके पुत्रने ऐसाही किया। कुछ समय पीछे साँपने फिर कहा, "आँखे खोलदो।" उसने आँखें खोली तो देखा कि ज़मीनके भीतर एक बड़ा भारी मैदान है। उस मैदानके बीचमें एक ऊँचे आसनपर एक बूढ़ा साँप बैठा है। बुढ़ापेके कारण उसकी मूँछें भूरी होगई थीं। उसके नीचेका आधा शरीर तो साँपके ही जैसा था, परन्तु कमरसे ऊपरका भाग ठीक आदमीके समान था। सिरपर चमकदार मणियोंका मुकुट चमकरहा था। साहूकारका पुत्र समझ गया कि यही बासुकी नाग होगा। उसके पहुँचतेही बासुकीने उसे आदरके साथ अपने पास बिठालिया। फिर उसकी खूब आव-भगत और सेवा करके कहा, "मुझे मालूम होचुका है कि मेरे लड़केके कारण तुम्हारे बापने तुमको घरसे निकाल दिया है। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरा लड़का तुम्हें बहुत चाहता है और तुम्हारा साथ छोड़ना पसन्द नहीं करता परन्तु मैं उसके साथ रहनेमें तुम्हारी भलाई नहीं देखता हूँ। उसके कारण तुम आदमियोंके पास न रह सकोगे। इसलिए मैं उसके बदलेमें तुम्हें अपने हाथकी यह मुदरी देता हूँ। इस मुदरीसे तुम्हारा बड़ा काम निकलेगा। जब जिस चीज़की इच्छा करोगे, मिलजाया करेगी। इसलिए तुम चाहो तो इस मुदरीको लेलो और मेरे पुत्रको मेरे पास छोड़ दो।" बासुकीकी मुदरी हाथमें लेते हुए साहूकारके पुत्रने कहा, "मैं खुशीसे आपके पुत्रको छोड़ता हूँ। उसे आप अपने घर रक्खो। मेरा जब जी चाहेगा, उसे देखजाया करूँगा। अब आप मुझे बाँबीके बाहर पहुँचा दीजिए। यहाँ मुझे घबराहट मालूम होती है और मेरे साथी मेरी बाट देखरहे होंगे।" बूढ़े बासुकीकी आज्ञासे साँपने उसे बाँबीके बाहर पहुँचा दिया। बासुकी और बहुतसे साँप उसे बाहरतक पहुँचाने आए। वह साँप भी अपने मालिकसे मिलकर लौटगया। साहूकारके पुत्रने चूहे, बिल्लीके पास आकर सब हाल कह सुनाया।

साहूकारका पुत्र चूहा, बिल्ली और सुआके साथ आगे बढ़ा। कुछ दिनोंमें वह एक नगरमें जापहुँचा। वहाँके राजाकी लड़की बहुत सुन्दरी थी। उसके रूपकी तारीफ़ सुनकर उससे मिलनेकी आशासे

साहूकारका पुत्र उसके बगीचेमें जा पहुँचा। बेटीके बगीचेमें पुरुषोंके जानेकी मनाही थी। लेकिन वह छिप-छिपाकर मालिनके घर पहुँचगया। मालिन नाराज हुई, परन्तु साहूकारके पुत्रने उसे बहुत कुछ लोभ देकर प्रसन्न करलिया और उसीकी मददसे स्त्रीके वेशमें एक दिन वह राजकुमारीके पास पहुँचगया।

राजकुमारी नित्य फूलोंसे तुला करती थी। उसने अभीतक किसी मर्दका मुँह नहीं देखा था, इस कारण वह चमेलीके ढाई फूलपर तुलजाती थी।

लेकिन जब उसने साहूकारके लड़केका मुँह देखलिया तो मालिन फूल चढ़ा-चढ़ाकर हारगई, परन्तु उसका वज़न पूरा न हुआ। कई टोकनी फूल चढ़गए। बेटी झट काँटेसे नीचे कूदपड़ी और लाल-लाल आँखें करके मालिनसे बोली—"सच-सच बता कि यह कौन है? मालूम होता है यह कोई पुरुष है। अगर तूने सच्चा हाल नहीं बताया तो मैं तेरी खाल खिंचवाकर उसमें भूसा भरवाकर मारूँगी।" मालिनने डरकर सब हाल कह सुनाया। बेटीने साहूकारके लड़केसे कहा—"तुम मुझसे प्रेम करनेके लिए इस वेशमें कहाँसे आए हो। अगर तुम सचमुच मेरे लायक हो तो रात-भरमें इस बगीचेके भीतर सोनेका एक सतखण्डा महल बनवादो। मैं तुम्हारे साथ विवाह करलूँगी नहीं तो तुम्हें जानसे मरवा डालूँगी।" इतना सुनकर मालिन और साहूकारका पुत्र घर लौट आये और बेटीने पितासे कहकर मालिनके घरपर पहरा बैठादिया।

मालिन बड़े संकटमें थी। वह सोचती थी मैंने इस परदेशीको ठहराकर बड़ा बुरा किया। कल सवेरे यदि सोनेका सतखण्डा महल न बन सका तो राजा न जाने क्या सज़ा देगा। परन्तु साहूकारका पुत्र प्रसन्न था। उसे बासुकी नागकी मुदरीकी याद आ गई। उसने सोचा आज उसकी जाँच करनी चाहिए। दूसरे दिन चार बजे रातको उठकर उसने स्नान किया और बासुकी मुदरीको हाथमें लेकर कहा, "जय सत्यको पूरी बासुकी नागकी नागकी मुदरी, जो तोमें मोमें और बासुकी नागमें सत्य होवे तो यहाँ इसी समय सोनेका एक सतखण्डा महल बनजाय।" कहनेकी देर थी कि सोनेका सतखण्डा महल बनकर तैयार होगया। साहूकारके पुत्र और मालिनको बड़ी खुशी हुई।

सवेरा होनेके पहले सोनेके सतखण्डे महलकी भिलमिलाहटसे सारे नगरमें प्रकाश फैल गया और पश्चिमकी ओर बेटीके बगीचेमें लाल-लाल उजेला दीखने लगा। सुबह लोग उठे और उस ओर देखने लगे। कोई कहता था कि सूरज निकल रहा है। कोई कहता कि नहीं इस ओर कहीं आग लगी है। बेटीने भी अपने महलपरसे उजेला देखा। पलँग-परसे उठकर उसने खिड़की खोली तो देखती क्या है कि बगीचेमें सोनेका सतखण्डा महल खड़ा है। उसकी खुशीका ठिकाना नहीं रहा। धीरे-धीरे राजा तथा सब नगर-निवासियोंको महलके बननेका समाचार मिला। उसे देखनेकेलिए भीड़ लगगई।

राजाने तुरन्त साहूकारके पुत्रको विवाहके लिए बुलाया, "बाजे न आजे दूलाजी आन बिराजे" वाली कहावत हुई। अकेला साहूकारका पुत्र अपने सुआ, बिल्ली और चूहेके साथ जा पहुँचा। राजाने उसके साथ धूप-धामसे अपनी बेटीका विवाह कर दिया। साहूकारका पुत्र और राजाकी बेटी उसी सोनेके सतखण्डे महलमें रहने लगे। बड़ा आनन्द था। कोई काम-काज था नहीं। जब जिस चीजकी आवश्यकता होती, बासुकी नागकी मुदरीकी मददसे वह मिलजाती। मुदरीके प्रतापसे ही छप्पन प्रकारके भोजन समयपर अपने आप तैयार होजाते थे। इस प्रकार साहूकारका पुत्र और राजाकी बेटी सुखसे रहने लगे। बिल्ली, चूहा और सुआ भी मजेसे इनके साथ रहते थे।

एक दिन राजाकी बेटी मालिनको साथ लेकर नदीमें स्नान करने गई। बेटीके बाल सोनेके थे। उसने बालोंको धोकर उनमें कंघी की और जो बाल टूटकर गिरे उन्हें इकट्ठा करके एक दौनेमें रखकर नदीमें बहादिया। बहते-बहते वे बाल बहुत दूर एक नगरमें जापहुँचे और वहाँके राजाके लड़केको मिले। राजाका लड़का बालोंका दौना लेकर घर आया। उसने राजासे कहा, "पिताजी जिस कुमारीके ये बाल हैं, उसके साथ मेरा विवाह करदो।" राजाने बहुत-सी चतुर दूतियाँ बुलाकर सोनेके केश-वाली लड़कीकी खोजकेलिए चारोंओर भेजीं।

एक दूती अनेक नगरोंमें ढूँढ़ती ढूँढ़ती सोनेके एक सतखण्डे महलमें आपहुँची और उसे सोनेके केशवाली राजकुमारीका पता मिल गया। उसने सोचा कि अब किसी उपायसे उसे अपने नगरमें ले चलना

चाहिए। वह बेटीके पास पहुँची और जोर-जोरसे रोने लगी। पूछनेपर उसने कहा, "बेटी, तू मुझे क्या पहचाने। जब कि तू छोटी सी थी, तब मैं एक बार आई थी। मैं तेरी मौसी हूँ। मनमें कई बार आया कि तुझसे मिलने आऊँ, लेकिन काम-काजमें ऐसी फँसीरही कि आना न हो सका।" मौसीका नाम सुनकर बेटीको बड़ी खुशी हुई। वह उससे खूब अच्छी तरह मिली।

दूती अब बेटीके पासही रहनेलगी, और रहते-रहते बहुत दिन बीतगए। वह देखती थी, बेटीको कोई कामकाज नहीं करना पड़ता है। नौकर-चाकर भी अधिक नहीं हैं और उसका पति हमेशा घोड़ेपर सवार होकर यहाँ-वहाँ घूमा करता है। रसोई अपने आप समयपर बनजाती है और सब काम वक्तपर होजाते हैं। इससे उसे बड़ा आश्चर्य होता था। एक दिन उसने बेटीसे कहा, "बिटिया, घरमें नौकर-चाकर तो कोई दीखता नहीं है, लेकिन सब काम कैसे होजाते हैं?" बेटीने उत्तर दिया, "मौसी, उनके पास एक मुदरी है। उसको लेकर वह कहते हैं कि 'जय सत्यकी पूरी वासुकी नागकी मुदरी, जो तोमें मोमें और वासुकी नागमें सत्य होवे तो अमुक चीज मिलजाय।' इतना कहते ही मनचाही चीज मिलजाती है।" दूती बेटीके मुँहसे मुदरीका समाचार सुनकर सब समझ गई। उसने सोचा कि इस मुदरीको उड़ा लेना चाहिए, फिर सब काम अपने आप बन जायगा। ऐसा सोचकर उसने बेटीसे कहा, "बिटिया वह मुदरी कुमारके पास रहती है। अगर वह किसी दिन दूर चले जाँय और देरसे लौटें तो तुम्हें खाना भी न मिले। इससे मुदरीको तुम अपने पासही रक्खो। तुम तो कहीं आती-जाती भी नहीं हो।" बेटीको मौसीकी बात जँचगई। साहूकारके पुत्रके आनेपर राजाकी बेटीने मुदरी माँगी। कहा, "कभी-कभी मुझे इसकी जरूरत पड़जाती है। इससे यह मेरे पास रही आवे तो अच्छा।" साहूकारके पुत्रने मुदरी देते हुए कहा, "लो, लेकिन इसे सावधानीके साथ रखना।"

राजाकी बेटी दिनमें जो चीज़ चाहती थी, मुदरीसे माँगलेती थी। दूती सब देखती-सुनती रहती थी। सोते समय बेटी उस मुदरीको मुँहमें रखलेती थी। एक दिन दोपहरको बेटी सोगई, गहरी नींद आजानेसे वह जोर-जोरसे खुर्राटे लेनेलगी। मुँह कुछ-कुछ खुला था। उसमेंसे

मुदरी दिखाई देती थी। दूतीने मौका देखकर धीरे-से मुदरी निकाललो। उसे धोकर उसने कहा, "जय सत्यकी पूरी बासुकी नागकी मुदरी जो तोमें मोमें और बासुकी नागमें सत्य होवे तो यह राजाकी बेटी मुझ समेत इसी प्रकार सोती हुई मेरे घर पहुँचजाय।" इतना कहनेके साथ ही राजाकी बेटी दूती सहित उसके घर जापहुँची। जब बेटीकी नींद खुली तो वह चकित रहगई। नई जगह थी। सोनेका सतखण्डा महल भी वहाँ न था। देखा तो मुँहमें मुदरी भी नहीं थी! सामने मौसी खड़ी मुस्कराहरी थी। बेटीकी समझमें धीरे-धीरे सब बात आगई। वह मौसीका कपट समझगई। उसे बड़ा दुख हुआ। परन्तु इस समय वह विवश थी।

इधर साहूकारके पुत्रने अपने महलमें आकर देखा कि राजाकी बेटी नहीं है तो महलका कोना-कोना ढूँढ़ डाला, परन्तु कुछ पता न लगा। साहूकारके पुत्रने सुआसे कहा—"देखो भाई, मेरे ऊपर विपदा आपड़ी है। रानीका पता नहीं है। मालूम होता है कि यह दुष्टा बुढ़िया उसे मुदरीके बलसे कहीं उड़ा लेगई है! बासुकीकी मुदरी होती तो सब बात बनजाती। अब तो तुम्हारा ही भरोसा है। साँपसे तो मुदरी मिली लेकिन अब तुम्हारी बारी है। तुम जाकर राजाकी बेटीका पता लगाओ।" सुआने कहा, "मालिक, तुम्हारे कामकेलिए तो मैं सदा तैयार हूँ। चिट्ठी लिखदो और राजकुमारीका पता लगाकर उसे मैं उनके पास पहुँचा दूँगा।" साहूकारके लड़केने चिट्ठी लिखकर सुआके गलेमें बाँधदी। सुआ उड़गया। खोजते-खोजते वह बहुत दिनोंमें दूतीके शहरमें आया। राजकुमारी उस समय दतौन कररही थी। सुआ मालिकिनको पहचान गया। वह उड़कर उसकी बाँहपर जाबैठा। राजाकी बेटी भी अपने सुआको पहचान गई। उसने उसके गलेकी चिट्ठी खोलकर पढ़ी। फिर तुरन्त दूसरी चिट्ठीमें अपना पता और हाल लिखकर उसके गलेमें बाँधदी। सुआ उड़ता हुआ अपने मालिकके पास आ पहुँचा।

राजाकी बेटी और बासुकी नागकी मुदरीका पता पाकर साहूकारके पुत्रने चूहा और बिल्लीसे कहा—"अब तुम दोनोंकी बारी हैं। साँप और सुआने तो अपना-अपना काम कर दिया। अब तुम जाओ और जैसे बने, दूतीके पाससे बासुकी नागकी मुदरी लेआओ।"

चूहा और बिल्लीको साथ लेकर तोताराम पता बताने चले।

कुछ दिनों चलते-चलते तीनों प्राणी उसी नगरमें आये। तोतेने दूरसे दूतीका घर बता दिया। चूहा बिल्ली दोनों रात होनेकी बाट देखने लगे। जब रात हुई और दूती अपने मुँहमें बासुकी नागकी मुदरी रखकर सोगई, तब चूहा और बिल्ली दोनों भीतर पहुँचे। दूतीको सोती हुई देखकर चूहेने बिल्लीसे कहा, "पहले मैं अपना काम करता हूँ। मेरा काम होते ही तुम्हारा काम शुरू होगा। देखो खूब सावधान रहना। जरा भी देर हुई तो काम बिगड़ जायगा।" ऐसा कहकर चूहा दूतीके मुँहके पास गया और उसने अपनी पूँछ कड़ी करके एकदम उसकी नाकमें घुसेड़दी। पूँछके नाकमें घुसते ही दूतीको जोरकी छींक आई और बासुकी नागकी मुदरी मुँहसे निकलकर दूर जमीनपर गिरी। बिल्लीतो तैयार बैठी ही थी। ज्यों ही मुदरी जमीनपर गिरी, बिल्लीने कूदकर उसे उठा लिया। दूती आँखें मलती हुई यहाँ-वहाँ मुदरी ढूँढ़ने लगी, तबतक चूहा और बिल्ली दोनों घरके बाहर निकल आए। सुआ भी आ मिला। काम हो जानेकी खुशीमें तीनों प्राणी आनन्द मनाते हुए साहूकारके पुत्रके पास वापिस लौट आए।

साहूकारका पुत्र इन सबके आनेकी बाट देख ही रहा था। तीनों प्राणियोंको दूरसे आते देखकर वह आशा भरी निगाहसे उनकी ओर देखने लगा। उनके चेहरेपर आनन्दकी झलक दिखाई देरही थी, इससे वह समझ गया कि काम होगया। इतनेमें बिल्लीने पास आकर अपने मुँहमेंसे मुदरी निकालकर उसे देदी। मुदरी मिल जानेसे उसे बड़ी खुशी हुई। वह उन सबकी ओर प्यार और कृतज्ञता भरी निगाहसे देखकर कहने लगा—"मित्र हों तो ऐसे, जो मुसीबतमें काम आवें! तुम चारोंने मेरा जो उपकार किया है, उसे मैं भूलूँगा नहीं।" इतना कहकर उसने बासुकी नागकी मुदरीको हाथमें रखकर कहा—"जय सत्यकी पूरी बासुकी नागकी मुदरी! जो तोमें, मोमें और बासुकी नागमें सत्य होवे तो राजाकी बेटी इस सोनेके सतखण्डे महलमें आजाय।" इतना कहते ही राजाकी बेटी महलमें आगई। दोनों बड़े प्रेमसे मिले।

अब फिर चैनसे दिन गुजरने लगे। रहते-रहते एक दिन राजाकी बेटीने साहूकारके पुत्रसे कहा, "कुमार, यहाँ रहते-रहते तो अब मेरा जी ऊब गया है। क्या तुम्हारे माता-पिता, भाई-बहन कोई भी नहीं हैं? हाँ

तो मैं उनसे मिलना चाहती हूँ। क्या तुम अपने देशको चलोगे? कम-से-कम एक बार तो मुझे अपना घर-द्वार दिखा ही दो।" राजाकी बेटीकी बात सुनकर साहूकारके पुत्रको भी अपने माँ-बाप और भाइयोंकी याद आगई। उसने उसी समय घर चलनेका विचार किया।

दूसरे दिन साहूकारके पुत्रने राजासे जाकर कहा, "महाराज मैं अब अपने देशको जाना चाहता हूँ। हम सबकी जानेकी इच्छा है। आप आज्ञा दीजिए।" राजाने बहुत-सा धन, जेवर, हाथी, घोड़े और फौजके साथ बिटिया-दामादकी बिदा की।

शहर-पर-शहर पार करते कुछ दिनोंमें साहूकारका पुत्र अपने नगरमें आ पहुँचा। उसने सोचा, पहले कुछ दिनों बाहर ठहरकर घरका तथा नगरका हाल-चाल देख लेना चाहिए। ऐसा सोचकर उसने बाहर बगीचेमें डेरा डाल दिया। हाँथी घोड़े बाँधदिये गए। फ़ौज भी ठहर गई। तुरन्त ही सारे नगरमें खबर फैलगई कि कहींका राजा आया है। लोग आ-आकर देखने लगे।

कुछ दिनों रहनेके बाद साहूकारके पुत्रने नगर-भरका नेवता किया। बासुकी नागकी मुदरीका स्मरण करतेही छप्पन प्रकारके व्यञ्जन बनकर तैयार होगए। समयपर सब लोग भोजन करने आए। शामतक इसी प्रकार भोजनोंका सिलसिला चलतारहा। लोग आते थे और भोजन करके चलेजाते थे। उधर भाग्यके फेरसे साहूकार और साहूकारके तीनों बेटोंके घर इतनी कंगाली आगई थी कि उनपर पहननेके लिए मोटे-झोटे भाफ कपड़ेतक नहीं थे। आखिर सबने सलाह करके तय किया कि स्त्रियाँ भोजनको न जाँय। साहूकार और साहूकारके तीनों बेटे भोजन करने आए। जब भोजन करचुकनेपर वे वापिस आनेलगे तब घर-मालिकने उन्हें रोककर पूछा, "मालूम होता है आपके घरकी स्त्रियाँ नहीं आई हैं। साहूकारको बड़ा अचम्भा हुआ। हजारों स्त्रियाँ खाना खाने आईं और चलीगईं; पर इस परदेशीको यह कैसे मालूम हुआ कि मेरे घरकी स्त्रियाँ नहीं आईं। साहूकारने सकुचाते हुए कहा, "कुछ नहीं महाराज, घरके काम-काजसे सुभीता नहीं मिला। इससे नहीं आईं।" साहूकारके लड़केने झट कहारोंको हुक्म देकर चार पालकी साहूकारके घर भेजीं और सबको बुलाया। थोड़ी देरमें माँ और तीनों भौजाइयाँ आगईं। उसने भीतर

अपनी रानीको इशारा करते हुए कहा, "इनको आदरके साथ भीतर लेजाओ।" राजाकी बेटीने अपनी सास और जिठानियोंको प्रेमके साथ भोजन कराया। फिर उन्हें कीमती रेशमी कपड़े और जेवर पहनाकर उनकी खूब खातिरदारी की। इसी समय साहूकारके छोटे पुत्रने अपना नाम बताकर पिता और भाइयोंके चरण छुए। उन्होंने प्रेमसे पुलकित होकर उसे गले लगा लिया। भीतर बहूने भी सास और जिठानियोंके पैर छुए। उस दिनसे सब लोग मिलकर आनन्दके साथ रहनेलगे।

———

१३

बुद्धि बड़ी या पैसा ?

किसी देशमें एक राजा राज करता था। उसके लिए पैसा ही सबकुछ था। सोचता था कि पैसेके बलपर दुनियाके सब काम-काज चलते हैं। मेरे पास अटूट धन है, इसीसे मैं इतने बड़े देशपर राज करता हूँ और लोग मेरे सामने हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। चाहूँ तो अभी रुपयोंकी सड़क तयार करा सकता हूँ। आस्मानसे छूते पहाड़ोंको खुदवाकर फेंकवा सकता हूँ। पैसेके बूतेपर यह जो मेरे पास फ़ौज है, उससे किसी भी राजको एक दिनमें कुचल सकता हूँ। सो वह सबसे यही कहता था कि धरम, सुख, नारी, भाई-बन्धु और मित्र और सबकुछ पैसा है। सिरसे पैरतक राजा पैसेके मदमें डूबा था। लेकिन उसकी रानी बड़ी बुद्धिमती थी। वह पैसेको तुच्छ और बुद्धिको श्रेष्ठ समझती थी। उसका कहना था कि दुनिया चलती है तो उतनी पैसेके बूतेपर नहीं, जितनीकी बुद्धिके सहारे। लेकिन राजाके सामने वह कभी कुछ नहीं कहती थी।

एक रोज़ राजाने पूछा, "रानी, सच सच कहो, दुनियामें बुद्धि बड़ी है या पैसा ?"

रानी बड़े असमंजसमें पड़ीं। राजाके मनमें जो पैसेका मूल्य था, उसे वह अच्छी तरह जानती थी। फिरभी उसने कहा, "महाराज, सच-सच पूछते हैं तो मैं बुद्धिको बड़ा समझती हूँ। बुद्धिसे ही पैसा आता है और बुद्धिसे ही सब काम-काज चलते हैं। बुद्धि न हो तो खजाने सब योंही लुटजाते हैं और राज चौपट होजाते हैं।"

पैसेकी इस प्रकार निन्दा सुनकर राजा बहुत क्रुद्ध हुए। बोले, "रानी तुम्हें, बुद्धिका बड़ा घमण्ड है। देखूँगा उसीके सहारे तुम कैसे अपना काम चलाती हो।"

अगले दिन राजाने रानीको नगरसे बाहर एक मकानमें रहनेके लिए भेजदिया। खर्चकेलिए उसे कौड़ी भी न दी और उसके शरीरपर जो गहने थे, वे भी सब उतरवा लिये। हाँ, टहलकेलिए एक नौकर उसके साथ कर दिया। रानी भेद समझगई। उसने मन-ही-मन कहा कि मैं भी एक दिन राजाको दिखाकर ही मानूँगी कि संसारमें बुद्धि भी कुछ है, पैसा ही सबकुछ नहीं।

नये मकानमें पहुँचकर रानीने कुम्हारके अवेमेंसे दो ईंटें मँगाईं और उन्हें सफेद कपड़ेमें अच्छी तरह लपेटकर और ऊपरसे अपने नामकी मुहर लगाकर नौकरसे कहा कि इसे तुम धरनू सेठके पास लेजाओ। कहना रानीने यह धरोहर भेजी है और दस हजार रुपया मँगाया है। कुछ दिनमें तुम्हारा रुपया मय सूदके लौटादेंगी और अपनी धरोहर वापस लेलेंगी।

नौकर सेठके यहाँ पहुँचा। रानीके नामकी मुहर देखकर सेठने समझा कि जरूर उसमें कोई कीमती जवाहरात होंगे और उसने दस हजार रुपये चुपचाप देदिये।

रुपये लेकर नौकर रानीके पास लौटा। इन रुपयोंसे रानीने व्यापार करना शुरू किया। रानी चतुर तो थी ही, बैठी बैठी युक्ति बतलाती और नौकर उसी प्रकार काम करता। थोड़े दिनोंमें ही रानीने व्यापारसे इतना पैसा पैदा कर लिया कि सेठका रुपया चुकगया और फिर भी उसके पास काफ़ी रुपया बचरहा। इस रुपयेको उसने ग़रीबोंके हित लगाना शुरू किया। दीन-दुखियोंके बच्चोंके पढ़नेकेलिए एक पाठशाला, दवा-दारूकेलिए औषधालय और अनाथोंकेलिए एक अनाथालय खुलवा दिया। शहरके बाहर रानीके उस टूटे-फूटे मकानके चारों ओर फिर तो अच्छी रौनक रहनेलगी।

× + ×

इधर रानीके चलेजानेपर राजा अकेला रहगया। रानी थी तब वह उसके कामोंको सँभाले रहती थी। राजाके कामोंमें उचित सलाह देती थी। धूर्तोंसे राजाको बचाती थी। लेकिन जब वह चलीगई तो लोगों की बन आई। धूर्त लोग आ-आकर राजाको लूटने लगे। राजके कार्योंमें भयङ्कर भूलें होनें लगीं और आमदनी घटगई। कुछही दिनोंमें खजाना

चौपट होगया और यहाँतक नौबत आई कि नौकरोंका वेतन चुकाना भी मुश्किल होगया। राजकी ऐसी दशा देखकर राजा घबरा उठा। जोकुछ धन बचा था उसे साथ ले और राज्य मन्त्रियोंको सौंप वह तीरथ करनेके बहाने नगर छोड़कर चलदिया।

नगरके बाहरही उसे कुछ ठग मिले। उनमेंसे एक काना राजाके पास आकर बोला, "महाराज, मेरी एक आँख आपके यहाँ दो हजार रुपयेमें गिरवी रक्खी है। ये लीजिये अपने रुपये और मेरी आँख मुझे दीजिये।"

राजा घबराया। कहा, "भाई मेरे पास तो किसीकी आँख-वाँख नहीं है। तुम नगरमें चलेजाओ और मन्त्रियोंसे पता लगाओ।"

पर वह ठग कब माननेवाला था। बोला, "महाराज, मन्त्रियोंको मैं क्या जानूँ? मेरा सौदा तो आपसे हुआ था। और आपको याद होगा, उस समय तय हुआ था कि गिरवी रक्खी हुई आँख बिगड़गई या खोगई तो आपको अपनी आँख देनी पड़ेगी। मालूम होता है आपने मेरी आँख खोदी। अब आप अपनी दीजिये।"

राजा बहुत परेशान हुए और जैसे-तैसे चार हजार रुपया देकर उससे पिण्ड छुड़ाया। लेकिन मुश्किलसे चार कदम आगे बढ़े होंगे कि एक बूचा आदमी सामने आया। बोला, "महाराज, मेरा एक कान आपके यहाँ गिरवी रक्खा है। अपना सूद सहित रुपया लेकर मेरा कान मुझे दीजिये।" राजाने उसे भी मुँहमाँगा रुपया दिया और आगे बढ़े। इस तरह कई ठग आये और राजाके पास जो-कुछ धन-दौलत बची थी, छीन लेगये। खाली हाथ राजा कुमारी चौबोलकाके देशमें पहुँचे।

कुमारी चौबोलका उस देशके राजाकी कन्या थी। उसका प्रण था कि जो कोई आदमी उसे जुएमें हरा देगा, उसीके साथ वह विवाह करेगी। राजकुमारी बहुत सुन्दरी थी। दूर-दूरसे लोग उसके साथ जुआ खेलने आते और हारकर जेलकी हवा खाते। बीसियों राजकुमार जेलमें पड़े थे।

मुसीबतके मारे ये राजा साहब भी उस देशमें आपहुँचे। चौबोलकाकी सुन्दरताकी खबर जब इनके कानमें पड़ी तो इनकी भी इच्छा उसके साथ विवाह करनेकी हुई। राजकुमारीने अपने महलसे कुछ दूरीपर

एक बंगला बनवादिया था। विवाहकी इच्छासे आनेवाले लोग इसीमें ठहरते थे। राजा भी उस बंगलेमें पहुँचा। पहरेदारने तुरन्त इसकी खबर राजकुमारीको दी। थोड़ी देर बाद एक तोता उड़कर आया और राजाकी बाँहपर बैठगया। उसके गलेमें एक चिट्ठी बँधी थी जिसमें विवाहकी शर्तं लिखी थी और अन्तमें लिखा था कि यदि शर्त पूरी न होसकी तो तुम्हें जेलकी हवा खानी पड़ेगी। राजाने वह चिट्ठी पढ़कर जेबमें रखली। शर्त उसे स्वीकार थी।

थोड़ी देरमें उसे राजकुमारीके महलमें बुलाया गया। जुआ शुरू हुआ और अखीरमें राजाकी हार हुई। शर्तके अनुसार बेचारेको जेल जाना पड़ा।

+ + +

राजाकी हालत बिगड़ने और उसके नगर छोड़कर चलेजानेका समाचार जब रानीको मिला तो उसे बहुत दुःख हुआ। उसका पता लगानेकेलिए वह घरसे चलदी। थोड़ा आगे जानेपर उसे वे पुराने ठग मिले, जिन्होंने राजाको ठगा था। सबसे पहले काना रानीके सामने आया और अपनी आँखकी धरोहर वापिस माँगी।

रानीने कहा, "आँखें मेरे पास बहुतसे लोगोंकी गिरवी रक्खी हैं। तुम्हारी भी उन्हींमें होगी। सो तुम एक काम करो। अपनी यह दूसरी आँख निकालकर दो। इसकी तौलकी जो आँख होगी वही तुम्हें देदी जायगी।"

ठग बड़ा परेशान हुआ। रानीने कहा, "देर न करो। फ़ौरन आँख निकालो, वरना अपने नौकरसे कहकर मैं जबरदस्ती निकलवा लूँगी। किसीकी धरोहर मैं अपने पास नहीं रहने देना चाहती।"

ठगके काटो तो खून नहीं! आखिर जैसे-तैसे चार हजार रुपया देकर उसने पीछा छुड़ाया। यही हाल बूचेका हुआ। जब उसने देखा कि रानीका नौकर आगे बढ़कर उसका कान काटने ही वाला है तो उसने चुपचाप चार हजार गिनदिये और अपनी जान बचाई।

ठगोंसे निबटकर रानी आगे बढ़ी और पता लगाते-लगाते कुमारी चौबोलकाके देशमें पहुँची। राजाके जेलमें जानेका समाचार पाकर उसे बहुत दुख हुआ और वह उसे छुड़ानेका उपाय सोचने लगी। उसने पता

लगाया कि चौबोलका किस तरह जुआ खेलती है और सारा भेद समझ-कर उसने पुरुषका भेस बनाया और बंगलेपर पहुँची। पहरेवालेने खबर की। थोड़ी देरमें तोता उड़कर आया। रानीने चिट्ठी खोलली। दो-तीन घण्टे बाद उसे भीतर महलमें लेजाया गया।

कुमारी चौबोलकाकी तबियत न जाने क्यों गिरने लगी। उसे ऐसा मालूम होने लगा कि जैसे इस राजकुमारीसे वह जीत नहीं पायगी। खेलनेकेलिए चौसर डालीगई। कुमारी चौसर खेलते समय बिल्लीके सिरपर दीपक रखती थी। बिल्लीको इस प्रकार तैयार कियागया था कि कुमारीका दाव जब ठीक नहीं पड़ता था और उसे मालूम होता था कि वह हारनां चाहती है तब इशारा करनेपर बिल्ली सिर हिलादेती थी जिससे उस दीपककी जोत डगमगाने लगती थी। इसी बीच वह अपना पाँसा बदलदेती थी। रानी यह बात पहलेही सुनचुकी थी और बिल्लीको खामोश रखने और सिर हिलानेसे रोकनेकेलिए उसने एक चूहा पाललिया था। चौसरका खेल चलने लगा। कुमारी जब हारने लगी तो उसने बिल्लीको सिर हिलानेकेलिए इशारा किया। लेकिन रानीने पहलेहीसे अपनी आस्ती-नमेंसे चूहेको निकालकर बाहर करलिया था और बिल्लीकी निगाह अपने शिकारपर इतने जोरसे गड़ी थी कि कुमारीके इशारेका उसपर कोई असर ही न होता था। राजकुमारीने कई बार प्रयत्न किया; लेकिन बिल्ली टस-से-मस न हुई।

अन्तमें कुमारीकी हार होगई। ज़रा-सी देरमें नगर-भरमें इसकी खबर फैलगई और राजकन्याके विवाहकी तैयारियाँ होने लगी। रानी बोली, "मेरा तुम्हारा विवाह तो शर्त पूरी करते ही होगया। रही भाँवरें पड़नेकी बात, यह दस्तूर अब घर चलकर होगा। वहीं धूम-धामके साथ शादी की जायगी।

चौबोलका राजी होगई। रानीने कहा, "एक बात और है। यहाँसे चलनेसे पहले जितने लोगोंको तुमने डाल जेलमें रक्खा है, उन्हें छोड़देना पड़ेगा। सबको मेरे सामने बुलाओ।"

क़ैदी लायेगये। हरेक क़ैदीकी नाक छेदकर एक-एक फूटी कौड़ी उसमें पहनाई गई थी और सबके हाथमें कोल्हू हाँकनेकी हँकनी और खानेकेलिए खलीका एक-एक टुकड़ा था। उन्हींके बीच राजा भी था।

रानीने उसकी दशा देखी तो उसका जी भर आया। परन्तु उसने अपने मनके भावोंको भीतरही छिपालिया। सब क़ैदियोंकी नाकमेंसे कौड़ी निकलवाई गईं और नाई बुलवाकर सबके बाल बनवाये गये। फिर अच्छे-अच्छे कपड़े और भोजन पाकर राजकुमारके भेसमें सामने बैठी रानीको धन्यवाद देते सब अपने-अपने घर चलेगये। राजाने भी राजकुमारकी जय बोलते हुए अपने नगरका मार्ग पकड़ा।

अगले दिन रानी राजकन्या चौबोलकाकी बिदा करा और बहुत-सा धन दहेजमें ले खुशी खुशी अपने महलमें आगई।

राजा जब लौटकर अपने नगरमें आये तो देखते क्या हैं कि रानीके मकानके पास बहुत-सी इमारतें बनी हुई हैं। उन्होंने पूछा तो मालूम हुआ कि एक पाठशाला है, एक औषधालय, एक अनाथालय; और रानीने उन्हें बनवाया है।

सुनकर राजा चकित रहगये। सोचने लगे कि मैंने तो उसे एक फूटी कौड़ी भी नहीं दी थी। आखिर इतना धन उसके पास आया कहाँसे? लेकिन पैसेका मद अभी राजाके मनसे पूरी तरह उतरा नहीं था!

शामको उन्होंने रानीको बुलाया। पूछा, "कहो रानी, अब तुम्हारी क्या राय है? बुद्धि बड़ी या पैसा?"

इसके उत्तरमें रानी कुछ बोली नहीं। चुपचाप उसने नाककी कौड़ी, हँकना, खलीका टुकड़ा और चौबोलकाको राजाके सामने पेश करदिया। अब राजाकी आँखें खुलीं। वह समझ गये कि चौबोलकाकी क़ैदसे छुड़ानेवाला राजकुमार और कोई नहीं, उसकी बुद्धिमती रानी ही थी।

लज्जित होकर उन्होंने सिर नीचा करलिया। रानीने किंचित् मुस्कराते हुए कहा, "अब मैं पूछ सकती हूँ कि दुनियामें बुद्धि बड़ी या पैसा?"

धीमी वाणीमें राजाने कहा, "क्षमा करो रानी! मैं गलत रास्तेपर था। सचमुच बुद्धिके आगे पैसा कोई चीज़ नहीं।"

शुभ मुहुर्तमें चौबोलकाका विवाह बड़ी धूमधामसे राजाके साथ हुआ और वे सब लोग सुखपूर्वक रहने लगे।

१४

अपना-अपना भाग्य

एक राजाके चार लड़के थे। एक दिन राजाने उन सबको बुलाकर अपने सामने खड़ा किया और बड़े लड़केसे पूछा, "बेटे, यह तो बताओ कि तुम किसके भाग्यका खाते हो?"

बड़े लड़केने तुरन्त उत्तर दिया, "आपके भाग्यका पिताजी!"

दूसरे और तीसरे लड़कोंने भी यही ज़वाब दिया। लेकिन जब सबसे छोटेकी बारी आई तो उसने कहा, "आपका सवाल मेरी समझमें नहीं आया, पिताजी! संसारके सभी मनुष्य अपने-अपने भाग्यसे जनमते हैं, खाते-पीते और सुख-दुख भोगते हैं। मैं भी अपनेही भाग्यसे पैदा हुआ हूँ और अपनेही भाग्यका खाता हूँ।"

छोटे राजकुमारके उत्तरसे राजा आगबबूला हो गये। ऐसे उत्तर की उन्हें आशा न थी। सोचने लगे कि इस अभिमानी लड़केका अभिमान दूर करना चाहिए। सो उन्होंने उससे कहा, "अच्छी बात है, तुम अपने भाग्यका खाते हो तो यहाँ रहनेकी जरूरत नहीं। अभी तुम मेरे राज्यसे बाहर होजाओ। देखूँगा तुम्हारा भाग्य तुम्हारी कैसे सहायता करता है?"

राजाकी आज्ञा पाकर राजकुमार जैसे बैठा था वैसेही उठकर चल दिया। मन-ही-मन उसने कहा कि राज्यसे निकाल दिया तो उससे क्या? मेरा भाग्य मेरे साथ है!

घरसे चलकर राजकुमार उज्जैन नगरी पहुँचा। वहाँ थी एक पाठशाला, जिसमें क्या गरीब, क्या अमीर, क्या राजकुमार, सभी आपसी भेद-भाव छोड़कर एक साथ रहते और गुरुजीकी टहल करते हुए विद्याध्ययन करते थे और युद्धकी कला सीखते थे। बहुतसे विद्यार्थी वहाँ थे।

राजकुमार भी उसी पाठशालामें भर्ती होगया। गुरुने पूछा तो उसने कह दिया कि मैं एक अनाथ हूँ। आपकी सेवामें रहकर कुछ सीखना चाहता हूँ। यों मेरा नाम तो यशवन्तसिंह है; पर सब मुझे 'जस्सू जस्सू' कहते हैं।

गुरुने उसे दाखिल कर लिया और उस दिनसे जस्सू मन लगाकर पढ़ने लगा। जस्सूके सामने दो काम थे—खूब गुरुकी सेवा करना और खूब पढ़ना। गुरुकी सेवा करनेसे किसी दिन भी उसने जी चुराया हो, ऐसा कोई भी नहीं कह सकता था। गुरु उससे बहुत प्रसन्न थे। इस तरह तीन साल बीत गये।

एक दिनकी बात है कि गुरुने सब विद्यार्थियोंको इकट्ठा करके कहा, "प्यारे विद्यार्थियो, विजयनगरकी राजकुमारीका स्वयंवर है। महाराजका निमन्त्रण आया है। इसलिए तुममेंसे जिन विद्यार्थियों, विशेषकर राजकुमारोंकी, इच्छा स्वयंवरमें भाग लेनेकी हो। वे कल सुबह मेरे साथ चलनेको तैयार रहें।

जस्सूकी इच्छा भी चलनेकी थी। लेकिन गुरुने उसे बुलाकर कहा, "बेटा जस्सू, स्वयंवरमें तो राजकुमारोंका काम होता है। तुम जाकर क्या करोगे? तुम यहीं आश्रममें रहो। गायोंकी अच्छी तरहसे देख-भाल रखना। उन्हें कोई कष्ट न होने पावे, अच्छा!"

जस्सू गुरुकी आज्ञा हमेशा प्रसन्नतापूर्वक मान लेता था, पर आज उसे उनकी यह आज्ञा भली न लगी। लेकिन उसका उल्लंघन करना ठीक न समझकर वह मन मारकर रह गया।

विजयनगरमें स्वयंवरकी तैयारियाँ देखने लायक थीं। एक बड़े मैदानमें चारों ओर राजा-महाराजाओंके बैठनेकेलिए आसन सजाये गये थे। दूर दूरके राजा उसमें भाग लेने आये थे। देखते-देखते मण्डप खचाखच भर गया। तब राजाने खड़े होकर कहा, "राजकुमारीका आज स्वयंवर है। ये जो बीचमें सात साँड़ आपको खड़े दीखते हैं, उन्हें एक साथ जो कोई एक रस्सीमें नाथ देगा, उसीके साथ मैं राजकुमारीका विवाह कर दूँगा।"

राजाकी इस घोषणाको सुनकर लोग अपने-अपने बलकी परीक्षा करनेकेलिए उठ-उठकर आने लगे। लेकिन साँड़ इतने तेज थे कि ज्योंही

कोई उनके पास आनेका प्रयत्न करता कि वे सींगोंपर उठाकर उसे दूर फेंक देते। बड़े-बड़े शूरवीरोंका मान चूर हुआ। लेकिन अन्तमें एक राजकुमारने सातों साँड़ोंको एक रस्सीसे नाथ दिया। सभामें शोर मच गया। चारों ओरसे जय-जय नाद होने लगा। राजाने उठकर विजयी कुमारको गलेसे लगा लिया।

राज घरानेके नियमके अनुसार उसी रातको राजकुमार दूल्हा बनकर राजकुमारीके महलमें जानेकी तैयारी करने लगा। राजकुमारीका महल आज विशेष रूपसे सजाया गया था। चारोंओर बन्दनवार बँधे थे और बाहर भीतर लाखों दीपक झिलमिला रहे थे। कुमारीके शयनागारमें नाना प्रकारकी खानेकी चीजें—मेवा, मिठाई तथा शृङ्गारके साज और पान, इत्र, इलायची संग्रह करके रखे गये थे। राजकुमारी बाहर आभूषण पहने, सोलहो शृङ्गार किये अपने पतिके प्रथम दर्शनकी अभिलाषामें बैठी बाट जोह रही थी। एक एक क्षणका विलम्ब उसे असह्य होरहा था। रात ज्यों ज्यों आगे बढ़ती थी, उसकी अधीरता भी बढ़ती जाती थी।

इधर राजकुमार अपनी तैयारियोंमें लगा था। तैयारी समाप्त हुई और राजकुमार हाथीपर बैठकर राजकुमारीके महलकी ओर चला। एक साथ शहनाई, नौबत, ढोल और तुरई बजने लगे। दुशाखा और मशालोंके प्रकाशसे आसपासकी सभी जगह जगमगा उठी। एक बहुत बड़ी सेना और राजकुमारके सङ्गी साथी उसे महलतक पहुँचाने आये।

उधर जस्सू गुरुकी आज्ञासे आश्रममें अकेला रह गया था। सो उसने गायोंको पानी पिलाया, घास डाली। आश्रमका और जो कुछ काम था, किया। फिर जब वह निश्चिन्त होकर बैठा तो उसके जीमें आया कि उसे स्वयम्बरकेलिए चलना ही चाहिए। गुरु नाराज होंगे तो हो लेंगे। यह सोचकर उसने गुरुकी पत्नीसे आज्ञा ली और चल दिया। आज न उसे भूख थी और न प्यास। बस, एक धुन थी कि कब स्वयंवरमें पहुँचूँ। चलते-चलते शाम हो गई और रातको नौ बजते-बजते वह एक नदीके किनारे पहुँचा। पासमें ही देवीका मन्दिर था। जस्सू चलते-चलते थक गया था। पूछनेपर मालूम हुआ कि अभी तो उसे पक्के तीन कोस और चलना है। जस्सूका दिल टूट गया। आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई। वह देवीके मन्दिरमें जाकर पड़ रहा। सोचा कि अँधेरी रातमें

चलना ठीक नहीं। बहुत तड़के उठकर चल दूंगा और सूरज निकलते-निकलते पहुँच जाऊंगा।

जम्बू लेटा तो रहा, पर उसे नींद न आई। थकान और भूखसे उसकी तबिअत परेशान हो रही थी। आधी रातके लगभग उसकी आँख लगी।

इधर देवीने देखा कि उसके द्वारपर एक अतिथि भूखा पड़ा है तो उसे चिन्ता हुई। उन्होंने सोचा कि मेरा नाम विश्वम्भरा है और मेरे ही द्वारपर कोई भूखा पड़ा रहे, यह कैसे होसकता है! सो उन्होंने अपनी योगमायासे उसे उठाकर राजकुमारीके महलमें पहुँचा दिया। राजकुमारी अपने पतिके प्रथम दर्शनकेलिए आतुर बैठा हुई थी। इसी समय जम्बू महलमें जा पहुँचा। राजकुमारी अपने पतिको आया हुआ जानकर उठ खड़ी हुई। मन-ही-मन दासियोंपर बड़ा क्रोध आता। जब राजकुमार द्वार पर आये थे, तभी उन्होंने सूचना क्यों न दी। आरतीके थालका अब वह क्या करे? लेकिन मनमें झुँझलाहटको दबाकर उसने तुरन्त ही राजकुमारके चरण पखारे और उन्हें पलंगपर ले जाकर बिठाया। दासियाँ वहाँसे हट गईं। राजकुमारके भीतर आजानेपर दासियोंने महलके सब दरवाजे और सदर फाटक बन्द करदिये और वे अपनी-अपनी जगह आराम करने चली गईं।

जम्बू भौचक्का-सा होकर रह गया। यह सब क्या है? क्या वह सपना देख रहा है? अभी-अभी तो वह भूखा प्यासा देवीके मन्दिरमें पड़ा था। यहाँ कैसे आ गया?

राजकुमारीने देखा कि उसका पति अत्यन्त साधारण वेशमें आया है और अन्यमनस्क-सा बैठा है तो उसने कहा----

"शय्या वस्त्रम् भूषणम् चारु गन्धो--
वीणा वाणी दर्शनीया च रामा।"

(अर्थात् शय्या, वस्त्र, आभूषण, सुगन्धित द्रव्य, गाने-बजानेका सामान, सुन्दरी रमणी, सभी चीजें उपस्थित हैं। जिसकी रुचि हो, उसका उपभोग कीजिये।)

जम्बूने तुरन्त उत्तर दिया—

"नो रोचन्ते क्षुत्पिपासातुरेभ्यः
सर्वारम्भाः तण्डुलप्रस्थ मूलाः॥"

(अर्थात् भूखे-प्यासे आदमीकेलिए ये सभी चीज़ें तनक भी रुचिकर नहीं होसकतीं। इन सबके आदिमें भोजन मुख्य है।)

राजकुमारीने तुरन्तही सोनेके थालमें नाना प्रकारके व्यञ्जन और मिठाइयाँ परोसदीं। जस्सू खाने लगा। भूखा तो था ही खूब डटकर खाया। पानी पिया। राजकुमारीने हाथ-मुँह पोंछकर उसे फिर पलंगपर बिठा दिया। तदनन्तर पानदान उठानेकेलिए वह पीछेको लौटी। उसी समय योगमायाने जस्सूको महलसे उठाकर फिर मन्दिरमें लाकर सुला दिया। राजकुमारी पानदान लेकर लौटी तो देखती क्या है कि राजकुमार वहाँ नहीं है। उसके आश्चर्यकी सीमा न रही। इतनी जल्दी कहाँ चले गये? मालूम होता है कि किसी बातसे वह नाराज हो गये। राजकुमारीने दासियोंको बुलाया। सारे महलमें खोज की गई, पर राजकुमारका पता न चला। सब दरवाजे ज्योंके त्यों बन्द थे।

थोड़ी देर बाद राजकुमार जुलूसके साथ राजकुमारीके महलमें पहुँचा तो देखता क्या है कि सदर दरवाजा भीतरसे बन्द है। रोशनी भी नहीं थी। पहरेदारोंने कहा कि राजकुमारीकी आज्ञासे फाटक बन्द हुआ है। अब खुल नहीं सकता। राजकुमारको बड़ा बुरा लगा और गुस्सेमें भरकर वह अपने स्थानपर वापस लौट आया।

सवेरे यह बात सारे नगरमें फैल गई। राजा और रानीने राजकुमारीसे कहा, "बेटी, तूने यह क्या नादानी की। फाटक क्यों बन्दकर लिये।"

राजकुमारीने कहा, "पिताजी, जो कुछ हुआ सो हुआ। अब आपको स्वयंवर फिर करना होगा। आज मैं एक समस्या दूँगी। जो कोई उसकी पूर्ति करदेगा, उसीको मैं अपना पति समझूँगी।"

उधर जस्सूकी सुबह आँख खुली तो रातका भेद कुछ भी समझ में नहीं आया। वह सब बात सपना तो थी नहीं; क्योंकि उसका पेट अबभी भरा था। जस्सू उठा और उसने अपनी राह पकड़ी।

दोपहर होते-होते जस्सू विजयनगर पहुँच गया। सभा भरी थी और सब लोग राजकुमारीकी दी हुई समस्याकी पूर्ति करनेमें लगे थे। आज पहले दिनसे भी अधिक भीड़ थी। पण्डित और विद्यार्थी आज फूले नहीं समाते थे।

इतनेमें जस्सू वहाँ जा पहुँचा। संयोगकी बात कि जहाँ उसके गुरु बैठे थे, वहीं जाकर वह खड़ा हुआ। गुरुने समस्याकी कड़ी सोचते-सोचते जो पीछेको मुँह किया तो देखते क्या हैं कि जस्सू खड़ा है। उन्हें बहुत गुस्सा आया। बोले, "क्यों, बिना आये न माना! जैसे कि इस समस्याकी पूर्ति तेरे बिना होती ही नहीं! राजकुमारी तेरे ही गलेमें जय-माल डालेगी! बड़े-बड़े शास्त्रियोंकी तो बुद्धि चकरा रही है और ये आये हैं निरक्षर भट्टाचार्य, जो समस्याकी पूर्ति करेंगे! अरे भाई, इसे भी देना समस्याका एक पर्चा।"

जस्सूको एक पर्चा मिल गया। उसने पढ़ा---

"शय्या वस्त्रम् भूषणम् चारु गन्धो-
वीणा वाणी दर्शनीया च रामा।"

जस्सूने सोचा कि यह तो कुछ-कुछ परिचित सा जान पड़ता है। रात राजकुमारीने यही श्लोक तो कहा था! उसने झट पेंसिल उठाई और नीचे लिख दिया---

"नो रोचन्ते क्षुत्पिपासातुरेभ्यः
सर्वारंभाः तण्डुलप्रस्थमूलाः॥"

सबने अपनी-अपनी पूर्ति करके पर्चे पर पता-ठिकाना लिखकर राजाको दे दिया। जस्सूने भी दे दिया। हरेक आदमी अपनी-अपनी पूर्ति की प्रशंसा कर रहा था। उत्सुकतासे सब प्रतीक्षा करने लगे कि देखें किसका भाग्य चमकता है।

दूसरे दिन प्रातःकाल राजाने घोषणा की कि उज्जैन नगरीकी अमुक पाठशालाके विद्यार्थी यशवन्तसिंहकी पूर्ति राजकुमारीने पसन्द की है। उन्हींके साथ राजकुमारीका विवाह होगा।

जस्सू प्रसन्नतासे उछल पड़ा। गुरु और उसके सहपाठी उसके भाग्यकी प्रशंसा करने लगे। गुरुने उसकी पीठ ठोंकी। कहा, "बेटा, तूने हमारी पाठशालाका नाम ऊँचा किया।"

जस्सूने झुककर गुरुके चरण छुए।

कुछ समय बाद धूम-धामसे राजा आये और यशवन्तसिंह एवं उसके गुरुको हाथीपर बिठाकर राजमहलमें ले गये। वहाँ दरबार लगा हुआ था। राजकन्याने उठकर यशवन्तसिंहके गलेमें जयमाल पहनायी।

थोड़ी देरमें राजाने जब यशवन्तसिंहका ठिकाना पूछा तो उसने कहा कि मैं अमुक देशके राजाका पुत्र हूँ।

राजाने दूत भेजकर उसके पिताको बुलवाया और उनके आनेपर राजकन्याका विवाह विधिपूर्वक यशवन्तसिंहके साथ कर दिया। राजाके कोई पुत्र न था। सो उन्होंने दहेजमें अपना सारा राज्य यशवन्तसिंहको दे दिया। तब यशवन्तसिंहके पिताने कहा, "बेटा, तू ठीक कहता था कि सब अपने-अपने भाग्यका खाते हैं। किसीका यह कहना कि मैं इसे पालता हूँ, झूठ है, दम्भ है।"

१५

बढ़ईका कुँवर

किसी नगरमें एक बड़ा होशियार बढ़ई रहता था। लकड़ीकी ऐसी-ऐसी उम्दा चीज़ें बनाता कि लोग देखकर दंग रहजाते। उसके दो बेटे थे। बड़ा तो खेतीका काम करता था और अक्सर खेतपर ही रहा करता था। छोटा पिताके पास बैठकर कारीगरीका काम सीखता था। बड़े भाईके लिए खेतपर रोज़ खाना पहुँचाना भी उसीके सिर था। खेतको जाते समय रास्तेमें एक बड़ा मैदान पड़ता था। यह मैदान उसे बहुत पसन्द था। वहाँ पहुँचकर वह सोचा करता कि इस जगहपर एक अच्छा-सा महल बनाया जासकता है। उस धरतीको वह कभी-कभी नापता और हिसाब लगाता कि यहाँ रहनेकेलिए महल बनेगा, यहाँ रानियोंके लिए रनवास, यहाँ हाथी-खाना, यहाँ घुड़साल और यहाँ बगीचा। इस काममें उसे बहुत देर हो जाया करती थी और बड़ा भाई उसपर हर रोज नाराज़ होता था। एक रोज तो उसका मन मैदानपर मकानोंके नक्शे बनानेमें ऐसा लगा कि समयका उसे कुछ ध्यान ही न रहा। धीरे-धीरे शाम हो चली और वह बैठा ही रहा। बड़े भाईने उसकी राह देखी और भूखा-प्यासा झल्लाता घर लौटा। रास्तेमें देखता क्या है कि छोटा भाई एक पेड़के पास बैठा धरतीपर कुछ लकीरें खींच रहा है। खानेकी पोटली पेड़पर लटकी है। यह देख बड़े भाईने क्रोधसे कहा, "ओ मूर्ख, तू क्या कर रहा है? कुछ खबर है कि मैं भूखा बैठा हूँ? घर चल, ऐसा मज़ा चखवाऊँ कि तू भी याद करे!"

दोनों भाई घर आये। पिताको सब हाल मालूम हुआ तो उन्होंने छोटे लड़केसे पूछा, "बेटे तुमने देर कहाँपर करदी?"

छोटा पुत्र पहले तो कुछ झिझका। बादमें उसने सारा किस्सा कह सुनाया। कहा कि वह मैदान मुझे बहुत ज्यादा पसंद है लेकिन......

पिताने क्रोधके साथ कहा, "ये सब पागलोंकी-सी बातें हैं। तुम्हारी देह नहीं चलती, सो यह सब कामसे बचनेका बहाना है। बैठे-बैठे मैं तुम्हें कबतक खिलाऊँगा। तुम बस घरसे निकल जाओ। एक घड़ी भी अब मैं तुम्हें यहाँ नहीं देखना चाहता।"

पिताकी इस आज्ञासे माँको बहुत दुख हुआ। उसने रास्तेकेलिए थोड़ासा कलेवा बनाया। और बढ़ईका वह कुँवर कलेवा लेकर उसी समय घरसे चल दिया।

चलते-चलते वह एक शहरमें पहुँचा और बाहरही एक पेड़के नीचे ठहर गया। उसने सोचा कि परदेश है, अब किसी युक्तिसे काम लेना चाहिए। इतनेमें उसे एक हड्डी पास पड़ी दिखाई दी। उसे लेकर उसने कूटा और चावल जैसे दाने तैयार किये। उन्हें लेकर वह शहरमें गया। खोजते खोजते वह एक बढ़ईके घर पहुँचा उस समय घरपर बढ़ईकी बेटी ही थी। माँ-बाप किसी कामसे बाहर गये थे। बढ़ईके कुँवरने कहा, "बाई, मैं भूखा हूँ। मेरे ये चावल पकादो।"

बेटीने आदरसे उसे बिठाया और चावल लेकर पकनेकेलिए रख दिये। कई घण्टे हो गए परन्तु चावल नहीं पके। बेटी बड़ी हैरान थी। इतनेमें उसके माँ-बाप भी आगये। बेटीने सब समाचार सुनाकर कहा, "माँ, देखो तो यह कैसे चावल हैं। घण्टों होगए, पकते ही नहीं!" माँने जाकर हाँडा देखी। मालूम हुआ कि वे चावल तो हड्डीके हैं: पक कैसे सकते थे? लेकिन उन्हें देखकर वे सब दंग रहगये। इतनी चतुराईके साथ उन्हें बनाया गया था कि असली चावल और उनमें जरा-सा भी भेद नहीं था। बढ़ईने सोचा कि यह कुँवर बड़ा चतुर है। इसे घरपर रखकर अपनी बेटीका ब्याह इसके साथ करदेना चाहिए। ऐसाही हुआ; और बढ़ईका कुँवर उस घरमें दामाद बनकर रहने लगा।

धीरे-धीरे एक वर्ष बीत गया। बढ़ई सोचता था कि कुँवर कोई धन्धा चालू करेगा, और उसकी कारीगरीसे घरमें धन आयगा। लेकिन वह तो निठल्ला, हाथ-पर-हाथ रखे बैठा रहता। इससे बढ़ईको बहुत दुख होने लगा। बेटीसे यह सब छिपा नहीं था। एक दिन उसने कुँवरसे कहा

कि देखोजी, "अब तुम कोई धन्धा शुरू करो। यों कैसे काम चलेगा?"

कुँवरने कहा—अच्छा।

धीरे-धीरे फिर कई महीने बीत गये। बेटीको भी अब अपने पतिकी बेकारी खटकने लगी। खर्च भी बढ़ रहा था। इससे घरमें तंगी रहने लगी। एक दिन बेटीने फिर कहा—आवाज़में कुछ तेजी लाकर बोली, "तुम कैसे हो? दूसरेके अन्नपर कबतक पड़े रहोगे? तुम्हें शरम......" बात कुछ तीखी थी और कुँवरके दिलमें चुभ गई। उसने कहा, "अच्छी बात है। कलसे कुछ काम शुरू करूँगा।"

अगले दिन शहरके कुछ बढ़ई लकड़ी लेने जा रहे थे। कुँवर भी उनके साथ हो लिया। जंगलमें पहुँचकर और बढ़ई तो लकड़ी काट-काटकर गाड़ी भरने लगे; लेकिन बढ़ईके कुँवर इधर-उधर पड़ देखते फिरने लगे। सबने समझा कि यह कोई पागल है।

बढ़ईका कुँवर छानबीन करते बहुत दूर निकल गया। वहाँ उसे एक चन्दनका पेड़ दिखाई दिया। उसे देखकर वह प्रसन्न हुआ। जेबसे फीता निकालकर नापा और हिसाब लगाया तो उसका मन उदास होगया। क्या बढ़िया पेड़ है! इसमेंसे एक बहुत अच्छा पलंग बन सकता है। लेकिन एक पायेकेलिए लकड़ी घटती थी। कुँवर सोचता था लेकिन कोई तरकीब समझमें नहीं आती थी। इतनेमें पेड़के भीतरसे आवाज़ आई—"ओ कुँवर, तू सोच क्यों करता है? राजाको जलानेकेलिए उस दिन चन्दन आया था। उसका एक टुकड़ा अबभी मसानमें पड़ा है। उससे एक पाया बन जायगा।"

यह सुनकर बढ़ईका कुँवर उठ खड़ा हुआ, लेकिन शाम हो चुकी थी। वह घर लौट आया।

घर आकर जब बढ़ई और उसकी बेटीको मालूम हुआ कि और सब लोग तो भर-भर गाड़ी लकड़ी लाये हैं, लेकिन अपने कुँवर खाली हाथ लौटे हैं तो उन्हें बड़ी झुंझलाहट हुई। लड़कीने कहा, "तुम जैसा भी दुनियामें कोई होगा। रीते हाथ लौटते तुम्हें लाज भी नहीं आई।"

कुँवर चुप रहा। अगले दिन बड़े तड़के वह गया और चन्दनकी लकड़ी ले आया।

छह महीनेमें पलंग बनकर तैयार हुआ। अब उसकेलिए निवाड़की

जरूरत पड़ी। कुँवरने बढ़ईसे कहा कि निवाड़केलिए पाँचसौ रुपया दो। बढ़ईने सोचा कि चलो, दामादने काममें मन तो लगाया। उसके उत्साहको घटाना नहीं चाहिए। यह सोच घर न होनेपर भी उसने उधार लेकर पाँच सौ रुपये उसे देदिये। निवाड़ आगई और पलंग तैयार होगया। एक कपड़ेका पर्दा उसपर डाल दिया गया।

दूसरे दिन कुँवरने अपनी स्त्रीको बुलाकर कहा, "तुम इस पलंगको बाज़ार ले जाओ। पर्दा इसपरसे मत हटाना। जो कोई देखने आवे उससे कहना कि पहले एक हज़ार रुपया पलंगकी दिखाई दो, तब देख सकोगे। क़ीमतकी बात कोई करे तो कह देना कि पलंग अपने आप ही बता देगा।"

बढ़ईकी बेटी पलंग लेकर बाज़ार पहुँची। कई ग्राहक उसे देखने और खरीदने आये, लेकिन एक हज़ार रुपया पहले देनेकी बात सुनकर लौट गये। खरीदना तो दूर, किसीकी हिम्मत देखने तककी न हुई। पलंग नहीं बिका, शाम होगई।

इस नगरके राजाका नियम था कि जो चीज़ शामको बाज़ारमें बच रहती थी, उसे वह खरीद लेता था। राजाके दूतोंने जब उस क़ीमती पलंगकी बात कही तो राजाने कहा, "अच्छा, एक हज़ार रुपया उसे दो और पलंग ले आओ।"

पलंग राजाके सामने लाया गया। उसकी बनावट, सुन्दरता और कारीगरीको देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने बढ़ईकी बेटीसे उसकी क़ीमत पूछी। बेटीने कहा, "महाराज, पलंग आप काममें लाइये। चार दिन बाद अपनी क़ीमत वह आपही बता देगा।"

रातको पलंग बिछाया गया। राजा उसपर लेट गये। सोचने लगे कि देखें इसमें क्या खूबी है और चार दिन बाद अपनी क़ीमत यह कैसे बतायेगा। इन्हीं विचारोंमें आधी रात होगई।

पलंगके चारों पाये चार पुतलियोंके रूपमें बने हुए थे। आधी रात होनेपर उनमेंसे एक पुतली और पुतलियोंसे बोली, "बहनों मैं नगरकी सैर कर आऊँ। तुम मेरे इस पायेका बोझ सँभाले रहना।" ऐसा कहकर पुतली चली गयी।

राजा पुतलीकी बात सुनकर चकित रह गये उन्हें नींद नहीं आई।

वह उस पुतलीके वापस आनेकी राह देखने लगे। पहर भर रात रहे पुतली लौटी। उसके लौटते ही पुतलियोंने पूछा, "कहो बहन, नगरमें क्या हालचाल है?"

पुतलीने कहा, "कुछ न पूछो बहन, बहुत दिनसे इस नगरमें बगदादके चार चोर आये हुए थे। यहाँके सिपाही इतने आलसी हैं कि उन्हें पकड़नेकेलिए जरा भी कोशिश नहीं करते थे। उल्टे लोगोंको तंग करते थे। नगरके लोग परेशान थे। आज मैं उन चारों चोरोंको जगत सेठके यहाँ समाप्त करके उनकी जीभें काट लायी हूँ।" इतना कहकर पुतली चुप हो गई।

राजाको बड़ी परेशानी हुई। पुतलीकी बात सच है या झूठ, यह देखनेकेलिए सबेरा होनेकी बाट देखने लगे। सबेरा होते ही चोरोंके मारे जानेका समाचार मालूम हुआ। इन चोरोंको पकड़ने या सिर लानेके लिए राजाने पाँच हज़ारका इनाम बोला था। दिन निकलते ही दरोगाजी चारों चोरोंके सिर लेकर राजाके सामने आये। कहा, "महाराज बड़ी मुश्किलसे ये चोर हाथ आये हैं। हमारी जान खतरेमें पड़ गई थी। अब इनाम......।"

राजा तो पुतलीके मुँहसे सारा हाल सुन ही चुके थे। उन्होंने कहा, "इनाम तुम्हारा पक्का है। लेकिन पहले इन सबकी जीभें काटकर लाओ।"

दरोगाजीने जीभ काटनेके लिए उनके मुँह खोले तो देखते क्या हैं कि जीभ एकके भी मुँहमें नहीं है। दरोगाजीके होश उड़ गये। उन्हें मालूम होगया कि राजा सारा हाल पहले हीसे जान गये हैं। वह हाथ जोड़कर माँफ़ी माँगने लगे। राजाने उसी समय उन्हें नौकरीसे अलग कर दिया।

अगली रातको जब आधी रातका समय हुआ तब दूसरे पायेकी पुतली बोली, "बहनो, आज मेरे पायेका बोझ तुम सँभालना। मैं नगर की सैर करने जाती हूँ।" इतना कहकर वह चली गई। राजा पलंगपर पड़े-पड़े चिंता करने लगे कि देखें, आज नगरका वह क्या समाचार लाती है। रात ढलने लगी तो वह पुतली नगरसे लौटकर आई। पुतलियोंने पूछा, "कहो बहन, आज नगरका क्या समाचार है?"

पुतली बोली, "इस नगरके दक्षिणकी ओर वह जो एक घना जंगल है, उसमें एक शेर रहता था। वह रातके समय नगरमें आकर किसी न किसीको उठा लेजाता था। आज मैं उसे मार आई।" पुतली इतना कहकर चुप हो गयी। राजाने बड़ी मुश्किलसे रात काटी और सबेरा होते ही उठकर पता लगाया तो मालूम हुआ कि शेर मारा गया। राजा की खुशीका ठिकाना न रहा।

तीसरी रातको तीसरी पुतली नगरकी सैरको गई। जब वह वापस आई तो उसने सुनाया, "बहनों, आज एक बड़ा बुरा समाचार सुनकर आई हूँ। शहरके चौराहेपर जो पीपलका पेड़ है उसके नीचे बैठकर मैं आराम कररही थी। ऊपर दो पक्षी, एक तोता और एक मैना बैठे आपस में बातें कर रहे थे। तोतेने कहा, "देखो मैना, इस नगरके राजापर एक भारी मुसीबत आनेवाली है। राजाने राजकुमारके लिए नये कपड़े सिलवाये हैं। कपड़े तैयार करके दर्ज़ीने एक पोटलीमें बाँधकर खूँटीपर टाँग दिये हैं। इन्हीं कपड़ोंमें कोटकी एक बाँहमें एक कालानाग घुस गया है। सबेरे जब दर्ज़ी इन कपड़ोंको लेकर राजकुमारको देगा तब कोट पहनते समय काला नाग राजकुमारको डस लेगा।" मैनाने पूछा, "कुमारके बचनेका कोई उपाय भी है?" तोतेने जवाब दिया, "हाँ, है तो। अगर कोई सुनता हो तो राजाको यह समाचार दे दे और कहे कि जब दर्ज़ी कपड़ा लेकर दरबारमें आये और राजकुमारको पहनाने लगे तो राजा कहदे कि ओ दर्ज़ी, तूने जनम-भर हमारे कपड़े सिये हैं। इन कपड़ोंको तू ही पहन ले। राजाके ऐसा कहनेसे दर्ज़ी कपड़ा पहनने लगेगा और साँपके काटनेसे मर जायगा, राजकुमार बच जायगा।" इतना कहकर पुतली चुप हो गई।

राजाका हृदय काँप उठा। अगले दिन पुतलीने जो कहा था वही हुआ। दर्ज़ी कपड़े लेकर आया और राजाने पुतलीकी बतायी तरकीबसे काम लिया। साँपके काटनेसे दर्ज़ी तुरन्त मर गया।

चौथे दिन चौथी पुतली शहरकी गश्तको गई! उसने आकर कहा, "बहनो, आज मैं भी उसी चौराहेके पीपलके तले बैठी थी। इतनेमें तोतेने मैनासे कहा, "मैना, राजकुमारकी एक मुसीबत तो टल गई। एक और रह गई। कल राजकुमारकी वर्षगाँठ है। बधाई पाकर जब

वह लौटे और सिंहद्वारके नीचेसे गुजरेगा तभी वह गिर जायगा और कुमारकी मृत्यु हो जायगी।" मैनाने पूछा, "कुमारके बचनेका कोई उपाय नहीं है क्या?" तोतेने कहा, "उपाय तो है यदि कोई सुनता हो तो राजाको सावधान कर दे और सिंहद्वारको गिरवाकर उसकी जगह फूलोंका एक दरवाज़ा बनवा दे। कुमारकी जान बच जायगी।" इतना कहकर पुतली चुप हो गई।

सबेरा होते ही राजाने सिंहद्वार गिरवाकर उसकी जगह फूलोंका एक दरवाजा तैयार करवा दिया। पुतलीकी बात सच निकली। ज्योंही कुमार लौटकर सिंहद्वारके नीचे आया कि दरवाज़ा गिर पड़ा। पर कुमार बच गया।

चार दिन पूरे हो गये। राजाने बढ़ईको बुलाकर कहा, "पलंगकी क़ीमत मुझे मालूम हो गयी। खज़ाना खुला है। जितना धन चाहो ले जाओ।" बढ़ईके कुँवर, उसकी स्त्री, और उसके सास-ससुरने खजानेसे दिनभर धन ढोया। एक ही दिनमें उन्हें लाखोंकी सम्पत्ति मिल गई।

कुछ दिन बाद राजाने बढ़ईके कुँवरको बुलाकर कहा, "देखो भाई, हमें इस बातकी खुशी है कि तुम जैसा हुनरमन्द कारीगर हमारे राज्यमें रहता है। अब तुम अपने हुनरका और नमूना दिखाओ। जो माँगोगे मिलेगा।"

बढ़ईके कुँवरने कहा, "जो आज्ञा।" इस बार उसने काठका घोड़ा तैयार किया। उसे लेकर वह राज-दरबारमें पहुँचा और राजासे कहा, "महाराज, यह घोड़ा तैयार है। जो सवार आपके यहाँ बहुत चतुर हो, उसे इस घोड़ेपर बिठाइये तभी वह अपनी करामात दिखा-येगा।"

राजकुमारने कहा, "इतै कौन कोऊ ताते पानीको सपराब है। मैंने बड़े-बड़े घोड़ोंपर सवारी की है। यह काठका घोड़ा क्या चीज़ है। मैं ही इसपर चढ़ूँगा।" इतना कहकर राजकुमार घोड़ेके पास आया और ज्योंही उसने छलाँग मारकर घोड़ेपर सवारी की कि घोड़ा उड़कर आसमानमें जा पहुँचा और देखते-देखते लोगोंकी निगाहसे ओझल हो गया।

उड़ते-उड़ते घोड़ा समुन्दर-पार एक बग़ीचेमें पहुँचा। वहाँ राज-

कुमारने घोड़ेको खजूरके पेड़पर उतारा और उसे वहाँ छोड़कर आप नीचे बगीचेमें गया। पास ही मालिनकी कोठरी थी। कुमारने मालिनसे उस घरमें कुछ दिन ठहरनेकी इजाजत माँगी। मालिनने कहा, "यह राजाकी बेटीका बग़ीचा है। इसमें मर्द नहीं रह सकते। तुम यहाँसे चले जाओ। किसीने देख लिया तो मेरी आफ़त आ जायगी।" कुमारने जेबसे एक मुहर निकालकर मालिनको दी और कहा, "मैं थका-माँदा मुसाफिर हूँ। कम-से कम आज तो ठहर ही जाने दे।" मुहर देखते ही मालिनके मुँहमें पानी भर आया। उसने कुमारको अपने यहाँ ठहर जाने दिया। शाम होनेपर कुमारने मालिनको एक मुहर देकर बाजारसे सामान मँगाया। मालिन सामान ले आई। कुछ रुपये बचे थे जो कुमारने मालिनको ही दे दिये, कहा कि खानेपर मुझे तो रोज़ही एक मुहर खर्च करनी है। जो रुपये बचे वे तुम्हारे। मालिन सोचने लगी कि यह तो अच्छा मुसाफिर आ फँसा है। दस-पन्द्रह दिन भी ठहर गया तो मेरा घर भर जायगा। सो अगले दिन उस कुमारको चले जानेकेलिए नहीं कहा। और इस तरह धीरे-धीरे पन्द्रह दिन बीत गये। मालिन और कुमारमें खूब मेल-जोल होगया।

मालिन राजकुमारीके लिए नित्य फूलोंके गजरे बनाकर ले जाया करती थी। एक दिन राजकुमारने कहा, "मालिन, तुम तो यह मुहर लो और बाजार जाकर मेरेलिए सामान ले आओ। मैं गजरे बनाता हूँ।"

मुहर लेकर मालिन चली गई। इधर राजकुमारने गजरे बनाये। मालिन जब बाजारसे लौटी तो देखती क्या है कि राजकुमारने बहुत ही सुन्दर गजरे तैयार किये हैं। ऐसे गजरे उसने पहले कभी न देखे थे। मालिन प्रसन्न होकर उन्हें राजाकी बेटीके पास ले गई। राजकुमारी उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुई। पूछा, "यह गजरे किसने बनाये हैं?" मालिनने डरते हुए कहा, "मालकिन, मेरे अलावा और कौन बनायेगा?" राजकुमारी बोली, "सच-सच बताओ, मालिन, मैं जानती हूँ ऐसे गजरे तुम नहीं बना सकती।" मालिन पहले तो डरी, फिर उसने कहा, "मालिकिन, मेरी बहनोतिया (बहनकी लड़की) आई हुई है। उसीने ये बनाये हैं।" राजकुमारीने कहा, "अच्छा, कल तुम उसे अपने साथ लेती आना। मैं उसे देखना चाहती हूँ।"

मालिन घर लौट आई और सोचने लगी कि अब वह करे क्या ? मुसीबतको टालनेका कोई उपाय ही नहीं सूझता था ।

मालिनका उदास चेहरा देखकर राजकुमारने उसका कारण पूछा। मालिनने सब कह सुनाया। सुनकर राजकुमार बोला, "मालिन तुम चिन्ता न करो। यह लो पाँच मुहरें, बाजार जाओ और मेरेलिए एक अच्छी-सी जनानी पोशाक खरीद लाओ। उसे पहनकर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" मालिन पोशाक खरीद लाई ।

अगले दिन सबेरा होते ही मालिनने अच्छे-अच्छे फूल चुनकर इकट्ठे किये। आज राजकुमारने कलसे भी अच्छे गजरे तैयार किये। इन गजरोंको एक डलियामें सजाकर जनानी पोशाकमें राजकुमार मालिनके साथ जानेको तैयार हो गया। मालिन कुमारके इस नये रूपको देखकर बहुत खुश हुई। मालूम होता था मानों कोई अनुपम सुन्दरी खड़ी है।

ठीक समयपर मालिन उसे लेकर राजाकी बेटीके पास पहुँची। पिछले दिनसे भी अच्छे गजरे और उनके बनानेवालीको पाकर राजकुमारी बहुत प्रसन्न हुई! नई मालिनका हाथ अपने हाथमें लेकर कहा, "सखी, तेरे इन हाथोंकी चतुराई देखकर मैं दङ्ग रह गई हूँ।" इसके बाद बहुत देरतक आपसमें बातचीत होती रही। जब मालिन घर जाने लगी तो उसने बहनौतियासे कहा, "बेटी अब चलो, देर बहुत हो गई और घरपर सब काम पड़ा है।" राजकुमारीने बीचमें ही बोलकर कहा, "मालिन, तुम जाओ, तुम्हारी यह बहनौतिया आज मेरे ही पास रहेगी। इसकी बातें मुझे बहुत मीठी लगती हैं।"

मालिनने और कुछ नहीं कहा और चुपचाप घर चली गई।

रातको कुमारने अपना असली परिचय देदिया। राजकुमारी उससे प्रसन्न हुई; लेकिन जासूसोंके द्वारा इसकी खबर राजाके कानोंतक पहुँची। राजकुमार पकड़ा गया और इससे राजकुमारीको बड़ा दुख हुआ। वह अपना हृदय दे चुकी थी। हथकड़ी और बेड़ीमें सिपाहियोंने राजकुमारको राजाके सामने पेश किया। राजाने कहा कि, "देखो तुम मेरे महलमें चोरकी तरह घुसकर आये इसकी सज़ा मौत है।"

जल्लाद कुमारको शूलीपर चढ़ानेकेलिए लेकर चल दिये! जब वह शूलीके पास पहुँचा तो जल्लादने कहा, "यह तुम्हारा आखिरी

वक्त है। कुछ चाहते हो तो बताओ।" राजकुमारने कहा, "मौतके मुँह पर खड़े होकर अब क्या चाहूँ? तुम्हारी मर्जी हो जाय तो मैं राजकुमारीके बगीचेके खजूरके पेड़पर चढ़ना चाहूँगा।"

राजकुमारके ये शब्द सुनकर जल्लाद व सिपाही सभी हँसने लगे। बोले, "तुम भी कैसे आदमी हो। कोई बढ़िया-सी चीज़ माँगी होती। लेकिन.......तुम्हारी मर्जी।"

ऐसा कहकर वे लोग कुमारको खजूरके पास लेगये और हथकड़ी-बेड़ी खोलदी। सिपाही पेड़को घेरकर खड़े होगये और सावधानीसे पहरा देने लगे। कुमार खजूरपर चढ़ने लगा। चढ़ते-चढ़ते उनका शरीर बिल्कुल छिल गया। सिपाही लोग उसे मूर्ख समझकर हँस रहे थे। बड़ी कठिनाईसे राजकुमार वहाँ जा पहुँचा, जहाँ काठका घोड़ा रक्खा हुआ था। ज्योंही राजकुमार उसपर सवार हुआ घोड़ा आसमानमें मँडराने लगा।

सब लोग भौचक्के होकर रह गये। घोड़ेपर सवार होकर राजकुमार कुमारीके सतखँडेपर पहुँचा। वहाँ बैठी हुई कुमारी आँसू बहा रही थी। राजकुमारने कहा, "राजकुमारी, मेरे साथ चलो! देर न करो।" राजकुमारीकी कुछ समझमें न आया फिर भी वह चलनेकेलिए तैयार हो गई। चलते समय सोनेके पिंजड़ेमें बन्द उस तोतेको भी उसने ले लिया जिसे बचपनसे पाल-पोसकर बड़ा किया था। वे सबके-सब घोड़ेपर बैठे और देखते-देखते सब लोगोंकी आँखोंसे ओझल हो गये।"

दिनभर उड़ते-उड़ते शामको उन्हें एक टापू दिखाई दिया। चारों ओर समुन्दर लहरा रहा था। राजकुमारीने कहा, "कुमार, मैं तो अब थक गई हूँ। चलो, इस टापूपर थोड़ा आराम करलें।

कुमारीकी बात राजकुमारको पसन्द आई। घोड़ेको उसने तुरन्त नीचे उतारा और एक जगह डेरा डाल दिया। तोतेने घोड़ेकी रखवाली का भार लिया और राजाकी बेटी और राजकुमार निश्चिन्त होकर रातभर सोये। अगले दिन रातको तोतेने कहा, "आज मैं सोऊँगा। तुम रखवाली करना।" इतना कहकर तोता सो गया। राजकुमार आधीरात तक तो जागता रहा, परन्तु बादमें उसे भी नींद आ गई।

इस टापूपर कुछ चोर रहते थे। उन्होंने जब इस काठके घोड़ेको

हवामें उड़ते हुए देखा तो बड़े आश्चर्यमें पड़े और चुरानेकी फ़िक्र करने लगे! पहली रातको तो उन्हें मौका नहीं मिला, लेकिन आज जब उन्होंने देखा कि सब सोये हुए हैं वे चुपचाप आये और घोड़ेको उठाकर ले गये।

सवेरे जब राजकुमार और कुमारीकी नींद खुली तो उन्होंने देखा कि घोड़ा नहीं है। घोड़ा खो जानेसे उन्हें बहुत दुख हुआ। अब टापूसे निकलना उनकेलिए बड़ा मुश्किल था। राजकुमार और कुमारीको दुखी देखकर तोतेने कहा, "जो हुआ सो हुआ। आप चिन्ता न करें मेरे पिंजड़ेकी खिड़की खोल दीजिये। शायद यहाँसे निकल चलनेका मैं कोई उपाय निकाल सकूँ।" कुमारीने पिंजड़ेकी खिड़की खोल दी।

इधर-उधर उड़नेपर तोतेको एक बात सूझी। उसने घासके तिनके इकट्ठे करना शुरू किया। कुछ ही दिनोंमें दो पूले जमा होगये, उन्हें साड़ीकी किनारीसे मजबूतीके साथ बाँध दिया और उनपर बैठकर कुमार, कुमारी और तोता तीनों पार करने लगे। अभी जमीनका किनारा दूर ही था कि इतनेमें एक चूहा बहताहुआ इनके पाससे निकला। उसे घबराया हुआ देखकर राजकुमारको दया आ गई। उसने पकड़कर अपने पास बिठा लिया। थोड़ी देरमें जब चूहेकी घबराहट दूर हो गई और धूप लगी तो उसे एक शरारत सूझी। उसने पूलेके बाँध काट डाले। बाँधोंके कटते ही पूले अलग-अलग हो गये और कुमार और कुमारी समुद्रमें बह चले। तोता उड़ गया और बड़ी कठिनाईसे किनारे जा पहुँचा।

बहते-बहते राजकुमारी एक शहरके समीप किनारेपर जाकर लगी। उस समय वहाँका राजकुमार डोंगीमें बैठा हुआ मछलियोंका शिकार खेल रहा था, उसने इस अपूर्व सुन्दरीको देखा तो झट डोंगी उसकी ओर बढ़ादी और उसे निकालकर राजमहलमें ले गया। महलमें रहते-रहते कुमारीको कुछ दिन बीत गये। राजकुमार उससे प्रेम करने लगा। एक दिन राजकुमारने उसके सामने विवाहका प्रस्ताव रक्खा। राजकुमारीने कहा, "कुमार, मैंने बारह बरसतक पक्षी चुगानेका व्रत लिया है। ग्यारह बरस तो पूरे हो चुके हैं। एक बरस और बाकी रहा है। वह पूरा हुआ कि मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूँगी।" राजकुमारीके इस उत्तरको सुनकर राजकुमारको सन्तोष हुआ। वह एक-एक दिन

गिनकर काटने लगा।

इधर राजकुमारीने पत्ती चुगानेका काम प्रारम्भ किया। महलकी छतपर दाना डाल देती और रोज़ हज़ारों पत्ती चुगनेको आते। उसे आशा थी कि एक दिन उसका तोता भी जरूर आयेगा। दिन-पर-दिन पत्तियोंकी संख्या बढ़ती जाती थी। कुमारीका सोचना ठीक हुआ। एक दिन उसका तोता अचानक वहाँ आ पहुँचा। राजकुमारी छतपर दाना डालने गई तो तोतेने उसे पहचान लिया और उड़कर उसके हाथ पर आ बैठा। राजकुमारीने भी उसे पहचान लिया। दोनोंको बड़ी खुशी हुई।

थोड़ी देर बाद जब सब पत्ती तो दाना चुगकर उड़ गये, तोता वहीं रह गया। कुमारीने समुद्रमें बहनेके बादका सब हाल कह सुनाया। आँखोंमें आँसू भरकर बोली, "तुम्हारे मिल जानेसे मुझे बड़ा सहारा हो गया है। अब तुम किसी तरह राजकुमारका पता लगाओ। वह भी इस शहरके आस-पास ही कहीं होंगे।"

तोता मालिकको ढूँढ़ने निकला। वह गाँव-गाँव, घर-घर उड़ता फिरता था। कई महीने हो गये, परन्तु राजकुमारका पता नहीं चला। एक दिन तोता एक भड़भूजेके भाड़के पास पड़े दाने चुगनेकेलिए उतरा। देखता क्या है कि राजकुमार भाड़ झोंक रहा है। तोतेकी खुशीका ठिकाना नहीं रहा। वह धीरे-धीरे राजकुमारके पास पहुँचा और उसे दूर लेजाकर सब हाल कह सुनाया। राजकुमार तोतेको लेकर उसी शहरमें आ पहुँचा, जहाँ राजकुमारी क़ैद थी। अभी घोड़ेका पता लगाना बाक़ी था।

तोतेने कुमारीको राजकुमारके आनेकी खबर दी और कहा, "अब तुम फिकर मत करना, हम दोनों घोड़ेकी खोजमें जारहे हैं।"

खोजते-खोजते बहुत दिन हो गये लेकिन घोड़ेका कहीं पता न मिलता था। एक दिन तोतेको इसी शहरके एक जुलाहेके घर वह घोड़ा लकड़ियोंके ढेरपर रक्खा दिखाई दिया। उसने आकर राजकुमारको ख़बर दी। राजकुमारने एक कारीगरका रूप बनाया और इधर-उधर शहरमें चिल्लाने लगा कि "मैं दिल्ली शहरका कारीगर हूँ। टूटी-फूटी चीज़ें दुरुस्त कर सकता हूँ।" इस प्रकार चिल्लाता हुआ वह तोतेके बताये

हुए ठिकानेपर आया। चोर उस घोड़ेको चुरा तो लाये थे लेकिन चलानेकी तरकीब न जाननेके कारण लकड़ीके मोल इस जुलाहेको बेच गये थे। जुलाहेने उसकी सुन्दर बनावट देखकर अपने लड़केके खेलनेके लिए उसे खरीद लिया था। कारीगरकी आवाज़ सुनकर लड़केने कहा, "पिताजी, मेरा काठका घोड़ा सुधरवादो। उसकी एक टाँग कुछ टूट गई है।" जुलाहेने कारीगरको बुलाकर घोड़ेको दिखाया और सुधारनेकेलिए कहा। कुछ समय तक तो राजकुमार उसके पुरजे देखनेका बहाना करता रहा बादमें उसने कहा, "लो, घोड़ा दुरुस्त हो गया।" जुलाहेने कहा कि तुम्हीं बैठकर दिखलाओ। जिससे मैंने यह घोड़ा खरीदा था, वह कहता था कि यह हवामें उड़ता है।

राजकुमारतो यह चाहता ही था। ज्योंही वह घोड़ेपर बैठा कि घोड़ा हवासे बातें करने लगा। जुलाहा चिल्लाने लगा, "चोर! चोर! मेरा घोड़ा लेकर चोर भागा जाता है।"

इस बीच राजकुमार महलकी छतपर कुमारीके पास जा पहुँचा, तोता भी वहाँ पहुँच गया था और तीनों प्राणी उस घोड़ेपर बैठ कर चल दिये।

घोड़ा उड़ता-उड़ता राजकुमारके पिताके महलमें आकर उतरा। बहुत समयके बाद पुत्रको आया हुआ देखकर राजाको बड़ा आनन्द हुआ और कुछ दिन बाद राजकुमारीके साथ उसका विवाह बड़ी धूमधामके साथ कर दिया गया।

बढ़ईके कुँवरकी कारीगरीसे राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसे बुलाकर राजाने कहा, "मैं तुम्हारे हुनरको देखकर बहुत खुश हूँ। बोलो, क्या इनाम चाहते हो?" बढ़ईके कुँवरने कहा, "महाराज, मैं क्या कहूँ!"

राजाने अपनी बेटीका विवाह उसके साथ कर दिया और सैकड़ों हाथी घोड़े, दास-दासी और धन दहेजमें दिया।

कुछ समय बाद बढ़ईका कुँवर राजकुमारी और बढ़ईकी बेटीको लेकर अपने घर लौटा। रास्तेमें वही मैदान पड़ा जहाँ बैठकर वह महल बनानेके सपने देखा करता था। वहाँपर डेरा डाल दिया गया और महल बननेकी तैयारियाँ होने लगीं।

थोड़े दिनमें वहाँ बड़े-बड़े महल बन गये। एक ओर हाथीखाना था, एक ओर घुड़साल और बगीचा। यह सब तैयार होगये तो कुँवरने पालकी भेजकर अपने माँ-बाप और भाईको बुलाया। बेचारे डरते-डरते आये। लेकिन ज्योंही उन्होंने अपने कुँवरको सामने देखा तो उनके हर्षका ठिकाना न रहा। वर्षों बाद वे मिले थे।

उस दिनसे सब लोग हिल-मिलकर सुखपूर्वक रहने लगे।

१६

काग बिड़ारिन

किसी नगरमें एक राजा रहता था। उसके सात रानियाँ थीं। राजा सब प्रकार सुखी था, धर्म और नीतिके साथ प्रजाका पालन करता था। लेकिन राजाके कोई सन्तान न थी। इस कारण वह सदा दुखी रहता था। आखिर पण्डितोंकी सलाहसे राजाने एक और विवाह किया। नई रानी बड़ी भाग्यवती थी। पण्डितोंने बतलाया कि इसके गर्भसे सोनेकी-सी देह और रूपे-जैसे केशवाले दो प्रतापी राजकुमार और एक कन्या उत्पन्न होगी।

कुछ समय बाद नई रानी गर्भवती हुई। यह शुभ समाचार शहर भरमें फैल गया। प्रजाको बड़ा आनन्द हुआ। वह सोचने लगी कि अब हमारे राजाको पुत्र होगा जो बड़ा होनेपर हमारी रक्षा और पालन करेगा। राजाको भी बड़ा आनन्द हुआ। वह उस शुभ समयके आनेकी बाट देखने लगा। राजा नई रानीको बहुत प्यार करता था। उसकी सब इच्छाएँ पूरी करने और उसे हर प्रकारसे सुखी रखनेके लिए वह सदा प्रयत्न किया करता था। सातों रानियाँ नई रानीका इतना दुलार और आदर देखकर मन-ही-मन उससे जला करती थीं। जबसे उसके गर्भ रहनेका समाचार सुना था तबसे तो उनके मनमें उसके प्रति डाह उत्पन्न हो गई थी। नई रानीके सन्तान उत्पन्न होना ही वे अपने लिये एक बहुत बड़ा संकट समझती थीं। इस आपत्तिसे बचनेकेलिये सातों रानियाँ मिलकर सदैव उपाय सोचा करती थीं।

एक दिन राजा शिकार खेलने बनमें गया। उसी समय रानीके बच्चा पैदा होनेका समय आया। पेट दर्द करने लगा। उसने दूसरी रानियोंको

खबर दी। समाचार पाकर सातों रानियाँ आगईं। उन्हें अपनी कुटिलता पूर्ण करनेका अच्छा अवसर मिल गया। उन्होंने नई रानीसे कहा, "तुम अपना सिर इस कुठियाके मुँहमें डालकर ऊपरसे अच्छी तरह कपड़ा लपेट लो। बच्चा पैदा होनेके समय ऐसाही किया जाता है।" नई रानी बिलकुल अनजान और भोली थी। उसे इस विषयका कुछ भी ज्ञान न था। उसने रानियोंकी आज्ञाका तत्काल पालन किया। कुछ समय पश्चात् रानीके सोने-सी देह और रूपे-जैसे केशवाला एक पुत्र पैदा हुआ। उन रानियोंने उस बच्चेको एक काठकी पेटीमें बन्दकर दासीके द्वारा नदीमें फिकवा दिया और उस बच्चेकी जगह ईंट-पत्थर रखदिये। इतना कर चुकनेपर उन्होंने नई रानीको सिर निकालनेके लिए कहा। नई रानीने कुठियासे सिर निकालकर देखा कि रक्तसे लिपटे हुए कुछ ईंट-पत्थरके टुकड़े पड़े हुए हैं। सातों रानियोंने कहा, "तू बड़ी कुलच्छिनी है; तेरे ईंट-पत्थर हुए हैं।" और चली गईं। नई रानीने उनके कहनेपर विश्वास कर लिया और अपने भाग्यको धिक्कारने लगी। कुछ समयके बाद जब राजा शिकार खेलकर वापिस आये और उन्हें नई रानीके ईंट-पत्थर होनेका समाचार मिला, तब बहुत दुःख हुआ। उनकी सारी आशाएँ मुरझा गईं।

कुछ समयके बाद रानी फिर गर्भवती हुई। धीरे-धीरे प्रसवका दिन समीप आने लगा। राजाको पण्डितोंकी बातोंपर विश्वास था। वह सोचता था कि पहली बार मेरे दुर्भाग्यसे बालक उत्पन्न नहीं हुआ तो इस बार अवश्य होगा। राजाने निश्चय करलिया था कि इस बार वह प्रसवके समय घर ही रहेगा। इसी प्रतीक्षामें राजा बहुत दिन बाहर नहीं गया। एक दिन अपना मन बहलानेकेलिये शिकार खेलने वह जंगलमें चला गया। उसने सोचा कि शीघ्रही लौट आऊँगा। लेकिन ज्योंही राजाने घर छोड़ा कि रानीको प्रवस वेदना होने लगी। इस बार भी उसके एक सोनेनेकी-सी देह और रूपे जैसे केशवाला बालक उत्पन्न हुआ। सातों रानियोंने पहलेकीही तरह बालकको नदीमें फिकवा दिया और उसकी जगह ईंट-पत्थर रखदिये। थोड़ी देरमें सारे शहरमें बात फैलगई कि रानीके ईंट-पत्थर उत्पन्न हुए हैं। इस अद्भुत समाचारको सुनकर कोई-कोई तो आश्चर्य प्रकट करने लगे और कोई रानीको कुलच्छिनी

कहकर उसकी निन्दा करने लगे। शिकारसे लौटनेपर राजाको भी यह समाचार मालूम हुआ। राजा अपने करमको दोष देकर पछताने लगा।

कुछ दिनों बाद रानीको तीसरी बार गर्भ रहा। इस बार राजाने सोचा कि कुछ भी हो इस बार अपनी आँखोंसे प्रसव देखना चाहिए। राजाने नई रानीके घरमें एक घण्टा बँधवा दिया और रानीसे कह दिया कि जब तुमको वेदना प्रारम्भ हो तब इस घण्टेको बजा देना। मैं कहीं भी होऊँ, तुरन्त दौड़कर आजाऊँगा। रानीने कहा, "बहुत अच्छा ऐसाही करूँगी।

राजा निश्चिन्त होकर राज्य-कार्यमें मग्न होगया। एक दिन रानीने सोचा, "राजा कह तो गये हैं कि घण्टा बजते ही तुरन्त दौड़ आऊँगा, परन्तु इसकी परीक्षा तो कर देखनी चाहिये कि घण्टा बजनेपर राजा आते हैं कि नहीं।" यह सोच उसने घण्टा बजा दिया। उस समय राजा शिकार खेलनेके लिये मचानपर बैठे हुये थे। हाँका हो रहा था और शीघ्र शेरके आनेकी सम्भावना थी कि इतनेमें घण्टेकी आवाज़ सुनाई दी। राजा मचानपरसे नीचे उतरे और घोड़ेपर बैठ महलकी ओर भागे। राजाने देखा कि रानी तो आरामसे बैठी हैं। उसने हँसकर कहा, "प्रभु, क्षमा कीजिये। दासीसे अपराध हुआ। मैंने परीक्षाकेलिए इस घण्टेको बजाया था। अब बीचमें कभी न बजाऊँगी। आपको व्यर्थ कष्ट हुआ।"

राजा चला गया। धीरे-धीरे यह घण्टेवाली बात सातों रानियोंके कानोंतक पहुँची। इस बार उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। वे आपसमें कहने लगीं, "बहिन, इस बार प्रसवके समय राजा यहाँ उपस्थित रहे तो अपनी दाल न गलेगी। आखिर उन्होंने सलाह करके यह निश्चय किया कि बारम्बार घण्टेको बजा बजाकर राजाके मनमें घण्टेके प्रति अविश्वास उत्पन्न कर देना चाहिये। बस फिर क्या था। उस दिनसे जब चाहे तब घण्टा बज उठता था और बेचारा राजा अपना कामकाज छोड़कर दौड़ा आता। देखता कि कहीं भी कुछ नहीं है और राजा निराश लौट जाता। इस प्रकार रानियोंने घण्टेको बारम्बार बजाकर उसके प्रति राजाके मनमें सन्देह पैदा करदिया। अब जब घण्टा बजता तो कभी तो राजा आजाता और कभी यह सोचकर कि रानीने झूठ-मूठ बजाया होगा, नहीं आता था। रानियोंका षड़यन्त्र सफल होगया।

कुछ दिनों पश्चात् नई रानीको प्रसव वेदना हुई। उसने राजाके आज्ञानुसार घण्टा बजाया। उस दिन राजा किसी विशेष कार्यमें लगा हुआ था। उसने सोचा कि नित्यके समान आजका यह घण्टा भी झूठ-मूठ ही बजाया गया होगा। इस कारण वह नहीं आया। इधर रानीको सोनेकीसी देह और रूपे जैसे केशवाली एक रूपवती कन्या उत्पन्न हुई सातों रानियोंने इस कन्याको भी फिकवा दिया और उसकी जगह ईंट-पत्थर रख दिये। जब दूसरे दिन राजा आये और उन्हें मालूम हुआ कि नई रानीके पहलेके ही समान फिर ईंट-पत्थर हुए हैं तब उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। इसी समय सातों रानियाँ आ पहुँची। उन्होंने राजासे कहा, "महाराज नई रानी तो बड़ी सुलच्छिनी निकलीं। देखो न, उन्होंने सोने-कीसी देह और रूपे जैसे केशवाले बच्चोंसे घर भरदिया। आप भी पंडितोंकी बातोंमें आकर न जाने कहाँकी डाइन ले आये हैं। राजाके ईंट-पत्थर हों, यह कितनी बदनामीकी बात है! शहरमें उसके कारण आपकी भारी बदनामी होरही है। इससे तो वह बाँझ होती तो भली थी। एक पण्डित कह रहे थे कि यह बड़ी कुलच्छिनी है! यदि यह महलमें रहेगी तो कुछ दिनोंमें राजपाट सब स्वाहा हो जायगा।" राजाने रानियोंकी बातपर विश्वास कर नई रानीको फटे-पुराने वस्त्र पहना काग-बिड़ारिन बना दिया। अब वह सातों रानियोंकी सेवा करने लगी। फुरसतके समय हाथमें लाठी लेकर महलके ऊपर आनेवाले कौओंको भगाया करती थी। नई रानी अब 'काग-बिड़ारिन' के नामसे पुकारी जाने लगी।

इधर सौभाग्यसे वे तीनों भाई बहिन जो अपनी सौतेली माताओं द्वारा नदीमें फिकवा दिये गये थे उस नदीके तीरपर रहनेवाले एक साधुको एक-एक करके मिल गये थे। साधुने उनकी सोनेकीसी देह और रूपे जैसे केश देखकर बड़े यत्नके साथ उन्हें अपने आश्रममें रख लिया और उनका पालन-पोषण करने लगा। धीरे धीरे तीनों शिशु दिन प्रति दिन बढ़ने लगे। उम्रके साथ उनका रूप भी बढ़ता जाता था। जब वे बड़े हुए तब साधुने उन्हें नाना प्रकारकी विद्यायें सिखाईं। साधुका उनपर स्नेह बहुत बढ़ गया।

अपनी मृत्युके पहले एक दिन उसने इन सबको बुलाया और कहा, "प्यारे पुत्रो, मेरा अन्त समय समीप आगया है। अब मैं दो घड़ीमें

इस संसारको छोड़कर चला जाऊँगा। तुम इसकेलिए दुख मत करना। इस संसारसे सभीको एक दिन जाना पड़ता है। मैं तुम्हें अपनी माला दिये जाता हूँ। इसके प्रतापसे जब तुम जिस वस्तुकी इच्छा करोगे, प्राप्त हो जाया करेगी।" ऐसा कहकर उसने अपने गलेकी माला उतारकर उन्हें देदी। कुछ समय बाद साधुकी मृत्यु होगई।

साधुके मर जानेपर इन तीनों बहिन-भाइयोंने किसी नगरमें जा बसनेकी सलाह की। वे तीनों वहाँसे चल पड़े। कई दिन तक चलते-चलते एक दिन वह अपने पिताकी ही राजधानीमें पहुँचे। परन्तु उन्हें इसकी कुछ खबर ही न थी और न वे अपने पिताका नाम-धाम ही जानते थे। नगरकी सुन्दरता देखकर उन्होंने इसी नगरमें रहनेका निश्चय किया। उन्होंने नगरके बाहर मैदानमें एक महल बनानेका विचार किया। रात-भर वे उसी मैदानमें पड़े रहे। अगले दिन चार बजे सबेरे उठकर बड़े भाईने स्नान किया और साधुकी दी हुई माला हाथमें लेकर प्रार्थना की, "हे माला, यदि तू और तेरे साधुका तपोबल सच्चा हो तो इस जगह सात खंडका सोनेका महल बन जाय!" कहनेकी देर थी कि उसी समय वहाँ महल बनकर तैयार हो गया। सबेरा होनेपर नगरके लोगोंने आश्चर्य सहित देखा कि पूर्व दिशाकी ओर झिलमिल करता हुआ एक बड़ा भारी सोनेका भवन खड़ा है। जब उन्होंने महलमें रहनेवाले सोनेकी-सी देह और रूपे जैसे केशवाले दो राजकुमार और एक राजकन्याको देखा तब उनका आश्चर्य दूना बढ़ गया। सभी कहने लगे कि ऐसा रूप और ऐसी सुन्दरता तो हमने अपने जीवनमें कभी भी नहीं देखी।

सारे शहरमें इस बातकी चर्चा थी। होते-होते यह चर्चा राज-महल तक पहुँची। इस समाचारको सुनकर सातों रानियोंको बड़ा दुख हुआ। वे आपसमें सलाह करने लगी कि कहीं ये नई रानीके पुत्र-कन्या न हों, जिनको कि हमने नदीमें फिकवा दिया था, क्योंकि सोनेकी-सी देह और रूपे-जैसे केश उनके ही थे। दो पुत्र और एक कन्या, ठीक तीन ही तो थे। यदि ये नई रानीके पुत्र हुए और कुछ दिन तक यहाँ रहे तो हमारी पाप कहानी राजाके सामने आये बिना न रहेगी और हम सब जीते जी दीवालमें चुनवादी जायेंगी।

ऐसा सोचकर उन्होंने दासीकेद्वारा शहरकी दो चतुर दूतियोंको

बुलवाया। दूतियोंके आनेपर रानियोंने पूछा, "पहले यह बताओ कि तुममें क्या-क्या हुनर है और तुम क्या क्या कर सकती हो।"

पहलीने कहा, "मैं बादलमें छेद कर सकती हूँ।"

दूसरी बोली, "मैं उस छेदमें थिगरा लगा सकती हूँ।"

रानियोंने यह सोचकर कि छेद करनेसे थिगरा लगानेका काम अधिक कठिन और चतुराईका है, दूसरीको रखलिया। बहुत-सा धन देकर पहले उसे सन्तुष्ट किया। फिर एक रानीने कहा कि "देखो, नगरके बाहर सोनेके सतखण्डे महलमें जो तीन भाई-बहन रहते हैं, उन्हें किसी उपायसे मार डालो। तुम्हें मुँहमाँगा इनाम मिलेगा। तुम्हें इसी कामकेलिए बुलाया गया है; परन्तु खबरदार, यह बात किसीसे कहना नहीं!" मछली फँसती हुई देखकर दूती बहुत प्रसन्न हुई और बहुत-स धन लेकर उन तीनोंको हिकमतसे मरवा डालनेका वचन देकर घर चलीगई।

इधर राजा अपने घोड़ेपर सवार होकर नित्य शिकार खेलनेके लिए उसी रास्तेसे निकला करता था, जहाँ इन परदेशी राजकुमारोंने सोनेका सतखंडा महल बनाया था। इन तीनों बहिन-भाइयोंको देखकर राजाका जी चाहता था कि उन्हें हृदयसे लगाले, परन्तु पहचान न होनेके कारण राजा उनसे खुलकर मिल नहीं सकता था। राजाको अपनी मर्यादा का भी खयाल था, इस कारण वह मन मारकर सीधा चला जाता था।

कुछ दिनोंके बाद एक दिन मौका पाकर वह दूती सोनेके महल में बेटीके पास पहुँची। बेटीको देखते ही उसने दूरसे रोना-धोना शुरू किया और पास जाकर उसके गलेसे लगकर खूब रोई। उसने कहा, "बेटी मैं तेरी मौसी हूँ। बरसों बाद आज तुझे मिली हूँ।" बेटीने कहा, "अच्छा मौसी, अब तुम यहीं रहो। मुझे अकेले बुरा लगता है।"

बात बन गई और दूती वहीं रहने लगी। वह रात-दिन इसी विचारमें निमग्न रहा करती थी कि मैं किस प्रकार अपना काम पूरा करूँ। उसने सोचा यदि ये रससे मरें तो विष क्यों दूँ? एक दिन उसे एक उपाय सूझ पड़ा। उसने बेटीसे कहा, "बेटी! देखो तुम्हारा यह ऐसा अच्छा सोनेका महल है। इसमें यह मामूली बत्तियोंका उजेला शोभा नहीं देता। सोनेके महलोंमें तो मणिका उजेला होना चाहिए।"

बेटीने कहा, "मौसी, मणि तो हम लोगोंके पास है नहीं।"

दूती बोली, "मणि ऐसी क्या बड़ी चीज है। एक दिन तुम अपने किसी भाईको इधर कजली बनमें भेजदो। वहाँ बासुकी नागके पास सूरजकी तरह चमकनेवाली मणि है। वे नागको मारकर मणि ले आवेंगे। तुम्हारे कहनेकी ही देर है: मणि आजायगी।"

अगले दिन बेटीने बड़े भाईसे मणि ले आनेकेलिए कहा और मौसीका बताया हुआ पता भी बतला दिया। बहिनका आग्रह देखकर बड़ा भाई हथियार बाँध मणि लेनेको निकला। दूतीने सोचा भगवानकी कृपा हुई तो एक भाईका त काम तमाम हुआ समझो। दूसरे भाईकेलिए कोई दूसरी युक्ति ढूँढ़ निकालूँगी।

इधर राजकुमार दिनभर रास्ता चलते-चलते शामको कजरी वन में पहुचा। पता लगानेसे मालूम हुआ कि वासुकी नाग रातको अमुक स्थानपर आता है और मणिको एक ऊँची जगहपर रखकर उसके प्रकाश में चारों ओर एक योजनतक शिकारकी खोजमें घूमता है। यह जानकर राजकुमार नियत स्थानपर पहुँचा और एक वृक्षपर चढ़ गया। जब आधी रात हुई तब वासुकी नाग अपने मणिके प्रकाशसे दसों दिशाओंको जगमगाता हुआ आया और मणिको एक जगहपर रखकर भोजनकी खोजमें दूर निकल गया। इधर अवसर जानकर राजकुमारने वृक्षपरसे अपनी ढाल ऐसी चतुराईके साथ फेंकी कि वह मणिपर जा गिरी। मणिके ढँक जानेसे चारों ओर अन्धकार होगया। वासुकी अन्धेरा देखकर तुरन्त बड़े क्रोधसे वापस लौटा और ढालपर क्रोधके आवेशमें ज़ोर-ज़ोरसे फन पटकने लगा। इसी समय राजकुमारने एक तीर मारकर उसको समाप्त करदिया। इस प्रकार वासुकीको मारकर राजकुमार मणि लेआया। अब सोनेके सतखण्डे महलपर मणिका प्रकाश होने लगा। दूतीकी यह युक्ति व्यर्थ गयी। तब वह दूसरी युक्ति सोचने लगी।

कुछ दिनोंके बाद दूतीने बेटीसे कहा, "देखो बेटी, तुम्हारे ऐसे अच्छे सोनेके तो महल हैं और उनमें कभी फीका न पड़नेवाला मणिका उजेला भी रहता है, लेकिन तुम्हारी एक भी भौजाई न होनेसे महल सूना-ही-सूना दिखाई देता है। इस महलमें तो ऐसी बहू आनी चाहिए जिसके हँसनेमें फूल और रोनेमें मोती झरते हों। तभी इस महलकी शोभा होगी।"

बेटीने कहा, "सच पूछो तो मुझे भी अब भौजाईकी ज़रूरत मालूम होती है। पर तुम बताओ तो सही कि ऐसी भौजाई कहाँ मिल सकती है, जिसके हँसनेमें फूल और रोनेमें मोती झरते हों ?"

दूतीने कहा, "राजा इन्द्रके दरबारमें बहुत-सी परियाँ रहती हैं, उन सबमें हँसनपरी सबसे सुन्दर है। उसके हँसनेमें फूल और रोनेमें मोती झरते हैं। ये सब परियाँ चाँदनी रातमें स्नान करनेकेलिए मानसरोवरपर आती हैं। तुम्हारे भाईमें अगर बल और चतुराई हो तो वह किसी युक्तिसे हँसनपरीको यहाँ ले आ सकते हैं।"

दूसरे दिन बेटीने बड़े भाईसे कहा, "भैया, इस महलमें अकेले रहते हुए मुझे बहुत दिन होगये। मुझे तो अपनी किसी सहेलीके बिना बुरा लगता है, इसलिए तुम मेरेलिए एक भौजाई ले आओ। मौसीने बतलाया है कि हँसन-परीके हँसनेमें फूल और रोनेमें मोती झरते हैं। जिस तरह हो, तुम उसीको ले आओ।" ऐसा कहकर उसने हँसन-परीके मिलनेका ठिकाना भी बतला दिया। बहिनका आग्रह देख अगले दिन बड़े प्रातःकाल घोड़ेपर सवार होकर बड़ा भाई हिमालय पर्वतकी ओर रवाना हुआ। चलते-चलते वह हिमालय पर्वतपर पहुँचा। वहाँ उसे एक साधूका आश्रम दिखाई दिया। राजकुमारने घोड़ेको एक पेड़के नीचे बाँध दिया और आप साधूके समीप जाकर उसकी सेवा करने लगा। सवेरा होते ही वह नित्य आश्रमको भली-भाँति झाड़कर साफ करदेता, जंगलसे सूखी लकड़ियाँ लाकर धूनीको चेता देता और हमेशा साधूके समीप बैठा रहता था। भूख लगती तब वह वनके फल-मूल लाकर खा लेता। इस प्रकार सेवा करते-करते उसे छः माह व्यतीत होगए। एक दिन साधुकी समाधि खुली। अपने योग-बलसे उसने राजकुमारकी सेवाका हाल जान लिया और प्रसन्न होकर कहा, "बेटा, तुमने मेरी बहुत सेवाकी है, मैं तुमपर बहुत प्रसन्न हूँ। जो चाहो सो माँग लो।"

राजकुमारने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज, मुझे राजा इन्द्रके दरबारकी हँसनपरी चाहिए।"

साधुने कहा, "बेटा, तूने चीज़ तो बहुत कठिन मांगी है। परन्तु मैंने वचन देदिया है, इसलिए उसके मिलनेका उपाय तुझे बतलाये देता हूँ। वह तुझे अवश्य मिल जायगी। मेरे आश्रमसे चार योजनकी

दूरीपर मानसरोवरमें चाँदनी रातके समय इन्द्रकी परियाँ स्नान करने आती हैं। वे अपने वस्त्र किनारेपर रखकर नग्न होकर स्नान किया करती हैं। तुम वहाँ जाकर किसी उपायसे उनके वस्त्र लेकर यहाँ भाग आना। पीछे लौटकर मत देखना और न परियोंके किसी लोभमें आना। इतना तुम करलोगे तो हँसनपरी तुम्हें मिल जायगी।" साधुके कहे अनुसार राजकुमार चार बजे रातको मानसरोवरपर पहुँचा। देखा कपड़े किनारेपर रखकर परियाँ स्नान कररही हैं। राजकुमारने अवसर देखकर उनके सब कपड़े इकट्ठे करलिये और उन्हें पोटलीमें लपेटकर साधुकी कुटीकी ओर भागना शुरू करदिया। इधर जब परियोंने देखा कि एक मनुष्य हमारे वस्त्र लेकर भागा जारहा है तो वे 'चोर चोर' कहकर चिल्लाईं और उसके पीछे दौड़ीं। अन्तमें उन्होंने अपनी मायाके बलसे रास्तेमें एक सुन्दर बाग़ तैयार करदिया। नाना प्रकारके फूल उसमें खिलगये। पक्षी किलोलें करने लगे। ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी और गाने-बजानेका मधुर स्वर सुनाई देने लगा। यह सब विचित्रता देखकर राजकुमार भौचक्का-सा होगया और उनकी मायामें फँसकर उस बग़ीचेको देखने लगा। इतनेमें परियाँ आ पहुँची और उन्होंने अपने कपड़े छीन लिये। राजकुमार उसी समय जलकर भस्म होगया।

इधर दोपहर होजानेपर भी जब राजकुमार नहीं लौटा तब साधुको सन्देह हुआ कि वह परियोंके प्रलोभनमें फँसकर मारा गया। साधुने उसी समय अपनी खड़ाऊँ पहनी और हाथमें कमंडल लेकर मान-सरोवरकी ओर प्रस्थान किया। कुछ दूर जानेपर देखा कि राजकुमारकी भस्म पड़ी है। उन्होंने कमंडलसे थोड़ा जल लेकर भस्मपर छिड़का। राजकुमार तुरन्त जिन्दा होकर उठ खड़ा हुआ। दोनों आश्रमको आये। रातको साधुने राजकुमारको समझाया कि जो तुम्हें हँसनपरीकी आवश्य-कता है तो तुम परियोंके वस्त्र लेकर तुरन्त ही मेरी कुटीमें भाग आना। पीछे लौटकर न देखना और न परियोंके किसी तरहके प्रलोभनमें आना। राजकुमारने कहा, "आज ऐसा ही करूँगा" और उसने मान-सरोवरकी ओर प्रस्थान किया। आज राजकुमारने साधुके कहनेके अनु-सार ही काम किया। वह कपड़े लेकर भागा। परियोंने बहुत उपाय किये, परन्तु उनकी एक न चली। राजकुमार भागता हुआ आया और

साधुकी कुटियामें छिप गया। पीछेसे परियाँ भी दौड़ी आई और साधुसे कहने लगीं, "महाराज, आपकी कुटियामें चोर है। हमारे कपड़े लेकर भाग आया है। उन्हें वापिस दिला दीजिये।"

साधुने कहा, "तुम चोरकी एक इच्छा पूरी करनेका वचन दो तो मैं तुम्हारे कपड़े वापिस दिला सकता हूँ।"

अन्तमें बहुत कुछ कहने-सुननेपर लाचार होकर परियोंको साधुकी बात माननी पड़ी। साधुने राजकुमारको बुलाकर कहा, "तुम्हारी जो कुछ इच्छा हो इन परियोंसे कहो और उसे पूरा करनेकेलिए इनसे वचन लेलो।" राजकुमारने कहा, "तुम सबमेंसे एक परीको, जिसका नाम हँसनपरी है, मैं चाहता हूँ। मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगा।"

परियोंने कहा, "आपकी बात हमको मँजूर है। कल सबेरे हम शृँगार करके आवेंगी। उस समय तुम जिसे चाहो हाथसे पकड़ लेना। वह आपके साथ खुशीसे चली जावेगी।" इतना कहके परियाँ अपने वस्त्र लेकर चली गईं।

इधर राजकुमारसे साधुने कहा, "बेटा, जब कल सब परियाँ सज-धजकर आवें तब तुझे जो परी सबसे कुरूप दिखाई दे और फटे-पुराने कपड़े पहने हो, उसीका हाथ पकड़ लेना। वही हँसनपरी होगी।"

दूसरे दिन प्रातःकाल बहुतसी परियाँ बढ़िया-बढ़िया शृँगार करके साधुकी कुटियाके सामने आ खड़ी हुईं और उन्होंने राजकुमारसे कहा, "तुम हम सबमेंसे जिसे चाहते हो उसका हाथ पकड़लो।" राजकुमारने साधुकी बात याद करके सुन्दर-सुन्दर परियोंको छोड़ एक काली-कुरूपा परीका हाथ पकड़ लिया। बाकी सब परियाँ चली गईं। हँसनपरी अब अपने असल रूपमें होगई। उसे देखकर राजकुमार बहुत खुश हुआ। राजकुमार साधुसे आज्ञा लेकर और हँसनपरीको साथ घोड़ेपर बिठाकर अपने घरकी ओर रवाना हुआ। जब बेटीने देखा कि भैया हँसनपरीको लेआये हैं तब उसकी खुशीका ठिकाना न रहा। बेटीके दिन अब चैनसे कटने लगे। ननद-भौजाई प्रेमसे रहने लगीं। जिस समय हँसनपरी हँसती थी, फूल बरसते थे और वह जब रोती थी तब मोती झरते थे। हँसनपरीके आनेसे महलमें मानो 'सोनेमें सुगन्ध' वाली कहावत पूरी होगई।

दूतीने देखा कि उसकी एकके बाद एक सभी युक्तियाँ बेकाम जा रहीं हैं तो वह मनमें बहुत दुखी हुई। इस बार उसने खीजकर उन्हें ऐसी जगह भेजनेका विचार किया जहाँसे हजार उपाय करनेपर भी वे जीते न लौटें। मौक़ा देखकर एक दिन दूतीने बेटीसे कहा, "प्यारी बिटिया, तू मेरी बात मानती है, इसलिए तू मुझे बहुत प्यारी लगती है। तेरे मनकी एक भौजाई तो आगई, परन्तु अब क्या दूसरी न बुलायेगी? दूसरे भाईको क्या कुँआरा ही रखना चाहती है? मैं तुझे एक ऐसी सुन्दर लड़की बतलाती हूँ जिसके समान रूप और गुणमें इस समय संसारमें एक भी स्त्री नहीं है। परन्तु उसका बुलाना तेरे हाथमें है।"

बेटीने कहा, "मौसी, तुम्हारी दया रही तो दूसरी भौजाई भी मिल जायगी। मैं आज ही भाईसे कहूँगी।"

बेटीने उस दिन भोजनके समय पद्मिनीके रूप और गुणकी प्रशंसा करके भाईसे उसे शीघ्र लेआनेकेलिये आग्रह किया। दोनों भाई अपनी बहिनकी बात कभी टालते नहीं थे। बड़े भाईने कहा, "सात समुन्दर पार सिंहल-द्वीपमें जाना आसान काम नहीं है। इसलिए छोटे भाईको न भेज मैं ही उसे लेने जाता हूँ।" ऐसा कहकर और एक रोज़ घोड़ेपर सवार होकर बड़ा भाई चल दिया। अनेक देश, नदी और पहाड़ पार करता हुआ राजकुमार सात-समुन्दर पार सिंहलद्वीपमें जा पहुँचा। वहाँ पहुँचनेपर मालूम हुआ कि पद्मिनी सतखण्डे महलपर बैठकर चर्खा कातती है। उसका प्रण है कि जो मनुष्य घोड़ेकी एक उड़ानमें उसके सतखण्डेपर पहुँचकर चर्खेके सूतको तोड़ देगा, उसीके साथ वह विवाह करेगी। परन्तु इस काममें एक बड़ी जोखिम थी। जो मनुष्य इस कार्यमें सफल नहीं होता, वह तुरन्त ही पत्थर होजाता। पद्मिनीके सतखण्डेके नीचे हजारों पत्थरकी मूर्तियाँ थ। राजकुमारने सोचा कि कुछ भी हो, परन्तु पद्मिनीको तो ले ही चलना है। उसने तुरन्त घोड़ेपर सवार होकर एक एड़ लगाई। घोड़ेने ऊपरको उड़ान भरी, परन्तु वह चर्खेके सूतको छूते-छूते रह गया और घोड़ा समेत ज्योंही नीचे आया, पत्थरका होगया।

इधर धीरे-धीरे एक साल बीतगया। न राजकुमार ही आया और न पद्मिनी। बेटी निरन्तर चिंतामें रहने लगी। ती यह सोचकर मन-ही-मन खुश होने लगी कि हो न हो इस बार उसका मन्त्र काम कर

गया। बड़े कुँवर तो मालूम होता है यमराजके पाहुने बनगये, अब छोटे कुँवरको भी शीघ्रही वहीं पहुँचाना चाहिए। एक दिन बेटीको उदास देखकर दूतीने कहा, "बेटी, बहुत दिन होगये बड़े कुँवर नहीं लौटे। उनकी खोज-खबरकेलिए छोटे कुँवरको क्यों नहीं भेजती हो?"

बेटीने छोटे भाईको सिंहलद्वीप जाकर बड़े भाईकी खबर ले आनेकेलिए भेजा। कुछ दिन बाद अनेक देश, पर्वत, नदी और सात समुद्रोंको पार करता हुआ वह सिंहलद्वीप जा पहुँचा। वहाँ पद्मिनीका सब हाल सुना। सोचने लगा कि जिसे पानेकी आशामें हजारोंने अपने प्राण खोये हैं, वह न जाने कैसी सुन्दरी होगी। उसका जी भी पद्मिनीको पानेकेलिए मचल गया। उसने सोचा कि मेरा भाई तो पत्थरका हो ही गया है। मैं या तो पद्मिनीको पाकर उसका उद्धार करूँगा या भाईकी तरह मैं भी पत्थरका होजाऊँगा। यह सोचकर उसने वहीं डेरा डाल दिया और घोड़ेकी चराई शुरू की। नित्य दूध-जलेबी उसे मिलने लगीं। चार नौकर उसकी टहल करनेकेलिए रक्खे गये। धीरे-धीरे छः महीने हो गये। घोड़ा खा-पीकर तैयार होगया। एक दिन शुभ मुहूर्तमें छोटे कुमारने महलके नीचे पहुँचकर घोड़ेको कसकर एक ऐड़ जमाई। घोड़ा ऊपरको उछला और पद्मिनीके सतखण्डेसे भी ऊपर चलागया। लौटती बार कुमारने चर्खेके सूतको पैरसे तोड़ दिया।

पद्मिनीका प्रण पूरा हुआ। राज-परिवारके लोग खुशी मनाने लगे। परन्तु राजकुमार पद्मिनीकी कुछ परवाह न कर घोड़ेपर सवार हो जाने लगा। पद्मिनी अपने सतखण्डेसे यह सब हाल देखरही थी। उसने राजकुमारको लौटानेकेलिए दूत भेजे। राजकुमारने कहा, "मैं ऐसी हत्यारिनके साथ विवाह नहीं करता, जिसने हज़ारों युवकोंको पत्थर बनाकर सदाकेलिए सुलादिया है। यदि तुम्हारी राजकुमारी इन सबको जिंदा करदे तो मैं उसके साथ विवाह करनेको राज़ी हूँ।"

दूतोंने सब हाल पद्मिनीसे कहा। पद्मिनी बड़ी गुणवती थी। वह चौदह विद्या और चौसठ कलाएँ जानती थी। उसने उन सब राजकुमारोंको, जो उसकी प्रेम-परीक्षामें विफल होकर पत्थर होगये थे, ज़िंदा कर दिया। बड़ा राजकुमार भी जी उठा। दोनों भाई खुशी-खुशी पद्मिनीको साथ लेकर अपने घर लौट आये।

पद्मिनी अपनी विद्याकेद्वारा दूतीका कपट जानगई। उसने तुरंत राजकुमारसे कहकर उसे दीवालमें चुनवा दिया। इधर राजा पहलेकी तरह शिकार खेलनेकेलिए महलके सामनेसे निकला ही करता था। एक दिन पद्मिनीने राजकुमारोंसे कहा, "इस नगरके राजा नित्य तुम्हारे महल के सामनेसे निकलते हैं, परन्तु न तो तुम उनका किसी तरहका आदर करते हो और न उन्हें अपने महलमें ही बुलाते हो। राजों-राजोंमें हेलमेल न होगा तो फिर किसमें होगा? अबकी बार वह यहाँसे निकलें तो उन्हें बुलाकर उनका आदर सत्कार करना।"

दूसरे दिन राजा जब इनके महलके सामनेसे निकले तो राजकुमारोंने उनके सामने जाकर विनयके साथ उन्हें प्रणाम किया और महल में चलनेकी प्रार्थना की। राजा तो यह चाहते ही थे। उस दिनसे परिचय बढ़गया और शिकारको आते-जाते समय वह रोज घड़ी दो घड़ी इनके यहाँ बैठने लगे।

एक दिन राजाने दोनों राजकुमारोंको अपने यहाँ बुलाया। राजकुमार जाने लगे तो पद्मिनीने दो काठके घोड़े देकर उनके कानमें कुछ कहा। राजकुमार अपने-अपने घोड़े लेकर चलेगये।

इधर सातों रानियोंने विष मिलाकर दोनों राजकुमारोंकेलिए भोजन तैयार किया। उन्होंने सोचा आज मौका मिलगया है तो अपना कण्टक हमेशाकेलिए दूर करदेना चाहिए, नहीं तो ये किसी दिन हमारे प्राणके घातक बन जायेंगे। सब तैयारी होचुकनेके बाद राजकुमार बुलाये गये। थाली सजाकर परोसी गई। राजाने भोजन करनेकेलिए कहा। राजकुमारोंने अपनी-थालीके पास काठके घोड़ोंको रखकर कहा, "लो भई घोड़ो, पहले तुम भोजन करो, पीछे हम करेंगे।"

राजा उनके इस व्यवहारको देखकर चकित हुए। बोले, "राजकुमार, तुम कैसे अनजान बनते हो, कहीं काठके घोड़े भी भोजन करते हैं।"

राजकुमारोंने उत्तर दिया, "महाराज, आप भी कैसे अनजान बनते हैं, कहीं स्त्रीके पेटसे ईंट-पत्थर पैदा होते हैं।"

राजकुमारोंका यह उत्तर सुनते ही सातों रानियोंको काटो तो खून नहीं। बेचारी सबकी सब घबड़ा गयीं। सोचने लगीं कि पापका घड़ा अब

फूटने ही वाला है। राजा भी इस उत्तरको सुनकर चुप होगये। वह सोचने लगे कि छोटी रानीके ईंट-पत्थर होनेकी बात क्या झूठ है? क्या उसमें कोई रहस्य छिपा हुआ है? राजा इसी विचारमें निमग्न थे कि राजपुत्र बिना भोजन किये ही चलेगये। राजाके मनमें उस दिनसे खटका लग गया। उनके मनमें नाना प्रकारके विचार उठने लगे।

एक दिन पद्मिनीने कहा, "आज अपने यहाँ सब राजपरिवारको बुलाओ।" नेवता भेजागया। साधुकी मालाके प्रभावसे छप्पन प्रकारके व्यञ्जन बनकर तैयार होगये। राजा तथा सातों रानियोंको खूब प्रेमपूर्वक भोजन कराया गया। सब नौकर-चाकर भी खाचुके, अन्तमें पद्मिनीने रानियोंसे पूछा, "अब तो तुम्हारे महलमें कोई खानेको बाकी नहीं है?"

रानियोंने कहा, "नहीं, सब खाचुके।"

पद्मिनी अपनी विद्याके बलसे जानगई कि काग-बिड़ारिन तो आई ही नहीं, सो उसने पूछा, "और काग-बिड़ारिन?"

रानियोंने कहा, "उसकी कौन बात है! वह वहीं खा लेगी। उसे महलकी रखवालीकेलिए छोड़ दिया गया है।"

पद्मिनीने तुरन्त पालकी भेजकर काग-बिड़ारिनको बुलवाया और अपने हाथों उबटन लगाकर उसे स्नान कराया, अच्छे वस्त्र पहिनाकर भोजनकेलिए बैठाया। काग-बिड़ारिन भोजन करती थी और पद्मिनी पास बैठकर पङ्खा झलती थी। काग-बिड़ारिनका ऐसा आदर-सत्कार देखकर सातों रानियाँ जल-भुनकर महलको चलीगईं। भोजनके उपरान्त पद्मिनीने सबका परिचय कराया। माता-पिता अपने बिछड़े हुए पुत्र, कन्या और पुत्र-बधुओंको पाकर बहुत खुशी हुए। उस दिनसे काग-बिड़ारिन फिर रानी बनगई और सातों रानियोंको राजाने दीवालमें चुनवा दिया।

दोनों ठग—सेंटा और सटकोरा—अब ठगी करने परदेश चले। चलते-चलते वे एक शहरमें जा पहुँचे। सरायमें डेरा डाल कुछ दिन उन्होंने शहरका रंग-ढंग परखा। मालूम हुआ कि एक धनी सेठ अभी थोड़े दिन पहले मरा है। उसके चेटका (चिता) का भी उन्होंने पता लगा लिया। इसके बाद उन्होंने पासके जंगलसे चेटका तक धरतीके भीतर-ही-भीतर एक सुरंग तैयार की और सेंटा सुरंगके रास्ते सेठके चेटकाके नीचे जाबैठा। दूसरा ठग—सटकोरा—साहूकारका भेस बनाकर सेठके घर पहुँचा। सेठके लड़कोंने स्वागत कर उसके आनेका कारण पूछा। ठगने कहा, "मैं बम्बईका जगपति सेठ हूँ। तुम्हारे पितासे मेरी बड़ी दोस्ती थी। अबसे पाँच साल पहले जब वह बम्बई गये थे, हमसे एक लाख रुपया उधार ले आए थे। वह रुपया हमें अभी तक नहीं मिला।"

सेठके बड़े लड़केने कहा, "यह तो ठीक है कि पाँच बरस पहले पिताजी बम्बई गए थे और कुछ माल भी खरीदकर लाये थे, लेकिन आपसे क़र्ज़ लिया, इसका सबूत क्या है?"

ठग बोला, "सबूत? सबूत क्या होगा? तुम्हारे पिताकी इतनी साख थी कि लाख क्या, करोड़ भी उन्हें दे दिये जाते। दस्तावेज लिखाना? राम-राम बेटा, चाहे तुम रुपया मत दो, पर मैं उनपर अविश्वास नहीं करसकता था। उन्होंने कभी किसीकी कौड़ी भी नहीं रक्खी। हमें अपने रुपयेकी परवा नहीं, लेकिन वह अपने ऊपर क़र्ज़ा बना रहना कभी भी पसन्द नहीं करेंगे।"

सेठके लड़केने कहा, "आप जो कहते हैं, ठीक हो सकता है। लेकिन एक लाखकी बात ठहरी। हमें विश्वास कैसे हो?"

ठगने जवाब दिया, "अच्छा, एक काम करो। अपने पिताके चेटकापर चलकर पूछलो। वह अगर क़र्ज़ स्वीकार करलें तो देदेना।"

ठगकी बात सुनकर सेठके लड़केने कहा, "सेठजी, मैं अपने पिताके नामका एक पाईका क़र्ज़ भी नहीं रखना चाहता। सो आप जो कहते हैं, मुझे मंजूर है। मैं चितापर चलता हूँ।"

सेठका लड़का मुनीम और बस्तीके बहुत-से लोगोंको लेकर ठगके साथ पिताकी चितापर पहुँचा। वहाँ जाकर ठगने सेठके लड़केसे कहा, "तुम अपने पिताजीसे पुकारकर पूछो।"

लड़केने चिल्लाकर कहा, "पिताजी, क्या आपको बम्बईके जगपति सेठका कुछ देना है ? अगर हाँ, तो कितना ?"

चिताके भीतरसे एक भर्राई हुई आवाज़ आई, "हाँ, बेटा, जगपति सेठसे मैंने एक लाख रुपया लिया था। चुका नहीं पाया। तुम उनका हिसाब करके ब्याज-सहित पूरा रुपया देदो।"

सब लोगोंने सुना और सेठके लड़केने घर आकर एक लाख रुपया, उसका ब्याज और बम्बईसे आने-जानेका खर्चा सब चुकता करदिया।

सटकोरा रुपया लेकर सुरंगके द्वारपर आया और चार मजदूरोंको बुलाकर उसने एक बड़ीसी शिला सुरंगके द्वारपर अड़ादी। फिर अपने घरकी राह ली। वह मन-ही-मन सोचता था कि बेटा सेंटारामकी तो अब सुरंगके भीतर ही कब्र बन जायगी। क्या मजाल कि इतना भारी पत्थर हटाकर बाहर आसके!

घर आकर सटकोराने रुपया धरतीमें गाड़ दिया और स्त्रीसे कहा कि देखो, अगर सेंटा आवे तो उसे मेरा पता न देना। मैं इस पियारके ढेरमें छिपा जाता हूँ। इतना कहकह वह पियारमें घुसकर बैठ गया। स्त्री उसे वहीं खाना दे आती और सटकोरा रात-दिन वहीं बैठा रहता। उसे डर था कि कहीं सेंटा आगया तो उसे आधा रुपया देना पड़ेगा।

एक रोज़की बात है कि रातके समय सेंटा आ धमका। द्वार खटखटाकर सटकोरेको आवाज़ दी। स्त्रीने किवाड़ खोले। बोली, "लाला, तुम आगये ? उन्हें कहाँ छोड़ आये ?"

सेंटा उनकी चालाकी समझकर बोला, "वह दूसरे रास्तेसे आये थे। मैंने समझा कि आगये होंगे।"

इसके बाद सेंटाने पड़ौससे पता लगाया। एक पड़ौसी बोला, "सटकोरे लुके पियारमें को कह बैरी होय ?"

इतना सुनकर सेंटा फिर सटकोरेके यहाँ पहुँचा और उसकी स्त्रीसे बोला, "भाभी, मुझे बड़ी ठण्ड लगरही है। थोड़ी आग जलाओ, जिससे ठण्ड छूटे। तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं।"

सटकोरेकी स्त्रीने आग लाकर रक्खी और ज्योंही उसकी निगाह बची कि सेंटाने पियारके ढेरमें आग लगादी। पियार 'धू धू' करके

जलने लगा। सटकोरेकी स्त्रीने घबड़ाकर कहा, "अरे, अब निकल आओ। रुपयेसे ज्यादा जान प्यारी है। क्या आधे रुपयोंके पीछे जान गँवा दोगे?"

सटकोरा ढेरमेंसे बाहर निकल आया। सेंटाने उसे बहुत बुरा-भला कहा और आधे रुपये लेकर अपने घरका रास्ता पकड़ा।

१८

सोना बेटी

बहुत दिनोंकी बात है। किसी गाँवमें एक जमीदार रहते थे। बड़े आदमी थे। धन-दौलत, हाथी घोड़ा, बेटा-बेटी सभी कुछ था। उनकी बड़ी लड़की बहुतही सुन्दर थी। देखनेमें गुलाब कैसा फूल, चम्पा कैसा रंग; नबनेमें कनेर कैसी डार, सोने कैसे घुँघराले केश; सुकुमारतामें नैनूँ (मक्खन) कैसा लोंदा; बढ़नेमें दोज कैसा चन्दा; तेजमें होली कैसी झाँक; मिठासमें मिश्री कैसी डली; बोलीमें कोकल कैसी कूक; चँचलतामें बिजली कैसी चमक; गंगा कैसी धार, गुणोंमें केवड़े कैसी महक और अपने निश्चयमें पत्थर कैसी चट्टान।

सोना बेटी स्यानी हुई। एक दिनकी बात है कि वह नदीमें नहाने गई। सिर धोकर बालोंमें कँघी की। जो बाल टूटे, उनको एक दौनामें रखकर नदीमें बहादिया और घर चली आई। इधर उसका मँझला भाई बनमें शिकार खेलने गया था। दोपहरके समय इसी नदीके बहावकी तरफ़ नीचे एक घाटपर नहाने, खानेकेलिए ठहरा। स्नान करते समय उसे नदीकी धारमें एक दौना बहता हुआ दिखाई दिया। उसने झट बढ़कर उसे ले लिया। देखा सोनेके बहुत मुलायम बाल रखे हुए हैं! उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा। वह सोचने लगा जिसके बाल इतने सुन्दर हैं वह कितनी सुन्दर न होगी। उसने निश्चय किया कि मैं अपना विवाह उसी सोनेके बालवाली सुन्दरीसे करूँगा, नहीं तो अपने प्राण दे दूँगा। उन बालोंको लेकर वह घर आया। न भोजन किया, न पानी पिया। खटिया बिछाकर एक सूने कमरेमें जा पड़ा। माता-पिताको मालूम हुआ तो उन्होंने कारण पूछा। उसने वह सोनेके बालोंका दौना दिखाकर कहा, "मेरा

विवाह ऐसे सोनेके केशवाली कन्याके साथ करदो, नहीं तो मैं अपनी जान देदूँगा।"

माता-पिताने पुत्रको धीरज बँधाया। गाँवके पंच इकट्ठे किये। सबने सलाह करके चारों ओर सोनेके केशवाली कन्याकी खोजमें नाई भेजे। कुछ दिनमें नाई लौट आये। उन्हें कहीं सोनेके केशवाली कन्याका पता नहीं लगा। मँझले भैयाने कहा, "यदि आठ दिनके भीतर सोनेके केशवाली कन्याके साथ मेरा विवाह नहीं किया तो मैं विष खाकर मर जाऊँगा। कुआ-पोखरमें गिर पड़ूँगा।" पुत्रकी प्रतिज्ञा सुनकर जमीदार घबड़ा गया। उसने फिर बस्तीके दस बड़े आदमियोंको जोड़ा। सब हाल सुनाया। लोगोंने लड़केको बहुत समझाया, पर वह अपनी बातपर अड़ा ही रहा। पंचोंने कहा, "सोना बेटीके बाल भी तो सोनेके हैं, पर बहिन-भाईका ब्याह कैसा? है तो बड़ी अनीति, पर जो तुम अपने पुत्रके प्राण बचाना चाहते हो तो एक ऐसा अनुचित काम ही सही। सोना बेटीके साथ उसका विवाह करदो।" आखिर सर्व-सम्मतिसे भाई-बहिनका विवाह कर देना निश्चित होगया।

विवाहकी तिथि निश्चित होगई। खाने-पीनेका सामान तैयार किया जानेलगा। मण्डप बनाया गया। विवाह-सम्बन्धी तैयारियाँ पूरी होगईं। विवाहका दिन भी आ पहुँचा। विवाहके रस्म-रिवाज़ होनेलगे।

इधर जबसे सोना बेटीने भाईके साथ अपने विवाहका समाचार सुना उस दिनसे वह हर घड़ी उदास रहने लगी थी। किसीसे कोई बात-चीत नहीं करती थी। जब उसने देखा कि मेरे माता-पिता और गाँवके सभी लोग मेरा विवाह भाईके साथ करनेपर तुल गए हैं तब उसे बहुत दुःख हुआ। उसने सोचा जब बारी ही पेड़ों खों खाने लगी, तब का उपाव! माता-पितासे जोर था, जब वे ही इस अधर्मको करनेपर तुल गये, तब अब कौनसे फ़रयाद करें। इसलिए सब तरफ़से निराश हो उसने मन-ही-मन प्रतिज्ञा की कि भाई-बहिनका विवाह न कभी हुआ है, न होगा। उसने इस अधर्मसे बचनेकेलिए अपने प्राणोंको झोंक देनेका निश्चय किया। उसके घरके सामनेके बागमें चन्दनका एक वृक्ष था। वह उसीपर चढ़ गई।

रसोई तैयार हो चुकी थी। दावतके बाद ही पाणिग्रहणका मुहूर्त

था। सब निमन्त्रित लोग मण्डपमें इकट्ठे हुए। जमींदार ठहरे न! गाँव भरका नेवता था। इसी समय किसीने सोना बेटीके रिसानेका हाल बतलाया। कहा कि—वह तो बागके चन्दनके पेड़पर बैठी है। बहुतसे स्त्री-पुरुष मनानेको गए और नीचे उतरनेको कहा, पर वह न उतरी। तब उसके छोटे भाईने पेड़के नीचे खड़े होकर कहाः—

"उतरो-उतरो सोना जीजी,

"दाल बनी है, भात बनो है, गाँवके सब लोग भूखे बैठे हैं, बनी रसोई ठण्डी भई है, सुगर सवासन चौक पूरे हैं, बह्मन-बरुआ बेद पढ़त हैं, तुम बिना सब काम रुके हैं।"

सोना बेटीने ऊपरसे ही उत्तर दिया—"दाल सड़न दे, भात बुसन दे, गाँवके लोगोंको भूखों मरन दे, सुगर सवासन चौक पूरन दे, बह्मन-बरुवा वेद पढ़न दे। तुम हते जब बिरन हमारे अब भये तुम देवर हमारे, फट-फट रे चन्दनके बिरछा, ठाढ़ा सोना सरगे जाँय।"

फिर सोना बेटीकी बहिनने आकर कहाः—

"उतरो उतरो सोना बेटी,

"दाल बनी है, भात बनो है, गाँवके लोग सब भूखे बैठे हैं, बनी रसोई ठण्डी भई है, सुगर सवासन चौक पूरे हैं, बह्मन-बरुआ वेद पढ़त हैं तुम बिना सब काम रुके हैं।"

सोनाने जवाब दिया—"दाल सड़न दे, भात बुसन दे, गाँवके लोगोंको भूखों मरन दे, सुगर सवासन चौक पूरन दे, बम्हन-बरुवा वेद पढ़न दे, तुम हती जब बहिन हमारी, अब भई तुम ननद हमारी, फट-फट रे चन्दनके रूख ठाड़ी सोना सरगे जाँय"

माताने जाकर कहा—"उतरो उतरो, सोना बेटी,

"दाल बनी है, भात बनो है, गाँवके लोग सब भूखे बैठे हैं, बनी रसोई ठण्डी भई है, सुगर सवासन चौक पूरे हैं, बम्हन-बरुवा वेद पढ़त हैं, तुम बिना सब काम रुको है!"

सोना बेटीने कहा—"दाल सड़न दे, भात बुसन दे, गाँवके लोगोंको सब भूखों मरन दे, सुगर सवासन चौक पूरन दे, बम्हन-बरुवा वेद पढ़न दे, तुम हती जब माँय हमारी, अब भई तुम सास हमारी, फट-फट रे चन्दनके बिरछा ठाढ़ी सोना सरगे जाँय।"

अन्तमें पिताने आकर कहा—"उतरो उतरो सोना बेटी,

"दाल बनी है, भात बनो है, गाँवके लोग सब भूखों बैठे हैं। धरी रसोई ठण्डी भई। सुगर सबासन चौक पूरे हैं, बम्हन-बरुआ वेद पढ़त हैं, तुम बिना सब काम रुका है।"

सोनाने कहा—"दाल सड़न दे, भात बुसन दे, गाँवके लोगोंको भूखों मरन दे, सुगर सबासन चौक पूरन दे, बम्हन-बरुवा वेद पढ़न दे, जब हते तुम बाबुल हमारे, अब भये तुम ससुर हमारे, फट-फट रे चन्दनके बिरछा ठाड़ी सोना सरगे जाँय।"

इतना कहते ही धरती फटी और चन्दनके पेड़ सहित सोना बेटी उसमें समा गई। सब लोगोंकी अब आँखें खुलीं और अपनी अनीतिपर पछताने लगे।

१९

निपूतेका पूत

प्राचीन समयकी बात है। चँदेरीमें एक राजा राज करते थे। दुर्भाग्यसे बुढ़ापेतक उनके कोई सन्तान नहीं हुई। राजा इसकेलिए वैसे ही दुखी रहते थे; लेकिन एक दिन जब वह प्रातःकाल नगारखानेपर बैठे दातौन कररहे थे, एक महतरानी महलके सामनेसे निकली। राजा पर नजर पड़तेही उसने मुँह फेरकर ज़मीनपर थूक दिया। राजाने देख लिया। उसने महतरानीको बुलाकर पूछा, "तुमने मुझे देखकर थूका क्यों?" महतरानी डर गई। उसने कुछ जवाब नहीं दिया। लेकिन जब राजाने अधिक जोर दिया तो उसने कहा, "सरकार, जानकी माफ़ी बख्शी जावे तो कहूँ।" राजाने कहा, "निडर होकर कहो, तुम्हारे सब कसूर माफ किये जावेंगे।" यह आश्वासन पाकर महतरानीने कहा, "सरकार, आप निपूते हैं। आज सवेरे-सवेरे आपका मुँह देखा है सो आज दिनभर खाना न मिलेगा।" राजाने कहा, "यह बात है! अच्छा आज दोपहरको तू महलसे खाना लेजाना।" ऐसा कहकर राजा खिन्न मनसे महलमें चला गया। आज उसके मनमें बार-बार यही बात उठ रही थी कि मैं निपूता हूँ। मेरा मुँह देखनेसे लोगोंको दिनभर खाना नसीब नहीं होता। दोपहरको महतरानी खाना लेने आई। राजाने मनमें कहा कि मैं इसे खानेको देता हूँ। देखें यह कैसे भूखी रहती है। महतरानीको खाना दिया गया और वह उसे लेकर चली। चार क़दम गई होगी कि राजाका पालतू कुत्ता झपटा और उसने महतरानीके हाथसे खाना गिरा लिया और स्वयं खाने लगा। महतरानी भयसे काँपती हुई दूर जा खड़ी हुई। राजाने उसे बुलाकर फिर खाना दिला दिया और नौकरसे कहकर कुत्तेको जंजीरसे

बँधवा दिया। महतरानी खाना लेकर चली। इसी समय अकस्मात् एक चील झपटी। सब खाना जमीनपर गिरकर खराब होगया। यह हाल देखकर राजाको बहुत दुःख हुआ। उसने मनमें सोचा कि मेरे रहनेसे प्रजा को बहुत कष्ट है। जो-जो मेरा मुँह देखते होंगे, उन्हें उस दिन खाना न मिलता होगा। मेरा अब यहाँ रहना ठीक नहीं है। सो एक दिन राजा राजपाट छोड़कर बनको चलागया। वहाँ जाकर वह महादेवकी तपस्या करने लगा। जब तपस्या करते-करते बारह वर्ष बीतगये तो एक दिन महादेव और पारवतीजीने आकर दर्शन दिए। बोले, "बच्चा, तूने बहुत तप किया है। जो चाहे सो माँग।" राजाने तीन बार बचन लेकर कहा, "मुझे पुत्र दो।" राजाके बचन सुनकर महादेवजीने कहा, "तेरे भाग्यमें पुत्र लिखा ही नहीं; दूँ कहाँसे?" राजाने उत्तर दिया—"हे देव, जब तुममें वरदान देनेकी सामर्थ्य नहीं, तो मुझसे मनचाहा वरदान माँगनेकेलिए कहा क्यों? अबतो अपने बचनको निभाना ही होगा।" यह सुन पार्वतीजी बोल उठीं, "हाँ, वह ठीक तो कहता है। जब आप वरदान दे नहीं सकते तो उससे माँगनेको क्यों कहा? बचन देकर पूरा न करेंगे तो आपहीके नाममें बट्टा लगेगा।" पारवतीजीकी बात सुनकर महादेवजीने कुछ सोचकर कहा, "अच्छा, मैं तुम्हें चौबीस वर्षकेलिए पुत्र देता हूँ।" राजाने कहा, "नहीं महाराज, देना है तो मुझे पूर्णायु पुत्र दीजिए। ऐसे अल्पायु पुत्रसे मुझे क्या सुख मिलेगा?" राजाकी बात सुनकर पारवतीजीने कहा, "अरे नादान, बिलकुल न होने से चौबीस वर्षकेलिए ही अच्छा है। तेरा निपूता नाम तो मिट जावेगा। अभी तो वर लेले। आगे हरि इच्छा।" राजा राजी होगया। महादेवजीने उसे एक फल देकर कहा कि इसे जाकर अपनी रानीको खिला देना। नवें मास पुत्र उत्पन्न होजायगा।

राजा फल लेकर घर आया और रानीको खिला दिया। नवें महीने एक सुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ। राज्यमें खूब खुशी मनाई गई। नाम रखा गया शिवदत्त। लेकिन ज्यों-ज्यों राजकुमार बढ़ने लगा, राजाके मनमें चिन्ता बढ़ने लगी। कुछ समयमें राजकुमार सब विद्याओं में निपुण होगया और धीरे-धीरे उसकी उम्र विवाह योग्य होगई। चारों ओरसे विवाहकेलिए प्रस्ताव आने लगे; परन्तु राजाने कहा,

"नहीं, अभी ब्याह नहीं करूँगा।" रानीने भी बहुत आग्रह किया कि अब राजकुमार बीस वर्षका हो गया है। उसका विवाह कर ही देना चाहिए। पर राजाने कहा—"नहीं, उसका विवाह चौबीस वर्षके बाद किया जायगा।" राजकुमारकी उम्र ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती थी, राजाकी चिन्ता भी उसी प्रकार बढ़ती जाती थी। ज्यों ज्यों भींजे कामरी, त्यों-त्यों भारी होय! धीरे-धीरे वह तेईस वर्षका हो गया और चौबीसवाँ वर्ष लगा। राजा रात-दिन उदास रहने लगा। इस तरह चौबीसवाँ वर्ष समाप्त होनेका आखिरी दिन आगया। उस दिन राजाने राजकुमारके कमरे पर पहरा लगा दिया और आप भी उसके पलंगके पास जाकर बैठगया। राजकुमार सोरहा था। जब समय पूरा हुआ तो राजकुमारको एक छींक आई और उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। महलमें और सारे नगरमें शोक छा गया। बस्तीके बड़े-बड़े आदमी, राज कर्मचारी, मंत्री आदि सब इकट्ठे हुए और राजकुमारके शवको उठाकर श्मशान ले गए। चिता बनाई गई। शवको उठाकर चितापर रखा। इसी समय दो परदेशी ब्राह्मण पण्डित वहाँसे निकले। सब समाचार जानकर उन्होंने राजासे कहा, "राजन्, जो होना था सो हो चुका। उसकेलिए अब शोक करना व्यर्थ है। अब आपको अपने मृत पुत्रकी सद्गतिकी ओर ध्यान देना चाहिए। इसकी उम्र चौबीस वर्षकी हो चुकी है। अभी तक इसकी शादी नहीं हुई, इससे यह नरकको जायगा। यदि आप अभीभी इसकी शादी करदें तो उसको सद्गति प्राप्त होगी और वह स्वर्गको जायगा।" राजाने पण्डितोंके वचन सुनकर शहरमें ढोंड़ी पिटवाई कि जो व्यक्ति मेरे मृत पुत्रके साथ अपनी कन्याकी शादी करेगा, उसे मुँह माँगा धन दिया जायगा।

इसी नगरमें एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी रहते थे। ब्राह्मणकी पहले विवाहकी पत्नी मर चुकी थी। उसकी एक लड़की थी जिसकी उम्र बारह वर्षकी थी। दूसरे विवाहकी स्त्रीसे भी एक लड़की थी जिसकी उम्र छह-सात साल की थी। घरमें गरीबी थी। ब्राह्मणी अपनी सौतेली लड़कीको बहुत कष्ट देती थी। रात-दिन परमेश्वरसे प्रार्थना करती थी कि इसकी मौत होजाय। उस दिन माँ-बेटीमें लड़ाई हो गई। ब्राह्मण भिक्षा माँगने दूसरे गाँवको गया था। इसी दरम्यानमें राजाकी ओरसे पीटी गई ढोंडी

की आवाज ब्राह्मणोंके कानोंमें पड़ी। मुँह माँगे रुपया मिलनेकी बात सुनकर उसके मुँहमें पानी भर आया। सोचा, यह अच्छा अवसर है। डौंड़ीवालेको बुलाकर कहा, "मैं अपनी लड़कीका विवाह करना चाहता हूँ। राजासे जाकर कहदो।" डौंड़ीवालेने जाकर राजासे कहा। राजाने पालकी भेजकर लड़कीको स्मशानमें बुलवाया। लड़की शादीकी बात सुनकर प्रसन्न हुई; क्योंकि वह अपनी सौतेली माँकी मुसीबतों और गरीबीसे बहुत परेशान थी। लड़कीकी शादी मुरदेके साथ करदी गई। भाँवरें पड़ते समय लड़केको दो आदमियोंने उठाकर परिक्रमा कराई। लड़कीने सोचा, शायद ये राजा हैं, इससे भाँवरोंके समय भी पैदल चल नहीं सकते। बड़े आदमी ठहरे!

विवाह हो जाने पर राजाने पण्डितोंसे पूछा, "क्यों महाराज, अब तो ठीक हो गया। अब तो मेरा लड़का नरक न जायगा?" ब्राह्मणोंने कहा, राजन्, अभी 'दूधाभाती' का नेग तो बाकी है। उसे और होजाने दीजिए। जबतक 'दूधाभाती' का नेग नहीं होता, तबतक ब्याह पूरा नहीं समझा जाता।" राजाने दूधाभातीकी तैयारी की। पुरोहितके कहनेपर एक आदमीने लड़केका हाथ पकड़कर पाँच कौर लड़कीके मुँहमें दिये। लड़कीने खा लिये। तब लड़कीसे कहा कि अपने हाथसे पाँच कौर लड़केको खिलाओ। लड़कीने कौर लेकर, लड़केके मुँहपर लगाया। पर वहाँ खावे कौन! राजकुमार तो मुर्दा था। कौर धरती पर गिर गया। इसी तरह दूसरा कौर भी गिरगया। तब लड़कीने कहा, "स्वामी, आपने तो मेरा नाम नहीं लिया और मैं चुपचाप खाती गई, पर क्या मैंने आपका नाम नहीं लिया इसीसे आप रूठ गये? अच्छा मैं आपका नाम लेकर अब कौर देती हूँ। महाराज शिवदत्तजी, मेरे हाथका कौर ग्रहण कीजिए।" कौर फिर भी नीचे गिरगया। तब पुरोहितने कहा "बेटी, तू खिला किसे रही है? वह तो मुरदा है।" तब लड़कीने आँख उठाकर कहा, "क्या मेरा विवाह मरे राजकुमारके साथ किया गया है? अच्छा, अब आप सब लोग मेरे मृत पतिके शवको छोड़कर यहाँसे चले जाइये। आप लोग जानते हैं कि मैं ब्राह्मण-कन्या हूँ। आप लोगोंने यदि मेरी बात न मानी तो मैं शाप देकर आप सबको खतम कर दूँगी।" अपनी सती बहूके ये वचन सुनकर राजा सब लोगोंको लेकर स्मशानसे चले गए।

राजाने मन्त्रीसे सलाह की कि अब क्या करना चाहिए? मन्त्रीने कहा, "महाराज, रातके समय स्मशानसे दूर चारों ओर पहरा लगा दीजिए, जो दूरसे शवपर नजर रखें। लड़की अभी बालक ही तो है। अकेली रहनेपर रातको डरकर भाग जायगी। फिर सवेरा होने पर हम लोग अग्नि संस्कार कर देंगे।" राजाको यह सलाह पसन्द आई और इसी तरह इन्तजाम कर दिया गया।

सबके जानेपर लड़कीने पूजनका सामान लेकर पतिके सिरको अपनी गोदमें रखकर पहले उसकी पूजा की फिर महादेवका पूजन और स्तुति करने लगी। लेकिन ज्योंही आधी रात हुई कि स्मशानके चारों ओरसे अग्निकी ज्वालाएँ आती हुई उसे दिखाई दीं। मगर उसका मन भयभीत न हुआ। वह भगवान् महादेवकी स्तुति करती रही। थोड़ी देर में बहुतसे भूत-पिशाच आकर उपद्रव मचाने लगे। उसने सोचा, आज निपूती तो निपूती, काल निपूती तो निपूती। अब मरना तो है ही यदि महादेवजी कृपा नहीं करते तो सवेरे सती होना है। ये भूत-प्रेत बहुत होगा तो मेरे प्राण ही लेंगे, और क्या करेंगे? जब उखरीमें मूड़ दई तब मूसरोंको का डर? ऐसा सोच वह शान्त चित्तसे अपने नेत्र बन्द किये महादेवजीका ध्यान करती रही। इस पैशाचिक लीलाको देखकर पहरेदार अपने-अपने प्राण लेकर भाग गए। करीब दो घण्टे तक यह उत्पात जारी रहा। इसके बाद महादेव पारवती सहित आकर लड़कीके सामने खड़े होगए। लड़कीने उठकर भक्ति पूर्वक उन्हें प्रणाम किया। महादेवजीने आशीष देकर कहा, "पुत्री सौभाग्यवती हो।" पूछा, "बेटी, यहाँ क्यों बैठी हो और यह जो मुर्दा पड़ा है, तेरा कौन है?" लड़कीने कहा "मेरा पति है। इसे जिन्दा करो।" महादेवजीने कहा—"इसकी उम्र तो केवल चौबीस वर्षकी थी वह पूरी हुई अब जिन्दा कैसे हो सकता है?" लड़कीने कहा, "महाराज, आपने अभी मुझे आशीष दी है कि तू सौभाग्यवती हो, पुत्रवती हो, आपके इन वचनोंका क्या होगा?" पारवती जीने कहा, "महाराज, आप तो उसे आशीष पहलेही दे चुके हैं। अब तो इसके पतिको जीवित करना होगा।" महादेवजीने तब अपनी तूँबीसे थोड़ा जल मुर्देपर छिड़का। मुर्दा तुरन्त उठ बैठा। महादेवजी अन्तर्धान होगए। सबेरा होतेही राजा मन्त्री सहित स्मशान पहुँचा। अपने पुत्रको

जीता हुआ देखकर उसकी खुशीका ठिकाना न रहा और राजकुमार तथा पुत्रवधूको पालकीपर बैठाकर महलमें ले आये। सारे राज्यमें आनन्द-उत्सव मनाया गया और उस दिनसे सब सुखपूर्वक रहने लगे।

२०

तीन लाखकी तीन बातें

एक राजा था। उसका लड़का बड़ा विद्याप्रेमी था। वह गुणी लोगोंको हज़ारों रुपया देकर उनसे गुण सीखा करता था। राजकुमारके इस विद्याप्रेमकी चर्चा दूर दूरतक फैल गई। अनेक गुणी पण्डित उसके पास आने लगे। राजकुमार उन सबको मुँहमाँगा रुपया देकर उनसे हुनर सीखने लगा। कुछ समयमें वह अनेक शिक्षाएँ सीख गया।

एक दिन मन्त्रीने राजासे रिपोर्ट की कि राजकुमार सब खजाना खाली किये देता है। राजाने राजकुमारके खर्चेका हिसाब माँगा। लाखों रुपया हर महीनेका खर्च देखकर राजाने उसे देश निकालेका हुक्म दे दिया। राजा सोचने लगा कि अगर राजकुमार कुछ दिन और रहेगा तो वह खजाना खाली कर देगा। ऐसे पुत्रको घर रखना ठीक नहीं। पुत्रके देशनिकालेका समाचार सुनकर रानीको बड़ा दुख हुआ। उसने कलेवा के बहाने तीन लड्डुओंमें तीन लाखके क़ीमती जवाहरात भर दिये। उसने सोचा ये जवाहरात परदेशमें पुत्रके काम आयेंगे। कलेवाके लड्डुओंको एक डिब्बेमें रखकर दरबानियोंको देते हुए रानीने कहा, "जब राजकुमार शिकार खेलकर आवे तब उसे पहले यह कलेवाका डिब्बा देना। पीछे राजाका दिया हुआ हुक्म।"

दरबानियोंने कहा, "मालिकनका हुक्म सिर-आँखोंपर।"

ठीक दोपहरके समय राजकुमार घोड़ा दौड़ाता घर आया। वह पसीनेसे लथपथ हो रहा था। घोड़ेपरसे कूदकर उसने घोड़ा साईसको सौंपा और आप महलमें घुसने लगा। उसी समय दरबानियोंने पहले तो रानी

का दिया हुआ कलेवाका डिब्बा उसे दिया और बादमें तुरन्तही राजाका दिया हुआ देशनिकालेका हुक्म। देशनिकालेका हुक्म पढ़कर राजकुमार एकदम पीछे लौट पड़ा और साईससे अपना घोड़ा लेकर उसपर सवार हो गया। फिर घोड़ेको एक ज़ोरकी एड़ लगाई। घोड़ा हवासे बातें करने लगा।

राजकुमार घोड़ा दौड़ाता हुआ चला जा रहा था। उसने निश्चय कर लिया कि जब इस राज्यकी सीमासे बाहर निकल जाऊँगा तब अन्न-जल ग्रहण करूँगा। रात-दिन चलते-चलते दूसरे दिन सवेरे वह किसी दूसरे राज्यके शहरमें जा पहुँचा और बस्तीके बाहर तालाबके किनारे ठहर गया। घोड़ा एक पेड़की डालसे बाँध दिया। फिर उसने स्नान करके कलेवाका डिब्बा खोला। सोचा, थोड़ा-बहुत खाकर पानी पी लेना चाहिए। खानेकेलिए ज्योंही लड्डू फोड़ा, उसमेंसे बहुतसे जवाहरात निकल पड़े। राजकुमार सोचने लगा ये तो क़रीब एक लाखकी क़ीमतके जवाहर हैं! उसने क्रमसे तीनों लड्डू फोड़े, तीनोंमें तीन लाखके जवाहरात निकले। लड्डू खाकर राजकुमार शहर घूमनेकेलिए निकला। शहरमें इधर-उधर घूमते हुये उसे एक अजीब बात दिखाई दी। एक चौराहेपर एक बड़ा शानदार मकान बना हुआ था, उसके बाहरी दरवाज़ेपर एक सफेद कपड़ेका परदा पड़ा था। परदेके बाहर एक आदमी डुगडुगी पीटकर कहरहा था—

"यह अक्लकी दूकान है। जिसे अक्ल खरीदना हो खरीदे! सौ रुपयेकी एक बात, हज़ार रुपयेकी एक बात, और लाख रुपयेकी एक बात यहाँ बतायी जाती है। जिसे जिस दरकी जितनी अक्ल चाहिये, भीतर जाकर खजानेसे खरीद ले। पर सौदा हमेशा पेशगी क़ीमत लेकर किया जाता है।"

राजकुमारने डुगडुगीवालेका बयान ध्यानसे सुना। वह मनमें सोचने लगा, मैंने विद्या सीखनेमें अनगिनती रुपया पानीकी तरह बहाया है, आज इस अक्लकी दूकानकी भी परख करना चाहिए। देखें इसका माल चोखा है या खोटा। इस समय मेरी जेबमें तीन लाखके जवाहरात रखे हुए हैं। यदि इनको आज अक्ल खरीदनेमें खर्च न करूँगा तो फिर ये किस काम आवेंगे? ऐसा सोचकर उसने डुगडुगीवालेसे कहा—"मैं आपकी दूकानसे कुछ अक्ल खरीदना चाहता हूँ, मुझे भीतर अक्लके

खजानेके पास पहुँचा दो।"

डुगडुगीवाला राजकुमारको पर्देके भीतर ले गया। वहाँ एक साफ़-सुथरे कमरेमें नीचे क़ीमती फर्श बिछा हुआ था, ऊपर सफेद कपड़े की छत बँधी हुई थी। मकानमें और कोई वस्तु नहीं थी—बिलकुल खाली था। बीचमें एक गलीचेपर तकियेके सहारे एक बुड्ढा मनुष्य सफेद कपड़े पहने हुए बैठा था। उसकी बगलमें एक तिजोरी रक्खी हुई थी! डुगडुगीवाला राजकुमारको उस वृद्ध मनुष्यके पास पहुँचाकर फिर बाहर चला गया।

बुड्ढेने ग्राहकको अपने पास गलीचेपर बिठाकर पूछा—"क्या आप अक्ल खरीदने आए हैं? कहिए, कितनेकी बात बतलाऊँ, हज़ारकी या लाख की?"

राजकुमारने कहा, "पहले नमूनेके तौरपर एक लाखकी एक बात बतलाइये।"

बुड्ढेने कहा, "महाशय, इस दूकानका नियम है—पहले दाम पीछे काम। सो पहले एक लाख रुपया दाखिल कीजिये तब बात बतलाई जायगी।"

राजकुमारने एक लाख रुपयेके जवाहरात बुड्ढेके सामने रखते हुये कहा, "लीजिये ये एक लाखके जवाहरात हैं।"

बुड्ढेने उन्हें अच्छी तरह परख-परखकर तिजोरीमें रखते हुए कहा, "अच्छा सुनो, मैं तुम्हें एक लाखकी एक बात बताता हूँ—हज़ार काम छोड़कर समयपर भोजन करो।"

राजकुमारने सोचा, यह तो मामूली बात है। सभी जानते हैं। अब एक लाख रुपये और खर्च करके दूसरी बात सुनना चाहिए। यह सोच उसने एक लाखके जवाहरात फिर सामने रखकर कहा, लीजिए, दूसरी बातकी पेशगी क़ीमत जमा कीजिए और एक लाखकी एक बात और भी बताइये।"

बुड्ढेने फिर जवाहरोंको परखकर तिजोरीमें रखते हुए कहा, "अच्छा, दूसरी बात भी सुनो। यह भी लाख रुपयेकी है। समय पड़े परख हो जायगी। 'किसीका व्यभिचार देखो तो उसपर परदा डाल दो।' समझे?"

राजकुमारने कहा, "बहुत ठीक। अब मेरे पास एक लाखके जवाहर और बचे हैं। इन्हें भी लीजिए और एक बात और बतला दीजिए।"

बुड्ढेने उसी प्रकार तिजोरीमें जवाहर रखते हुए कहा, "सुनो, यह बात सवा लाख रुपयेसे कमकी नहीं है। पर तुम थोक खरीदार हो सो तुम्हें एक लाख रुपयेमें ही बतलाए देता हूं। जो आदमी कानका कच्चा हो उसकी नौकरी न करे।"

इन तीन बातोंको सीख राजकुमार बाहर आया थोड़ी देर और भी शहर घूमकर एक सरायमें जाकर उसने अपना डेरा जमा दिया। सोचा, अब कुछ दिन इसी शहरमें रहना चाहिए।

सरायके ठीक सामने दूसरी ओर एक सेठजीकी दूकान थी। सेठजीका कारबार बहुत बड़ा था। राजदरबारमें भी उनकी बड़ी इज्ज़त थी। नगरके दीवानी, फौजदारीके सभी बड़े-बड़े मुकदमे उन्हींके यहाँ आते थे। उनको फाँसी तकका अधिकार था।

राजकुमारको कुछ काम तो था नहीं। सरायमें पड़े-पड़े सेठजी की दूकानका हाल देखा करते थे। इनकी याददाश्त बहुत तेज़ थी। एक बार जो बात सुन लेते, उसे कभी न भूलते। इस कारण सेठजीके कुछ बही-खातोंका हिसाब, उनके सब असामियोंके नाम वगैरह उन्हें जबानी याद हो गये।

एक दिन सेठजी दोपहरके समय एक आसामीको साथ लिये हुए दूकानपर पहुँचे। देखा, दूकान बन्द है। दूकानके मुनीम, कारिन्दा वगैरह सब रोटी खाने अपने-अपने घर चले गये थे। आसामी कहता था कि आप इसी समय मेरा खाता दिखलाइए। मैं आपका कुल देना चुकता करता हूँ। आध घन्टे बाद अपने देशको चला जाऊँगा और फिर न लौटूंगा। आध घन्टेका समय है। इस दरम्यान आप मेरा हिसाब बतला कर रुपया ले लीजिए। आध घण्टे बाद मैं किसी तरह नहीं ठहर सकता हूँ। ज़रूरी कामसे मैं अभी जा रहा हूँ। सेठजीको इतना मालूम था कि इस आसामीसे बहुत रुपया लेना है और यह आज चला जायगा तो फिर रुपया वसूल न होगा। इस कारण वे बड़ी चिंतामें थे। कभी दूकानका ताला टटोलते थे और कभी किसी दरबानको पुकारते थे। परन्तु उस समय

वहाँ कोई नहीं था।

राजकुमार सरायमें पड़े-पड़े यह सब हाल देख रहे थे। उन्हें दूकानकी चाबी रखनेका स्थान मालूम था। मुनीम नित्य उसी जगहपर चाबी रख जाता था। दूकानके कारिंदोंमेंसे जो पहले आता था, वही उस स्थानसे चाबी उठाकर दूकान खोल लेता था। इसलिए राजकुमारने सेठजीसे कहा, "दूकानकी चाबी अमुक खंभेकी कड़ीके ऊपर एक छेदमें रक्खी है। ऊपर हाथ डालकर टटोलो, मिल जायगी।"

सेठजीके होश उड़ गए। वे सोचने लगे कि इस परदेशीको दूकानकी चाबी मालूम थी, इसने दूकानका सब माल उड़ा दिया होगा। बतलाये हुए स्थानसे चाबी उठाकर सेठने दूकानका ताला खोला और भीतर जाकर देखने लगे। वहाँ सैंकड़ों बहियाँ रक्खी हुई थीं। सेठजीके फ़रिश्ते भी नहीं जान सकते थे कि इस आसामीका खाता किस बहीमें है। सेठजी कभी यह बही उठाते थे और कभी वह। सेठजीको झंझटमें पड़ा हुआ देखकर सरायमेंसे राजकुमारने पूछा—"सेठजी आपके आसामीका नाम क्या है?" सेठने बतला दिया। राजकुमारने तुरन्त उत्तर दिया, "आप व्यर्थ तकलीफ़ मत कीजिए। इस आसामीका खाता हरी बहीके अमुक पन्नेमें है। उठाकर देख लीजिए। उसपर आजकी मितीतक १५२४|||=) बाक़ी निकलती है।"

सेठजीने सोचा यह मुसाफ़िर क्या बकता है? इसे इतने पतेकी बात कैसे मालूम हुई। उन्होंने हरी बहीका वही पन्ना खोलकर देखा तो उस आसामीके नाम सचमुच उतना ही रुपया बाकी निकलता था। सेठजी सन्नाटेमें आ गये। सोचने लगे, इतने पतेकी बात बिना बही-खाता देखे तो खुद मुनीम भी नहीं बतला सकता है, जिसके हाथका लिखा हुआ यह खाता है। उन्होंने आसामीसे रुपया लेकर उसे फ़ारखती लिख दी। आसामी चला गया। सेठजी दूकान बंद करके सरायमें मुसाफ़िरके पास पहुँचे और मुसाफ़िरसे कहने लगे, "भाई साहब! आप कहाँसे पधारे हैं? आज आपसे मुझे बड़ी मदद मिली। इसकेलिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मुझे इस बातका भी बड़ा भारी अचरज हो रहा है कि आपको मेरी दूकानकी इतनी पतेकी बातें कैसे मालूम हुईं।

क्या आप कोई गुप्त विद्या जानते हैं ?"

राजकुमारने कहा, "सेठजी, इसमें अचरजकी कोई बात नहीं है। मैं जादू वगैरह कुछ नहीं जानता हूँ। बात यह है कि मैं एक बार जिस बातको सुन लेता हूँ, वह मुझे याद हो जाती है। आपकी दूकानके सामने बैठे-बैठे मैं सब बातें सुना करता हूँ। इसलिये वे मुझे मालूम हैं।"

सेठजीने मुसाफ़िरके रूप, रंग और बातोंके ढँगसे जान लिया कि यह कोई बड़ा आदमी है। उसकी बुद्धिमानीकी बानगी तो उन्हें मिल ही चुकी थी। इसलिए उन्होंने आग्रह करके उसे अपनी दूकानका मुनीम बना दिया। राजकुमार पहले तो राजी नहीं हुआ, परन्तु जब सेठजीने बहुत समझाया तब उसने बात मन्जूर करली। सोचा, कुछ दिन नौकरी भी कर देखना चाहिए। सेठने नये मुनीमके रहनेकेलिए एक अच्छा-सा मकान, कई नौकर-चाकर, बैठनेको घोड़ागाड़ी और भेंटमें एक क़ीमती दुशाला दिया।

सेठजीकी दूकानके सब गुमाश्ते, कारिंदा वगैरहने नये मुनीमकी नियुक्तिका हाल सुना। सबके कान खड़े होगए। वे आपसमें कानाफूसी करने लगे। बुरा हुआ, यह अजनबी आदमी, सुना है, बड़ा होशियार है। बिना देखे बहीखातोंका हिसाब ज़बानी बतला देता है। किसीने कहा, अजी ज़नाब, वह जादू जानता है जादू। जादूके बलसे सबके पेटकी बात जान जाता है। अब सबको अपने अपने मुँहमें मुसीका लगाना होगा। ऐसी बहुत बातें होती रहीं।

राजकुमार दूकानका काम सँभालने लगा। उसकी चतुराईसे दूकानकी आमदनी बढ़ गई। सेठजी खुश हुए और मुनीमकी तरक्की कर दी।

सेठजीका एक कारिंदा सेठकी स्त्रीसे फँसा हुआ था। एक दिन सेठजी कहीं बाहर गए हुए थे। किसी कामके लिए राजकुमार उनके घर गया। वह वहाँका हाल देखकर चकित रह गया। उसने देखा सेठानी और कारिंदा एक पलंगपर पड़े हुए हैं। दोनोंके इस व्यभिचारको देखकर पहले तो उसे क्रोध आया। सोचा, दोनोंको इसका मज़ा चखाऊँ, परन्तु तभी उसे एकलाखकी बातकी याद आगई। बुड्ढेने बतलाया था कि

कभी किसीका व्यभिचार देखो तो उसपर परदा डालदो। इसी बातके लिए एक लाख रुपया खर्च किए हैं। आज मौक़ा आगया है तो उसे अज़माकर देखना चाहिए। ऐसा सोच राजकुमारने अपने कंधेका दुशाला लेकर उनपर डाल दिया और तुरन्त वहाँसे लौट आया। इस विषयमें उसने किसीसे कुछ भी नहीं कहा।

वहाँ जब सेठानी और उसके यार कारिंदाने देखा कि हम दोनोंके व्यभिचारको बड़े मुनीम साहबने देख लिया है, तब उनके प्राण सूख गए। सोचने लगे हम लोगोंकी बदनामी होगी ही, परन्तु जो सेठजीके कानोंतक यह बात पहुँच जायगी तो ताज्जुब नहीं है कि हम दोनोंको प्राणोंसेभी हाथ धोना पड़े।

सेठानीजीने घबड़ाकर कहा "अब क्या करना चाहिए? अपनी रक्षाका कोई उपाय भी है?"

यारने कहा, हाँ एक उपाय है। देखो, मुनीम साहब अपना दुशाला हमारे ऊपर डाल गए थे। इसे तुम अपने पास रख लो। रातको जब सेठजी घर आवें तब तुम उनके सामने रो-रोकर कहना कि तुमने यह कहाँका परदेशी मुनीम रक्खा है। कल अकेलेमें जब कि आप गाड़ीपर बैठकर कहीं बाहर गए थे, वह हमारी आबरू लेने आया था! वह मुझसे छेड़-छाड़ करने लगा तब मैंने उसका यह दुशाला छीन लिया। शोरगुल होनेपर मुश्किलसे वह भागा। ऐसा कहकर खूब रोना और खान-पीना सब छोड़ देना। यदि तुम इतना करोगी तो सब काम बन जायगा। हम सेठजीके स्वभावको अच्छी तरह जानते हैं। उनके ऊपर पहले पहल जो रंग चढ़ादो वही चढ़ जाता है। उपाय सुनकर सेठानीजीको कुछ धीरज बँधा।

रातको जब सेठजी आए तब सेठानीजीने रो-रोकर अपने यारकी बतलाई हुई सब बातें विस्तारके साथ कह सुनाई। अन्तमें उसने वह दुशाला सेठके सामने फेंकते हुए कहा, "तुम्हें विश्वास न हो तो पहिचान लो यह किसका दुशाला है। जब तक उस पाजीको पूरी-पूरी सज़ा न मिल जायगी तब तक मैं रोटी-पानी कुछ भी नहीं छूऊँगी।"

सेठजीने सेठानीको धीरज बँधाते हुए कहा, "कल उसे अपनीकरनी का फल मिल जायगा अब तुम चिंता मत करो।" ऐसा कहकर सेठ सो रहे।

दूसरे दिन सवेरे दस बजे सेठजी स्नान-पूजासे निबटकर दुकानपर पहुँचे। वहाँ जातेही उन्होंने एक चिट्ठी शहर कोतवालके नाम लिखी चिट्ठी में लिखा, "यह चिट्ठी, मैं जिस आदमीके हाथ आपके पास भेज रहा हूँ उसने एक भयंकर अपराध किया है। जल्लादके द्वारा फौरन ही उसका सिर कटवा दो और कटा हुआ। सिर तुरंत मेरे पास भेजो।" चिट्ठी लिखकर एक लिफ़ाफ़ेमें बंद कर दी और उसपर अपने नामकी मुहर लगा, बड़े मुनीमको बुलाकर कहा, "तुम इस चिट्ठीको लेकर अभी शहर कोतवाल को दे आओ।" मुनीमने चिट्ठी लेतेहुए कहा, बहुत अच्छा अभी जाता हूँ।"

दोपहरका समय हो चुका था। मुनिम करिंदा सब अपना-अपना काम बंदकर घरको आए। मुनीम साहबने अपनी गाड़ी जुतवाई और उसपर सवार हो गए सोचा: मालिकके हुक्मकी तामील अभी कर आना चाहिए।

कोतवालीको जानेका जो रास्ता था उसीपर एक दूसरे सेठजीका मकान था। उनके यहाँ लड़केकी शादी थी। नगरके सभी चुनीदा आदमी और नौकर-चाकरोंका उनके यहाँ न्यौता था। मुनीमसाहब भी बुलाए गए थे। भोजनका समय हो गया था। सब आदमी जुड़ गए थे। इसी समय मुनीम साहबकी गाड़ी दौड़ती हुई उनके दरवाजेसे निकली। लोगोंने गाड़ीको रोककर कहा, "कहाँ जाते हो? भोजनका समय होगया है। सब आदमी आपहीकी राह देख रहे थे।" इतनेमें सेठ भी भीतरसे निकलकर आगये। उन्होंने मुनीमसे कहा--"अब आप कहीं नहीं जा सकते हैं। पहले भोजन कर लीजिए, फिर जाइए।"

मुनीमने कहा--"पहले मुझे अपने मालिकके कामकेलिए शहर कोतवालके पास जाना है। उनको एक चिट्ठी देना है। मैं अभी आता हूँ। आप लोग भोजन कीजिए। मैं दूसरी पंक्तिमें बैठ जाऊँगा।"

लोगोंने कहा—"अजी, ऐसा क्या जरूरी काम है? खाना खाकर चले जाना। इतना मान-मनौवल क्यों करवाते हो?

मुनीमने उत्तर दिया—"आज मालिकने खुद मुझे चिट्ठी दी है, इससे मालूम होता है कोई बहुत जरूरी काम होगा।"

वहाँपर वह कारिंदा भी, जो सेठानीजीसे फँसा था, भोजन करने आया था। उसने आगे बढ़कर कहा, "मुनीम साहब, सब लोग कह रहे हैं तो आप भोजन कीजिए। चिट्ठी मुझे दीजिए। मैं इसी समय शहर कोतवालको दिए आता हूँ। जब ताबेदार मौजूद है तब आपको तकलीफ़ उठानेकी क्या ज़रूरत?"

राजकुमारको उस समय उस बुड्ढेकी एक लाखवाली बात याद आगई। बुड्ढेने कहा था, "हज़ार बात छोड़कर समयपर भोजन करो।" आज इस बातकी भी परीक्षा करनी चाहिए। उसने अपनी जेबसे चिट्ठी निकालकर कारिंदाको दे दी और आप गाड़ीसे उतरकर सबके साथ भोजन करनेकेलिए बैठ गये। कारिंदा मुनीम साहबकी गाड़ीमें बैठकर शहर कोतवालके पास चला गया।

कारिंदाने जाकर शहर कोतवालको सेठजीकी चिट्ठी दी। चिट्ठी पढ़तेही कोतवालने सिपाहियोंको हुक्म दिया, "इस शख्सको गिरफ़्तार कर लो।" फिर जल्लादको कहा, "इस आदमीका सिर काट लाओ।" जल्लाद कारिंदाका सिर लाया। कोतवालने उस कटे हुए सिरको एक कपड़ेमें रखकर सवारको दिया और कहा कि इसे अमुक सेठको देआओ। सवार कटाहुआ सिर लेकर चला।

यहाँ मुनीम साहब भोजन करके उठे थे कि इतनेमें कटा हुआ सिर लिएहुए सवार उधरसे निकला। सवारने सेठजीके बड़े मुनीम को देखतेही सलाम करके कहा—"मुनीम साहब, कोतवाल साहबने सेठजीके पास यह सिर भेजा है। आप पावती लिखकर सिर ले लीजिए। मुनीमने पावती लिखकर सवारको दी और सिर ले लिया।

राजकुमार तुरन्त सब मामला समझ गया। वह मन-ही-मन कहने लगा। आज बड़ी कुशल हुई। सेठजीने तो आज मेरा सिर कटवा ही दिया था, पर परमेश्वरने बचा लिया। उस बुड्ढेकी बातें सच निकलीं। उसीकी शिक्षापर चलनेसे मेरी जान बची। ऐसा सोचते हुए वह सिर लेकर सेठजीके घरकी ओर चले।

सेठजीके पास पहुँचते ही उन्होंने 'राम राम' कहते हुए कहा, "लीजिए, यह सिर कोतवाल साहबने भेजा है।" ऐसा कहकर उन्होंने

कपड़ेसे सिर निकालकर सेठके सामने रख दिया। सेठजी भौचक्केसे होकर रह गए। सोचने लगे, यह क्या हुआ! किसका सिर कटवाना चाहा था और किसका कट गया!! वह बार-बार करिंदाके उस कटे हुए सिर और मुनीमकी ओर देखने लगे।

सेठजीकी यह हालत देखकर राजकुमारने कहा, "सेठजी, अचंभा मत कीजिए, आपने तो बिना विचारे मेरा सिर कटवा लेना चाहा था, पर आखिर हुआ वही जो ईश्वरको मंजूर था। अपराधीको अपराधका उचित फल मिल गया।" इतना कहकर उन्होंने कारिंदा और सेठानीके व्यभिचारकी बात खोलकर सुनादी। सेठको अपनी ग़लतीपर दुख हुआ। उसने कहा, "मुनीम साहब, मुझसे ग़लती हुई। माफ़ कीजिए।" राजकुमारने अपने देशनिकालेसे लेकर नौकरी करनेतकका कुल किस्सा सुनाकर कहा, "मैंने अक्लकी दूकानसे तीन लाख रुपयेमें तीन बातें खरीदी थीं। आपके यहाँ नौकरी करते समय मुझे इन तीनों बातोंकी सचाई प्रकट होगई। मैंने ये बातें एक-एक लाख रुपयेमें खरीदी थीं, परन्तु सच पूछा जाय तो उनमेंकी एक-एक बात कई-कई लाख रुपयेकी निकली। अब मैं आपकी नौकरी नहीं करूँगा। आप कानके कच्चे हैं। सेठानीके झूठमूठ कहनेपर बिना विचारे आप दूसरेकी गर्दन कटानेको तैयार हो गये!!" सेठने माफ़ी माँगते हुए राजकुमारसे कुछ दिन और भी काम करनेको कहा। परन्तु राजकुमार यह कहकर कि अब मैं अपने देशको जाऊँगा, वहाँसे चला आया।

२१

घरकी लक्ष्मी

किसी नगरमें एक सेठ रहते थे। सब तरहसे भाग्यवान थे। चार पुत्र, घर-गिरिस्तीका काम सँभालनेवाली सुन्दर बहुएँ, धन-धान्य, गाड़ी-घोड़े नौकर-चाकर, सबकुछ था। किसी बातकी कमी न थी। परन्तु लोग कहते हैं कि घरकी माया और धूपकी छाया इन्हें बदलते देर नहीं लगती। देशमें अकाल पड़ा। लोग भूखों मरने लगे। सेठकी सारी साहूकारी डूब गई। घरपर जो धन-धान्य था, वह भुखमरोंने लूट खाया। सेठकी हालत खराब हो गई। जो सेठ चार घोड़ोंकी बग्घीपर हवा खाने निकलते थे, वे अब दर-दर मारे फिरने लगे। जो सेठ तकियेके सहारे मसनदपर बैठकर हुक्का पिया करते थे, उन्हें अब हुक्केमें रखनेकेलिए तमाखू भी नसीब न होती थी। समय बदलनेपर ऐसा ही होता है।

घरमें कंगाली आते देखकर एक-एक करके चारों बहुएँ अपने मायके चली गईं। सेठ तो वृद्ध थे, कुछ कर नहीं सकते थे। चारों लड़के दिनभर मिहनत-मजूरी करके जो थोड़ा-बहुत कमाकर लाते, उसीसे इनकी गुजर चलती। शामको दिनभरकी कमाईके पैसोंसे मोटा-झोटा अनाज तो आजाता था, परउसे पीसकर बनाने-खिलाने वाला घरमें कोई न था। लड़कोंकी यह तकलीफ देखकर सेठने सोचा कि बहुओंको बुला लेना चाहिये।

दूसरे दिन सेठजी कुछ भुने चने साथमें लेकर चल पड़े। सारे दिन पैदल चलते-चलते सन्ध्या समय बड़े लड़केको ससुराल पहुँचे। एक आदमीसे अपने आनेकी खबर समधीके घर भिजवाई! सेठका समधी इनकी कंगालीका हाल पहले ही सुन चुका था। उसने इनकी ज़रा भी

आवभगत न की और सरायमें ठहरा दिया। दूसरे दिन जब सेठने बहूकी बिदाकर देनेकेलिए कहा तो समधीने कहा, "आपके घर खुद खानेको तो है नहीं। इसपर बहूको लेजाकर क्या करोगे? क्या उसे भी भूखों मारना चाहते हो? आप अपने लड़कोंसे कहें कि कुछ काम-धन्धा करें। रोज़गार चलने लगे तो बिदा करा ले जाना। भूखों मारनेकेलिए मैं अपनी लड़कीको नहीं भेज सकता।"

समधीका जवाब सुनकर सेठको बहुत दुःख हुआ। पर उसने सोचा—

"धीरज धर्म पुत्र अरु नारी,
आपत-काल परखिए चारी।"

यही समय तो मनुष्यकी पहचानका है। यह सोचकर वह वहाँसे चलकर मझले लड़केकी ससुराल पहुँचा और अपने आनेकी खबर दी। लेकिन वहाँ भी उसके साथ वही बर्ताव हुआ जो बड़े लड़केकी ससुरालमें हुआ था। उसे धर्मशालामें ठहराया गया। कुछ समय बाद समधीने नौकरके हाथ खाना भेजकर कहलाया कि आपने इस समय आनेका व्यर्थही कष्ट किया। हमें आपकी गरीबीका बड़ा दुःख है। परन्तु इस समय न तो आपको ही बिदा कराना शोभा देता है और न हमें ही बिदा करना। समय आनेपर बिदा करदी जावेगी। निदान वहाँसे भी निराश होकर सेठ तीसरे समधीके घर पहुँचे और वहाँ भी ऐसा ही जवाब मिला। अन्तमें वह छोटे लड़केकी ससुराल गये। ज्योंही समधीको खबर मिली कि वह दौड़ा आया और बड़े आदरके साथ अपने मकानपर ही उन्हें ठहराया। दो-तीन दिन तक उनकी खूब खातिर की। जब बिदाका सवाल छिड़ा तो समधीने कहा, "सेठजी, इस समय तो आप जाइए। कई कारणोंसे अभी लड़कीकी बिदा नहीं कर सकता। पर कुछ दिन बाद मैं खुदही उसे आपके घर पहुँचा आऊँगा।" समधीका उत्तर सुनकर सेठ दुःखी हुए; परन्तु इसी समय सेठकी बहूने लज्जा छोड़कर किवाड़की ओटसे आगे बढ़कर कहा, "पिताजी, आप यह क्या कहरहे हैं? विपत्तिके समय उनका साथ देना क्या हमारा धर्म नहीं है? यदि आप मुझे जानेकी आज्ञा दे दें तो मैं वहाँ जाकर उन लोगोंके दुःखको हल्का करनेकी कोशिश करूँगी। मुझे एक न एक दिन वहाँ जाना तो पड़ेगा ही। फिर आज ही क्यों न

जाऊँ ?" लड़कीकी बात सुनकर पिताने उसकी सराहना करके कहा, "बेटी, तेरी बातें सुनकर आज मुझे बड़ा सन्तोष हुआ। मैंने तो तेरा रुख समझने केलिए ही इन्कार किया था। तुम जाओ और अपने घरका काम करो।" इतना कहकर उन्होंने विदा करदी। सेठ बहूको लेकर घर पहुँचे। छोटी बहूके घर आ जानेसे सबको रोटी-पानीका सुभीता हो गया। चारों लड़के मजूरी करके शामको अनाज लाते और बहू आटा पीसकर रोटी बनाकर सबको खिलाती। इस तरह दिन कटने लगे।

छोटी बहू बड़े सबेरे उठती, घरको झाड़ती-बुहारती, आटा पीसती, रसोई बनाती और सबको खिलाती। इसी तरह सारे दिन काम करते रहने पर भी उसे बुरा न लगता था। वह सदा प्रसन्न रहती थी। जिस दिन से छोटी बहू आई, घरकी दशा सुधरने लगी। वह प्रतिदिन खानेकी सामग्रीमें से थोड़ा-थोड़ा बचाकर रखती जाती थी। इस तरह कुछ संचय हो गया। एक दिन पानी बरसनेके कारण लड़कोंको मजदूरी न मिली। सेठने निराश होकर कहा, "आज क्या होगा ? सबको भूखा रहना पड़ेगा। कहीं माँगेसे उधार तो मिल ही नहीं सकता ?" इसपर बहूने कहा, "दद्दाजी, आप चिन्ता न करें। एक दिनकी तो बात ही क्या, अपने घरमें अभी सात दिन खाने लायक सामान रक्खा है।" ऐसा कहकर उसने भीतरसे लाकर सामान दिखा दिया। सेठजी आनन्दसे उछल पड़े। बोले, "मेरी बहू घरकी लक्ष्मी है।" फिर बहूने कहा, "आज मजदूरी नहीं लगी तो आप लोग जंगल जाकर लकड़ियाँ ले आइये।" चारों भाई कलेवा लेकर लकड़ियाँ लेने चले गये। सन्ध्या-समय तीन भाई तो लकड़ियाँ ले आये, पर बड़े भाईको जब कुछ न मिला तो रास्तेमें एक साँप मरा पड़ा था, उसीको लकड़ीपर टाँगकर ले आया और बाहर खूँटीपर टाँग दिया।

संयोगकी बात कि उस दिन नगरकी राजकुमारी नहानेकेलिये नदीपर गई थी। नहाते समय उसने अपना नौलखा हार उतारकर किनारेपर रख दिया। स्नान करके राजकुमारी चली गई और भूलसे हारको वहीं रक्खा छोड़ आई। इतनेमें एक चील आई और हारको चोंचसे दबाकर उड़ गई। उड़ती हुई जब वह नगरमें आई तो उसकी निगाह खूँटीपर टँगे साँपपर पड़ी। चील नीचे उतरी और खूँटीके पास आ मुँहका हार

छोड़कर साँपको चोंचमें दबाकर उड़ गई। उसी समय छोटी बहू बाहर आई और उसकी निगाह नौलखा हारपर पड़ी। उसने उसे उठाकर अपने सन्दूकमें रख दिया।

दूसरे दिन राजकुमारीकी विदा होनी थी। जाते समय नौलखा हारकी याद आई। राजकुमारीने अपने पितासे सब हाल कह सुनाया। तुरन्त सिपाही नदी देखने गये, पर वहाँ हार न मिला। निदान जबतक हार का पता न लग जावे तबतक विदा करना उचित न समझ राजाने कोई बहाना बनाकर बेटीके ससुराल वालोंको वापिसकर दिया।

उसी दिन नगरमें डौंड़ी पिटवाई गई कि राजकुमारी अपना नौलखा हार नदीपर नहाते भूल आई है। जो कोई उसे ला देगा या उसका पता बतायेगा, उसे मुँह माँगा इनाम दिया जावेगा। सारे नगरमें खबर फैल गई। छोटी बहूको भी डौंड़ीका हाल मालूम हुआ। उसने अपने ससुरको बुलाकर कहा, "आप राजाके पास जाकर कह आइये कि आपका नौलखा हार मेरी बहूके पास है।" सेठ डरते-डरते राजमहलमें गया और अपनी बहूके कहे हुए शब्द राजाको सुना दिये। राजाने उसी समय चार सिपाही सेठकी बहूको ले आनेको भेजे। सिपाहियोंने सेठके घर आकर छोटी बहूसे कहा, "तुम्हें महाराज बुला रहे हैं।" छोटी बहूने उत्तर दिया, "तुम लोगोंने समझ क्या रक्खा है, जो मुझे इस तरह लेने आये हो? जाकर राजा साहबसे कहो कि वह मेरे लिए पालकी भेजें।" सिपाहियोंने उसका सन्देश राजाको सुना दिया। राजाने अपनी गलती स्वीकार की और तुरन्त चार कहारोंको हुक्म दिया कि वे पालकी ले जाकर सेठकी बहूको लिवा लावें। सेठकी बहू जिस समय दरबारमें पहुँची, राजाने लोगोंको हटाकर बीचमें परदा डलवा दिया। बहूने आकर नौलखा हार देते हुए राजाको सारा हाल कह सुनाया। राजाने कहा, "मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि बेटीका हार मिल गया। अब तुमको इसके बदलेमें जो माँगना हो माँगो।" सेठजीकी बहूने कहा, "महाराज, मैं चाहती हूँ कि दिवालीके दिन आपके राज्य भरमें कहीं भी रोशनी न हो। कोई भी अपने घर दीपक न जलावे और राज्य भरकी कपास, तेल और मिट्टीके दीपक इकट्ठे कराकर मेरे घर भेज दिये जाँय।" राजाने कहा, "ऐसाही होगा।"

दिवाली नज़दीक आने लगी। राजाको चिन्ता हुई। उसने राज्य भरमें डौंड़ी पिटवादी कि दिवालीकी रातको कोई भी आदमी अपने घरके दीपक न जलावे। राजाने राज्यभरकी कपास, तेल और दीये इकट्ठे करके सेठके घर भिजवा दिए। दिवालीकी रातको सेठका घर असंख्य दीपकोंसे जगमगा उठा। आधी रातके सन्नाटेमें लक्ष्मी सारे राज्यका चक्कर लगा आई, परन्तु उन्हें कहीं भी दीपक टिमटिमाता हुआ नहीं मिला। अन्तमें उन्होंने सेठके जगमगाते हुए घरमें प्रवेश किया। फिर क्या था, उसी क्षण सेठजीकी झौंपड़ीकी जगह सोनेके सतखण्डा महल बन गए। असंख्य धन धान्य, हाथी घोड़े, सब वैभवकी वस्तुएँ इकट्ठी होगईं। सबेरे जब सेठजी की नींद खुली तो उन्होंने अपनेको सोनेके पलंगपर सोते हुए देखा। अनेक दास दासियाँ सेवामें हाज़िर थी। घसीटा नाई जो विपत्ति के समय न जाने कहाँ चला गया था, सेठजीके लिए हुक्का तैयार कररहा था। घोड़ेकी हिनहिनाहट और हाथीकी चिंघाड़से कान फटे जा रहे थे! मुनीम खजानेमें मुहरोंकी तिजोरी देख रहे थे। सेठजीने यह सब हाल देख कर कहा, "क्या मैं सपना देख रहा हूँ?" उसी समय छोटी बहूने आकर कहा, "दद्दाजी, यह सपना नहीं है। आपके आशीर्वादसे और लक्ष्मीजी की कृपासे धन दौलत प्राप्त हुई है।" सेठजीने कहा, "मैं तो और किसी लक्ष्मीको जानता नहीं। मेरे घरकी लक्ष्मी तू ही है। तेरेही भाग्यसे मुझे यह सब मिला है।"

२२

सबरंग दगाबाज़

नौरंग और सबरंग दो भाई थे। नौरंग बड़ा और सबरंग छोटा था। दोनों भाई चोरी और दगाबाज़ीका काम करते थे। इस फ़नमें दोनों होशियार थे। एक बार सलाह करके दोनों भाई रातके समय राजाके घर चोरी करने गये। राजा पलंगपर लेटा हुआ नाईसे पैर मलवारहा था। राजा जिस पलंगपर सोता था उसके चारों पायोंके नीचे चार सोनेकी ईंटें रक्खी थीं। नाई बड़ी राततक राजाके पैर मलता था। जब उसने देखा कि राजा सो गया तब वह धीरेसे उठा और अपने घरको चला आया। इधर मौका ताक सबरंग नाईके बदले पलंगपर जा बैठा और राजाके पैर मलने लगा। उसका भाई नौरंग भी पास ही किवाड़ोंकी ओटमें छिपकर खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद राजाकी नींद खुली। उसने नाईसे कहा, "खवास, कोई किस्सा सुनाओ।"

सबरंगने जवाब दिया, "बहुत अच्छा सरकार सुनिये।"

राजा उनींदा था, कभी सो जाता और कभी बीच-बीचमें जाग उठता था।

सबरंग कहानी कहने लगा,—"नौरंग और सबरंग दो भाई थे। एक बार दोनों भाई राजाके घर चोरी करने गए..."

राजाने कहा,... "हूँ।"

सबरंग बोला, "वे दोनों भाई राजाके दरवाजेपर जाकर खड़े हो गए। देखा तो राजा नाईसे पैर मलवा रहा है..."

राजाने दबी ज़बानसे आँखें बन्द करतेहुए कहा, "हूँ।"

सबरंग कहने लगा, "जब नाई पैर मलते-मलते चला गया तब सबरंग उसकी जगहपर जा बैठा और राजाके पैर मलने लगा। इतनेमें राजा सो गये और सबरंगने पलंगके एक पायेके नीचेकी ईंट निकालकर अपने भाई नौरंगको दे दी...।"

राजाने करवट बदलते हुए कहा, "हूँ।"

राजा समझता था कि नाई कहानी कह रहा है। इधर सबरंगने सचमुचही एक ईंट निकालकर नौरंगको दे दी थी। सबरंग पैर दबाता जाता था और किस्सा कहता था। वह कहने लगा, "फिर सरकार क्या हुआ कि सबरंग फिर पैर दबाने लगा और जब उसने मौका देखा, पलंगके दूसरे पायेकी ईंट निकालकर नौरंगको दे दी..." ऐसा कहते हुये उसने दूसरी ईंट भी नौरंगकी झोलीमें डाल दी। उस समय राजाको कुछ होश आया। वह सोचने लगा कि नाई क्या कह रहा है। ऐसा सोचकर ज्योंही उसने नाईकी ओर देखा त्योंही सबरंग झट कूदकर दरवाजेके बाहर जा खड़ा हुआ। राजा भी तलवार खींचकर दौड़ा। नौरंग भीतर किवाड़की ओटमें खड़ा था। उसने अपने भाईको बाहर जाते देखकर दोनों सोनेकी ईटें भी बाहर फेंक दी, और आप खुद भागने लगा। इतनेमें राजाकी तलवार नौरंगकी गरदन पर पड़ी। सिर कटकर बाहर जा गिरा। सबरंग को दुख तो बहुत हुआ लेकिन सोनेकी ईंट और भाईका कटा हुआ सिर लेकर वह भाग आया। घर आते ही उसने भौजाईको दोनों सोनेकी ईंट दीं और भाईका कटा हुआ सिर चुपचाप उसके आगे रख दिया। पतिकी मृत्युका समाचार सुनकर सबरंगकी भौजाई दहाड़ मारकर रो उठी।

दूसरे दिन सबेरे सबरंग घुटनोंतक नीची रेशमी अचकन पहन, सिरपर गुलाबी रंगका साफा बांध, हाथमें भोपाली बटुवा और रूमाल लिए राजाके दरबारमें जा पहुँचा। आज दरबारमें कल रातकी चोरीकी बड़ी सनसनी थी। सब लोग उसीकी चर्चा कर रहे थे। सबरंग बैठे बैठे सुन रहे थे। कोई कहता था कि चोर बड़ा चालाक है। आँखोंमें धूल झोंकना इसीको कहते हैं। किसीने कहा, "सरकार, चोर बाहरका मालूम होता है। जब वह अपने साथीका सिर ले गया है तब वह आज रातको चितामें उसका सिर डालने भी ज़रूर आवेगा। आप रातको मरघटपर

सख्त पहरा बैठा दीजिए। ज्योंही कोई आदमी आवे, पहरे वाले उसे पकड़ लें।" राजाको यह सलाह पसन्द आई। उसने चोरका धड़ जलानेकेलिए मरघट भेज दिया और रातके लिए चार मुस्तैद सिपाही पहरेपर मुकर्रर कर दिए।

सबरंग सब समाचार लेकर घर आया और स्नान-भोजन करके सो रहा। जब रात हुई, उठा और अपनी भौजाईसे बोला, "भौजी, भैयाका सिर उनकी चितामें डाल आऊँ।" भौजाईने दुःखके साथ सिर रूमालमें बाँधकर दे दिया। सबरंगने फ़कीरका भेष बनाया। हाथमें लम्बा चिमटा लिया। कफ़नी पहनी। गलेमें दरयायी नारियलकी नरेटी टाँगी और एक बड़े आइनेके सामने जा खड़ा हुआ। देखा सब ठाठ ठीक बना है। फिर उसने भौजाईसे दो सेर आटा गूँदनेको कहा। भौजाईने झट आटा निकाल गूँदकर तैयार कर दिया। सबरंगने कटे हुए सिरपर चारों ओरसे आटेकी मोटी तह चिपका दी। अब वह एक गूँदे हुए आटेका बड़ा गोला-सा दिखाई देने लगा।

जब आधी रातका अमल हुआ, सबरंग फ़कीरके भेषमें घरसे निकला। एक हाथमें चिमटा, दूसरेमें आटेका सना हुआ गोला लिए ज़ोर-ज़ोरसे,

'चुन-चुन कंकड़ महल बनाये, लोग कहें घर मेरा है।

ना घर मेरा, ना घर तेरा, दुनिया रैन बसेरा है—'

गाता हुआ मरघटकी ओर चला। मरघटके पास आकर फिर उसने ऊपर लिखी हुई पंक्तियोंको दुहराया। पहरेदारोंने उसे पास आनेसे रोककर कहा, "कौन? इतनी रात गये यहाँ किसलिए आये हो?"

फ़कीरने कहा, "बाबा मैं परदेसी हूँ। सारा दिन शहर घूमते हो गया। मुश्किलसे यह आटा मिला है, परन्तु अब आग ही नहीं मिलती। फ़कीर दिन भरका भूखा है। इधर आग दिखाई दी तो चला आया। मुझे एक टिक्कड़ पका लेने दो।"

सिपाहियोंने कहा, "महाराज, यह मरघट है। मरघटमें कोई खाना पकाता है!" फ़कीर-"बाबा, मेरे लिए जैसा मरघट वैसा घर, सब एकसा है। कहो तो एक टिक्कड़ आगपर डाल दूँ।

सिपाहियोंने उत्तर दिया, "नहीं-नहीं, यहाँ आप चिताके पास नहीं आ सकेंगे। राजा साहबका हुक्म नहीं है। आप शहरमें जाकर टिक्कड़ पका लीजिए वहाँ सब इन्तज़ाम हो जायगा।"

इतना सुनते ही फ़कीरने क्रोध दरशाते हुये हाथका आटेका गोला चिताकी आगमें फेंककर कहा, "लो बाबा, मैं अब इस शहरमें खाना नहीं खाऊँगा। वाहरे शहर! यती-फ़कीरोंकी यहाँ कुछ पूछ ही नहीं! भला हो बाबा तुम्हारा! आज मैं भूखा ही पड़ा रहूँगा और तुम्हें असीस दूँगा।" ऐसा कहता हुआ फ़कीर बड़बड़ाता हुआ लौटकर चला आया।

सिपाही मन ही मन पछताने लगे। बेचारा फ़कीर आटा फेंककर चला गया। यदि हम लोग उसे थोड़ीसी आग दे देते तो वह टिक्कड़ ठोंक खाता। उसके भूखे रहनेका पाप आज हम लोगोंके सिरपर पड़ा।

सबेरा होते ही फिर सबरंग अपनी वही दरबारी पोशाक, रेशमी अचकन और गुलाबी साफ़ा पहिन, हाथमें भोपाली बटुआ और रूमाल ले, दरबारमें जा पहुँचा। रोजकी नाईं बस्तीके महाजन, मन्त्री, कारिंदा कामदार सब जुड़े। राजा साहबके आनेपर मरघटके सब पहरेदार बुलाये गये। राजाने सिपाहियोंसे पूछा, "मरघटका क्या हाल है? रातको अपने साथीका सिर चितामें फेंकने चोर तो नहीं आया था।"

सिपाहियोंने कहा, "नहीं सरकार, हम लोगोंके सामने चोर आ कैसे सकता है। चोरकी हिम्मत ही कितनी! एक बच्चा भी जागता हो तो वह सामने नहीं आता। फिर हम तो सरकारके बहादुर सिपाही ठहरे। रात भर हाथमें नंगी तलवारें लिए जागते रहे। यदि चोर सामने आता तो उसका उसी समय धड़से सिर अलग कर दिया जाता।"

राजाको सिपाहियोंकी बातपर भरोसा नहीं हुआ। वह जानता था कि चोर बड़ा ही चालाक है। वह मेरी आँखोंमें धूल झोंककर मेरे सामनेसे सोनेकी ईंटें ले गया। यह काम मामूली चोरका नहीं है। वह जरूर रातको आया होगा। ऐसा सोच उसने फिर सिपाहियोंसे पूछा, "अच्छा तो रातको कोई भी आदमी चिताके पास नहीं गया!"

सिपाहियोंने कहा, "सरकार, आधी रात गए एक फ़कीर आया था। वह हाथमें आटेका सना हुआ एक गोला लिए हुए था। कहता था कि

हमें इस आगमें टिक्कड़ पका लेने दो। परन्तु हम लोगोंने उसे चिताके पास तक नहीं फटकने दिया। वह भूखा था। गुस्सेमें आकर उसने आटेका गोला चिताकी आगमें फेंक दिया और बड़बड़ाता हुआ शहरकी ओर चला गया।"

राजाने गुस्सेसे कहा, "अरे कमबख्तो! वही तो था तुम्हारा दादा सबरंग दगाबाज़। वह तुम लोगोंको उल्लू बनाकर अपना काम कर गया और तुम ऊँघते ही रहे। इतने पर भी ऊपरसे बहादुरी बघारते हो।"

राजाकी कचहरीमें आज फिर सबरंगकी चर्चा होती रही। आखिर लोगोंने यही सोचा कि जब वह अपने साथीका सिर चितामें डाल गया है तब वह उसकी राखी (भस्म) सिराने भी आयगा। फिर दूसरे अच्छे सिपाहियोंको पहरेपर मुकर्रर करना चाहिए।

राजाने कहा, "जो सिपाही आज रातको मरघटकी रखवाली करेंगे और सबरंगको भस्म न उठाने देंगे या उसे गिरफ़्तार करेंगे, उन्हें सौ रुपया इनाम दिया जायगा। बोलो, कौन इस कामके करनेका बीड़ा उठाता है?"

उसी समय चार सिपाही उठ खड़े हुए और राजाको झुककर सलाम करके कहने लगे, "सरकार, आज रातको हम लोग पहरा देंगे। देखें, सबरंग दगाबाज़ कैसा है। लोगोंके सामने आज उसका सबरंग फीका पड़ जायगा।"

राजाने सिपाहियोंको पानका बीड़ा दिया। दरबार बरखास्त हुआ। सब लोग अपने-अपने घर चले गये। सबरंग भी सब समाचार लेकर लौट आया। उसने स्नान करके रोटी खाई और सो रहा। सोते-सोते जब रात हुई तब वह जागा और अपनी भौजाईसे कहने लगा, "भौजी, आज भैयाकी भस्म सिरानी है। थोड़ी देरके लिए तुम अपनी पहननेकी साड़ी और गहने दे दो।"

सबरंगकी भौजाईने अपनी पेटी खोलकर एक कीमती साड़ी, जरीकी चोली और सब गहने दे दिये। सबरंगने सोलह शृंगार करके, बारह आभूषण पहनकर और माँगमें मोती गुहकर स्त्रीका भेस बना लिया। जब आधी रात हुई तब वह पूजनका सामान और पानीका लोटा लेकर मरघटकी ओर चला।

सिपाहियोंने दूरसे देखा कि एक बहुत खूबसूरत स्त्री, जो देखनेमें किसी भले घरकी बहू मालूम होती है, अपने रूपको चाँदनीकी भाँति छिटकाती मंद चालसे चली आरही है। जब वह पास आ गई और चिताकी ओर जाने लगी तो सिपाहियोंने उसे रोककर कहा, "बाई, तुम कौन हो? इतनी रातको मरघटमें क्यों आई हो? यह चिता है। इसके पास किसीको जानेका हुक्म नहीं है। उससे दूर रहो। अगर एक कदम भी आगे बढ़ाया तो हम मुलाहजा छोड़कर पीछे हटा देंगे।"

स्त्रीने घूँघटको कुछ ऊँचा करके सिपाहियोंकी ओर एक तीखी निगाह फेंकते हुए कहा, "मैं इसी नगरके धनपत सेठकी बहू हूँ। वह जो आगे पीपलका पेड़ है, उसके नीचे ब्रह्मदेवकी पूजा करने जाया करती हूँ। साल भरका नियम है और इसी रास्ते रोज़ आना-जाना होता है। मुझे निकल जाने दो। छेड़छाड़ न करो। मैं किसी तरह मानूँगी नहीं।'

ऐसा कहकर वह आगे बढ़ी। सिपाहियोंने बीचमें आकर रास्ता रोक लिया। स्त्री आगे बढ़ती थी, सिपाही उसे आगे ढकेलते थे। इसी खींचा-तानीमें उसकी गलेकी मोतियोंकी माला टूट गई और मोती बिखर कर चिताकी राखमें जा गिरे। स्त्री चिल्ला उठी, "अरे दुष्टो, तुमने यह मेरी लाखोंकी माला तोड़ डाली! सब मोती बिखर गये। अपने ससुरसे कहकर तुमको इसका मज़ा चखाऊँगी। एक-एकसे सात-सात साल चक्की पिसवाकर न छोड़ूँ तो कहना।"

सिपाही धनपत सेठको जानते थे। वह बस्तीका बड़ा आदमी था। राजासे उसकी गहरी दोस्ती थी। सिपाही डर गये। वे मनमें सोचने लगे कि हम लोगोंकी गलतीसे सेठका लाखोंका नुकसान हो गया। राजा सच-मुच दंड दिये बिना न रहेगा। इसलिए उन्होंने नरम होकर पूछा, "बाई, तुम्हारा मोतियोंका हार टूट गया, इसका हम सबको दुःख है। जो तुम सेठजीसे हम लोगोंकी शिकायत न करो तो हम तुम्हारे मोती बीन दें।"

स्त्रीने कहा, "मोती राखमें मिल गये हैं। चिताकी सब राख धोये बिना सब मोती नहीं निकल सकते। इस राखको टोकनियोंमें भरकर नदी पर ले चलो। हमारा माल मिल जाय तो किसीसे कुछ न कहेंगे..."

एक सिपाही बस्तीको दौड़ता हुआ गया और चार टोकनियाँ ले आया। उन टोकनियोंमें चिताकी सब राख भरकर वे नदी पर ले गये। नदीमें राख धोई गई। राख-राख बह गई। टोकनियोंमें केवल हड्डियाँ और मोती रह गये। सिपाहियोंने मोती बीन-बीन कर स्त्रीको दे दिये। स्त्री घर लौट आई।

सबेरे दरबार भरा। सबरंग चूकने वाले नहीं थे। वह भी आ डटे। राजाने सिपाहियोंसे रातका हाल पूछा। सिपाहियोंने डरते-डरते सेठकी बहूके आने और उसकी मोतियोंकी माला टूटनेकी सब कहानी कह सुनाई। सुनकर राजा बोला, तुम लोग भी पूरे भोंदू ही निकले। जिसे तुम सेठकी बहू समझ बैठे, वही तो सबरंग था। उसने तुम्हारे सिरों पर राखीकी टोंकनियाँ रखवाईं और तुम्हारे ही हाथोंसे उसे सिरवाया। लानत है तुमको!"

दरबारमें सन्नाटा छा गया। थोड़ी देर बाद लोगोंने कहा, "जिसने भस्म सिराई है, वह फूल (हड्डियाँ) भी सिरावेगा। अब भी मौक़ा है। आज रातको अच्छी तरहसे इन्तज़ाम होना चाहिए।" राजाके हुक्मसे फूल एक कपड़ेमें बाँधकर पीपलकी डालसे बँधवा दिये गये और रातकी रखवालीके लिये एक हज़ार रुपया इनाम बोला गया।

संध्याके समय सबरंग बाजारसे एक नैनसुखका थान खरीद लाया। थानको सारे शरीरमें लपेटा और मुँहपर कोयला पोत लिया। हाथमें तेल की डूबी हुई मसाल ली और जेबमें दियासलाईकी डिब्बी रखली। इतनी तैयारी करके दिन डूबनेके पहले लोगोंकी आँख बचाकर पीपलपर जा चढ़ा और पत्तोंकी ओटमें छिपकर बैठ गया। इतनेमें रात होगई।

रात होते ही पहरेवाले भी आकर डट गए और नंगी तलवारें लेकर घूमने लगे। आजके पहरेदार मियाँ लोग थे। वे आपसमें बहादुरी बघारने लगे, "अजी, यह काम हर कोई नहीं कर सकता। हम लोग पठान हैं पठान! देखें, सबरंग कैसा है! आज हम उसे कच्चा ही चबा जायेंगे।

आधी रातके समय चाँदनीका उजेला फैला। पहरेवाले एक सिपाही को पीपलपर कुछ सफेद-सफेद-सा दिखाई दिया। उसने दूसरेको बताया।

दूसरेने तीसरेको चारों सिपाही उसकी ओर निहार--निहारकर देखने लगे। यह क्या बला है। बारीकीसे देखनेपर वह चीज हिलती-डुलती-सी मालूम पड़ी। हाथ पाँव-सिर भी दीखे। वे लोग डरकर कहने लगे, "बाप रे बाप, ऊपरसे नीचेतक सफेद ही सफेद! मालूम होता है कोई भूत है।" चारों सिपाहियोंके छक्के छूट गए। वे चबूतरेसे कूदकर नीचे जा खड़े हुए। परन्तु उनकी नज़र उसी ओर थी। थोडी देरमें भूतने आग जलाई। उजालेमें उसका काला भयानक चेहरा साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा। सिपाही चार कदम और पीछे हट गए। भूत नीचेको उतरने लगा। सिपाही थोड़े और पीछे हट गए। कुछ देर बाद प्रेतने हाथकी मसाल घुमाकर एक सिपाहीके सिरपर मारी। उसकी दाढ़ी जलते-जलते बची। चारों सिपाही अपनी-अपनी जान लेकर भागे।

मैदान साफ देखकर सबरंग फूलोंकी पोटली लेकर घर आया। सवेरे फिर दरबार भरा। सिपाहियोंने आकर राजाको सलामकरते हुए कहा, "गरीब परवर, आज मुश्किलसे हम लोगोंकी जान बची। उस पीपलके पेड़पर बड़ा गजबका भूत रहता है। कल अगर कोई और पहरेदार होते तो वहीं मर गए होते। मगर सरकार, हम लोग तो बहादुर पठान ठहरे! प्रेतके डरसे हमारे छक्के तो जरूर छूटे, मगर हम सब बहादुरीके साथ भागकर घर आगए। सरकार, उसकी दहसतसे हम लोगोंकी छाती अबतक धड़कती है।"

राजाके पूछनेपर सिपाहियोंने सब हाल पूरा-पूरा कह सुनाया; सबको भरोसा हो गया कि वह भूत और कोई नहीं सबरंग ही था और वह अपना काम कर ले गया। पीपलपर दिखवाया तो फूलोंकी पोटली नहीं थी।

आज सोचा गया कि वह नदीमें फूल सिराने अवश्य जायगा। नदीके घाटों-घाटोंपर पहरा बिठाना चाहिए! राजाने सबरंगको पकड़नेकेलिए पाँच हज़ारका इनाम बोला। लाखा बंजारेने खड़े होकर कहा, "सरकार आजकी रखवाली मैं अपने सिर लेता हूँ। मेरा बंजारा नदीके किनारे कई कोसकी दूरी तक पड़ा हुआ है। सबरंग फूल सिराने आवेगा तो हम लोग उसे जरूर पकड़ लेंगे।" सबकी रायसे बंजारेको रखवालीका काम सौंपा गया।

सबरंग साधुका वेश बनाकर और जटाओंमें फूलोंकी पोटली छिपाकर चार बजे रातको राम-नाम जपता हुआ नदीके किनारे जा पहुँचा। बंजारे के नौकर-चाकरोंने अपने मालिकको खबर दी। मालिक मौकेपर आया। देखा, एक साधु स्नान करने आया है। फिर भी उसने सोचा, पास चलकर देखना चाहिए। कोई चालाक होगा तो मालूम पड़ जायगा।

सबरंग स्नान करने लगा, डुबकी लगाई, जटा फटकारी। फूलोंकी पोटली नदीमें जा गिरी। यों अपना काम करके राम-नामकी झड़ लगाते हुए वह किनारेपर आ गया और लंगोटी बदलने लगा। साधुकी लम्बी जटा देखकर बंजारेने हाथ जोड़कर कहा, "गुरूजी, आपके ये बाल इतने बड़े कैसे होगये? इस सेवकको भी इसकी कुछ हिकमत बतलानेकी दया कीजिये। हम लोगोंको भी बाल बढ़ानेका शौक है।"

साधुने कहा, "बच्चे, जंगली जड़ी-बूटियोंकी करामात है। बूटियोंके तेलसे एड़ी तक बाल बढ़ाए जा सकते हैं।"

बहुत खुशामद की जानेपर सबरंगने एक शीशी निकाली। वह एक तरहके तेलकी शीशी अपने बालोंमें रख लाया था। उसने कहा, "यह बूटियोंका तेल है। जिसे अपने बाल बढ़ाना हों, मेरे पास आओ।" इतना सुनतेही पन्द्रह बीस आदमी आगये। सब अपना-अपना सिर सबरंगके आगे करते हुए कहने लगे, "पहले मेरे सिरमें डालिये।" दो-दो, चार-चार बूंदें सबके सिरमें डालकर सबरंगने कहा, "अपने हाथोंसे खूब मलो और फिर नदीमें गोता लगाओ। जो जितनी देर तक नदीमें डूबा रहेगा उसके उतने ही बड़े बाल होंगे।" सबने ऐसा ही किया। इधर मौका पाकर सबरंग अपने घर भाग आया।

थोड़ी देरमें लोगोंके सिरोंमें जलन पैदा हुई। पानीसे बाहर निकलने पर उन्होंने देखा कि सबके सिर सूज गए हैं। सूरत भी नहीं पहचानी जाती।

उन्हें भरोसा हो गया कि यह सबरंगकी ही शरारत है। सवेरे सब लोग कचहरीमें जुड़े। बंजारे बिचारे अजीब-सी सूरत लिए दरबारमें पहुँचे। उनका ऐसा हाल देख सब लोग हँसने लगे। समझ गए कि सबरंगसे इनकी भेंट हो गई बंजारेने सब हाल कह सुनाया।

अब लोगोंको पूरा भरोसा हो गया कि सबरंग बड़ा चालाक आदमी है। उससे पेश पाना कठिन है। राजा भी निराश हो चुका था, परन्तु तो भी उसने सबरंगके पकड़नेवालोंको इसबार दस हज़ार रुपया इनाम देना मन्जूर किया।

उस नगरमें एक चतुर नाइन रहती थी। उसने आकर राजासे कहा, "सरकार, सुना है सबरंग बड़ा चालाक आदमी है। जिस कामका रोको वह उसीको कर दिखाता है। आप मुझे एक ऊँट दीजिए। मैं उसीके पीछे-पीछे फिरूँगी। इस ऊँटको सबरंग चुरा लेगा तो मैं उसे चालाकों समझूँगी।"

राजाने नाइनको एक ऊँट दे दिया। वह उसे लेकर नगरकी गलियों में फिरने लगी। ऊँट आगे आगे जाता था और वह उसके कुछ पीछे रहा करती थी। सबरंगने अपने आँगनमें एक गहरा गडढा खोद लिया था। उसका घर रास्तेके मोड़पर था। एक दिन ज्योंही ऊँट उसके दरवाजे परसे निकला, उसने उसकी नकेल पकड़ झट अपने घरके भीतर कर लिया और दरवाजा बन्द करके उसे गडढेमें पटक दिया और मिट्टी से भरकर गडढा एकसार कर दिया।

नाइन रास्तेकी मोड़पर आई और सामने दूर तक ऊँट दिखाई नहीं दिया तब वह घबरायी और इधर-उधर दौड़कर उसे ढूँढ़ने लगी। परन्तु जब ऊँट नहीं मिला तो उसने राजाके पास जाकर चोरीका हाल सुनाया। उसने कहा, "सरकार, अभी मैं हिम्मत नहीं हारी हूँ। मैं उनका पता लगा कर ही छोड़ूँगी। मुझे दो सौ रुपया और दीजिये।" राजाने रुपये दे दिये।

अब नाइन घर-घर जाकर स्त्रियोंके पैर दबाने, नाखून काटने व महावर लगानेके बहाने ऊँटकी चोरीका पता लगाने लगी। शहर बड़ा था। महीनों बीत गये। एक दिन भाग्यसे सबरंग घर नहीं था उसी समय वह उसके घर पहुँची। सबरंगकी भौजाईके पैर दबाती हुई बोली, "क्या करूँ जीजी, मैं एक बड़ी आफतमें फँसी हूँ। मेरे घरके आदमी छः महीनेसे बीमार हैं। हज़ारों दवा कर छोड़ी, पर किसीसे आराम नहीं हुआ। अभी लाहौरसे हकीम जी आये थे। उन्होंने एक दवा बतलाई है, मगर वह मिलती ही नहीं। है तो छोटी चीज, पर इस समय मिल जाय तो मैं दो सौ रुपये उसकेलिए खर्च कर सकती हूँ।

सबरंगकी भौजाईने पूछा, "ऐसी कौन सी चीज है! भला, मुझे भी तो उसका नाम बतलाओ। मेरे घर होगी तो खुशीसे ले जाना।"

नाइनने कहा, "जीजी, वह तुम्हारे घर कहाँसे आई! मुझे थोड़ी-सी ऊँटकी हड्डी चाहिए। मिल जाय तो तुम्हारे खवासका जी दो दिनमें चंगा हो जाय।"

सबरंगकी भौजाईने दो सौ रुपयेके लोभमें आकर कहा, "बहिन, तुम नाहक चिन्तामें क्यों पड़ी हो? तुम जितनी ऊँटकी हड्डी चाहो उतनी दे सकती हूँ।" इतना सुनते ही नाइनने दो सौ रुपये बटुयेमें से निकालकर दे दिये। सबरंगकी भौजाईने कहा, "अभी रुपये लेती जाओ। दो घण्टे बाद आना और हड्डी ले जाना। तब तक मैं ढूँढ़कर रखूंगी।"

नाइनने कहा, "रुपये तुम अपने पासही रहने दो। मैं दो घण्टे पीछे आकर हड्डी ले जाऊँगी।" इतना कहकर नाइन बाहर आई, और घरको पहचाननेकेलिए दरवाजेपर महावरका एक निशान लगाकर खुश होती हुई राजाके दरबारमें पहुँची। कहने लगी, "सरकार, चोरका पता लग गया। फौरन सिपाही लेकर मेरे साथ चलिए।" दोपहरका समय था। राजा भोजन कर रहे थे। उन्होंने सिपाहियोंको बुलाकर तैयार होनेकी आज्ञा दी।

इधर दोपहरको जब सबरंग घर आया और उसने दरवाजेपर महावर का निशान लगा देखा तो उसे शक हो गया कि कुछ दालमें काला अवश्य है।

उसने भौजाईसे पूछा। पहले तो उसने कुछ नहीं कहा, परन्तु सबरंग के बारम्बार पूछनेपर उसने दो सौ रुपयेमें ऊँटकी हड्डी देनेका हाल सुना दिया। सबरंग उसी समय फ़कीरका वेश बनाकर निकला और शहर भरमें फेरी लगाता हुआ घर-घर एक-एक महावरका निशान लगा आया। सबके घर पर तो एक-एक, परन्तु राजाके महलपर दो निशान लगाये। इतना काम करके वह घर लौट आया।

राजा भोजन करके बाहर निकला। सिपाही तैयार थे। नाइनसे पूछा, "चोरका घर कहाँ है?" नाइनने कहा, "सरकार, मैं उसके दरवाजेपर महावरका निशान लगा आई हूँ।" राजाने अपने ही दरवाजेपर दो निशान देखकर नाइनसे कहा, "हरामज़ादी, क्या मैं ही चोर हूँ। मेरे घरपर ही ये

निशान लगे हैं।" नाइन घबरा गई। इसके बाद उसने जाकर देखा तो घर-घर महावरके निशान लगे थे। नाइन चोरका घर नहीं पहचान सकी।

दूसरे दिन मन्त्रियोंने सलाह करके राजासे कहा, "गरीब परवर एक उपाय और है। उससे काम लिया जाय तो शायद सबरंग पकड़ा जाय। आप नगरभरका निमन्त्रण कर दीजिये। भोजनके समय बाहर दालानके आलेमें दो लाल रख दिए जाँय। सबरंग भोजन करने आयगा और लाल चुराये बिना न रहेगा। जब लोग भोजन करने लगें तो बाहर इन्तज़ाम कर दिया जाय कि कोई आदमी अपनी तलाशी दिये बिना बाहर न जाय। बस, चोर पकड़ लिया जायगा।" राजाको यह युक्ति पसन्द आई।

दूसरे दिन नगर भरमें नेवता भेज दिया गया। नगरके सब स्त्री--पुरुष, बूढ़े--बालक, अमीर--गरीब राजाके घर भोजन करने आये। सबरंग भी कोढ़ीका वेश बनाकर आया। उसके अंग-अंगपर मक्खियाँ भिन-भिना रही थीं। वह भीतर आया और पत्तल डालकर बैठ गया। लेकिन लोगोंने उसे वहाँसे भगा दिया। वह पीछेको हटने लगा। जहाँ वह बैठना चाहता था, वहींसे लोग उसे भगा देते थे। धीरे-धीरे वह उस जगह पर आगया जहाँ लाल रक्खे हुए थे। उसने आँख बचाकर दोनों लाल अपनी गुदड़ीमें छिपा लिये और पास ही पत्तल डालकर बैठ गया। लोग आते-जाते थे और उसे दूर हटाते जाते थे। धीरे-धीरे वह फर्शपर हटा दिया गया। कुछ समय बाद फर्शपर भी लोग बैठने लगे। भंगी--चमार कोई भी उसे अपने पास नहीं बैठने देता था। लोगोंने सिपाहियोंसे कहकर उसे सबसे आखीरमें दूर बैठा दिया। सबरंग यह कहकर वहाँसे चला आया कि मैं ऐसी जगहपर नहीं बैठूँगा। घर आकर उसने लाल सन्दूकमें रक्खे और अच्छी पोशाक पहनकर दावतमें जा शामिल हुआ। भोजन परोसा जाने लगा। इधर सिपाहियोंने बाहरके सब रास्ते बन्द करके केवल एक रास्ता रक्खा। भोजन करके लोग उठे और तलाशी दे देकर जाने लगे। सब लोग निकल गये, परन्तु न चोर मिला, न लाल।

हैरानी दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी। दूसरे दिन राजाकी कचहरी में लोग फिर जमा हुये। राजाने कहा, "हम लोग सब उपाय करके थक

गये । अब एक उपाय और है । उसे मैं खुद आज़मा कर देखता हूँ ।" ऐसा कह कर राजाने अपने महलके सामनेकी सड़कपर रुपये बिछवा दिये । पहरेपर हथियारबन्द सिपाही खड़े किये गये । उनको हुक्म दिया गया कि जो कोई आदमी रुपया उठानेको झुके उसे गोली मार दो । बस्तीमें मनादी पिटवा दी गई कि सब लोग रोजकी तरह उस रास्ते निकलें तो, पर नीचेको झुकें नहीं और न सड़कपरसे कोई चीज़ ही उठावें । जो कोई चलते समय नीचेको झुकेगा वह गोलीसे उड़ा दिया जायगा ।

मनादी सुनकर सबरंगने अपनी पोशाक पहनी और जूतोंके तलोंमें गोंद लगाकर सड़कपर चर्र-मर्र जूता करतेहुए इधर-से-उधर-निकलना शुरू कर दिया । रुपयोंके ऊपर होकर निकलता और दूर जा कर जूतोंके तलेसे रुपये निकालकर जेबमें रख लेता । हरबार दस-पाँच रुपये चिपक आते थे । सबरंग दिनमें कई बार पोशाक बदल कर उस सड़कपर घूमा । राजा महलपर बैठे अपनी आँखोंसे देख रहे थे । लोग सड़कपरसे आते-जाते थे, परन्तु कोई नीचेको नहीं झुकता था । धीरे-धीरे शाम होनेको आई । राजाके हुक्मसे रुपये इकट्ठे करके गिने गये, तो बहुत कम निकले । राजा दाँतों तले उंगली दबाकर रह गया ।

राजाने दूसरे दिन नगरमें फिर मनादी पिटवाई । कहा कि मैं सबरंगकी चालाकीसे खुश हूँ । उसे आजतक कोई नहीं पकड़ सका और ऐसी उम्मीद है कि आगे भी कोई उसे नहीं पकड़ सकेगा । इसलिये अब उसे स्वयं ही यहाँ आजाना चाहिये । वह ज्योंही कचहरीमें हाज़िर होगा, मैं उसे आधा राज्य दे दूँगा ।

दूसरे दिन राजाके दरबारमें भारी भीड़ इकट्ठी हुई । सब लोग सबरंगको देखनेकेलिये व्याकुल थे । सबरंग हमेशाकी तरह दरबारमें गया । जब सब लोग जुड़ गये तब उसने राजाको प्रणाम करके कहा, "सरकार, मैं ही आपका सेवक सबरंग हूँ । मैने ही ये सब काम किये हैं ।" सब लोग आश्चर्यसे उसकी ओर देखने लगे । राजाने आदरकेसाथ उसे अपने पास एक ऊँचे आसनपर बिठा लिया । उस दिनसे सबरंग आधे राज्यका मालिक हो गया ।

२३

तीसमारखाँ

किसी नगरमें एक कोरी रहता था। कपड़े बुनता और अपनी गुज़र चलाता। एक दिन कपड़ा बुनते समय करघेपर बैठे बैठे उसने गुड़ खाया। गुड़ खाते ही उसे नींद आ गई। धीरे-धीरे उसके मुँह पर बहुत सी मक्खियाँ जुड़ आईं और एक मक्खीने ज़ोरसे डंक मारा। कोरी जाग उठा और गुस्सेमें उसने अपने दोनों हाथ इतने ज़ोरसे मुँहपर मारे कि तीस मक्खियाँ नीचे आ गिरीं। उन्हें देखकर कोरी प्रसन्न हुआ। सोचने लगा कि अभी तक मैं अपनेको निरा कोरी ही समझता था। आज भेद खुला। मैं तो एक बहादुर आदमी हूँ। एक हाथमें तीस मक्खियाँ !!

कोरीकी छाती फूल आई। स्त्रीको पुकार कर उसने कहा, "सुनती है, देख मेरी बहादुरी! एक ही हाथमें तीसका ढेर कर दिया!!"

स्त्री आई। कोरीने फिर कहा, "खबरदार, जो अब मुझे कोरी-भोरी कहा! आजसे मेरा नाम तीसमारखाँ हुआ। समझी? अब मैं यह कोरियोंका काम न करूँगा। राजाके यहाँ जाता हूँ। कोई ओहदा लूँगा।"

कहकर तीसमारखाँ मूँछोंपर ताव देता, ऐंठता, राजाके दरबार जा पहुँचा। बोला, "सरकार, मेरा नाम तीसमारखाँ है। अभी-अभी एक हाथमें तीस मार आया हूँ। अपनी ड्योढ़ी पर मुझे रख लीजिए और अभी तो क्या, जब कोई बहादुरीका काम पड़े, मुझे आजमायिये।"

दरबार भरमें सन्नाटा छा गया। एक हाथमें तीस!! बाप रे बाप! बड़ा बहादुर है! तभी तो नाम है तीसमारखाँ!

सब लोग उसकी ओर आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। राजाको तो बहादुर आदमियोंकी ज़रूरत थी ही। उसे लाख टका रोज़पर नौकर रख

लिया गया। अब क्या था। तीसमारखाँके दिन मौजसे कटने लगे। रहने केलिए बँगला, खानेके लिये बढ़िया खाना। लेकिन राजाने एक शर्त ठहरा ली थी। जो काम और किसीसे न होगा, उसे तीसमारखाँ करेगा।

धीरे-धीरे बहुत दिन बीत गये। एक रोज़ नगरमें एक शेर आ गया। चारों ओर शोर मच गया। शेर बस्तीमें आता और चुपचाप किसी-न किसीको उठा ले जाता। शेरके इस उपद्रवसे लोगोंकी जान मुश्किलमें आ गई। बड़े-बड़े शिकारी हार गये, लेकिन शेर हाथ न आता था।

आखिर लोगोंने जाकर राजाको सारा हाल कह सुनाया। कहा, "सरकार, मौका है, तीसमारखाँकी परीक्षा होनी चाहिए।"

राजाने उसी समय तीसमारखाँको बुलाया। कहा, "लो देखो, शेरके मारे सारा नगर परेशान है। हर रोज़ किसी न किसीको खा जाता है। शिकारी हार चुके हैं। सो अब तुम्हारी बारी है। कलतक उसे मारकर हाज़िर करो। एक हज़ार का इनाम और मिलेगा।"

तीसमारखाँ 'बहुत अच्छा' कहकर चला तो आया; लेकिन उसके पेटमें खलबली पड़ गई। शेरको मारना तो दूर, उसकी शकल भी उसने आज तक न देखी थी। मारे मुश्किलके तीसमारखाँ का अजीब हाल होगया।

जब उसकी स्त्रीको यह बात मालूम हुई तो वह भी सोचमें पड़ गई। अन्तमें दोनोंने मिलकर तै किया कि रातको एक गदहेपर सामान लाद कर वहाँसे भाग चलना चाहिए। नहीं तो सुबह पोल खुल जायगी और फाँसीके तख्तेपर लटकना होगा।

रात हुई। खूब बादल छाये हुए थे। अंधेरा इतना गहरा था कि हाथ-से-हाथ न सूझता था। थोड़ी-थोड़ी बूँदें भी गिर रही थीं। आधी रातके समय तीसमारखाँ बस्तीका कोई छूटा हुआ गदहा पकड़नेकेलिये घरसे निकला। नदीके किनारे पहुँचकर उसे एक जानवर खड़ा दिखाई दिया। उसने समझा गदहा ही होगा। अँधेरेमें साफ़ देख न सका और उसका कान पकड़ कर घर ले आया।

स्त्रीने उसे देखकर कहा, "जानवर कुछ तेज़ मालूम होता है। ज़रा मज़बूत रस्सीसे बाँधना।"

तीसमारखाँने उसे कसकर बाँध दिया और अन्दर आकर सो रहा। सोचा कि अभी तो बहुत रात है। थोड़ी देर बाद चलेंगे। लेकिन घण्टे भर बाद ही तीसमारखाँको शेरकी दहाड़ सुन पड़ी। सारा बंगला हिल उठा। तीसमारखाँ उछलकर पलंगकेनीचे छिप गया। डरके मारे उसके होश उड़ गये। लेकिन तभी वह समझा कि जिस जानवरको वह गदहा समझ कर पकड़ लाया है, वह शेर है। तीसमारखाँ मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुआ। चलो, भगवानने उसकी लाज रख ली। अब उन्हें भागनेकी ज़रूरत नहीं।

दिन निकलते-निकलते सारे नगरमें शोर मच गया कि तीसमारखाँके घर ज़िन्दा शेर बँधा पड़ा है। सैकड़ों लोग उसे देखनेकेलिए जमा हो गये। राज-दरबारतक भी खबर पहुँची। राजा बहुत खुश हुआ। सोचने लगा कि सचमुच तीसमारखाँ बड़ा बहादुर आदमी है। शेरको ज़िन्दा पकड़ लाया।

तीसमारखाँको हज़ार रुपये इनाममें मिले और उसका नाम चारों ओर फैल गया।

कुछ दिनों बाद राजाने तीसमारखाँको बुलाकर कहा कि भरईके जंगलमें कुछ शेरोंका पता चला है। उनका शिकार करने चलना है। घुड़सालसे तुम अपनी पसन्दका घोड़ा ले लो। तीसमारखाँ घुड़सालमें गया और वहाँ उसने एक दुबले-पतले घोड़े को जो, तीन पाँवसे खड़ा था, पसन्द किया। उसने सोचा कि यह घोड़ा लँगड़ा है, इससे तेज़ नहीं चल सकेगा और उसके गिरने की सम्भावना कम रहेगी, और वैसे भी वह घोड़ेके धीरे-धीरे चलनेकी वजहसे शिकारियोंके पीछे पड़ जायगा।

तीसमारखाँने तो वह घोड़ा सबसे कमज़ोर और लँगड़ा समझकर लिया था; परन्तु बात कुछ और ही थी। वास्तवमें वह घोड़ा राजाके सभी घोड़ोंसे तेज़ था।

सब शिकारी अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर चले। तीसमारखाँने भी अपने घोड़ेको एड़ लगाई। घोड़ा हवासे बातें करने लगा और ज़रासी देरमें सब शिकारियोंको पीछे छोड़कर आगे निकल गया। तीसमारखाँ के प्राण निकले जा रहे थे। वह घोड़े की पीठसे चिपट गया। बार-बार

उसे मालूम होता था कि अब गिरा, अब गिरा; और घोड़ा रुकने का नाम न लेता था। बेचारेकी अक्ल हैरान थी। किसी तरह घोड़ा भागते-भागते जंगलमें जा पहुँचा। वहाँ उसकी चाल धीमी हुई। तीसमारखाँ की जान में जान आई। वह सँभलकर बैठ गया। लेकिन उसके मनमें यह डर बराबर लगा हुआ था कि कहीं वह फिर न दौड़ने लगे। सब लोग काफ़ी पीछे छूटगये थे और दूर-दूर तक कोई भी दिखाई न देता था, उस समय उसे एक तरकीब सूझी। वह घोड़ेसे कूद पड़ा और एक पेड़पर चढ़ गया। इतनेमें दहाड़ मारता शेर उधर आता हुआ उसे दिखाई दिया। तीसमारखाँ की देह काटो तो खून नहीं। वह थर-थर काँपता था। शेरने फिर गर्जना की। डरके मारे तीसमारखाँके हाथसे भाला छूट पड़ा और संयोग की बात कि वह शेरके माथेपर जाकर गिरा। शेर वहीं ढेर हो गया।

तीसमारखाँ को बड़ी खुशी हुई। वह झट पेड़से उतर सीधा राजाकी तलाशमें चला। रास्तेमें राजा साहब मिल गये। तीसमारखाँने खुशीसे उछल कर कहा, "लीजिये महाराज, आप अभी यहीं हैं और मैं एक शेर मार आया।"

सब शिकारियोंने जाकर देखा। सचमुच शेर मरा पड़ा था। तीसमारखाँकी बहादुरीका सिक्का सब लोगोंपर ऐसा जम गया कि हर कोई कहता---'गज़ब का बहादुर है यह आदमी। जैसा नाम वैसा गुण!'

तीसमारखाँ की हर जगह पूछ होने लगी। जहाँ जाता, सम्मान पाता। ऊँचे-से-ऊँचे ओहदेदार उसे बराबर बिठाते थे। राजाका तो वह दाहिना हाथ ही बन गया।

तीसमारखाँ का नाम जब और-और राज्योंमें भी पहुँचा तो एक दूसरे राजाने इस राजाको सन्देशा भेजा कि अपने बहादुरोंके सिरताज तीसमारखाँको मुझे दे दो, या फिर मुझसे युद्ध करो। लेकिन राजा ऐसे बहादुर आदमीको कैसे छोड़ सकता था? उसने इनकार कर दिया। नतीज़ा यह हुआ कि वह राजा अपनी फ़ौज लेकर चढ़ आया। बेचारा यह राजा संकटमें पड़ गया। शत्रुका मुकाबला करनेकेलिये उसके पास काफ़ी फ़ौज न थी। हारकर वह तीसमारखाँकी शरण पहुँचा। कहा—

"मुझे शत्रुसे बचाओ। मेरे पास फ़ौज बहुत कम है और जो हैं वह शत्रुसे लड़ने योग्य नहीं हैं। राज्यकी लाज तुम्हारे ही हाथ है।"

तीसमारखाँने सोचा कि अब संकट आगया। अब तक तो जैसे-तैसे उसकी चल गई; लेकिन अब तो लड़ाईके मैदानमें सिर कटे बिना न रहेगा। भला ताने-बाने बुननेवाला कोरी मैं हथियार चलाना क्या जानूँ!

थोड़ी देरके सोच-विचारके बाद उसने तै किया कि नगर छोड़कर उसे भाग जाना चाहिये। इसीमें खैर है। सो उसने राजासे कहा— महाराज, आप घबरायें नहीं, शत्रुकी सारी फौजकेलिये मैं अकेला काफ़ी हूँ। (उसने सोचा साथमें और आदमी होंगे तो भागनेमें दिक़्क़त होगी)। आप मेरे पास दो घोड़े और हथियार भिजवा दीजिये। मैं रातमें ही दुश्मनोंको मार गिरा आऊँगा। आप बेफ़िकर सोइये।

राजाको तीसमारखाँकी बहादुरीपर विश्वास था। उन्होंने दो घोड़े और हथियार भिजवा दिये और स्वयं निश्चिन्त होकर महलमें जा सोगया।

घोड़े आते ही तीसमारखाँने सोचा कि अब जल्दीसे जल्दी भाग चलना चाहिये। उसने दोनों घोड़ोंपर क़ीमती सामान लादा और एक पर वह स्वयं बैठा तथा दूसरेपर अपनी पत्नीको बिठाकर चल दिया। घोड़े तेज़ थे और तीसमारखाँको डर था कि कहीं पहलेकी तरह घोड़ा उसको मुसीबत न बुलादे। इसलिये उसने अपनी पत्नीके और अपने पैर कसकर जीनसे बाँध लिए और चोर-डकैतोंको डराने केलिए दोनों हाथोंमें दो नंगी तलवारें लेलीं।

राजाने लड़ाईकेलिए सबसे मज़बूत और तेज़ घोड़े भेजे थे। ज्योंही सवार उनपर बैठे कि वे हवा हो गये और दैवयोगसे उसी जगह पहुँचे जहाँ शत्रु डेरा डाले पड़ा था। वहाँ की चहल-पहल देखकर तीसमारखाँ का घोड़ा भड़क उठा और वहीं चक्कर लगाने लगा। तीसमारखाँने डर के मारे अपने हाथ इधर-उधर पटकने शुरू किये और संयोगकी बात उसकी तलवारोंकी चोटसे कुछ लोग धरतीपर आ गिरे। शत्रुकी फ़ौजमें हाहाकार मच गया और वे अपनी जान बचाकर भागे। थोड़ी देरमें मैदान साफ हो गया।

तीसमारखाँ का घोड़ा भी अब थक चला था। इससे काबूमें आगया। तीसमारखाँने सोचा कि अब भागने से क्या लाभ! अब तो राजासे मुँहमाँगा इनाम पाना चाहिये। यह सोचकर वह स्त्रीकेसाथ नगरमें लौट आया और मज़ेके साथ सो रहा।

सबेरे राजा साहब आये। देखा कि घोड़े दोनों बाहर बँधे हुए हैं। उन्होंने सोचा कि तीसमारखाँ अभी गया नहीं है। सो उसे जगाकर कहा—"तुम अभी गये नहीं?"

तीसमारखाँने गर्वके साथ कहा—"महाराज, मैं तो रात ही शत्रुकी फ़ौजका सफ़ाया कर आया। अब तो मैदान साफ़ है।"

राजाने जाकर देखा। बहुतसे सिपाही वहाँ मरे पड़े थे। अपनी इस विजय और तीसमारखाँकी बहादुरीसे उसकी खुशीका ठिकाना न रहा। उसने तीसमारखाँको गलेसे लगा लिया और कहा—"शाबाश बहादुर, तूने मेरे राज्य और मानकी रक्षा की।"

तीसमारखाँको एक बहुत बड़ी ज़ागीर इनाममें मिली और वह आनन्दपूर्वक रहने लगा।

२४

संत-बसंत

किसी नगरमें एक ब्राह्मण और उसकी ब्राह्मणी रहती थी। ब्राह्मण सीधा-सादा था और उसे थोड़ेमें सन्तोष होजाता था। लेकिन उसकी ब्राह्मणी बहुत चिड़चिड़ी और लड़ाका थी। ब्राह्मण बस्तीसे गुज़र-लायक आटा माँग लाता। उसीसे दोनोंका पेट भर जाता। लेकिन ब्राह्मणी इतनेसे सन्तुष्ट न थी। ब्राह्मणसे रोज झगड़ा करके कहती कि और लाओ, और लाओ। बिचारा परेशान था

एक रोज ऐसा हुआ कि ब्राह्मण भीखकेलिए कुछ दूर निकल गया और दो तीन दिन बाद लौटा। इस बीच राजाके यहाँ गो-शत (वह दान जिसमें सौ गौएँ दान की जाती हैं।) हुआ। राजाने ब्राह्मणोंको भोजन कराया और बढ़िया--सी सौ गौएँ दानमें दीं। यह बात ब्राह्मणीके कानोंमें पड़ी तो उसे बहुत दुःख हुआ। झींकती हुई बोली, "कैसा अभागा है! देखो तो आज घर होता तो ऐसी गाय मिलती कि घरमें दूधकी नदी बहती। पर वह तो करमका खोटा है!" ब्राह्मणी दाँत पीसकर रह गई।

तीसरे दिन ब्राह्मण लौटा। बिचारा बैठने भी न पाया था कि ब्राह्मणी ने अपना सारा गुस्सा उसपर उतार डाला। बोली कि अभी जाओ और गाय लेकर आओ।

ब्राह्मण गया और गाय उसे मिल गई। ब्राह्मणी बहुत खुश हुई।

कई महीने बीत गये। गाय जबतक दूध देती रही तबतक तो ब्राह्मणी उसे प्यारसे रखती रही; लेकिन ज्यों ही उसका दूध सूखा

कि वह ब्राह्मणीकी निगाहमें खटकने लगी। एक दिन ब्राह्मणसे उसने कहा-"यह हथिनी क्यों रख छोड़ी है? दाँत दिखा-दिखा कर मुझे चिढ़ाया करती है। इसे जंगलमें छोड़ आओ, तब मैं रोटी पानी खाऊँ-पिऊँगी।"

लाचार ब्राह्मण गाय लेकर चला और जंगलमें छोड़ आया।

चरते-चरते गाय एक बाघकी गुफ़ाके पास जा पहुँची। बाघने गायको आते देख बाघिनसे कहा,"लो देखो, आज भगवान्ने घर बैठे सुनली। कैसी उम्दा गाय है?" धीरे-धीरे गाय बाघकी ऐन गुफ़ाके सामने आगयी। बाघने उसे दबा लेनेकेलिए झपटने ही वाला था कि बाघिनने कहा, "सुनो, इसे मारो मत। इसके पेटमे बच्चा है। मेरे भी पेटमें बच्चा है। हम दोनों एक साथ रहकर मन बहलाया करेंगी।"

बाघने बाघिनकी बात मान ली। उस दिनसे गाय और बाघिन दोनों साथ साथ रहने लगीं। कई महीने बीत गए। इसी बीचमें एक दिन शिकारी उधर आ पहुँचा और उसने बाघको मार डाला। बिचारी बाघिन और गाय रह गईं। कुछ दिनों बाद दोनोंके एक एक बच्चा हुआ। बच्चे जब कुछ बड़े हुए साथ साथ खेलने-कूदने लगे। बग्घराज और बच्छराजमें बड़ी दोस्ती होगयी।

एक दिन गाय और बाघिन दोनों नदीसे पानी पीने गयीं थीं। गाय ऊपरकी ओर थी, बाघिन नीचे। गायकी लार बहकर बाघिनके मुँहमें चली गई। वह लार बाघिमको बहुत मीठी लग। नतीजा यह हुआ कि बाघिनने गायका काम तमाम कर डाला। शामको बग्घराज और बच्छराज घूम--फिर कर लौटे। देखा गाय नहीं है तो बग्घराजने अपनी माँसे पूछा, "माँ, आज गाय म सी कहाँ है? तुम्हारे साथ क्यों नहीं आई?"

बाघिन नीचेको सिर करके रह गई, लेकिन जब बग्घराजने बहुत जोर दिया तब उसने सच्चा हाल कह सुनाया। माँकी इस हरकतपर बग्घराज बहुत नाराज हुआ और एक दिन गुस्सेमें आकर उसने उसे कुँएमें ढकेल दिया। विचारी बाघिनकी भी प्राण-लीला समाप्त होगई।

अब बग्घराज और बच्छराज, दोनों भाई रह गए। दोनोंमें बड़ी प्रीति थी। दिनमें दोनों इधर-उधर जंगलमें घूमते, लेकिन शामको एक

जगह आजाते। एक दिन बग्घराज किसी बंजारेके बैलको मारकर एक घंटी लेआया और बच्छराजके गलेमें बाँधकर बोला, "देखो भाई, यह घंटी है। जब तुम किसी मुसीबतमें फँस जाओ तो इसे बजा देना। मैं आजाऊँगा।"

कुछ दिनों बाद एक रोज बच्छराज एक हरे-भरे धानके खेत में जा पहुँचा और उसने खूब पेट भरकर धान खाया। बादमें लगे आप गर्दन उठा कर ज़ोर-ज़ोरसे कूदने। घण्टी बजने लगी। इस समय बग्घराज शिकारकी ताकमें बैठा था और पल भरकी देर थी कि शिकार उसके हाथ आजाती। लेकिन ज्योंही घण्टीकी आवाज़ उसने सुनी कि दौड़ा। वह जानता था कि उसका भाई संकटमें है। लेकिन जब वह आया तो क्या देखता है कि बच्छराज मजेमें बैठा जुगाली कररहा है। बग्घराजने कहा "तुम कैसे हो ? मेरा शिकार निकलवा दिया। आयन्दा कभी झूठी घँटी मत बजाना।"

कोई महीने भर बाद एक दिन कुछ बहेलिये आगए। उन्होंने बच्छराजको मारनेके लिये फंदा लगाया। बच्छराज फँदेमें फँस गया। विचारेने बहुत कुछ उछल-कूद की, लेकिन फंदा नहीं टूटा। तब उसे बग्घराजकी याद आई। उसने ज़ोर ज़ोरसे गर्दन हिला कर घण्टी बजाई। उस दिन बग्घराज भूखा था। दिन भर परेशान घूमनेपर भी कोई शिकार उसके हाथ न आई *थी*। जिस समय घंटीकी आवाज उसे सुनाई दी, ठीक तभी एक हिरन उसके सामने आया। बग्घराजने सोचा कि बच्छ-राजका कौन भरोसा है ? वह तो झूठ-मूठ भी घण्टी बजा देता है। पहले पेटभर लूँ।

इधर बहेलियेने बच्छराजको मार डाला। वे उसकी चीर-फाड़ कर ही रहे थे कि इतने में बग्घराज आपहुँचा। उसे बड़ा दुख हुआ। उसने बहेलियोंसे कहा, "तुमने मेरे भाईको मार कर अच्छा काम नहीं किया अब तुम एक काम करो। जंगलसे सूखी लकड़ियाँ लाओ और उनकी चिता बनाकर बच्छराजको उसपर रखकर आग लगा दो।"

बहेलियोंने ऐसा ही किया। चितामेंसे जब बड़ी बड़ी लपटे निक-लने लगीं तो बग्घराज भी उसमें कूद पड़ा और इस प्रकार बग्घराज तथा

बच्छराज, दोनों भाइयोंका अन्त होगया। कुछ दिनों बाद, जहाँ ये जले थे, वहाँ दो बाँसके पेड़ उग आये और धीरे-धीरे बढ़ने लगे।

इसी नगरके राजाकी लड़की की प्रतीज्ञा थी कि जब एक पोरवाले बाँस मंडपमें लगेंगे तब मैं शादी करूगी। राजाके आदमी सब जगह एक पोरवाले बाँस ढूंढ़ते फिरते थे। आखिर एक दिन एक आदमी घूमता हुआ उन दो बाँसके पेड़ोंके पास आया जो बघराज और बच्छराजकी चितापर उगे थे। दोनों बाँस एक पोरीके थे और बहुत ऊँचे। अतः वह आदमी उन्हें जड़से उखाड़ कर राजाके पास लेगया। मण्डपमें उन्हें लगा दिया गया समय पर बरात आई और अच्छी तरहसे शादी हुई, लेकिन जब बरात जा रही थी तब अचानक दोनों बाँस फटे और उनमें से चन्दा--सूरजसे दो बालक निकल पड़े। राजाके कोई बालक नहीं था। सबको बड़ी खुशी हुई और राजा उन दोनोंको अपने बेटे समझ कर उनका पालन-पोषण करने लगे।

रानी जिस कमरेमें रहती थी, उसकी छतमें एक चिड़ियाने अण्डे दिये थे। अण्डोंके फूटनेके तीन-चार दिन बाद ही चिड़ियाकी मौत होगई। चिरोंटेने बच्चोंकी देखभालकेलिए एक दूसरी चिड़िया रखली। यह नई चिड़िया बचोंको खूब तंग करती थी। रानी यह सब देखा करती एक रोज उसके मनमें यह बात उठी कि कहीं मैं मर गई, और राजाने दूसरी रानी रखली तो वह भी इस चिड़ियाकी तरह मेरे इन बचोंको तंग किया करेगी। यह विचारमनमें आते ही रानीने राजाको बुलाया; और कहा–'महाराज, प्रतीज्ञा करो कि मेरे मरनेपर दूसरा ब्याह न करोगे। मैं जानती हूँ, दूसरी रानी आई तो इन बचोंकी जान ही ले लेगी।

राजाने विश्वास दिलाया कि मैं दूसरा ब्याह कभी नहीं करूँगा।

दैवयोगकी बातकि दो सालके भीतर ही रानीकी मृत्यु होगई। अपनी प्रतिज्ञा याद करके राजा दूसरा ब्याह नहीं करना चाहते थे; लेकिन नगरके लोगों और मंत्रियोंने समझा-बुझाकर राजाकी दूसरी शादी करा दी।

राजाके दोनों लड़के अब सयाने होचले थे। एकका नाम संत था, दूसरेका वसंत। दोनों भाई साथ-साथ खेलते-कूदते और प्रेम-पूर्वक रहते थे।

रानी इन्हें फूटी आँखसे भी नहीं देख सकती थी। बात-बातपर उनसे झगड़ती थी।

धीरे-धीरे कई वर्ष बीतगये। एक दिन दोनों भाई गेंद खेल रहे थे। दुर्भाग्यसे गेंद उछलकर रानीके ऊपर आ गिरी। रानी तो जली-भुनी बैठी ही थी। उसी समय राजाको बुलाकर कहा कि इस घरमें या तो ये दोनों ही रहेंगे या मैं ही रहूँगी। तुम चाहो कि मैं रहूँ, तो इन्हें अभी देशनिकाला दे दो।

राजा बड़े सोचमें पड़े। दोनों बेटोंको वह बहुत प्यार करते थे और और किसी तरह छोड़ना नहीं चाहते थे! लेकिन जब रानीका बहुत ज़ोर पड़ा और लोगोंने-समझाया कि अब तो ये दोनों बड़े होगये, कहीं भी अपनी गुज़र कर सकते हैं तो राजाने दुखके साथ उन्हें देश-निकालेका हुक्म देदिया।

भूखे–प्यासे दोनों भाई दिन- भर चलकर रातको एक बियाबान जंगलमें पहुँचे। वहाँ एक कुँआ था। उसीके पास एक बरगदके पेड़के नीचे ठहर गये। जाड़ोंके दिन थे। इधर-उधरसे लकड़ियाँ बटोरकर उन्होंने आग जलाई। कुँएसे पानी लेकर हाथ--मुँह धोया और बिस्तर लगाकर पड़ रहे। संत तो लेटते ही सो गया; लेकिन बसंतकी आँख न लगी।

उस बरगदके पेड़पर एक तोता और मैना रहते थे। पहर--भर रात बीती तो मैनाने कहा, "तोता, कोई बात कहो, जिससे रैन कटे।"

तोता बोला, "आप बीती कहूँ या परबीती?

मैनाने कहा, "आपबीती तो सुनती ही रहती हूँ, परबीती कहो।"

तब तोतेने पेड़के नीचे सोये संत-बसंतका पूरा किस्सा कह सुनाया। कहा, "मैना, बिचारे बेकसूर दोनों भाई घरसे निकाल दिये गये है। अब इनकेलिए बोलो, क्या करें?"

मैनाने कहा, "मेरी बात मानो तो एक बात कहूँ। मेरे मांसमें एक गुण है। जो कोई उसे खायगा, वह दो लाल रोज़ उगला करेगा।"

तोता बोला, "मेरे मांसमें भी एक गुण है। जो कोई उसे खायगा, उसे सबेरे उठते ही राज्य मिलेगा।"

मैनाने कहा, "तो हम एक काम करें। इससे अच्छा और कौनसा समय आवेगा ? हम दोनोंकी वजहसे यह राजकुमार मुसीबतसे बच जायँगे। अभी हम दोनों नीचे आगमें गिर जायँ।"

तोतेको यह बात पसंद आई। दोनों धड़ामसें नीचे आगमें आगिरे। वसंत जागता था और तोता--मैनाकी दास्तान सुन रहा था। उसने संत को जगाया। तोता तो उसने संतको दिया और मैनाको खुद खाया। खानेके बाद बसंत सो गया और संत जागता रहा।

थोड़ी देरमें उसे एक जानवर दिखाई दिया। संत उठा और तीर-कमान हाथमें ले जानवरके पीछे दौड़ा। जानवर भागा। संत भी उसके पीछे दौड़ने लगा जानवर बड़ा छली था। न तो वह तीरकी मारमें आता था, न आँखोंसे ओझल होता था। संत उसके पीछे दौडता-दौड़ता परेशान होगया।

सुबह होते-होते तो वह बहुत दूर जा निकला। मन उसका अजीब हैरानी में था। शिकार भी हाथ न लगा और भाई से इतनी दूर निकल आया। अब क्या होना चाहिए ? उसी समय सामने उसे एक नगर दिखाई दिया। उसने सोचा रात-भरका थका हूँ। शहरमें कुछ खा-पीकर थोड़ा आराम करलूँ। फिर भाईका पता लगाऊँगा।

संतको जो नगर सामने दिखाई देरहा था, उसके राजाकी मृत्यु रातको हो गई थी। राजाके कोई संतान न थी। इसलिये जब राजा बीमार पड़ा तो उसे चिंता हुई कि उसके बाद कौन गद्दीपर बैठेगा ? बहुत सोच-विचार और परेशानीके बाद उसने मंत्रियोंसे कहा देखो, "मेरी मौत के अगले सबेरे जो कोई परदेशी सबसे पहले महलके सामने आवे, उसीको गद्दीपर बैठा देना।" राजाकी आज्ञाका पालन करनेकेलिए रातसे ही पहरेदार बैठा दिये गये थे।

संत घूमता-घामता ज्यों ही महलके सामने पहुँचा कि पहरेदारोंने उसे रोक लिया। मंत्रियोंको खबर कीगई। वे आये और उन्होंने संतको सारा हाल कह सुनाया। कहा कि राजा ऐसी ही आज्ञा दे गये हैं।

संतको गद्दीपर बैठा दिया गया। तोतेकी बात सच होगई।

संत घूमता-घामता ज्योंही महलके सामने पहुँचा कि पहरेदारोंने उसे रोक लिया। मंत्रियोंको खबरकीगई। वे आये और उन्होंने संतको सारा हाल कह सुनाया कहा कि राजा ऐसी ही आज्ञा देगये हैं।

संतको गद्दीपर बिठा दियागया। तोतेकी बात सच होगई।

सबेरे जब वसंतकी आँख खुली तो उसने देखा संत वहाँ नहीं है। उसे बड़ा अचरज हुआ। उससे बिना कुछ कहे-सुने आखिर वह चला कहाँ गया? उसी समय उसे तोता-मैनाकी रातवाली बात--चीत याद हो आई। तोतेने कहा था कि जो मुझे खायगा उसे अगले दिन राज्य मिलेगा।

वह उठा और हाथ-मुँह धोकर संतकी खोजमें चलनेकी तैयारी कर ही रहा था कि उसके मुँहसे दो लाल निकल पड़े। वसंतको अब पूरा भरोसा हो गया कि हो न हो, संतको कहीं राज्य मिलना है। इसीसे वह चला गया है।

वसंत वहाँसे चल दिया। चलते-चलते बहुत दिनों बाद वह एक नगरमें आया। वहाँके राजाके एक लड़का और गुलाबके फूलकी तरह सुन्दर और कोमल एक लड़की थी। लेकिन उस राज्यमें शान्ति न थी। राजा और प्रजाके लोग परेशान थे। बात यह थी कि एक राक्षसी रोज़ रातको उस नगरमें आती और जो उसे मिलता, उसीको खा जाती। नगर वीरान होता जा रहा था। सभीके प्राण संकटमें थे। राजाने बड़े-बड़े उपाय किये, दूर देशोंसे शूरवीर बुलाये, इनाम बोला; लेकिन राक्षसी किसीके हाथ न आती थी। शूरमा हिम्मत करते थे; लेकिन ज्यों ही राक्षसी सामने आती कि वे जान तोड़कर भागते। अन्तमें लाचार होकर राजाने कहा, "जो कोई राक्षसीको मारेगा, उसे मैं आधा राज्य देकर अपनी लड़कीका ब्याह उसीके साथ करदूँगा।" परन्तु इससे भी कुछ न हुआ। सबको अपनी जान प्यारी थी।

वसंत इसी नगरके बाहर बग़ीचेमें ठहरा। कई दिन हो गये। रोज सुबह वह दो लाल उगलता। एक तो अपने पास रखता और दूसरेको बेचकर अपनी गुज़र चलाता। एक दिन रातको वह एक पेड़के नीचे सो रहा था कि आधीरातके समय उसे बड़े ज़ोरसे आवाज़ सुनाई दी।

वसंतकी आँख खुल गई। उसने समझा कि कोई जंगली जानवर है। डरके मारे वह पेड़पर चढ़ गया। थोड़ी देरमें अंगारेकी तरह दहकते दो नेत्र उसे दिखाई दिये। वसन्त समझ गयाकि यह वही राक्षसी है। उसका हृदय काँपने लगा। देखते-देखते राक्षसीका शरीर फैलने लगा और वह पहाड़के मानिन्द दिखाई देने लगी। वसंत पेड़की डालोंसे चिपककर बैठ गया। इतनेमें राक्षसीने भयंकर आवाज़ करके ऊपरको हाथ उठाया। हाथ क्या था, बाँस जितना लम्बा था। वसंतके शरीरसे वह ज्यों ही आकर छुआ कि वह चौंक पड़ा। एक ही झटकेमें राक्षसीने उसे नीचे खींच लिया। वसंत उसने छूटनेकेलिये छटपटाने लगा, लेकिन उसका क्या बस चलता? राक्षसी भूखी थी। उसने उठाकर वसंतको झट मुँहमें डाल लिया। मुँह था कि एक बड़ी-सी गुफ़ा! वसंत दाँतोंकी चपेटसे बचकर भीतर चला गया।

वसंतको निगल कर राक्षसी आगे चली। लेकिन राजमहलके फ़ाटकके पास पहुँचते ही उसके पेटमें बहुत ज़ोर का दर्द हुआ। वसंत भीतर बैठा था। उसने सोचा बाहर निकलनेका कोई उपाय करना चाहिए। तभी उसे याद आया कि उसकी ज़ेबमें छुरी है। बस फिर क्या था! वसंतने छुरी निकालकर राक्षसीके पेटमें भौंकदी। राक्षसी ज़मीन पर लोटकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। उसकी आवाज़ सुन कर नगर के सब लोग अपनी खिड़कियोंमेंसे झाँक-झाँक कर देखने लगे। राजाने भी देखा। लेकिन किसीकी हिम्मत न होती थी कि पास आवे।

वसंतने धीरे-धीरे उसका पेट चीर डाला। ख़ूनकी नदी बहने लगी और राक्षसी हमेशाकेलिए सो गई। ख़ूनसे भीगा वसंत बाहर आया। जब लोगोंने देखा कि राक्षसीके पेटमें से एक आदमी निकला है और उसके पास खड़ा है तो वे वहाँ आये। ज़रा सी देरमें राक्षसी मारेजानेका समाचार नगरभरमें फैल गया। राजा आये और उन्होंने वसंतको छातीसे लगाया और फिर आधा राज्य देकर अपनी बेटीका विवाह उसके साथ विवाहकर दिया।

सतके दिन बड़े आनन्दसे कटने लगे।

संत गद्दीपर तो बैठा, लेकिन वसंतकी याद एक मिनटको भी उसके

मनसे दूर न हुई। उसका पता लगानेकेलिए संतने अनेक उपाय किये, लेकिन कहीं भी पता न चला। इस बार उसे एक उपाय सूझा। उसने नगरभरमें मनादी पिटवादी कि जो कोई आदमी उसे संत वसंतकी कहानी सुनावेगा, उसे एक लाख रुपया इनाममें दिया जायगा। वह जानता था कि वसंतको यह खबर मिली तो वह ज़रूर आयगा।

लाख रुपया पानेके लालचसे सब लोग संत-वसंतकी कहानीका पता लगानेकेलिये इधर उधर दौड़ने लगे। राज्यके बाहर भी यह खबर पहुँची और धीरे धीरे वसंतके कानोंमें पड़ी। वसंत समझ गया कि हो न हो यह संतकी करतूत है। वह भाईसे मिलनेकेलिए व्याकुल हो उठा।

एक दिन राजासे आज्ञा लेकर वसंत चल पड़ा। राजाने चाहा कि साथमें हाथी घोड़े करदे; लेकिन वसंत नहीं माना और अकेला ही चला। कुछ दिनोंमें वह उसी नगरमें पहुँचा जहाँ संत--वसंतकी कहानी पर एक लाखका इनाम बुला हुआ था। यहाँ पहुँचकर वसंतने एक साधुका रूप बनाया। बहुतसे भक्त लोग उसके पास जमा होने लगे। एक दिन एक भक्तने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज, हमारे राजाने संत-वसंतकी कहानी सुनानेपर एक लाखका इनाम बोला है। लेकिन अबतक कोई उस कहानीको सुना नहीं पाया।"

साधु ने कहा, "बच्चे, संत-वसंतकी कहानी तो हम जानते हैं। लेकिन हम ठहरे साधु। रुपये-पैसेसे हमें क्या! अगर कहानी तुम्हारे राजाको सुननी हो तो यहीं आवें। हम उन्हें सुना देंगे।"

वह आदमी दौड़ा-दौड़ा राजाके पास पहुँचा। कहा कि महाराज, एक महात्मा आये हैं। कहते हैं कि हम संत-वसंतकी कहानी जानते हैं। लेकिन राजा सुननेकेलिये यहीं आवेंगे तभी सुनाएँगे।

संत उस आदमीको साथ लेकर साधुके पास गये। देखते ही उन्होंने वसंतको पहचान लिया। दोनों भाई बड़े प्रेमसे मिले। संत अपने बड़े भाईको हाथीपर बैठाकर राजमहलमें ले गया।

दोनों भाई बड़े आनंदसे राज करने लगे।

२५

विक्रम-चरित्र

किसी समय चौदह विद्या और चौंसठ कलाओंके निधान राजा वीर-विक्रमादित्य उज्जैन नगरीमें राज्य करते थे। ऐसा राजा होना दुर्लभ है। विक्रमादित्यके समान दान, पुण्य, धर्म, और साहसके अद्‌भुत काम करने वाल राजा न आजतक पृथ्वीपर कोई उत्पन्न हुआ है और न आगे होगा। उनका नियम था कि वे नगरकी हालचाल जाननेकेलिए रात्रीके समय बाहर निकला करते थे। एक बार रातके समय वे अपने घोड़ेपर बैठे चले जारहे थे। जिस समय वे एक आटारीके नीचेसे निकले उन्हें दो स्त्रियोंकी बातचीत का शब्द सुनाई दिया। घोंड़ा रोककर वे खड़े हो गये और उनकी बातोंको ध्यान-पूर्वक सुनने लगे।

वह अटारी एक सेठकी थी। सेठके लड़केने अपनी स्त्रीको किसी बातपर मारा पीटा था। लड़केकी स्त्री अटारीपर बैठी रोरही थी और पासमें बैठी हुई उसकी छोटी ननद उसे समझा रही थी। ननद बोली--भाबीजी, सुनो, यदि स्त्रियाँ अपने पतिके मनकी बातोंको समझ-बूझकर उसके अनुसार काम करें तो कभी इस प्रकर मार-पीटका अवसर हीं न आवे।" यह बात सुन वह स्त्री और भी कुपित होकर बोली, धन्य बाई जी, तुमने भी खूब कहा। भला कोई दूसरेके मनकी बात कैसे जान सकता है? मैं तो उनके मनकी बात नहीं जान पाती और पिटती हूँ, पर ननदबाई जब तुम विवाह होनेपर अपने पतिके पास जाओ तब अपने पतिके मनकी बात जानकर तदनुसार काम करना और कुटने-पीटनेसे बचा रहना।" यह सुन लड़कीने तड़ाकसे जवाब दिया–निःसंदेह भाबीजी, जबमैं अपने

पतिके घर जाऊँगी तब प्रत्येक काम अपने पतिके मनकी बात समझकर किया करूंगी और मारने-पीटनेकी कौन कहे, कभी उनको अप्रसन्न होने का अवसर भी आने न दूंगी।

दोनों स्त्रियोंकी बातचीत सुनकर राजाने चाकूसे अपने बाएँ हाथ की पैंती चीरकर उस मकानपर खूनकी तीन टिबकियाँ लगा दीं और फिर वह शीघ्र महलमें आकर सोरहा। सवेरा होनेपर स्नान, पूजन, दान धर्मसे निवृत्त होकर राजा दरबारमें पहुँचा। वहाँ पहुँचतेही राजाने सिपाहियों को हुक्म दिया अमुक मुहल्लेमें अमुक जगह जिस अटारी के द्वारपर तीन खूनकी टिबकियाँ लगी हों उस मकानके मालिकको मेरे पास बुला लाओ। राजाकी आज्ञा पाकर सिपाही गये और उस सेठको बुला लाये। राजाने सेठको आदरके साथ बिठाकर और पान-तम्बाखूसे उसका आदर करके कहा, "सेठजी, मालूम हुआ है आपके घर एक लड़की विवाह योग्य है, मैं चाहता हूँ कि आप उसका विवाह मेरे साथ करदें।" राजा की बात सुनकर सेठ सहमकर रहगया, उसने कोई उत्तर नहीं दिया। राजा ने फिर पूछा, "सेठजी, आपने मेरी बातका उत्तर नहीं दिया?"

सेठ बोला, "महाराज, मैं आपकी बातका क्या उत्तर दूँ। कहाँ आप क्षत्रिय राजा और कहाँ मैं दो कौड़ीका बनियाँ। नीति कहती है कि ब्याह, बैर और प्रीति बराबरीसे करना चहिए! मुझे तो किसी भी दृष्टिसे यह ब्याह उचित नहीं दीखता है।" राजाने कहा, "सेठजी, यह विवाह तो आपको करना ही पड़ेगा। तुम किसी बातकी चिन्ता मत करो, मैं सब तरहसे उसे बना लूँगा।" मंत्री--सभासद सभी राजाकी हाँ में हाँ मिला कर कहने लगे, "सेठजी सरकार ठीक तो कहते हैं, तुम क्यों संकोच कर रहे हो। विवाह कर डालो। इसे तुम अपना सौभाग्य समझो कि राजा साहब आपकी लड़कीको अपनी रानी बनाना चाहते हैं। इस सम्बन्धके हो जानेसे तुम राजाके ससुर कहलाने योग्य बनोगे और राज्यमें तुम्हारी इज्जत बढ़ जायगी। सब तरहसे तुम परतामें रहोगे, इस अवसरको मत चूको। पर सेठजीके मनमें किसीकी बात न चुभती थी। अवसर टालनेकेलिए अंतको उन्होंने कहा, "सरकार, मैं घरपर सलाह करके कल दोपहरको निश्चित उत्तर दे सकूंगा।"

इस तरह सेठ राजासे आज्ञा लेकर घर पहुँचा और सब समाचार अपनी स्त्रीको सुनाया। दोनोंने इस विवाहको अनुचित समझ रातको लड़की लेकर अन्यत्र भाग जानेकी सलाह की। कुछ आवश्यक धन साथ लेकर मकानमें ताला डालकर सेठ, सेठानी और लड़की तीनों आधी रातके समय चलदिये। स्त्रीकी सलाहसे सेठने अपनी ससुरालमें जाकर रहनेका निश्चय किया। तीनों जने शीघ्रताके साथ भागे जारहे थे।

इधर दूसरे दिन दोपहरको वादेके अनुसार जब सेठजी दरबारमें न पहुँचे तो राजा विक्रमने उसे बुलानेकेलिये सिपाही भेजा। कुछ समय उपरान्त सिपाहीने आकर कहा, गरीबपरवर! सेठोंके घरपर कोई नहीं है। ताला पड़ा है।

राजाने मंत्रीको बुला कर कहा, "मंत्रीजी, मैं इस सेठकी लड़कीके साथ विवाह करके इस बातकी जाँच करना चाहता हूँ कि वह किस तरह दूसरोंके मनकी बात जान पाती है। मैंने उसके साथ विवाह करनेका निश्चय करलिया है। अतः तुम चारों ओर चतुर जासूस भेजकर सेठको शीघ्र पकड़ बुलाओ।"

मंत्रीने चारों ओर प्रसिद्ध जासूस भेजकर एक चतुर सैनिकको सेठजी के पकड़ लानेका भार सौंपा। सैनिक अपने घोड़ेपर सवार होकर सेठके घरपर गया और उसके पड़ौसियोंसे उसके रिश्तेदारोंका पता पूछकर उसने पहले उसकी ससुरालकी ओर जाना तय किया। सैनिक सपाटेके साथ अपना घोड़ा बढ़ाता हुआ चला जारहा था। चलते-चलते संध्या समय उसने देखा कुछ दूर आगे तीन आदमी, एक मर्द एक औरत और एक लड़की, रास्तेपर सपाटेके साथ भागे चले जारहे हैं। वेश-भूषा और चाल-ढालसे वह समझ गया कि यही हमारे सेठजी हैं। घोड़ेको एड़ जमाकर वह उनसे कुछ दूर आगे निकल गया। घोड़ा एक पेड़की डाल से बाँध और हाथमें चाबुक लेकर वह रास्ता रोककर खड़ा होगया। ज्योंही सेठजी पास आये उन्हें तीन-चार चाबुक जमाकर कहा, "क्यों सेठजी, तुमको राजाने समझाया, मंत्रीने समझाया, सब सभासदोंने समझाया, पर तुमने किसीका कहना न माना और लड़कीको लेकर भाग आये।" ऐसा कहकर उसने फिर मारनेको चाबुक उठाया। सेठने गिड़-

गिड़ा कर कहा, "दुहाई सरकारकी, अब मत मारो, जैसा आपने समझाया वैसा किसीने नहीं समझाया। अब मैं अपनी लड़कीकी शादी राजाके साथ करनेको तैयार हूँ।" सेठजी सैनिकके साथ वापिस लौट पड़े और दूसरे दिन संध्या समय अपने घर आगये। रातको सैनिक भी वहीं रहा। सेठानीने रसोई बनाई और सबने आनन्दपूर्वक खाई। सब हारे-थके तो थे ही खा-पी कर सो रहे।

सवेरा होते ही सब लोग उठे। हाथ-मुँह धोकर सेठ-सेठानी और सैनिक बाहर दहलानमें बैठे। कुछ पुरा--पड़ौस-भी जुड़ आये। पान-तमाखू भी उड़ी। इसके बाद सैनिकने कहा, "देखो सेठजी, सीधे करो चाहे टेढ़े यह शादी तुमको करना ही पड़ेगी। तुम जानते हो कि राजा वीर विक्रमादित्यके समान दूसरा पुरुष इस पृथ्वीपर नहीं है। उसकी आज्ञा देवता लोग भी शिरोधार्य करते हैं; उसके मेटनेको सामर्थ मनुष्यमें कहाँ ? तुम्हें उचित है कि हठ छोड़कर अपनी लड़कीकी शादी राजाके साथ करदो। इसमें तुम्हारा सब तरहसे भला होगा। सेठजी राजी होगए। उन्होंने पण्डितको बुलाकर विवाह सुधवाया, लग्नपत्रिका लिखाई और उसे नाईके हाथ,राजाके पास भेजदी।सैनिक नाईको साथ लेकर राजाके पास पहुँचा। उसने राजाको प्रणाम करके सब समाचार सुनाया। सुनकर सब लोग प्रसन्न हुए।

नाईको डेरा दिया। उसे उत्तम भोजन कराये गये और पुरोहितको बुलवाकर लग्नपत्रिका बांची गई। खूब आनंद-उत्सव मनाया गया। नाई भी मनचाहीइनाम पाकर हर्षित होता हुआ अपने मालिकके घर लौटा। बड़ी धूमधानके साथ विवाहकी तैयारी होने लगी।

बारातका दिन नज़दीक आने लगा। राजाके मित्र, मातहत राजा, अमीर, उमराव, मंत्री, सभासद, राजाके बड़े-बड़े उहदेदार इकट्ठे होने लगे। बड़े ठाटबाट और धूमधामके साथ बरात रवाना हुई। बराती लोग अपनी अपनी सुसज्जित सवारियों--हाथी, घोड़ा, ऊँट, रथ, सेजगाड़ी, म्याना, पालकी, नालकी, बग्घी, सुखपाल, तामझाम आदिमें बैठकर आनंद मनाते हुए चले। भेरी, शंख, मृदंग, सैनाई, टिमकी, नगाड़े,

खंजरी, बाँसुरी, ढपला, तुरही, रमतुला, नरसिंहा, ढोल आदि सुहावने बाजे बजने लगे। धौंस बाजेकी धुधकार १२ कोस तक सुनाई देती थी।

राजा वीर विक्रमादित्य एक सजे हुए सफ़ेद हाथीपर विराजमान थे। हाथीपर मखमली सुनहरी झूल शोभा देरही थी। उसके दोनों दाँत सोनेसे मढ़े थे। वह गलेमें बड़े बड़े मूंगा-मोतीयोंकी माला पहने था। उसकी पीठपर चाँदीका हौदा कसा हुआ था, जिसपर रत्न-जटित सोनेका छत्र तथा कलश लगा हुआ था। सेवक गण दूल्हेके आस-पास बैठे चौर ढोररहे थे। आगे आगे निशान घुमाते जाते थे। बंदूकोंका घन घोर शब्द कानोंके परदे फाड़ रहा था। डंकैत लोग डंकोंपर चोब लगा रहे थे। कड़खेत लोग कढ़खे सुनाते जाते थे और अनेक जभोंदी, भाट, राजाकी विरदावली गाते जाते थे। बहुरुपिये, भाँड़ और विदूषक गण नकलें दिखाते और नाना तरहसे लोगोंका मनोरंजन करते हुए चल रहेथे। दूल्हाके हाथीके पीछे राजपरिवारके लोगोंके सैकड़ों सजे हुए कुंजरमन, हीरामन, सिंदूरी, भूरा, इकदंता आदि नाना जातिके हाथी चल रहे थे। हाथियोंके गलेमें बँधे अजगर घंटोंकी ध्वनि तीन कोसतक जाती थी।

दूल्हाके हमजोलीके छैल-छबीले जवान अपनी बेशकीमती पोशाक पहिने हुए, रंग बिरंगे पीले, नारंगी, गुलाब आसमानी, धानी, शरबती, पंचरंगा और हरे अबरखी साफ़े बांधे हुए; साफोंपर कलगी और मोतियोंकी लड़ी लटकाए, तीनखाब, अलपाका और मखमलके पक्की लड़ोंके कामके अंगरखे पहिने, चँदेरीका बना लड़ीदार उपरना डालें, मिसरू साटनके पैजामा पहिने अपने-अपने तेज़ और पवनकी गतिको निंदरने वाले श्यामकर्ण, हंसा, कुम्मेत उड़नबछेड़ा, पच-कल्यानी, अबलख, बादामी, कबरा, कच्छी, मर्सी, काबुली, अरबी, हरियल, मुश्कीं, श्यामा, कुंजा, टांघना, कबूतरी और बलखाबुखरेके घोड़ोंपर सवार उनको नचाते कुदाते और नाना तरहकी चालें कदम, दुलकी, रोहाल 'सरपट, सागाम आदि चलाते हुए कभी बरातके आगे, कभी पीछे और कभी मध्यभागमें मजेके साथ चले जारहे थे।

सभी घोड़े-घोड़ियाँ अपने पूरे साजके साथ सुसज्जित थीं। उनके चारों पाँव रंगे हुए थे। पूछें विशेष प्रकारसे सँभाली गई थीं। नाचनेवाली

घोड़ियाँ पाँवमें पैजनी पहिने थीं। उनके माथेपर सुनहली पान और गले में कंठे लटकरहे थे। सारे शरीरपर लगाये हुए टिक्के ऐसे जगमगा रहे थे मानो हीरे जड़े हों। उनकी पीठोंपर पशमीनेकी तारकसीके कामकी सुन्दर जीनें, चाँदीकी रकाबें और मोतीचूर-जड़ी हुई लगामें शोभा देती थीं। रेशमी ज़ेरबंद और मोतियोंकी लड़ी गुथींहुई दुमची लगी थी। मतलब यह कि चतुर और शौकीन सवारोंने उनको बरातकी शोभा बढ़ानेके लिए खूब नख-सिखसे सजाया था।

इस तरह बरात पूर्ण ठाटबाटके साथ चली जारही थी। झुंडकी झुंड वेश्यायें नाचती जाती थीं। आतिशबाजी चलानेवाले लोग आतिशबाजी चलाते जाते थे। बीच-बीचमें नाई लोग मशालें, दुशाखें, पलीता लिये सब जगह प्रकाश कररहे थे। सैकड़ों-हज़ारों सुहागिन स्त्रियाँ अपने सिरपर कलश रखे उनकी दीप-ज्योतिसे लोगोंकी आँखोंमें चका-चौंध पैदा कररही थीं। अनेक गाने-बजानेके शौकीन राई-बुन्देलखण्डका एक विशेष राग जिसे लोग रातके समय मिलकर गाते हैं, साथमें बेड़नियाँ (नृत्यकी) नचाते हैं—गाते और बेड़नियोंको नचाते जाते थे। भजन और संगीत समाजें अपनी-अपनी गाड़ियोंपर बैठी हुई गाती-बजाती और गम्मत करती हुई चलरही थीं। सेना अपने दल-बलके सहित घुमड़ रही थी। योद्धा लोग अस्त्र-शस्त्र बाँधे घटाटोप चले जारहे थे। मतलब यह कि सब जगह रंग ही रंग बरस रहा था।

इधर बरात आई हुई जानकर सेठजी भी अपनी पूरी तैयारीके साथ सब इष्ट मित्रों, पड़ोसियों तथा रिश्तेदारोंको साथ लेकर अगवानी करने चले। सबसे प्रेमपूर्वक मिल-भेंटकर बरात जनवासेमें ठहराई गई। सेठने समय-समयपर सब बरातियोंको खान-पान और सन्मानसे संतुष्ट करके ठीक लग्न पर कुलरीतिके अनुसार राजा वीरविक्रमादित्यके साथ अपनी लड़कीकी भाँवर पाड़ दी। अंतको बहुत-सा धन-दायज देकर लड़की बिदा करदी। नव-विवाहिता बधू आकर पीनसमें बैठ गई। सोलह कहार पीनस उठाकर चले। चारों ओर पीनसको घेरकर बराती और शाही सेनाके लोग चलने लगे। उसी तरह आनंद-उत्सव मनाते हुए लोग चले आरहे थे।

राजा वीर विक्रमादित्य अपने हाथीपर बैठे चले आ रहे थे। उन्होंने मनमें सोचा सेठकी लड़कीके साथ शादी करली, देखो मेरे मनकी बात जान सकती है या नहीं। अगर मनकी बात न जान सकी तो मैं उसे बंदी-घरमें डालकर उसे जीवन-भर कैद रखूँगा। बरात चली जा रही थी। रास्तेमें एक बड़ा बड़का झाड़ और बावड़ी मिलती थी। राजाने मनमें विचार किया यदि पीनस कुछ समयके लिए बड़के नीचे ठहर जाय तो अच्छा। सेठकी लड़की पीनसमें बैठी जारही थी। पीनसके चारों ओर परदा पड़ा था! जब पीनस पेड़के नीचे पहुँची तब उसे पीनसके भीतर अँधेरा मालूम हुआ। बेटी समझ गई यहाँ किसी बड़े दरख्तकी छाया है। उसने कहारोंसे कहा, कुछ समयकेलिए पीनस यहाँ उतारदो। पीनस उतारदी गई। बराती लोग भी ठहर गए। कोई हाथ मुँह धोने, कोई गाँजा-तमाखू पीने और कोई पान-मसाले लगाने लगे। इतनेमें विक्रमादित्यका हाथी भी आ पहुँचा। अपने मनकी बात पूरी हुई देखकर राजा चकित होकर रहगया।

कहारोंने पीनस उठाई और राजमहलके सामने रखदी। मुँहदिखाई (मोचायना) का नेग होकर बहू भीतर महलोंमें पहुँच गई। इधर सब बराती और नेवतार लोग भी अपने-अपने घर चले गए। राजा अपना राज-काज सँभालने लगा।

राजाने यह जाँच करनेकेलिए कि रानी मेरे मनकी बात जानकर तदनुसार काम करती है या नहीं, उसे अपना भोजन बनानेका काम सौंपा। रानीकी आज्ञानुसार राजाकेलिए भोजन तैयार किया जाने लगा। राजा वीर विक्रमा-दित्य नित्य कचहरीमें बैठकर विचार करते कि मुझे आज अमुक भोजन मिलना चाहिए। महल आकर वह देखते कि वही भोजन उनके सामने परोसा गया है। राजा चकित होकर रह जाते। अब वे रानीको चुकानेकेलिए अपने मनमें अट्टसट्ट भोजनोंका विचार करने लगे। पर रानी तो उनके मनकी बात जानती थी: वह वही भोजन तैयार करती और राजाको कुछ कहने सुननेका मौकाभी न आने देती थी। एक दिन राजाने खीझकर कहा, मुझे बुरी वस्तु चाहिए।" उस दिन इत्तफाकसे रसोइनके

लड़केने रसोईघरके एक कोनेमें पाखाना फिर लिया था। राजाके भोजनका समय हो चुका था। उसे साफ न करा सकनेके कारण उसने एक बर्तनसे ढक दिया था। रानीने झट बर्तन उठाकर कहा, "लीजिए सरकार, वह वस्तु भी हाजिर है।" अब तो राजा बहुत शर्मिन्दा हुआ। वह चुपचाप कचहरी चला गया। इस घटनासे राजाको मन ही मन बहुत झिझक पैदा हुई और वह रानीसे चिढ़ गया। उसने मनमें विचार किया कि यहाँसे दो चार वर्षकेलिए कहीं बाहर चले जाना चाहिए और समझ-बूझ कर ऐसे कठिन प्रश्न मनमें विचार करना चाहिए जिन्हें रानी त्रिकालमें भी पूर्ण न करसके। आजकी रात उसने इसी सोच-विचारमें बिताई। सवेरा होतेही राजाने अपनी सवारीका घोड़ा तैयार कराके प्रस्थान करदिया। बाहर जाकर उसे एक विस्तृत मैदान दिखाई दिया। उसे देख उसने मनमें विचार किया कि इस भूमिपर मेरे लौटनेके पहले सुन्दर बाग लग जाना चाहिए और मध्यमें श्री महादेव-पारवतीजीका विशाल मन्दिर बन जाना चाहिए। सेठकी लड़कीके मुझसे एक पुत्र पैदा हो जाना चाहिए तथा घर घुड़सालमें बँधी हुई मेरी श्यामा घोड़ीके भी मेरे इस सवारीके श्यामकर्ण घोड़ेसे एक बछेड़ा हो जाना चाहिए। इतना विचार करके राजा आगे बढ़ा। वह मन-ही-मन सोचता जाता था कि इसबार मैंने बाजी मार ली। यह दाल भातका बनाना नहीं है जिसे रानी इच्छा करते ही बना देगी। इस बार मैंने जिन कामोंके निस्बत विचार किया है उन्हें रानी जानकर भी मेरे बिना कदापि पूर्ण नहीं कर सकेगी। इस प्रकार मन-ही-मन प्रसन्न होता हुआ राजा चला जारहा था। करीब दो माह चलते चलते वह एक सुन्दर नगरमें जा पहुँचा। यहाँका राजा बड़ा बलवान और न्यायप्रिय था। विक्रमादित्यने सोचा कुछ समय यहीं निवास करना चाहिए।

एक दिन राजा विक्रमादित्य उस नगरके राजाके दरबारमें जा पहुँचा. राजाने पूछा, "तुम कौन हो और यहाँ किसलिए आये हो?" विक्रमादित्य ने उत्तर दिया, "मैं उज्जैन नगरीके राजा वीर विक्रमादित्यकी सेनाका एक सिपाही हूँ। मेरा नाम विक्रम है! जातिका राजपूत हूँ। कुछ महीनेसे हमारे राजा साहब कहीं चले गये हैं। उनका पता नहीं है। उनके बिना

वहाँ मुझे बुरा मालूम हुआ। स्तीफा देकर चला आया। इधर आपका नाम सुनकर आया हूँ। आपके पास नौकरी करना चाहता हूँ।" राजाने विक्रमको अपनी सेनामें ले लिया। विक्रम नौकरी करने लगा। धीरे-धीरे एक वर्ष व्यतीत हो गया। एक दिन एक कुंजड़ा सेनामें संतरा बेचने आया। पैसेके दो-दो संतरे देता था। अनेक सिपाहियोंने संतरे खरीदे। विक्रम भी आया और उसने दो संतरे कुंजड़ेकी दूकानसे उठा लिये। इसी समय विक्रमका एक मित्र आया और वह उससे बातचीत करने लगा। बात-चीत करते-करते वे दोनों कार्यवश अन्यत्र चले गये। विक्रम कुंजड़े का पैसा देना भूल गया।

कुंजड़ा जब अपने घर पहुँचा और उसने हिसाब मिलाया तब उसे एक पैसेकी कमी मालूम हुई! दूसरे दिन कुंजड़ेने राजासे फ़र्याद की। राजाने उस पल्टनके सब सिपाहियोंको बुलाकर पूछना प्रारंभ किया, "तुमने कितने संतरे खरीदे और क्या दाम दिये?" सिपाही उत्तर देते जाते थे। विक्रमकी बारी आई। विक्रमने कहा, "राजन् मैंने दो संतरे कुंजड़ेकी दूकानसे उठाये थे, पर उसी समय मेरे अमुक मित्रके आ जानेसे मैं बात-चीतमें लगकर उसे पैसा देना भूल गया। मैं इसी समय एकके बजाय दो पैसे देनेको तैयार हूँ।" राजाने कहा, "मेरे राज्यमें एकके दो देनेकी चाल नहीं है। तुम्हारा कुसूर चोरीकी श्रेणीमें आता है और उसके लिए केवल एक प्राणदंड—शूलीकी सजा मुकर्रर है। पर तुमने सच-सच बयान कर दिया है इसलिए तुम्हारी जानकी माफ़ी दी जाती है। तुम्हारे अपराधके लिए तुम्हारे दोनों हाथ और दोनों पाँव कटवाए जाते हैं।"

राजाकी आज्ञा पाते ही कीचकने विक्रमके दोनों हाथ और दोनों पांव काटकर उसे शहरकी एक नालीमें डाल दिया। विक्रम नालीमें पड़े-पड़े दुःखसे कराह रहे थे। सारे कपड़े रक्तसे भींग गये थे। रास्ता चलनेंवाले उसे देखकर चुपचाप चले जाते थे। कोई उसकी सहायता करनेका नाम न लेता था। करमकी रेख टाले नहीं टलती! देखो वीर विक्रमादित्य सरीखा प्रतापी और पुण्यवान राजा आज समयके फेरसे लूला-अपाहिज बनकर

नालीमें पड़ा है। आज उसके सभी हितू मित्रोंने उसकी ओरसे दृष्टि हटा ली है। दैवगति विचित्र है!

रातके नौ बजे उस नालीके पासकी हवेलीसे एक स्त्री पाखाने जानेके लिए लोटेमें जल लेकर निकली। उसके कानोंमें विक्रमके कराहनेकी आवाज पहुँची। स्त्रीको दया लग आई। उसने नालीके पास जाकर उसके दुखःका कारण पूछा। विक्रमने अपना सब हाल सुनाकर कहा, "बहिन, मुझे प्यास लगी है पानी पिला दो।" स्त्रीने लोटा आगे बढ़ाकर कहा, "पी लो।" विक्रमने पूछा, "इस समय तुम कहाँ जारही थीं?" स्त्रीने कहा, "पाखानेको।" विक्रमने कहा, "बाई, मैं अधमरा पड़ा हूँ। प्राण भले ही निकल जायँ, पर मैं अपना धर्म-कर्म न छोड़ूँगा। पाखानेके निमित्त लाया हुआ पानी मैं नहीं पी सकता!" यह सुनकर स्त्री पाखाना को चली गई। लौटकर उसने अपनी दासीसे कहा, "जाओ, नालीमें एक सिपाही बिना हाथ-पाँवके पड़ा है उसे जल पिला आओ।" दासी लोटेमें उत्तम जल लेकर पहुँची। कहा, "जल पी लो।" विक्रमने पूछा, "तुम कौन हो?" "दासीने कहा, "मैं सेठानीजीकी दासी हूँ। उन्होंने ही जल लेकर भेजा है।" विक्रमने कहा, "मेरे घरपर हजारों दासियाँ एकसे बढ़कर एक हैं, पर मैंने आज तक कभी किसी दासीके हाथका पानी नहीं पिया। फिर अब मरनेके समय तेरे हाथका पानी पीकर अपना धर्म क्यों छोड़ूँ। ले जाओ, मैं तेरे हाथका पानी न पिऊँगा।" यह सुनते ही दासी जलकर आग हो गई। कहने लगी, "ऐसे बड़े धर्मात्मा हो तभी तो हाथ पाँव कटवा कर नरक तुल्य नालीमें पड़े हो!" वापिस आकर उसने मालकिनको ताव बताया। बोली, "तुम अच्छे लुच्चोंके पास भेजती हो। वह कहता है मैं दासीके हाथका पानी नहीं पीता।"

दासीका उत्तर सुनकर सेठानी सोचने लगी कि सिपाही कोई धर्मवान पुरुष मालूम पड़ता है। उसके रहनेका उत्तम प्रबन्ध कर देना चाहिए। वह उसी समय एक लोटेमें उत्तम जल लेकर उसके पास पहुँची। साथमें खानेके लिए पवित्र मिठाई और कुछ पकवान भी लेती गई थी। स्त्रीने कहा, "सिपाह थोड़ी-सी मिठाई खाकर जल पी लो।" विक्रमने पूछा, "तुम कौन हो?" उसने उत्तर दिया, "मैं पहले आने वाली साहूकारकी

बहू हूँ।" विक्रम उसकी भलमनसई देखकर आँखोंसे आँसू बहाते हुए कहने लगा, "बहिन, मेरे हाथ नहीं हैं, मैं कैसे पानी पिऊँ।" तब उस स्त्रीने उसे उठाकर नालीसे झुकाकर बैठा दिया फिर अपने हाथमें पानी लेकर उसे कुल्ला कराया। इसके पश्चात् अपने हाथसे मिठाई तथा पकवान खिलाकर पानी पिलाया और अपनी डब्बीसे दो पानके बीड़े निकालकर उसके मुँहमें दे दिये। इसके पश्चात् उसने जाते समय विक्रमसे कहा, "भाई, तुम चिन्ता मत करो, मैं कलसे तुम्हारी सेवाका उत्तम प्रबन्ध कर दूँगी।" यह कहकर सेठानी चली गई।

सबेरे समय सेठानीके घर एक ब्राह्मण भिक्षुक पहुँचा। सेठानीने पूछा, "तुमको भिक्षासे दिनभरमें क्या मिल जाता है?" ब्राह्मणने उत्तर दिया, "मैं अकेला हूँ खाने-भरको मिलता है।" तब सेठानीने उसको समझाकर कहा, "देखो! मैं तुम्हें एक काम देती हूँ। तुम अपने घरपर रहकर एक अपाहजकी सेवा करो। उसे भोजन बनाकर खिलाओ। मैं तुम दोनोंके खानेका कुल सामान दिया करूँगी। इसके सिवा तुम्हारे ऊपर खर्चको भी दस रुपया माहवार दे सकूँगी।" ब्राह्मण राजी हो गया। सेठानीने नालीमें पड़े हुए विक्रमको उठवाकर ब्राह्मणके घर भिजवा दिया। सेठानीने एक माहके खाने लायक आटा, दाल, चावल, घी, शक्कर सभी पदार्थ भिजवा दिये। भिक्षुक विक्रमकी सेवा करने लगा। सेठानी हर महीने कुल सामान भेज देती और बीच-बीचमें स्वयं जाकर देख आती थी। कुछ महीनोंमें विक्रमके कटे हुए हाथ-पाँवका दर्द मिट गया।

इस नगरके राजाके एक लड़की थी। उसने उज्जैनके राजा वीर विक्रमादित्यका सुयश सुनकर उनके साथ अपना विवाह करनेका प्रण किया था। राजाने सहेलियों द्वारा राजकुमारीका मनोगत भाव सुनकर उज्जैनको कई पत्र लिखे। पर वहाँसे उत्तर मिला, राजा वीर विक्रमादित्यका लगभग एक सालसे कोई पता नहीं है। वे कहीं चले गए हैं। राजा निराश हुआ। उसने विक्रमादित्यका पता लगानेके लिए देशमें चारों ओर चतुर जासूस भेजे पर सब विफल मनोरथ होकर लौट आये। वीर विक्रमादित्य का कहीं पता न चला। आखिर चतुर मंत्रियोंकी सलाहसे राजा ने स्व-

यम्बर सभा बुलानेका विचार किया। देश-भरके सब छोटे-बड़े राजाओंको स्वयंवर सभामें शामिल होनेके लिये निमन्त्रण भेजा गया। उन्होंने सोचा राजा वीर विक्रमादित्य कहीं भी होंगे तो स्वयंवर की खबर पाकर अवश्य ही पधारेंगे।

स्वयंवरकेलिये उत्तम रंगभूमिकी रचना कीजाने लगी। राजाओंके ठहराने और उनके आदर-सत्कारकेलिए भी उचित व्यवस्था की गई। स्वयंवरका दिन ज्यों-ज्यों नजदीक आने लगा त्यों-त्यों नगरमें चहल पहल बढ़ने लगी। राजा लोग आ-आकर अपने डेरोंमें ठहर गये। स्वयंवरके दिन सब राजा लोग अपने नियत स्थानोंपर सजधज कर बैठे। दर्शकगण तमाशा देखनेकेलिए पहलेसे ही एकत्रित हो गये थे। नगरकी स्त्रियाँ, बूढे, बच्चे सभी स्वयंबर देखने पहुँचे। यहाँ विक्रम सिपाहीने अपने आश्रयदाता ब्राह्मणसे कहा, "महाराज, सुनते हैं आज राजाकी बेटी का स्वयंवर है। नगरके सभी लोग तमाशा देखने जारहे हैं, हो सके तो मुझे भी वहाँ ले चलो। मैं भी तमाशा देखलूँ। देखो आज किसका भाग्य चमकता है।" ब्राह्मण विक्रमको पीठपर रखकर ले गया और रंगभूमिके बाहर एक वृक्षके नीचे वृक्षकी पींड़से टिकाकर बैठा दिया।

इधर राजकुमारी उबटन-स्नान आदिसे निबृत होकर उत्तम वस्त्र-आभूषण पहिन हाथमें जयमाला लेकर अपने सवारीके सुन्दर सजे हुए हाथीके सामने आकर खड़ी हुई। उसने अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा, "हे गजराज, आप मेरी इच्छाको भलीभाँति जानते हैं। जहाँ राजा वीर विक्रमादित्य विराजमान हों वहाँ जाकर अपना मस्तक झुका देनेकी कृपा करना।" इतना कहकर बेटी हाथीपर बैठ गई। हाथी राजकुमारीको लेकर रंगभूमिमें पहुँचा। राजा लोग बड़ी उत्सुकताके साथ हाथीपर बैठी अपने रूपकी छटा चारों ओर फैलाने वाली राजकुमारीकी ओर देखने लगे। हाथी मंदगतिसे प्रत्येक राजाके सामने कुछ क्षण ठहरता हुआ आगे बढ़ रहा था। क्रमशः रंगभूमिके चारों ओर चक्कर लगाकर सदर दरवाजे से बाहर निकला और जहाँ पेड़से टिका विक्रम सिपाही बैठा था वहाँ जाकर बैठ गया और अपना सिर झुका दिया। हाथीको मस्तक झुकाते देख बेटी

शीघ्र उतरी और उस लूले लँगड़े विक्रमके गलेमें उसने जयमाला पहिना दी। रक्षकों और मंत्रियोंने कहा "बेटी चूक गई, जयमाला उतारलो।" विक्रमके गलेसे जयमाला उतारली गई। राजाओंके आग्रह तथा मंत्रियों की सलाहसे हाथी फिर रंगभूमिमें घुमाया गया। हाथी पहले ही के समान मंदगतिसे चक्कर काटता हुआ बाहर आया और उसी पेड़के नीचे विमक्र सिपाहीके सामने आकर बैठ गया। बेटीने हाथीसे उतरकर जयमाला पहिना दी। लोगोंने 'बेटी चूक गई' 'बेटी चूक गई' की आवाज उठाई। सिपाहियोंने विकमके गलेसे जयमाला फिर उतार ली। इस बार विक्रमको सिपाहियोंने वहाँसे हटाकर दूर रख दिया। बेटीने फिर तीसरी बार स्नान करके भगवानका पूजन किया और हाथीके पास आकर प्रार्थना की। कहने लगी, "हे गजराज, मेरी लाज आपके हाथ है। जहाँ राजा विक्रमादित्य विराजमान हों वहीं माथा नवाना। बेटी हाथीपर सवार हुई। इस बार हाथी रंगभूमिमें न जाकर सीधा रंगभूमिके बाहर उसी पेड़की ओर चला। महावतने बहुत ज़ोर मारा कि हाथी रंगभूमिकी तरफ जावे पर वह सीधा विक्रम सिपाहीके पास पहुँचकर बैठ गया। महावतने बहुत उपाय किये पर वह न उठा। तब बेटीने उतरकर उसी विक्रमके गलेमें जयमाला डाल दी। रक्षक लोग जयमाला उतारने लगे पर इसी समय राजाने आकर कहा, "जयमाला मत उतारो। बेटीने तीन बार उसीके गलेमें जयमाल डाली है। उसके भाग्यमें जो बदा था सो हुआ।" राजाने बहुत उदास चित्तसे अपनी बेटीका विवाह लूले-लँगड़े विक्रम सिपाही के साथ कर दिया। राजकुमारी भिक्षुकके घर आगई और अपने लूले-लँगड़े पतिकी सेवा करने लग।

ब्राह्मणने सोचा अब यहाँ रहना उचित नहीं है। बड़ोंके बीचमें रहने से किसी दिन आपत्ति आ सकती है। उसने अपना मकान राजकुमारीको बेंच दिया और वह अपना डेरा डंडा लेकर चला गया।

इसी समय देवलोकमें धर्म और पुण्यका विवाद खड़ा हुआ। धर्मदेव कहते थे मैं बड़ा हूँ और पुण्यदेव कहते थे मैं। विवाद बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक बढ़ा कि दोनों युद्ध करनेपर उद्यत हो गए। इसी समय नारदमुनिने

आकर कहा, "आपसमें मत झगड़ो, कैलास पर्वतपर चलकर श्रीमहादेवजी से फैसला करालो।" दोनोंने नारदजीकी बात मंजूर करली। धर्म और पुण्यने महादेवजीसे सब हाल सुनाकर फैसला कर देनेको कहा। महादेवजी बोले, 'मैं इसका फैसला नहीं कर सकता हूँ। इसके जाननेवाले ब्रह्माजी हैं; वे ही फैसला करेंगे।" दोनोंने महादेवजीसे प्रार्थना करके कहा, "आप साथ चलकर फैसला करा दीजिए।" शंकरजी तो आशुतोष हैं: झट उठ खड़े हुए। तीनों जने ब्रह्माजीके पास पहुँचे। महादेवजीने धर्म और पुण्यका झगड़ा सुनाया। ब्रह्माजी बोले, "मैं भी इस बातको अच्छी तरह नहीं जानता हूँ। लक्ष्मीपति विष्णु भगवान ही इसके पूर्ण ज्ञाता हैं। वही फैसला करेंगे। चलो मैं भी साथ चलता हूँ।" चारों जने बैकुंठ पहुँचे। विष्णु भगवानने सबको आदरसे बिठाकर आनेका कारण पूछा। तब महादेवजीने धर्म और पुण्यका झगड़ा कह सुनाया। भगवान बोले, "शंकरजी, मैं भी इसका निपटारा नहीं कर सकता हूँ।" शंकरजीने कहा, "आप त्रिलोकीनाथ और सर्वज्ञ हैं यदि आप इसका फैसला न करेंगे तो दूसरा कौन करेगा?" यह सुन विष्णु भगवानने कहा, "इस बातको जाननेवाला मृत्युलोकमें राजा वीर विक्रमादित्य है, उसके सिवा और दूसरा कोई फैसला नही कर सकता है।" यह सुन सबने विनय की आप स्वतः चलकर फैसला करवा दीजिए। आखिर ब्ह्मा, विष्णु, महादेव, धर्म और पुण्यदेव सभी मृत्युलोकमें राजा वीर विक्रमादित्यके पास आ पहुँचे। आधी रातका समय था। आँगनमें खड़े होकर विष्णु भगवानने पुकारा, "राजा वीर विक्रमादित्य, सोते हो या जागते?" विक्रमादित्य सो रहे थे। उन्होंने कोई उत्तर न दिया। तब इसी प्रकार फ़िर उन्होंने पुकारा। इस बारकी आवाज उसकी स्त्री राजकुमारीके कानमें पड़ी। विक्रमादित्यका नाम सुनकर वह चौंक पड़ी। वह चेतन्य होकर उठ बैठी। इसी समय विष्णु भगवानने तीसरी बार पुकारा। राजाकी आँख खुल गई। वह बोला, "भाई साहब, कौन हो? मै लंगड़ा हूँ, हाथ-पैर दोनों कटे हैं। मैं बाहर नहीं आ सकता हूँ। कृपाकर यहीं आओ।" विष्णु भगवान बोले, "कौन कहता है कि तुम्हारे हाथ-पाँव कटे हैं। तेरे हाथ पाँव पूर्ववत् साबित हैं। तुम बाहर आओ।" इतना सुनते ही स्त्रीने देखा तो विक्रमके हाथ-पाँव

मौजूद पाये। स्त्रीको अतीव आनन्द हुआ। राजा बाहर आये। विष्णु, महादेव और ब्रह्माको अपने आँगनमें खड़े देख आनन्दमें मग्न हो उनको प्रणाम किया। तब विष्णुने कहा, "राजा विक्रमादित्य, मैं तुम्हारे पास एक फैसला कराने आया हूँ। पुण्य और सत्य धर्म आपसमें झगड़ते हैं। सत्य कहता है मैं बड़ा हूँ और पुण्य कहता है मैं बड़ा हूँ। अब तुम बताओ इन दोनोंमेंसे कौन किस कारण बड़ा है?"

विक्रमादित्यने पूछा "पुण्यदेव कौन हैं।" महादेवजीने अंगुलीका संकेत करके बतलाया। विक्रमादित्यने उनकी ओर मुँह करके कहा, "पुण्यदेव जी, तुम जानते हो कि मृत्युलोकमें वीर विक्रमादित्यके समान दान-पुण्य करनेवाला और दूसरा कोई नहीं है, परन्तु हे पुण्य! मेरे हाथ पैर काटे जानेपर तूने मेरी ज़रा भी सहायता नहीं की।" इसके पश्चात सत्य धर्मको प्रणाम करके कहा, "हे धर्मदेव, आप बड़े हैं। मेरे सत्यधर्म के कारण ही आज मुझे ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन तीनों देवताओंके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।" फैसला सुनते ही सब देवता अपने-अपने स्थानको चले गए। राजकुमारीके आनन्दका आज ठिकाना न था। आज रातकी घटनासे उसे विदित हुआ कि उसे चिरअभिलषित राजा वीर विक्रमादित्य ही पति मिले हैं।

पुरा-पड़ौसके लोग आपसमें कानाफूँसी करने और कहने लगे, "कुछ दिनसे राजकुमारीका पति वह लूला-लंगड़ा सिपाही नहीं दिखता है, उसकी जगह अब एक बहुत कान्तिवान सुन्दर हृष्ट-पुष्ट युवा रहता है। मालूम पड़ता है राजकुमारीने उस लूले लंगड़ेको कहीं गायब करके इस नवीन सुन्दर पुरुषको रख लिया है।" कहावत है 'नेकी उड़े पाँच कोस बदी उड़े पचास कोस'— यह अपवाद सारे नगर-में व्याप्त हो गया। राजा-रानीने भी सुना। बेचारे कड़वा घूट-सा पीकर रह गए।

इधर कुछ दिनसे इस नगरमें एक शेर लपका था। वह आंतरे दूसरे दिन आकर एक-दो आदमियोंको खाजाता था। बहुत प्रयत्न करनेपर भी वह मारा नहीं गया। तब एक दिन राजाने डौंड़ी पिटवाई कि आज घर पीछे एक-एक आदमी शेरके हाँकेके लिए चले। राजा भी अच्छे-अच्छे

शिकारियों और कुछ चुने हुए सेनाके लोगोंको साथ लेकर जंगल गया। राजा वीर विक्रमादित्य हमेशाकी नाईं स्नान-पूजनसे निवृत होकर अपनी स्त्रीसे बोले, "आज राजाकी आज्ञानुसार सब लोग शेर मारने जंगलको गये हैं। मैं भी राजाकी प्रजा हूँ मुझे भी शेर मारनेके लिए जंगल जाना चाहिए। तुम्हारी क्या राय है?" स्त्रीने उत्तर दिया, "प्राणनाथ, आप ठीक कहते हैं। राजाकी आज्ञा मानना सबका धर्म हैं।" यह सुनकर विक्रमादित्य खाने-पीनेका आवश्यक सामान साथ लेकर घोड़ेपर सवार हो जंगलकी ओर रवाना हो गया। जंगलमें हाँका लगाया गया। सारा जंगल छान डाला पर शेरका कहीं पता न चला। सब लोग भूख प्याससे व्याकुल होकर तीसरे पहर घर लौट आए। विक्रमादित्य वहीं रह गये। जब आधी रातके समय शेर गर्जा तब वे अपना धनुष-बाण लेकर तैयार हो गए। ज्योंही वह उनके सामनेसे निकला कि उन्होंने एक बाण उसके माथेमें ऐसा मारा कि वह माथा बेधता हुआ राजाकी कचहरीके खम्भेमें जा चुभा। शेर निर्जीव होकर धरतीपर गिर पड़ा। विक्रमादित्यने उसके नाक कान और पूंछ काटकर अपने खलतामें रखली और सिंहकी लाश-को घोड़ेपर रखकर उसे राजाकी कचहरीके सामने पटक आप मजेसे घर आकर सो रहे।

रातको गश्त देने वाले कुछ सिपाही सबेरेके समय वापिस लौट रहे थे। उन्होंने देखा कचहरीके सामने शेर पड़ा है। सभी घबड़ा गए। काटो तो खून नहीं। एकने साहस करके पत्थर फेंका। शेर वैसा ही पड़ा रहा। फिर दो चार पत्थर फेंके। मालूम हुआ शेर मरा हुआ है। फिर क्या था। मुफ्तका यश लेनेकेलिए सबने सलाह करके अपने-अपने लट्ठ उठाये और मरे हुए सिंहको मारते हुए कहने लगे कि "दुहाई सरकारकी हमने शेर मार डाला!" भारी कोलाहल सुनकर राजा महलसे बाहर आया। देखा तो सचमुच शेर मरा पड़ा है। राजाने सिपाहियोंको खुश होकर खूब इनाम दी। सारे नगरमें खबर फैल गई सिपाहियोंने शेर मार डाला।

यह खबर विक्रमादित्यने सुनी। तब उन्होंने अपनी स्त्रीसे कहा, "प्रिये! अब यहाँ रहना उचित नहीं। इस नगरमें अब ठीक इन्साफ़

नहीं होता है।" बेटीने विस्मयके साथ कहा, "प्राणनाथ, आप यह क्या कहते हैं। मेरे पिता न्यायके लिए अपने प्रियसे प्रिय स्वजन तथा प्राणाधिक पुत्रको भी उचित दण्ड देनेसे नहीं चूकते। आपने यह बात किस कारण कही?" राजा बोले, "देखो प्रिये! शेर न मिलनेसे कल सब जंगलसे अपना सा मुँह लेकर भाग आये थे। आधी रातके समय शेर निकला। मैंने एक बाण ऐसा मारा कि वह शेरको मारता हुआ तुम्हारे पिताकी कचहरीके खंभेमें जा चुभा। उस तीरको मेरे सिवा दूसरा कोई नहीं निकाल सकता है। शेरके मर जानेपर मैंने उसके नाक-कान और पूंछको काटकर खलतेमें रख लिए जो ये तुम्हारे समक्ष मौजूद हैं, और शेरकी लाशको घोड़ेपर लाद कचहरीके सामने पटकता हुआ घर आगया था। सुन रहा हूँ सिपाहियोंने शेर मारा है। यह कहकर राजाने उनको इनामें दी हैं। क्या इसीका नाम इन्साफ़ है?"

राजाकी बेटीने सोचा अपनी फैली हुई बदनामी मिटाने और ये उज्जैनके राजा वीर विक्रमादित्य हैं यह ज़ाहिर करनेके लिए यह उपयुक्त समय है। वह पतिसे आज्ञा लेकर अपने माता-पिताके घर गई। माँने बेटीको आते देखकर भी उसका उचित आदर नहीं किया। धीरज धरकर बेटी बोली, "माँ, मालूम होता है आप मुझसे नाराज़ हैं। आपने मेरे विषयमें जो सुना है वह मिथ्यापवादके सिवा कुछ नहीं है। तुम सुनो तो मैं सच्चा हाल सुनाऊँ।" यह सुनकर माँ बोली, "बेटी, कहो क्या कहना चाहती हो?" बेटी बोली, "परमात्माकी कृपासे मेरा मनोरथ सफल हुआ है। आपके दामाद उज्जैनके राजा ही हैं। एक दिन आधी-रातके समय ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देवता आकर मेरे आंगनमें खड़े हुए और उसी नामसे पुकारा। तब उन्होंने कहा, मैं लूला-लंगड़ा हूँ, आपके पास बाहर कैसे आऊँ? विष्णु भगवानकी कृपासे तुरंत उनके हाथ-पाँव पूर्ववत हो गये। वे बाहर गये और उन्होंने पुण्य और धर्मका झगड़ा निपटाया। यह सब हाल मैंने अपनी आँखोंसे देखा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वे उज्जैनके राजा ही हैं। और सुनो, उस दिन जब सब लोग शेर मारने जंगल गये थे तब सब लोग तो निराश होकर लौट आये और

वे रातको उसी जंगलमें बने रहे। आधी रातके समय शेर निकला। उन्होंने एक बाण ऐसा मारा कि वह शेरको मारता हुआ अपनी कचहरीके खंभेमें आ चुभा। उस तीरको उनके सिवा और कोई नहीं निकाल सकता है। शेरके कान-नाक-पूँछ उन्होंने खलतेमें रख लिये थे। यदि सिपाहियोंने शेर मारा है तो उनसे पूछा जाय कि शेरके नाक-कान कहाँ हैं ? शेरको कचहरीके सामने डालकर वे अपने घर चले गये थे।" बेटीके मुँहसे यह वृत्तान्त सुनकर रानीको बहुत आनन्द हुआ। बेटी इतना कहकर घर चली आई।

रानीने राजाको बुलाकर सब वृत्तान्त जो बेटीने सुनाया था कहा। राजाने सिपाहियोंको बुलाकर पूछा, "इस शेरके नाक-कान कहाँ हैं ?" यह सुन वे घबड़ा गए। फिर कुछ सोचकर किसीने कहा, मैंने शेरके नाक कान गुरैया बाबाको चढ़ा दिये थे। कुछने कहा, "सिमारिया देवको चढ़ा दिये थे। राजाको सिपाहियोंकी चालाकी विदित हो गई। फिर कचहरी गये। खंभेमें तीर चुभा देखकर उसे स्वयं निकालना चाहा पर वह न निकला। सभासद, राज्यके बड़े-बड़े शूरवीर और सभी पहलवान लोगोंने उसके निकालनेकी चेष्टा की पर वह जरा भी न हिला। फिर उन्होंने अपने दामाद विक्रमादित्यको बुलाया। राजाके कहनेपर उन्होंने अपने पैरके अंगूठा और उँगलीसे दबाकर तीर निकाल दिया। सब लोग धन्य-धन्य कह उठे। सबको भरोसा होगया कि ये राजा वीर विक्रमादित्य हैं। राजाने प्रसन्न होकर अपना राज्य अपने दामाद को दे दिया। विक्रमादित्य न्याय-पूर्वक राज्य करने लगे। इधर उन्होंने अपने सहायक उस ब्राह्मण और सहूाकारको बुलाकर उनको दस-दस गाँव माफीमें लगा दिये और साहूकारनको बुला उसे अपनी बहिन मान उसको खूब आदर सत्कारके साथ अतुल सम्पत्ति भेटमें दी।

इस तरह यहाँ राजा वीरविक्रमादित्य अपनी नई रानीके साथ आनंद से रहने लगे और वहाँ उज्जैन नगरीमें इनकी वह रानी, जो मनकी बात जान लेती थी, अपने पति राजा वीर विक्रमादित्यके मनके विचारोंको जानकर उसने नगरके बाहर उस विस्तृत मैदानमें एक सुन्दर बाग लगवाकर

उसके मध्यमें महादेव-पारवतीका विशाल मन्दिर बनवा दिया। अब उसके स्वतः अपने पतिसे लड़का होना व घोड़ीके बछेड़ा होना बाकी था। उसने परमेश्वरका ध्यान करके कहा, "हे परमात्मा, मुझमें जो सत्य है वह आपहीका दिया हुआ है। उसकी रक्षा करने वाले आप ही हैं।" ऐसा कहकर वह अपने शेष कामको पूरा करनेकेलिए वीर विक्रमादित्य की खोजमें बाहर निकली। चलते-चलते कुछ दिनमें वह उसी नगरमें जा पहुँची जहाँ राजा वीरविक्रमादित्य राज्य करते थे। वहाँ पहुँचकर वह बस्तीके बाहर एक बागमें ठहर गई। अपनी श्यामा घोड़ी भी साथ ले आई थी। उसने कुछ अच्छी भैंसें खरीदीं और वह ग्वालिन बनकर रहने लगी।

ग्वालिन दही बेचने शहर जाने लगी। ग्वालिन जैसी चतुर और मनोमोहनीथी उसका दही भी वैसा ही मधुर और स्वादिष्ट होता था। एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य डेवढ़ीपर बैठे दातौन कर रहे थे। इसी समय ग्वालिनने सामने पहुँच आवाज लगाई,."दही ले लो दही।" नई अलबेली ग्वालिनको देख राजाने पूछा, "तुम कहाँसे आरही हो और तुम्हारे दहीका क्या मोल है ?" ग्वालिनने मन्द मुस्क्यानके साथ कहा, "सरकार मैं, गुजरातकी रहनेवाली हूँ। मेरा दही मोल नहीं बिकता। मैं उसे इनामपर दिया करती हूँ। मेरा दही राजा-महाराजा और बड़े जमी-दार ही ले सकते हैं। खाकर देखिए कैसी स्वाद है।" राजाने कहा, "अच्छा, ५ सेर दही नित्य दे जाया करो।" ग्वालिन दही देकर चली गई। वह नित्य आती और राजाको दही देकर चली जाती थी। दही बहुत-से सुगंधित मसाले डालकर बनाया जाता था। वह राजाको बहुत पसन्द आया। एक दिन राजाने ग्वालिनसे कहा, "तुम्हारा दही सचमुच बहुत मीठा होता है, इनाम माँगलो।" ग्वालिनने कहा, "आप मुझे अपनी पैंतीका छल्ला दे दीजिए।" राजाने छल्ला उतारकर दे दिया। ग्वालिन नित्य दही दे जाती थी। कुछ दिन बीतनेपर राजाने कहा, "ग्वालिन, तुम्हारा दही खाते बहुत दिन हो गए फिर इनाम माँगलो।" ग्वालिन बोली, "सरकार आप प्रसन्न हैं तो मुझे अपनी कटार दे दीजिये।" ग्वालिन कटार लेकर चली गई।

एक दिन ग्वालिन अपना अपूर्व साज-शृँगार करके राजाके पास पहुँची। राजाने उसके आनेका कारण पूछा। वह लज्जित होकर सिर नीचा करके रह गई। राजाने बारबार पूछा, पर वह कुछ उत्तर न देती थी। ग्वालिनका सौन्दर्य देखकर राजाका मन विचलित होने लगा। राजाने मनमें कहा, मेरा मन कभी किसी दूसरी स्त्रीपर स्वप्नमें नहीं जाता, आज क्या कारण है कि मैं अपनेको विवश पाता हूँ! राजाने फिर पूछा, सच बात बतलाओ तुम क्या चाहती हो? ग्वालिन लजाती हुई बोली, "मेरी घोड़ी ऋतुपर है, सरकारकी निजी सवारीका घोड़ा कुछ समयको मिल जाय तो बड़ी कृपा हो।" राजाने साईसके ज़रिये घोड़ा भिजवा दिया। श्यामा घोड़ी राजाके श्यामकर्ण घोड़ेसे भर गई। इस दिनसे राजा कभी कभी ग्वालिनके डेरेपर पहुँचने लगे। दोनोंमें प्रेम होगया। कुछ दिनमें ग्वालिन को मालूम हुआ मैं गर्भवती हूँ। वह अपनी घोड़ीको लेकर उज्जैन वापिस आ गई। कुछ समय पश्चात् रानीके एक सुन्दर पुत्र और घोड़ीके बछेड़ा उत्पन्न हुआ। रानी निश्चिन्त होकर आनन्द पूर्वक रहने लगी।

एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य अपने रंगमहलमें सो रहे थे। उन्होंने स्वप्नमें देखा, "वे उज्जैन नगरीके सिंहासनपर बैठे मनकी बात जानने वाली अपनी रानीके लड़केको खिला रहे हैं। नींद खुलते ही उन्हें सेठकी लड़कीका ख्याल आगया। उन्होंने सोचा बहुत समय हो गया अब उज्जैन चलकर देखना चाहिए उस रानीने मेरे विचारके अनुसार काम किया है या नहीं। और राजा रानीको लेकर उसी दिन उज्जैनको रवाना हो गया। बाहर नगर पहुँचते ही देखा: उस मैदानपर सुन्दर बाग लगा है और उसके मध्यमें महादेव-पारवतीका विशाल मन्दिर बना है। इनको देख मनमें कहा, "ये तो ऊपरी काम हैं, इन्हें कर लेनेसे क्या होता है? मेरे शेष दो प्रश्न बहुत कठिन हैं वे कदापि पूर्ण न कर सकी होगी।" राजा ने महलमें पहुँच अपना घोड़ा घुड़शालामें जाकर खड़ा किया। साईसने लेकर उसे उसके स्थानपर बाँध दिया। राजाको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसकी श्यामा घोड़ीके पास उसका एक सुन्दर बछेरा खड़ा है। राजा भीतर मनकी बात जाननेवाली रानीके महलमें पहुँचा तो देखते हैं कि बालक पलनेमें झूल रहा है। राजाकी त्यौरी बदल गई। उन्होंने म्यान

से तलवार निकालकर रानीकी ओर देखकर कहा, "सच बतलाओ यह क्या बात है?" रानीने छल्ला और कटार राजाके सामने फेंककर कहा, "पहिचान लो ये चीज़े आपकी हैं या नहीं?" राजाकी समझमें सब आ गया। वह रानीकी चतुराई देखकर प्रसन्न हुआ। उस दिनसे वह उस मनकी बात जाननेवाली रानीपर और सब रानियोंसे अधिक प्रेम करने लगा।

यह कहानी मैंने अपने वयोवृद्ध मामा श्री चतुर्भुज काकर उमाहा तिवारीसे सुनी थी। वे अब दिवंगत हो चुके हैं।—लेखक।

परिशिष्ट

मेरी जीवन-गाथा

मेरा जन्म बुन्देलखण्डमें सागर जिलेके देवरी कस्बेमें श्रावण शुक्ला १४ सम्वत् १६४५को हुआ। मैं सनाढ्य ब्राह्मण हूँ। मेरे पूर्वज मराठी राज्यके समय देवरी पंचमहालके राजाके मुख्य दीवान तथा उनकी अनुपस्थितिमें एक सुदीर्घ-काल तक राज्यके मुख्य संचालक रहे हैं। देवरी पंचमहालके ये राजा पहले पूनाके पेशवाओं तथा बादमें ग्वालियरके सिंधिया सरकारके मातहत थे। जब सन् १८२५में यह इलाका अंग्रेजी अमलदारीमें शामिल कर लिया गया तब उसके सबसे पहले तहसीलदार हमारे पूर्वज श्री रावसाहब चौबे हुए। सारांश यह कि देवरीका चौबे खान्दान एक बहुत लम्बे अर्सेतक धन-जन, मान-प्रतिष्ठा आदिका अधिकारी बना रहा। शिवार्चन, गो-ब्राह्मणोंकी सेवा तथा सभी धार्मिक कार्योंकी ओर उनकी विशेष रुचि थी। देवरी तथा आस-पासके गाँवोंमें उनके बनवाए हुए अनेक मन्दिर, कुआ, घाट आदि उनकी धार्मिकता की स्मृति आज भी दिला रहे हैं।

पर 'सब दिन जात न एक समान' यह संसारका नियम है। समयने पल्टा खाया और हमारे घरानेका धन-पुरुषार्थ सभी क्रमशः कम होने लगा। परिवारके बढ़नेसे सम्पत्तिके हिस्सेपर हिस्से हो जाने और उधर उपार्जनके नये साधनोंके पैदा न होनेसे आमदनी बहुत परिमित रह गई। फिर भी जिन्होंने गये दिन देखे थे; अब आमदनी कम होजानेपर भी उनकी खर्च करनेकी पुरानी आदत नहीं छूटी। मेरे पितामह और पिताजीने भी विवाहादिक कार्योंमें शक्तिके बाहर खर्च किया। फलतः वे ऋण-ग्रस्त होगये। मेरे पिता भवानीसहाय, जिन्हें लोग भाईजी या भैयाजी कहा करते थे, अपने अन्तिम समयमें कर्जसे बुरी तरहसे ग्रस्त हो गये थे। जब सम्वत् १६५७में उनका स्वर्गवास हुआ उस समय मेरी

उम्र सिर्फ १२ वर्षकी थी। मैं उस समय हिन्दीकी चौथी कक्षामें पढ़ता था। पिताजीके मरनेपर सब साहूकारोंने कर्जेकी वसूलीके लिए नालिशें दायर करदीं। घरमें जो पुराना सोना, चाँदी, धन, जेवर था सब साहूकारोंके घर पहुँच गया। अनेक जमीनें और एक मौजाकी मालगुजारी पट्टी भी बेंच देना पड़ी। फिर भी कर्ज नहीं चुका। हालत दिन-पर-दिन बिगड़ती गई। पिताके मरनेपर लागत तथा देखरेखके अभावके कारण खेती बन्द कर दी गई। माताजी प्रति वर्ष ज़मीन शिकमी काश्तकारोंको बेच दिया करती थीं। पर जब विपत्ति आती है तो अकेली नहीं। उन्हीं दिनों ज़मीनका नया बन्दोबस्त प्रारम्भ हुआ। मेरे पास अधिकतर खुदकाश्त ज़मीन थी जो कानूनके अनुसार शिकमी काश्तपर नहीं दी जा सकती थी। पर माताजी तो कई वर्षसे उन्हें शिकमी काश्तपर बेंच दिया करती थीं। बन्दोबस्तमें वह सब ज़मीन निकल गई और शिकमी काश्तकारोंको सरकारी पट्टे मिल गए। मेरे पास अब केवल २०--२५ एकड़ सीर हककी ज़मीन रह गई। खुदकाश्त ज़मीन निकल जानेसे हालत और भी बिगड़ गई।

मैं स्कूलमें अच्छा विद्यार्थी समझा जाता था। शिक्षकगण मेरी पढ़ाई, आचरण तथा उपस्थितिसे सदा प्रसन्न रहा करते थे। मेरी स्कूल फ़ीस प्रायमरी विभागमें एक आना और मिडिल विभागमें दो आना माहवार लगती थी। मेरी गरीबीके कारण वह भी माफ़ कर दी गई। जब मैं ६ वीं कक्षा पास करके टीचर्स ट्रेनिंग-क्लासमें पहुँचा तब तत्कालीन हेडमास्टर श्रीनन्हूरामसिंहने मुझे ३) माहवारपर मानीटर बना दिया। आगे चलकर मेरा वेतन ३) से ६) करा दिया। मैं दिनको शिशु-कक्षाका एक वर्ग पढ़ाता और रातको नाइट-क्लासमें पढ़ा करता। श्री नन्हूरामसिंह योग्य व्यक्ति थे। हेडमास्टरीसे बढ़ते--बढ़ते छोटे साहबके पदपर पहुँचे थे। वे मेरे पड़ोसमें रहते थे। एक दिन मैंने उनके घर जाकर कहा, "आप मुझे कर्जेसे मुक्त करा दीजिये, चाहे मेरी बची-खुची जायदाद क्यों न बिक जाय।" उन्होंने मेरी बात सहानुभूतिपूर्वक सुनी। उस समय मुझे लगभग दो हज़ार रुपया साहूकारोंका तथा ७००) सरकारी तक़ावी देनी थी। सब सुन-समझकर उन्होंने मेरे हिस्सेकी रजौला

गाँवकी आधी मालगुजारी पट्टी बिकवाकर व कुछ साहूकारोंसे छुड़वाकर कुल कर्जा चुकवा दिया। सरकारको दरखास्त दिलाकर व जिलेके आफीसरोंसे सिफारिश लिखाकर तक़ावी माफ करवादी। इस तरह मैं ऋणसे निवृत्त हुआ और मैंने सुखकी साँस ली।

सन् १९०७ ई०में माताजीने मेरा ब्याह कर दिया। उसी साल मैं पाठकीय-परीक्षा पास करके देवरीसे ८ मील दक्षिणकी ओर महाराजपुर के प्रायमरी स्कूलमें सहायक-शिक्षक मुकर्रर किया गया। उस समय मास्टरोंका वेतन बहुत कम था। मुझे १०) माह वेतन तथा ३) कांजीहौसका अलौंस मिलता था। दो वर्ष बाद मेरा तबादिला केसली स्कूलको जो देवरीसे १५ मील पश्चिममें है, कर दिया गया। जब मैं केसलीमें मास्टर था एक बार दिसम्बरकी छुट्टीमें घर आया। उसी समय श्रीनाथूरामजी प्रेमी भी बम्बईसे अपने घर देवरी आये हुए थे। कुछ शिक्षक उनसे बंगला भाषा सीख रहे थे। मुझे भी उससे प्रेरणा मिली। प्रेमीजी ने 'साहित्य' नामक बंगाली मासिकपत्रकी फाइल मुझे दी और अक्षरोंकी पहिचान भी करादी। केसली आकर मैंने अभ्यास शुरू कर दिया। कुछ दिनोंके प्रयत्नसे मैं बंगला भाषा अच्छी तरह पढ़ने और समझने लगा। उक्त फाइलमेंसे मैंने 'समुद्रयात्रा' नामक श्री रवीन्द्रनाथ टागौरके एक लेख तथा 'जयमाला' 'कञ्चुका' आदि कुछ गल्पोंका अनुवाद किया। इन अनुवाद लेखोंको मैंने प्रेमीजीके पास भेज दिया। प्रेमीजीने इनको अपने 'जैन हितैषी'पत्रमें प्रकाशित किया और फिर हिन्दी-ग्रंथ-रत्नाकर कार्यालयसे प्रकाशित होनेवाले 'फूलोंका गुच्छा' नामक कहानी संग्रहमें भी इन गल्पोंको सम्मिलित कर दिया। जब कभी प्रेमीजी देवरी आते मैं अपनी रचनायें उन्हें दिखलाता और वे उनमें यत्र-तत्र संशोधन करके मेरे उत्साहको बढ़ाया करते थे। इस तरह मुझे कुछ लिखनेका शौक लग गया। जबलपुरसे 'हितकारिणी' और 'शारदा-विनोद' नामक दो मासिक पत्र निकलते थे। प्रारम्भमें मैंने इन्हीं पत्रोंमें लिखना शुरू किया। ज्यों-ज्यों लेख पत्रोंमें प्रकाशित होने लगे मेरा उत्साह बढ़ता गया। हितकारिणीके सम्पादक महोदय मुझे एक रुपया प्रति पृष्ठके हिसाबसे पारिश्रमिक भी दिया करते थे।

जिस समय मैं देवरी मिडिल स्कूलमें पढ़ता था उस समय सैय्यद-अमीरअली 'मीर' का 'मीरमण्डल-कवि समाज' बहुत उत्साहके साथ चलता था। मीर-मण्डलके जल्से बराबर हुआ करते थे। मैं भी मीर-मण्डलका सदस्य बना, पर नौकरीपर बाहर चले जानेके कारण उसमें अधिक समय भाग नहीं ले सका। मीर साहबने मुझे पिंगलका ज्ञान कराया और कविता बनानेके नियम बताए। कुछ समय तक तो उन्होंने मुझे नायिका-भेद भी बतलाया। मुझे कविताका थोड़ा-बहुत ज्ञान अवश्य होगया परन्तु मैं कवि न बन सका। इसके पश्चात् मीर साहब भी परिस्थितिवश देवरी छोड़नेको बाध्य हुए। वे बाहर चले गये। मीर साहब भी प्रेमीजीके समान मुझपर बहुत स्नेह रखते थे। बाहर रहने पर भी उनके साथ सदा मेरा पत्र-व्यवहार जारी रहा।

स्वल्प वेतन मिलने तथा सुयोग्य शिक्षकोंकी कद्र न होनेके कारण मेरा मन मास्टरीमें न लगता था। मैं उसे शीघ्र छोड़ देनेका अवसर खोज रहा था। इसी बीच मीर साहबने मुझे अम्बिकापुर स्टेट (छत्तीसगढ़) जहाँपर वे डिप्टी इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स थे, आने और श्री प्रेमीजीने बम्बई चलनेको कहा। मैंने बम्बई जानेका निश्चय किया। सन् १६११ में एक वर्षकी अवैतनिक छुट्टी लेकर बम्बई पहुँचा। प्रेमीजी उस समय "जैन हितैषी" मासिक पत्र निकालते थे। प्रेमीजीके आदेशानुसार मैं जैन हितैषी"के लिये बंगला, गुजराती पत्रोंके लेखोंका अनुवाद, प्रूफ संशोधन, तथा छपने दी जाने वाली पुस्तकोंकी प्रेसकापी तैयार करने आदिका काम किया करता था। बम्बई आकर मैंने थोड़ी काम चलाऊ गुजराती और मराठी भी सीखली थी। इस बार प्रेमीजी ने मुझे ३०) माह वेतन और आने-जानेका किराया दिया था। कोठरीका भाड़ा भी उन्हींके जिम्मे था। यहाँ मैं चार-पाँच महीने रहा। बरसात लगते ही मुझे मंदाग्नि होगई। अतः विवश होकर मुझे घर लौट आना पड़ा।

आठ, दस महीनेके विश्रामके बाद कुछ स्वास्थ्य-लाभ करके मैं २० जून सन् १६१२ ई०को दूसरी बार फिर बम्बई पहुँचा। इस बार मुझे ४०) माहवार वेतन दिया गया। इन्हीं दिनों प्रेमीजीने "हिन्दी

ग्रन्थ रत्नाकर सीरीज" की आयोजना करके हिन्दीकी उत्तमोत्तम पुस्तकें प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। इस समय हिन्दीमें सभी विषयोंकी पुस्तकों का एक तरहसे अभाव था। अधिकांश लेखक बंगलाकी साधारणसे साधारण पुस्तकोंका अनुवाद करनेमें व्यस्त थे। प्रकाशक ऐयारी, तिलिस्माती उपन्यासोंको छपवाकर पैसे कमा रहे थे। उस समय हिन्दी में आधुनिक ढंगकी सभी विषयोंकी उत्तम साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित करने वाली संस्था इण्डियन प्रेस प्रयागको छोड़कर शायद दूसरी नहीं थी। हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालयके स्थापित होनेसे एक बड़े भारी अभावकी पूर्ति हुई। इस कार्यालयसे योग्य विद्वानों द्वारा लिखी हुई सभी विषयोंकी मौलिक तथा अनुवादित पुस्तकें निकलने लगीं। परन्तु मैं इस बार भी पाँच माहसे अधिक बम्बई न रह सका। बीमार होते ही घर लौट आया।

घर आकर मैंने अपने सहपाठी तथा प्रिय मित्र श्री दशरथ बलवंत जाधवके सहयोगसे देवरीमें हिन्दी-हितैषी-कार्यालयकी स्थापना की। लेखक तो मेरे पास थे नहीं, इसलिये मैंने स्वतः पुस्तकें लिखकर या अनुवादित करके छपवाना प्रारंभ किया। सन् १९१३--१४ से सन् १९२०--२१ तक मैंने इस कार्यालय द्वारा ११--१२ पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कीं। * मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि उस समय हिन्दीमें आधुनिक ढंगकी पुस्तकें प्रकाशित करने वाली संस्थाएं बहुत कम थीं। इसी कारण "यूरोपमें बुद्धि-स्वातंत्र्य" को छोड़कर हिन्दी--हितैषी--कार्यालय द्वारा प्रकाशित मेरी सभी पुस्तकें शीघ्र बिक गयीं। कुछ पुस्तकोंके तो दो-दो तीन-तीन संस्करण करना पड़े। अंतिम पुस्तक "यूरोपमें बुद्धि-स्वातंत्र्य" लेकीके प्रसिद्ध ग्रन्थ *"History of Rationalism in Europe"* के गुजराती अनुवादके आधारपर लिखी गई थी और मूल

---

* हिन्दी-हितैषी-कार्यालय देवरी द्वारा प्रकाशित पुस्तकें— १ गृहिणी भूषण, २ मेरे गुरुदेव (स्वामी श्री विवेकानंदका अमेरिकाका भाषण) ३ आदर्श चरितावली, ४ भारतीय नीति कथा, ५ अन्योक्ति कुसुमाञ्जलि, ६ शारदा या आदर्श बहू (उपन्यास) ७ मनोरंजक कहानियाँ, ८ सोनेका चाँद ९ फूलोंकी डाली, १० जननी जीवन, ११ स्वास्थ्य संदेश, १२ यूरोपमें बुद्धि स्वातंत्र्य।

अंग्रेजीसे इसका मिलान करनेमें अपने मित्र श्री दशरथलालजी श्रीवास्तवसे सहायता ली थी। इसका सभी पत्रोंने खूब स्वागत किया। सरस्वती, प्रताप, संसार, भविष्य आदि पत्रोंने पुस्तककी मुक्तकंठसे प्रशंसा करके प्रत्येक पढ़े-लिखे मनुष्यको उसके पढ़नेकी सलाह दी। अमर शहीद श्री गणेश शङ्करजी विद्यार्थीने ५ जुलाई सन् १९२० के 'प्रताप' में पुस्तककी उपयोगिता बतलाते हुए लिखा था—"हम इस ग्रंथका सहर्ष स्वागत करते हैं। उसके आगामी भागोंकी प्रतीक्षा करेंगे।" इतना सब होनेपर भी पुस्तककी कुल २०० से अधिक प्रतियाँ नहीं बिकीं; सो भी तीन चार सालमें ! इससे ज्ञात होता है कि उस समय हिन्दीमें गंभीर शास्त्रीय विषयोंका अध्ययन करने वाले पाठकोंका नितान्त अभाव था। उपन्यास, कहानियाँ, स्त्रीशिक्षा संबन्धी तथा बालोपयोगी पुस्तकें ही उस समय अधिक बिकती थीं। ३०-३५ वर्ष व्यतीत हो जानेपर भी आज भी पाठकोंकी रुचिमें अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है।

इसके पश्चात् सन् १९१६ में मैं एक बार फिर बम्बई गया, परन्तु फिर भी जलवायु अनुकूल नहीं हुआ। इससे हमेशाके लिये बम्बई जानेका विचार त्यागकर देवरी आगया। स्कूल मास्टरीसे भी स्तीफा दे दिया। घर रह कर मैंने धीरे धीरे ४०-५० एकड़ जमीन और खरीद ली और इस तरह जो जमीन गत बंदोबस्तमें निकल गई थी उसकी पूर्ति कर ली। मेरे छोटे आजाका स्थापित किया हुआ एक मंदिर है। उसके निर्वाहके लिये ७ गाँवोंकी साल मालगुजारी पट्टियाँ लगी हैं। मैंने बाहरी प्रबन्धकर्त्ताओंको हटाकर मंदिरका प्रबंध स्वयं अपने हाथमें ले लिया। मंदिरको नये ढंगसे बनवाया और उसे साफ-सुथरा रखनेके लिये उसमें टाइल्स जड़वा दिये।

प्रथम यूरोपीय महायुद्धकी समाप्तिके पश्चात् देशके सभी क्षेत्रोंमें अपूर्व जाग्रति हुई। अनेक नई नई प्रकाशन संस्थाएँ खुल गईं जिनके द्वारा अपूर्व सजधजके साथ बहुत-सी पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। प्रतिद्वन्द्विताका जमाना आ गया। छोटे मोटे कार्यालय चलना कठिन हो गया। डाँकखानेने भी अपने रेट्स् बढ़ा दिए, जिससे पुस्तक व्यवसाय